
फिर वही ख़ौफ़
चन्द्रप्रकाश पाण्डेय

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

-श्रीमद्भागवत गीता 2/22

"जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होती है।"

-श्रीमद्भागवत गीता 2/22

फिर वही खौफ

चन्द्रप्रकाश पाण्डेय

थ्रिल वर्ल्ड

PHIR WAHI KHAUF (HINDI EDITION)

।
द्वितीय संस्करण जुलाई 2021 में थ्रिल वर्ल्ड द्वारा प्रकाशित।

यह एक काल्पनिक उपन्यास है। स्थानों और संस्थाओं के नामों का प्रयोग केवल कथ्य को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिये किया गया है। उपन्यास में आये सभी चरित्र, नाम और घटनायें लेखक की कल्पना पर आधारित हैं, जिनका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध मात्र एक संयोग माना जाएगा। उपन्यास में आये तंत्र-मंत्र और नरबली के वीभत्स दृश्य कथानक की माँग के अनुरुप उपन्यास का हिस्सा हैं, जो उक्त विषयों से संबंधित किसी भी प्रकार के अंधविश्वास का प्रचार-प्रसार नहीं करते। उपन्यास स्थानीय लोककथाओं एवम किंवदंतियों में प्रचलित मिथकीय पात्र 'ब्रह्मपिशाच' अथवा 'ब्रह्मराक्षस' से जुड़ी किसी भी धारणा का समर्थन नहीं करता। उपन्यास समाज में प्रचलित अंधविश्वास का पुरजोर विरोध करते हुए मात्र मनोरंजन हेतु उद्दिष्ट है।

कवर© चन्द्रप्रकाश पाण्डेय
आतंरिक पृष्ठसज्जा: चन्द्रप्रकाश पाण्डेय

मुद्रण व जिल्दसाजी: मणिपाल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड, मणिपाल

थ्रिल वर्ल्ड
भारत में मुद्रित

मेरे व्यक्तित्व निर्माण में महती भूमिका निभाने वाली

मेरी माँ

रेखा पाण्डेय

को सादर समर्पित

आप मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा हो।

प्रस्तावना

P

पूर्णिमा की रात थी।

आसमान पर पूरे आकार का चाँद था, जिसकी दूधिया चाँदनी समूचे नीरव वातावरण में व्याप्त थी। पूस के महीने की सर्द हवा का वेग अधिक तीव्र तो नहीं था, किंतु अधिक मद्धिम भी नहीं था। पश्चिम दिशा में दृष्टि के आखिरी छोर पर गगन रक्तिम नजर आ रहा था। आसमान छूती आग की भयानक लपटें लोमहर्षक अग्निकाण्ड की ओर संकेत कर रही थीं। आभास होता था मानो किसी बड़ी बस्ती को निर्ममता से आग के हवाले कर दिया गया हो।

वे दो बालक थे, जिनमें से एक आगे-आगे मशाल लेकर चल रहा था और दूसरा उसका अनुसरण कर रहा था। आगे वाले की उम्र लगभग बारह साल थी, जबकि पीछे वाले की उम्र उसके उम्र की आधी यानी छः साल थी। आगे वाले की चाल में तेजी थी, जबकि पीछे वाले के पाँव थकान के कारण भारी थे। आगे वाले के सफाचट सिर पर एक मोटी शिखा थी, जबकि पीछे वाले के लम्बे और घुंघराले बाल कंधे तक लटक रहे थे। आगे वाले के चेहरे पर दृढ़ता थी, जबकि पीछे वाले के चेहरे पर अनजाना सा भय था।

उपर्युक्त विषमताओं से इतर उन दोनों में केवल यही समानता थी कि वे नंगे पाँव थे, उनके दाँत ठण्ड के कारण बज रहे थे और वे खुद को मोटे किंतु जगह-जगह से फटे हुए कम्बलों में लपेट रखे थे। छोटे वाले के पीछे होने की वजह ये थी कि वह कुछ समय के अंतराल पर ठहरकर पाँव के तलवे एक-एक करके ऊपर उठाकर धरातल की शीत से क्षणिक राहत पाने की कोशिश करने लगता था।

अचानक बड़ा ठहरा ठहरा, पीछे मुड़ा। उसे ठहरा देख छोटे लड़के ने चाल में तेजी लाई और उसके पास जा पहुँचा।

“ठण्ड लग रही है?”

बड़े के पूछने पर उसने ‘हाँ’ में गर्दन हिलाई। उसका मासूम चेहरा खूबसूरत था लेकिन संताप के कारण उसकी रौनक कब की उड़ चुकी थी। कातर भाव ली हुई आँखों के इर्द-गिर्द आँसू की सूखी हुई लकीरें नजर आ रही थीं।

उसकी ओर से ‘हाँ’ का इशारा पाकर बड़े बालक ने हाथ में थामे हुए मशाल को जमीन में हुए एक गड्ढे में टिकाया और अपने बदन का कम्बल उतारकर उसके बदन से अच्छी तरह लपेट दिया। कम्बल के बच रहे हिस्से को मोड़कर उसके हाथों में पकड़ा दिया ताकि वह जमीन पर घिसटने न पाए।

“अब भी लग रही है?”

इस बार इशारा ‘नहीं’ का था। दो कम्बलों की सम्मिलित गर्मी से छोटे लड़के को राहत महसूस हुई थी।

कम्बल उतारते ही सर्द हवा बड़े लड़के के बदन में सुई की मानिंद चुभी लेकिन छोटे भाई के सामने खुद को कमजोर न दिखाने की कोशिश में उसने अपने चेहरे पर शिकन नहीं आने दिया।

“भूख भी लगी है?”

छोटे लड़के ने इस बार ‘नहीं’ में जवाब दिया क्योंकि वह जानता था कि उसके भाई के पास भोजन के नाम पर कुछ नहीं था। वे घर से केवल उन्हीं दो कम्बलों के साथ चले थे, जो आग में झुलसने से बच गये थे। बड़े लड़के ने मशाल उठाई, छोटे भाई की उँगली पकड़ी और उसे अपने बराबर लेकर चलने लगा।

“हम कहाँ जा रहे हैं भइया?” छोटे ने चलते-चलते पूछा।

बड़ा ठहरा, पलटकर पश्चिम में उठती आग की लपटों पर एक दृष्टि डाली और चेहरे पर हिकारत के भाव लिये हुए क्रूर लहजे में बोला- “वहाँ, जहाँ इतने ताकतवर बन सकें कि बस्तियाँ जलाने वाले शैतानों को जड़ से मिटा डालें।”

उपर्युक्त वाक्य कहने के दौरान उसका चेहरा भयावह हो उठा था, जो मशाल की रोशनी में इस कदर विकृत नजर आया कि उसका छोटा भाई तक सहम गया।

“लेकिन कहाँ?”

“शंकरगढ़।”

“हम वहाँ रहेंगे कहाँ? क्या वहाँ हमारा कोई दूसरा घर है?”

“नहीं।”

“तो फिर?”

“वह सब मुझ पर छोड़ दो। तुम केवल चुपचाप मेरे साथ चलो।”

छोटा खामोश हो गया और आगे कुछ बोलने की कोशिश नहीं की। काफी देर तक उनके बीच कोई बातचीत न हुई। केवल उनके पदचापों की ध्वनि ही थी, जो अभी तक उनके साथ चल रही थी। अन्यथा आज रात तो झींगुर और जंगली पशु भी उस मातमी रात से खौफ खाकर खामोश थे। लगभग आधे घंटे तक चलने के बाद पहले से ही थका हुआ छोटा बालक और अधिक थक गया। उसने अब एक भी कदम चलने से इनकार कर दिया।

“अब और नहीं चला जाता। पाँव दर्द कर रहे हैं।”

“तो फिर ठीक है। कहीं साफ़-सुथरी जगह देखकर सो जाते हैं। शंकरगढ़ का
बचा हुआ रास्ता सुबह तय करेंगे।”

छोटे लड़के के चेहरे पर हर्ष के भाव आ गये। आराम करने के नाम पर मानो उसकी मृतप्राय: आशाएं पुनर्जीवित हो उठीं। साफ़-सुथरी जगह तलाशने के लिए बड़े ने इधर-उधर गर्दन घुमाई। उसकी तलाश जल्द ही पूरी हुई। मिट्टी की उस पगडंडी से, जिस पर वे आगे बढ़ रहे थे, नीचे उतरकर थोड़े फासले पर एक पेड़ के नीचे साफ़-सुथरी जगह दिखाई दे रही थी।

“आओ, वहाँ चलते हैं।” उसने उक्त स्थान की ओर संकेत किया और छोटे की उँगली पकड़कर पगडंडी से उतर गया।

भाई को उस जगह पर बैठाने के बाद उसने आस-पास की सूखी लकड़ियों को इकठ्ठा करके जला दिया।

“इस आग से दोहरा लाभ होगा।” उसने इस प्रकार कहा, मानो छोटे भाई को विपरीत परिस्थितियों में जीने का ढंग सीखा रहा हो- “पहला ये कि हम दोनों को शीत से राहत मिलेगी। दूसरा ये कि आग से डरकर खतरनाक जानवर हमारे पास नहीं आयेंगे।”

दोनों अभी बातें ही कर रहे थे कि अचानक निस्तब्ध वातावरण में किसी औरत की हृदयविदारक चीख गूँजी। चीख ऐसी थी, जैसे उस औरत की छाती में खंजर उतार दिया गया हो। चीख सुनकर छोटा लड़का तो सहम गया, लेकिन बड़े के चेहरे पर डर के बजाय कौतुहलता नजर आने लगी। उसने चीख की दिशा में गर्दन घुमायी। चीख जिस ओर से आयी थी, उस ओर शंकरगढ़ का घना जंगल था। चीख दोबारा सुनने के प्रयास में वह चौंकन्ना जरूर हुआ लेकिन चीख दोबारा नहीं आयी। प्रतीत हुआ कि अचानक सुनाई पड़ी वह दर्दनाक चीख औरत के हलक से निकलने वाली आखिरी चीख थी। काफी देर तक तन्मयतापूर्वक ध्वनि की दिशा में कान लगाए रखने के बाद बड़े को कुछ आवाजें सुनाई पड़ीं। हालाँकि उद्गम स्थल अधिक दूर होने के कारण आवाजें मक्खी की भिनभिनाहट के समान थीं, लेकिन थोड़ी देर तक एकाग्रतापूर्वक सुनने के बाद वह तुरंत ही इस नतीजे पर पहुँच गया कि वे आवाजें ढोल-नगाड़ों और विचित्र मंत्रों का सम्मिलित रूप थीं।

वह छोटे भाई की ओर मुड़ा, जिसका चेहरा भय के कारण क्षण-प्रतिक्षण पीला पड़ता जा रहा था। खौफ उस पर इस कदर हावी हो था कि दो-दो कम्बल और आग की गर्मी के बावजूद उसका बदन थरथरा रहा था। वह जितने स्थान में बैठा था, उतने में ही सिमटा जा रहा था। बड़ा लड़का जानता था कि उसके भाई का भय नाजायज नहीं था। आवाजें जिस जंगल से आ रही थीं, उस जंगल के बारे में उसने लोगों से सुन रखा था कि उसमें दुष्ट कापालिक रहते हैं, जो पैशाचिक सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए पिशाच को नरबली चढ़ाते हैं।

“डरो मत! मैं जाकर देखता हूँ।”

“नहीं!” छोटे ने डरे हुए लहजे में तीव्र विरोध किया- “माँ कहती थी कि रात को शंकरगढ़ के जंगल में एक पिशाच घूमता है।”

हालाँकि छोटे भाई के भय और माँ के सुनाए हुए डरावने किस्सों को याद करके बड़े का भी कलेजा दहल उठा, फिर भी उसने भाई का हौसला बढ़ाने के ध्येय से अपने अंदरूनी हालातों को चेहरे से नहीं जाहिर होने दिया और दृढ़ स्वर में बोला- “पिशाच केवल उनके पीछे आता है, जो उससे दूर भागते हैं या उससे डरते हैं। तुम डरोगे नहीं तो वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। मैं जाकर देखता हूँ कि वह चीख किस औरत की थी। मुझे लगता है, वह हमारे ही गाँव की है, जो हमारी तरह अधर्मियों के चंगुल से बच कर जंगल की ओर चली गयी है और अब किसी बड़ी मुसीबत में फंस गयी है।”

छोटा बालक कुछ नहीं बोला।

“मैं अधिक दूर नहीं जाऊँगा।” बड़ा लड़का उसकी मनोदशा भाँप कर बोला- “जल्द ही लौट आऊँगा। डरो मत, तुम्हें यहाँ अधिक देर तक अकेला नहीं छोड़ूँगा।”

कहने के बाद उसने मशाल संभाला और जंगल की दिशा में बढ़ गया।

छोटा बालक उसे तब तक देखता रहा, जब तक मशाल की रोशनी नजर आती रही। अंततः अकेलेपन के भय से बचने के लिए उसने आँखें बंद करके कम्बल में मुँह छुपा लिया। लम्बी यात्रा से थके उस नन्हें पथिक को कम्बल और अलाव की गर्मी में जल्द ही नींद आ गयी।

N

1

P

उस कमरे में एक लड़की समेत तीन लोग थे, जिसकी दीवारों से लेकर खिड़कियों के पर्दों तक का रंग नीला था। यहाँ तक कि सीलिंग को भी फ्लोरोसेण्ट ब्लू रंग के स्टीकर्स से ढका गया था। वहाँ व्याप्त खामोशी इस दर्जे की थी कि लोग एक-दूसरे की साँसों की ध्वनि को भी सुन सकते थे। लड़की की अवस्था इक्कीस साल थी। वह एक आरामदायक कुर्सी की पुश्त से सिर टिका कर आँखें बंद किये हुए थी। उसके जिस्म में कोई हलचल नहीं थी, सिवाय बंद पलकों में हल्के-हल्के कम्पन के, किंतु जल्द ही वह कम्पन भी खत्म हो गया।

लड़की के अलावा कमरे में मौजूद दो अन्य लोगों में से एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था, जो शारिरिक भाषा और हाव-भाव से कोई मनोचिकित्सक लग रहा था। उसकी चश्माधारी आँखें लगातार लड़की के खूबसूरत चेहरे पर ही ठहरी हुई थीं। जबकि दूसरा सांवले वर्ण का एक आकर्षक युवक था, जिसकी उम्र अट्ठाइस वर्ष के आस-पास रही होगी। उसके बाल बेतरतीबी से बिखरे हुए थे। चेहरे पर व्यग्रता थी। वह एक पल लड़की को देखता था तो अगले पल मनोचिकित्सक को। आखिरकार जब दो मिनट तक लड़की के होठों का कम्पन वाक्य में तब्दील नहीं हुआ, तो युवक कह उठा- "ये.....क....कुछ बोल क्यों नहीं रही है डॉक्टर?"

"कोशिश कर रही है। इसे परामनोविज्ञान में 'जात-स्मरण' अथवा 'रिवर्स मेमोरी' कहते हैं।"

लड़की के होठों का कम्पन तीव्र हुआ।

"क्या नजर आ रहा है?" डॉक्टर ने उसके चेहरे को अपलक घूरते हुए पूछा।

लड़की के माथे पर बल पड़े। डॉक्टर समझ गया कि वह नजर आ रहे दृश्य को शब्दों में ढालने का प्रयास कर रही है।

'एक भीड़....।' अंततः लड़की सम्मोहित अवस्था में बोल पड़ी- *'पचास की तादात वाली एक बड़ी भीड़ है। भीड़ का हर आदमी मशाल लिए हुए है। उनके मशालों की रोशनी रात के अँधेरे पर हावी है। भीड़ तेज कदमों से एक पगडंडी पर आगे बढ़ रही है।.....आगे बढ़ रही है....अभी भी आगे बढ़ रही है.....अब भीड़ ठहर गयी है....उस दैत्याकार पीपल के पेड़ के सामने, जिसकी छाया दूर तक फैली हुई है।"*

सम्मोहित लड़की के बोलने के दौरान युवक ने कई बार डॉक्टर की ओर देखा लेकिन डॉक्टर का सारा ध्यान लड़की के बनते-बिगड़ते चेहरे पर था।

"आगे बोलो!"

लड़की तुरंत कुछ नहीं बोली। पूर्व की भांति एक बार फिर उसके माथे पर पड़ने वाली सिलवटों ने बताया कि वह दृश्यों के स्पष्ट होने की प्रतीक्षा कर रही है।

'पीपल के तने से कोई बंधा हुआ नजर आ रहा है। मशाल की रोशनी में मैं अनुमान के आधार पर कह सकती हूँ कि वह शायद...शायद... आदमी है।....हाँ....वह आदमी ही है। भयानक शक्ल वाला एक आदमी, जो चीख-चीखकर भीड़ से कुछ कह रहा है....लेकिन मुझे उसकी बातें सुनाई नहीं दे रही हैं क्योंकि भीड़ के लोग उसे देखते ही तेज शोर मचाने लगे हैं। आदमी के चेहरे पर दहशत नजर आ रही है।.....अब वह डर कर रो भी रहा है, चीख भी रहा है। उफ्फ....!'

लड़की की भाव-भंगिमाओं ने इंगित किया कि दृश्य अचानक ही हृदयविदारक हो उठा था। उसकी साँसों की गति इस हद तक तेज हो गयी कि उसका वक्ष-स्थल उठता-गिरता नजर आने लगा।

"क्या हुआ?"

'किसी ने जलती हुई मशाल पीपल की ओर उछाल दी है। मशाल सीधा आदमी के ऊपर जाकर गिरा है। उसके कपड़ों में आग लग गयी है। चीखते-चीखते उसका गला बैठ रहा है, लेकिन वहाँ मौजूद लोग बेरहम हैं। एक-एक करके हर आदमी अपनी मशाल उस भयानक आदमी पर फेंकने लगा है। कुछ मशालें उसके जिस्म से टकरा रही हैं तो कुछ पीपल के तने से टकराकर जमीन पर गिर रही हैं। उसके जिस्म के साथ-साथ पीपल की जड़ों में भी आग लग गयी है। वह चीख रहा है, लेकिन उसकी चीख भीड़ पर बेअसर साबित हो रही है। आग धधक उठी है। वह जल रहा है। दर्दनाक चीखों के बीच कुछ बोल भी रहा है, लेकिन भीड़ के कोलाहल में मैं नहीं सुन पा रही हूँ कि वह क्या कह रहा है। वह मर रहा है......वह मर रहा है......वह मर जाएगा।'

आखिरी बार *'वह मर जाएगा।'* कहते ही लड़की ने चीखकर आँखें खोल दी। उसकी साँसें लोहार की धौंकनी की भांति चल रही थीं। चेहरे पर पसीने की बूंदे यूँ चमक रही थीं, मानो कपास के फूल पर ओस की बूँदें चमक रही हों। उसने उठने का उपक्रम करना चाहा लेकिन डॉक्टर ने मना कर दिया।

"लेटी रहो। तुम्हें आराम की जरूरत है।"

"य....ये सब क्या था डॉक्टर.....?" लड़की ने साँसों की गति को संयत करने का प्रयास करते हुए पूछा।

"उन घटनाओं की एक वजह, जिनकी छाया इस वक्त तुम्हारे जीवन पर दहशत बनकर मंडरा रही है।"

लड़की ने बगैर कुछ कहे युवक की ओर देखा। युवक के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उसे पहले से ही पता था कि हिप्नोटिज्म के दौरान लड़की को क्या नजर आने वाला है।"

"तुम्हारी बीमारी को ठीक करने में हमें वक्त लगेगा, लेकिन नर्वस होने की कोई बात नहीं है। 'तुम ठीक हो जाओगी' इस बात की पूरी संभावना नजर आयी है। तुम्हारे साथ राजमहल में जो कुछ हुआ है, उसे मेडिकल साइंस भले ही हैलुसिनेशन कह कर खारिज कर दे लेकिन परामनोविज्ञान के पास ऐसी घटनाओं की व्याख्या है।" लड़की कुछ बोलने को उद्यत हुई लेकिन डॉक्टर ने उसे खामोश करते हुए कहा- "नहीं संस्कृति, तुम ठीक हो जाओगी; बस इससे अधिक जानना तुम्हारे लिए गैरजरूरी है। तुम हिप्नोसिस से बाहर आयी हो। यू नीड टू टेक सम रेस्ट। सी यू अगेन।" कहने के बाद डॉक्टर, युवक से मुखातिब हुए- "तुम मेरे साथ आओ साहिल। कुछ जरूरी बात करनी है।"

"श्योर।"

साहिल ने संस्कृति को *'सब कुछ ठीक है।'* का संकेत किया और कमरे से बाहर निकल रहे डॉक्टर के पीछे लपक गया।

"सिचुएशन क्रिटिकल है।" डॉक्टर ने कमरे से बाहर आते ही साहिल से कहा।

"क्या मतलब?" साहिल ने केबिन की ओर बढ़ रहे डॉक्टर के साथ कदमताल करते हुए व्यग्र भाव से पूछा।

"आई मीन इस लड़की का केस थोड़ा स्ट्रेंज है।"

"पूरी बात बताइये डॉक्टर?"

डॉक्टर ने तब तक कुछ नहीं कहा, जब तक कि अपने केबिन में नहीं पहुँच गये। रिवॉल्विंग चेयर पर आसीन होने के बाद उन्होंने साहिल को सामने पड़ी विजिटर्स चेयर्स में से एक पर बैठने का इशारा करते हुए कहा- "बैठो, बताता हूँ।"

विचित्र तरद्दुद में फंसा साहिल एक विजिटर्स चेयर पर बैठ गया। डॉक्टर ने चश्मा दुरुस्त करते हुए मेज पर पड़े कुछ पेपर्स को उठाया और उनका अवलोकन करते हुए कहा- "मृत्यु एक घटना है, जिसके तहत मनुष्य की चेतना का उसके मस्तिष्क से बहिर्गमन हो जाता है। ये वही चेतना होती है, जिसे विज्ञान में ऊर्जा का शुध्दतम रूप कहा जाता है। अर्थात जिस प्रकार ऊर्जा का नाश नहीं होता है, उसी प्रकार चेतना का भी नाश नहीं होता है। यानी कि किसी व्यक्ति द्वारा जन्म से लेकर मृत्यु के क्षणों तक अर्जित की गयी समस्त चेतना, उसके मरणोपरांत स्थूल शरीर से अलग हो जाने के बाद भी ब्रह्माण्ड में कहीं न कहीं व्याप्त रहती है। ये चेतना जब किसी अन्य व्यक्ति की चेतना से जुड़ जाती है तो ये अतिरिक्त चेतना उस व्यक्ति के लिये पिछले जन्म की स्मृति बन जाती है।"

"इस थ्योरी का संस्कृति से क्या सम्बन्ध है?"

"सम्बन्ध है, क्योंकि उसके साथ ऐसा ही हुआ है।"

"यू मीन वह किसी लावारिस चेतना का शिकार हुई है?"

"ऑफ़कोर्स। हिप्नोटिज्म के दौरान उसे जो कुछ नजर आया, वह उस लावारिस चेतना यानी कि उसके पूर्वजन्म का ही एक हिस्सा था।"

"लेकिन ऐसा हुआ क्यों? ब्रह्माण्ड में भटक रही लावारिस चेतनाओं के किसी व्यक्ति विशेष से जुड़ने की क्या वजह होती है?"

"कई वजहें हो सकती हैं। बगैर केस स्टडी किये वजह बता पाना मुश्किल होता है। धर्मशास्त्रों में तो पुनर्जन्म की आठ वजहें बतायी गयी हैं। जिनमें से एक वजह ये भी है कि जीवात्मा अपनी अधूरी इच्छा पूरी करने, किसी से प्रतिशोध साधने या अपने कर्मों के अधूरे फल भोगने के लिए इस धरती पर वापस आती है, किंतु पैरासाइकोलॉजी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण कहता है कि ब्रह्माण्ड में लावारिस भटक रही चेतनाओं के हमारे वर्तमान पर हावी होने के लिए हमारा अवचेतन मस्तिष्क यानी कि सबकॉन्शियस माइण्ड जिम्मेदार होता है। नींद की अवस्था में जब हमारा अवचेतन मस्तिष्क क्रियाशील होता है तो वह उन्हीं चेतनाओं से रु-ब-रु होता रहता है।"

"तो क्या स्वप्न में हम जो कुछ देखते हैं, वे ब्रह्माण्ड में भटक रही लावारिस चेतनाएं ही होती हैं?"

"एब्सल्युटली। लेकिन नींद की अवस्था से बाहर आने पर हम उन सपनों को पचहत्तर फीसदी भूल चुके होते हैं, इसलिए वे हमारी वर्तमान चेतना अर्थात इस जन्म की चेतना पर हावी नहीं हो पाते, किंतु जब कभी स्वप्न के रूप में दिखाई पड़ने वाली ये चेतनाएं किन्हीं रहस्यमयी कारणों से किसी के वर्तमान पर हावी हो जाती हैं तो उन रहस्यमयी कारणों को तलाशना जरुरी हो जाता है क्योंकि ज्यादातर स्थितियों में ये लावारिस चेतनाएं बेहद खतरनाक होती हैं।"

"संस्कृति के केस में वह रहस्यमयी कारण क्या हो सकता है?"

"गुड क्वेश्चन। लेकिन मैं चाहता हूँ कि मेरा आंसर सुनने से पहले तुम ये चारों स्केचेज देख लो।"

डॉक्टर ने वे पेपर्स साहिल की ओर बढ़ा दिये, जिनका थोड़ी देर पहले वे अवलोकन कर रहे थे। साहिल पन्नों पर उभरे स्केचेज को देखते ही चौंक पड़ा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव काबिज हुए, जैसे वह इन स्केचेज को पहले भी कई बार देख चुका हो। दरअसल उसके चौंकने की वजह ये थी कि उसे इन स्केचेज के यहाँ होने का ज़रा भी अंदाजा नहीं था।

पहले पन्ने पर एक भव्य महल का स्केच बनाया गया था। दूसरे पन्ने पर जलते हुए पीपल का पेड़ बनाया गया था, जिसके तने से कोई इंसान बंधा हुआ नजर आ रहा था। तीसरे पन्ने पर एक व्यक्ति को दर्शाया गया था, जिसकी वेशभूषा अट्ठारहवीं सदी के ब्राह्मणों से मिलती-जुलती थी। उसके सफाचट सिर पर चोटी नजर आ रही थी। चौथे पन्ने पर एक तालाब के किनारे घास पर लेटी राजकुमारी का स्केच उभारा गया था, जो दाहिने गाल पर हाथ रखे हुए जल में अपनी परछाईं देख रही थी।

"क्या तुम जानना चाहते हो कि ये स्केचेज किसने बनाये हैं?"

"संस्कृति ने?"

"करैक्ट। शायद वह खाली समय में स्केचेज बनाने की शौक़ीन है। जब तुम उसे यहाँ छोड़कर कुछ जरुरी काम निपटाने के लिए प्रयागराज गये थे तो उसने अपना सत्र आने तक का समय काटने के लिए नर्स से कुछ कोरे कागज और पेन्सिल की माँग की थी। उसी दौरान उसने ये स्केचेज बनाए। इन्हें देखकर पहले तो हमने यही सोचा कि उसने मन बहलाने के लिये ये स्केचेज बनायी होंगी लेकिन जब उसने हिप्नोटिज्म के दौरान देखे हुए दृश्य को बताया तो अचानक ही मेरे दिमाग में एक ख्याल आया।"

"कहीं आप ये तो नहीं कहना चाहते कि ये स्केचेज संस्कृति द्वारा हिप्नोटिज्म के दौरान देखे गये दृश्य से सम्बन्धित हैं?"

"गौर से देखो साहिल।" डॉक्टर मुस्कुराये- "क्या तुम्हें नहीं लगता कि ये उन्हीं दृश्यों से सम्बंधित स्केच हैं, जो संस्कृति ने हिप्नोटिज्म के दौरान देखे?" कहने के बाद डॉक्टर ने साहिल के हाथ से पन्नों को ले लिया और उस पन्ने को, जिस पर महल का स्केच बना हुआ था, साहिल को दिखाते हुए बोले- "इस महल को देखो। क्या ये महल शंकरगढ़ के राजमहल जैसा नहीं दिख रहा है?" साहिल के जवाब की प्रतीक्षा किये बगैर डॉक्टर ने उसे अगला स्केच दिखाया और कहा- "क्या राजकुमारी जैसी नजर आ रही इस युवती का चेहरा संस्कृति से नहीं मिल रहा है? क्या पीपल के तने से बांधकर जलाया जा रहा ये इंसान संस्कृति को हिप्नोटिज्म के दौरान नजर नहीं आया था?"

"तो अब इन चीजों से आपने क्या निष्कर्ष निकाला?"

"ये दृश्य पहले से ही संस्कृति की चेतना का हिस्सा थे, जो हिप्नोटिज्म की अवस्था में इतने स्पष्ट हो गये कि उसे चलचित्र की भांति नजर आये। ये इस बात का कन्फर्मेशन है कि संस्कृति के वर्तमान पर उसका पिछला जन्म हावी है।"

"लेकिन अभी तक आपने इसकी वजह नहीं बतायी।"

"दरअसल सही वजह जानने के लिये हमें सम्बंधित व्यक्ति को कई बार पास्ट लाइफ रिग्रेशन के चक्र से गुजारना पड़ता है। उस दौरान उसे नजर आने वाले

पूर्वजन्म के दृश्यों का विश्लेषण करके हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि पिछला जन्म उसे क्यों याद आ रहा है? वजह सामने आ जाने के बाद हमारा अगला लक्ष्य उस वजह को खत्म करना होता है। इस लक्ष्य के पूरा होते ही आदमी को उन यादों से छुटकारा मिल जाता है। परामनोविज्ञान में पूर्वजन्म से विरासत के तौर पर आयी बीमारियों का इलाज इसी प्रकार से किया जाता है।"

"संस्कृति के संदर्भ में ये तरीका कितना कारगर हो सकता है?"

"देखो साहिल, आज संस्कृति के पास्ट लाइफ रिग्रेशन सत्र का पहला दिन था और इस पहले दिन में उसे जो कुछ नजर आया है, उसे किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए पर्याप्त नहीं समझा जा सकता है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब कि किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए हमें संस्कृति की पास्ट लाइफ को सिलसिलेवार जानना होगा। और ऐसा तभी हो सकता है, जब उसे उसके पास्ट लाइफ की सभी महत्वपूर्ण घटनाएं नजर आयें।"

"ऐसा कैसे होगा?"

"हिप्नोटिज्म के जरिये ही होगा, लेकिन संस्कृति के केस में ये मुझे सुरक्षित नहीं लग रहा है। हम जो जानना चाहते हैं, उसे जानने के लिये हमें संस्कृति को लम्बे समय तक हिप्नोटाइज्ड रखना पड़ सकता है, जो कि जोखिम भरा है क्योंकि पाँच मिनट से अधिक समय का हिप्नोटिज्म, हिप्नोटाइज्ड व्यक्ति की स्थायी चेतना के लिये खतरनाक होने लगता है। इसमें उसकी याद्दाश्त भी जा सकती है।"

"ओह।" साहिल ने गहरी साँस ली- "संस्कृति को पास्ट लाइफ में रिग्रेश करने के लिये हिप्नोटिज्म ही एक जरिया है, यदि आप इसे जोखिम भरा मान रहे हैं, तो अब आपके पास दूसरा ऑप्शन क्या है?"

"एक विकल्प है। हम संस्कृति को पास्ट लाइफ में रिग्रेश किये बिना ही वह सब-कुछ जानने की कोशिश करेंगे, जो हम जानना चाहते हैं। इसके लिये हम वही तरीका अपनाएंगे, जिसे प्रायः सभी साइकोलॉजिस्ट याद्दाश्त से जुड़ी छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज लिये इस्तेमाल करते हैं।"

"क्या है वह तरीका?" साहिल थोड़ा व्यग्र हुआ।

"संस्कृति को जो दृश्य नजर आया है, उसे सूत्र के रूप में प्रयोग करते हुए आगे बढ़ना होगा। इस तरीके से शायद हमें कुछ पता चल सकता है।" डॉक्टर ने थोड़ी देर तक कुछ सोचा फिर आगे कहा- "एक भीड़ किसी आदमी को पीपल के पेड़ से बांधकर ज़िन्दा जला देती है। यह घटना संस्कृति को दिखी, इसका मतलब ये है कि यह घटना संस्कृति के पिछले जन्म की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। जलने वाला व्यक्ति कौन था? उसे भीड़ ने क्यों जलाया? ये दो अहम् सवाल हैं, जिनके जवाब तलाशना जरूरी है।"

डॉक्टर थोड़ी देर के लिये रुके। उन्होंने उस पन्ने पर, जिस पर संस्कृति ने राजमहल का स्केच बनाया गया था, दृष्टिपात करते हुए कहा- "संस्कृति ने राजमहल का स्केच बनाया, इससे ये जाहिर होता है कि उसके पास्ट लाइफ में जो कुछ हुआ था, उसमें राजमहल भी इन्वॉल्व था।"

साहिल गौर से सुनता रहा, जबकि डॉक्टर ने उस पेज पर नजर डाली, जिस पर पुरातन काल के ब्राह्मण का स्केच बना हुआ था- "ये आदमी, जो वेशभूषा से अट्ठारहवीं सदी का ब्राह्मण लग रहा है, ये भी संस्कृति की पास्ट लाइफ का हिस्सा लगता है।" डॉक्टर ने साहिल का विचार जानने के लिए उसकी ओर देखा- "तुम्हें क्या लगता है, कौन हो सकता है ये?"

साहिल ने स्केच पर नजर डाले बगैर लापरवाह अंदाज में कहा- "शायद वही, जिसे भीड़ ने जिन्दा जला दिया।"

उपर्युक्त वाक्य को बोलते समय उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वह डॉक्टर से कुछ छुपा रहा है लेकिन डॉक्टर ने उसके इन भावों पर गौर नहीं किया।

"मे बी।" डॉक्टर की आँखें सोचने की मुद्रा में सिकुड़ गयीं- "लेकिन श्योर नहीं हुआ जा सकता।...और अब इस तीसरे स्केच के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?" डॉक्टर ने उस स्केच की ओर इशारा किया, जो जल में प्रतिबिम्ब निहारती राजकुमारी का था।

"इस युवती की शक्ल संस्कृति से मिल रही है। शायद संस्कृति ने अपने पास्ट लाइफ का रिफ्लेक्शन बनाया है?"

डॉक्टर ने चारों चित्रों को इकट्ठा किया और संस्कृति की ट्रिटमेण्ट से जुड़ी फाइल में लगाने के बाद कहा- "डेफिनेटली ऐसा ही है। संस्कृति ने जो स्केचेज बनाये हैं और हिप्नोटिज्म के दौरान उसे जो विज़न नजर आये हैं, वे सभी उसके पिछले जन्म से जुड़े क्लू हैं। हमें इन्हीं का इस्तेमाल करके उसके पास्ट लाइफ को जानना होगा। हमें संस्कृति से ये जानना होगा कि किस भावना के तहत उसने ये स्केचेज बनाएं? और इन्हें बनाते समय उसके जेहन में क्या चल रहा था?"

साहिल खामोश बैठा रहा। वह समझ नहीं पा रहा था कि एक दृश्य और चार स्केचेज की सहायता से किसी के पिछले जन्म में कैसे झाँका जा सकता है।

"क्या तुम संस्कृति को व्यक्तिगत रूप से जानते हो?"

"नहीं। उससे मेरी मुलाकात हुए आज दूसरा दिन है।"

"ओह! अब तक की इस छोटी सी जान-पहचान में तुम्हें संस्कृति की किसी खास आदत के बारे में पता चला?"

साहिल ने पहले दिमाग पर जोर डाला, फिर मुँह खोला- "हाँ डॉक्टर। उसकी एक आदत मुझे अजीब लगी।"

"क्या?"

"उसे आग से डर लगता है।"

"आग से डर तो सभी को लगता है। इसमें अजीब क्या है?"

"आग के प्रति संस्कृति के डर को सामान्य नहीं कहा जा सकता डॉक्टर। यदि उसके आस-पास सिगरेट की लाइटर भी जल जाती है तो वह बुरी घबरा जाती है।"

"ओह।" डॉक्टर के होंठ सिकुड़कर गोल हो गये- "तुम्हें उसकी इस आदत के बारे में कैसे पता चला?"

"खुद उसी ने बताया।"

"हम्म। मैं ये शर्तिया कह सकता हूँ कि पिछले जन्म में संस्कृति की मौत जलकर मरने से हुई थी इसीलिये आग का डर इस जन्म में भी उस पर हावी है।" साहिल कुछ नहीं बोला तो डॉक्टर ने आगे कहा- "देखो साहिल, इतना तो तय है कि संस्कृति के साथ जो कुछ भी हुआ है, उसमें राजमहल की अहम् भूमिका है। उसने किसी के हाँफने की अजीबोगरीब आवाज़ सबसे पहले राजमहल के गुप्त तहखाने में ही सुनी थी। तहखाने में मौजूद ताबूत के खुलने के बाद से ही अजीबोगरीब घटनाओं का सिलसिला शुरू हुआ। इसलिये मेरा ये विश्वास अब और भी मजबूत हो चुका है कि राजमहल के अतीत में जरूर कुछ ऐसा है, जो एक दहशत बनकर संस्कृति के वर्तमान पर मंडरा रहा है। हम उसके पास्ट लाइफ के बारे में जो कुछ जानना चाहते हैं, उसके लिये राजमहल में गड़े मुर्दे उखाड़ना बेहद जरूरी है। किसी भी तरह, चाहे शंकरगढ़ के लोगों से या फिर राजमहल के किसी सदस्य या नौकर से, तुम राजमहल का अतीत जानने की कोशिश करो। ये पता करने की कोशिश करो कि क्या ठाकुर खानदान के इतिहास में किसी की आग-दुर्घटना में मौत हुई है? इसके साथ-साथ संस्कृति के रहन-सहन, उसके स्वभाव और आदतों पर भी नजर रखो। जब तक हमें ये नहीं पता चल जाता कि पूर्वजन्म की चेतना इस जन्म में उस पर क्यों हावी है, तब तक हम उसकी प्रॉपर ट्रिटमेण्ट नहीं कर सकते।"

कहने के बाद डॉक्टर ने कुर्सी छोड़ दिया।

JJJ

एक सप्ताह पहले।

आदमी ने चेहरे के पसीने को आस्तीन से पोछा, फिर सूरज के भीषण क्रोध पर बड़बड़ाया और पुनः पैसेंजर हॉल से बाहर निकलने वाले लोगों पर नजर दौड़ाने लगा। वेटिंग एरिया में खड़े अन्य लोगों की तरह उसके हाथ में भी एक नेम बोर्ड था।

"टाइम क्या हुआ भाई?" उसने बगल में खड़े अपने जैसे ही एक अन्य आदमी से पूछा।

बगल वाले आदमी ने पहले उसके नेमबोर्ड को घूरा, फिर कहा- "बारह बज कर दस मिनट।"

"छोटी मालकिन कहाँ रह गयीं?" वह व्यग्र भाव से बड़बड़ाते हुए पहलू बदलने लगा।

वहाँ से गुजरने वाला हर शख्स उसके नेम बोर्ड को देख कर हँसते हुए आगे बढ़ रहा था लेकिन आदमी पर इसका कोई असर नहीं नजर आ रहा था। दस मिनट बाद एक युवती पैसेंजर हॉल से बाहर आयी। उसके साथ एक लोडर भी था, जो लगेज ट्रॉली को धकेल रहा था। युवती ने 'रिसीवर्स' की पंक्ति पर एक नजर डाली किंतु किसी भी नेमबोर्ड पर अपना नाम न पाकर उसके चेहरे पर शिकन के भाव आ गये। उसने रिस्टवॉच देखा और फिर निचला होंठ दांतो तले दबा कर इधर-उधर देखने लगी। थोड़े अंतराल के बाद उसने जीन्स के साइड पॉकेट से सेलफोन बाहर निकाला, कुछ पलों तक डिस्प्ले पर उंगलियाँ फिरायीं, तत्पश्चात कान से लगा लिया। क्षण भर भी नहीं गुजरे होंगे कि उसे सेलफोन कान से हटाना पड़ा। उसके चेहरे पर व्याप्त उलझन पहले की अपेक्षा अब और गहरी हो गयी।

'रिसीवर्स' की लाइन में खड़ा वह आदमी युवती की हरकत को ध्यान से देख रहा था। पाँच मिनट गुजर गये। इस अवधि में युवती कई दफे अपना सेलफोन कान के पास ले गयी लेकिन हर बार सम्पर्क स्थापित करने में विफल रही। आखिरकार उस आदमी से रहा नहीं गया और वह लाइन से निकलकर युवती के पास पहुँचा।

"आप किसी को ढूँढ रही हैं बहन जी?"

स्वयं के लिये 'बहन जी' सम्बोधन सुनकर युवती ने बुरा सा मुँह बनाया लेकिन फिर सामने खड़े आदमी की शक्ल और वेशभूषा देख उसे लगा कि उस आदमी के पास सम्बोधन हेतु 'बहन जी' से बेहतर शब्द रहा ही नहीं होगा।

"जी हाँ लेकिन आप कौन?"

"जी मेरा नाम बंशीधर है। अपनी छोटी मालकिन को लेने आया हूँ, जो बिलायत से पढ़ाई पूरी करके पूरे दस साल बाद लौट रही हैं।"

"तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है?"

"संस्कृति ठाकुर।"

नाम सुनते ही युवती ने मुट्ठी भींच ली। और गुस्सा पीने का प्रयत्न करते हुए बोली- "मि. बंशीधर?"

"जी बहन जी।"

"आपने नेमबोर्ड उल्टा पकड़ रखा है।"

"उई तेरी....।" नेमबोर्ड पर नजर पड़ते ही बंशीधर की जीभ बाहर निकल गयी। उसने सचमुच नेमबोर्ड उल्टा पकड़ रखा था। अब उसे समझ आया कि लोग उसके नेमप्लेट को घूर-घूर कर हँस क्यों रहे थे। पल भर में ही उसने नेमबोर्ड सीधा कर लिया, जिस पर 'संस्कृति ठाकुर' लिखा हुआ था।

"यदि आपने नेमबोर्ड सीधा पकड़ा होता तो आपको मेरे पास नहीं आता होता, मैं खुद आपके पास आ जाती।"

"तो क्या.....तो क्या आप ही संस्कृति....मेरा मतलब कि छोटी मालकिन हैं....?"

"हाँ....मैं ही हूँ, जिसे रिसीव करने के लिये आप उल्टे नेमबोर्ड के साथ खड़े हैं।"

"हे भगवान! कितना बड़ी हो गयीं आप। दस साल पहले....।"

"मुझे धूप लग रही है। गाड़ी कहाँ पार्क की है?"

"इस तरफ....इस तरफ आइए छोटी मालकिन।"

बंशीधर ने पार्किंग जोन की ओर इशारा किया, जहाँ उसने वाइट इण्डिगो पार्क की थी। संस्कृति और लोडर, दोनो बंशी की बतायी हुई दिशा में मुड़ गये।

JJJ

राजमहल, शंकरगढ़ का सबसे आलीशान आवास होने के साथ-साथ इस बात का भी गवाह था कि बीते हुए दौर में शंकरगढ़ एक सम्पन्न रजवाड़ा हुआ करता था, जिसके हुक्मरान राजमहल जैसे भव्य भवन में रहा करते थे। कई एकड़ में फैला राजमहल आज भी पाँच सौ साल पुरानी वास्तुकला की भव्यता से लोगों को दाँतों तले उँगली दबाने पर विवश कर देता था। राजमहल देश की उन ऐतिहासिक इमारतों में से एक था, जो मुस्लिम शासकों की बादशाहत से लेकर अंग्रेजों की गुलामी तक के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। महल, प्राचीर से पाँच सौ

मीटर अंदर खड़ा था। वहाँ तक पहुँचने के लिये मुख्य द्वार से दो पक्की सड़कें विपरीत दिशा में गयी हुई थीं, जिनके दोनों ओर अमरैन्थस की घनी क्यारियां थीं। महल के प्रांगण के ठीक बीच में लगभग पन्द्रह मीटर त्रिज्या के वृत्ताकार घेरे में मखमली और मुलायम घास उगायी गयी थी। उस घेरे की परिधि पर गेंदा, गुलाब, कुमुदनी इत्यादि भिन्न-भिन्न फूलों के पौधे बगैर किसी अंतराल के लगाये गये थे, उनमें
उगने वाले भिन्न-भिन्न रंगों के फूलों की शोभा दर्शनीय थी।

उस वृत्ताकार घेरे के बीच में कमर पर घड़ा टिकाए हुए एक युवती की संगमरमर की मूर्ति थी। उसके घड़े से निकलने वाली पतली जल-धारा इस प्रकार समायोजित की गयी थी कि थोड़ी ऊँचाई तक उठने के बाद वह सीधे मैदान की परिधि पर लगाए गये फूलों के पौधों पर गिरती थी।

प्रतिमा विद्युत युक्ति के जरिये अपने स्थान पर घूर्णन भी कर सकती थी। इस युक्ति का सबसे बड़ा लाभ राजमहल के मालियों को होता था क्योंकि उन्हें फूलों के पौधों को अलग से पानी नहीं देना पड़ता था, यह काम फब्बारे के रूप में घूर्णन करती युवती की बेजान प्रतिमा कर देती थी। रात के समय फूलों के पौधों तथा प्रतिमा की दोनों आँखों में पुतलियों के स्थान पर लगे सजावटी बल्बों की रोशनी उक्त स्थान को और अधिक दृश्यमान बनाते थे। प्रतिमा के जूड़े से भी जल-धारा निकलती थी, जो घड़े से निकलने वाली धारा की अपेक्षाकृत अधिक मोटी थी। ये धारा वैकल्पिक थी, जिसे किसी विशेष आयोजन पर, जब फब्बारे को आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बनाना आवश्यक होता था, तब छोड़ा जाता था।

मुख्य प्रवेश द्वार से विपरीत दिशाओं में गयी दोनों सड़कें इसी फब्बारे के वृत्ताकार घेरे के इर्द-गिर्द से होते हुए महल के मुख्य द्वार पर आकर मिल जाती थीं। राजमहल के प्रत्येक मंजिल के बरामदे में बैंगनी रंग के रेशमी लटक रहे थे, जिनके किनारों पर सितारे टंकी हुई सुनहरी पट्टियाँ लगी हुई थीं ताकि सूरज की रोशनी में वे चमक सके। सारांश ये कि शंकरगढ़ का राजमहल ऐसे लोगों की तलाश का अंत था, जो इस आधुनिक युग में राजसी ठाठ देखने हेतु लालायित रहते हैं।

दिग्विजय ठाकुर, शंकरगढ़ रियासत की बागडोर संभालने वाले वंश की वर्तमान पीढ़ी के अगुआ थे। वक्त के सदैव परिवर्तित होने के सर्वोत्तम गुण और भारत में लोकतंत्र के आगमन के बाद राजशाही प्रथा का अंत भले ही हो गया था लेकिन आजादी के सत्तर साल बाद भी शंकरगढ़ में दिग्विजय ठाकुर का वही रुतबा था, जो भारत में लोकतंत्र आने से पहले इनके पूर्वजों का हुआ करता था।

सत्ता के गलियारे में गहरी पैठ होने के कारण दिग्विजय ठाकुर आज भी अपने पूर्वजों की राजशाही प्रथा को जीवित रखने का 'गौरवशाली' कार्य कर रहे थे। हालाँकि तीन भाइयों में सबसे बड़े दिग्विजय की गोद में ईश्वर ने संतान के रूप में केवल संस्कृति को ही डाला था लेकिन अन्य दो भाइयों अरुणोदय और चन्द्रोदय के संदर्भ में ईश्वर ने ऐसा नहीं किया था और उन्हें संतान के रूप में लड़कों के सुख से नवाजा था। दोनों के एकलौते लड़के संस्कृति से छोटे थे और बोर्डिंग स्कूल में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। इस प्रकार संस्कृति ही थी, जो अगली पीढ़ी में सबसे उम्रदराज थी और आज लंबे वक्फे बाद 'यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैंब्रिज' के 'ट्रिनिटी हॉल' से गणित में स्नातक होकर शंकरगढ़ लौट रही थी।

राजमहल के प्रत्येक नौकर की सुबह से ही भागदौड़ जारी थी। दर्जन भर नौकरों में से शायद ही कोई ऐसा था, जिसने चैन से बैठकर कुछ देर तक आराम किया था। प्रांगण में सफेद तम्बू लगा हुआ था। जगह-जगह पर हवा के लिये मिनी कुलर्स और लोगों के बैठने के लिये वीआईपी चेयर्स के इंतजाम थे। जमीन पर कीमती कालीन बिछाये गये थे। पण्डाल में एक ओर धरातल से करीब छः फीट ऊँचा मंच बना हुआ था। चारों ओर ईत्र और गुलाब जल के छिड़काव से वातावरण सुगंधित हो रहा था। फब्बारा ऑन था। हर रोज दोपहर के समय कुम्हलाये रहने वाले फूल आज मुस्कुरा रहे थे। प्रत्येक रोज भीषण गर्मी से झुलसने वाला प्रांगण आज लोगों की चहल-पहल से गुलजार था। चूँकि मेहमानों का आगमन शुरु हो गया था इसलिए वक्त गुजरने के साथ लोगों की गर्दिश में भी धीरे-धीरे इजाफा हो रहा था। शाही पोशाक पहने हुए कुछ नौकर हाथ में ट्रे लिये हुए टहल रहे थे। दिग्विजय के खानदान से ताल्लुक रखने वाला हर शख्स केसरिया साफा बांधे हुए था क्योंकि ये उनकी परम्पराओं में से एक था।

अचानक गूँज उठी गाड़ी की आवाज़ ने पण्डाल में मौजूद सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। सफेद इण्डिगो मेन गेट से अंदर दाखिल हुई थी और अब सड़क को रौंदते हुए तेजी से राजमहल के मुख्य द्वार की ओर बढ़ रही थी।

'छोटी मालकिन आ गयीं...छोटी मालकिन आ गयीं।'

मेहमानों का स्वागत कर रहे नौकर इण्डिगो को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़े। अन्य सदस्यों को सूचित करने के ध्येय से एक नौकर सारे काम छोड़कर अंदर की ओर भाग खड़ा हुआ।

इण्डिगो महल के मुख्य द्वार पर रुकी। पहले ड्राइविंग डोर खोलकर बंशीधर बाहर आया। फिर उसने पिछला डोर खोलकर संस्कृति को बाहर आने का इशारा किया। अब तक राजमहल की महिलाओं के साथ-साथ संस्कृति के पिता दिग्विजय और उसके दोनों चाचा भी बाहर आ चुके थे। सबसे आगे संस्कृति की माँ सुजाता थीं, उनके हाथ में पूजा की थाली थी।

गाड़ी से बाहर आते ही संस्कृति दौड़ कर दिग्विजय से जा चिपकी।

"मिस्ड यू अ लॉट डैडी।"

संस्कृति ने दिग्विजय के ऊपर चुम्बनों की बौछार कर दी। बाप-बेटी का प्यार देख पण्डाल में उपस्थित मेहमानों के होठों पर मुस्कान रेंग गयी। कुछ देर तक दिग्विजय के साथ प्रेमालाप करने के बाद संस्कृति अपने चाचाओं और छोटी माँओं से भी उतने ही उत्साह से रु-ब-रु हुई, जितने उत्साह से दिग्विजय से हुई थी। अंततः वह सुजाता की ओर मुड़ी।

"फाइनली...इट्स योर टर्न मम्मम।"

"सबसे अंत में हमारी याद आई तुम्हें?" सुजाता ने शिकायती लहजे में कहा।

संस्कृति, सुजाता के गले लगने को आतुर हुई लेकिन उनके हाथ में पूजा की थाली देख ठहर गयी।

"ये क्या मम्मी? आते ही पूजा की थाली?"

"पूरे दस साल बाद हमारी लक्ष्मी घर लौटी है इसलिए बिना आरती के घर में प्रवेश करेगी तो इसे अशुभ माना जाएगा।"

"एक्सक्यूज मी मम्मी।" संस्कृति चिढ़ कर बोली- "आई एम संस्कृति, नॉट लक्ष्मी।"

सुजाता ने उस पर ध्यान नहीं दिया और थाली में रखा कपूर जलाने लगी।

"ये क्या जला रही हो मम्मी?"

"आरती के लिए कपूर जला रही हूँ। दस साल के लिये बिलायत क्या चली गयी, सारी परंपरा ही भूल गयी?"

"नो मम्मी, प्लीज।" संस्कृति ने सुजाता के हाथ से थाली झपटते हुए कहा- "प्लीज ये आरती वाला आइडिया ड्रॉप कर दीजिए। आप तो जानती ही हैं कि मुझे बचपन से ही आग से डर लगता है।"

"लेकिन.....।" सुजाता ने कुछ कहना चाहा लेकिन उनका वाक्य पूरा होने से पहले ही संस्कृति ने थाली दिग्विजय को थमाते हुए कहा- "प्लीज पापा, डू मी अ फेवर।"

"रहने दो सुजाता। जब बिटिया मना कर रही है तो तुम्हें जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए।"

दिग्विजय ने संस्कृति का पक्ष लिया; इसकी वजह ये नहीं थी कि वह लंबे वक्त बाद लौटी थी। दरअसल असली वजह ये थी कि उन्हें बेटी की हर छोटी-बड़ी माँग के आगे घुटने टेकने की आदत थी। उनकी इस आदत के कारण कभी-कभी सुजाता बुरी तरह चिढ़ जाती थीं। ठीक वैसे ही, जैसे इस समय उन्होंने चिढ़कर थाली को नौकर की ओर बढ़ा दिया था।

"थैंक यू, माय क्यूट मम्मम।" संस्कृति ने सुजाता को जोर की झप्पी दी।

"चलो, अब जल्दी करो। संस्कृति को अभी तैयार भी होना है क्योंकि हमारे स्पेशल गेस्ट आधे घण्टे में पहुँचने वाले हैं।"

दिग्विजय की उपर्युक्त घोषणा सुनते ही सब यथार्थ में लौटे।

"पापा किस स्पेशल गेस्ट की बात कर रहे हैं मम्मी?" संस्कृति, सुजाता की कान में फुसफुसायी।

"सब्र रख। जल्द ही पता चल जाएगा।" सुजाता ने मुस्कुराते हुए कहा।

JJJ

मृत्युंजय सिंह, राज्य मंत्रिमण्डल में ऊर्जा मंत्री था। फितरत से इस दर्जे का अय्याश था कि कई बार पार्टी की साख पर बट्टा लगने का कारण बन चुका था। लूट-खसोट को वह राजनेताओं का जन्मसिध्द अधिकार समझता था। उसका मानना था कि कोई भी राजनेता हंस के सदृश जीवनपर्यन्त उजला नहीं बना रह सकता। यदि सच्चाई और ईमानदारी जैसे घातक रोग की वजह से वह अपना कुर्ता सफेद रखने में सफल होता भी है तो देर से ही सही, अपोजिशन की ओर से उछाले गये किचड़ उसे गंदा कर ही देते हैं। दिग्विजय का करीबी होने के कारण राजमहल के हर छोटे-बड़े समारोह में उसकी उपस्थिति अनिवार्य होती थी, इसीलिये संस्कृति के आगमन के उपलक्ष्य में आयोजित पार्टी में उसका आना तय था। दिग्विजय-सुजाता के साथ-साथ अरुणोदय और चन्द्रोदय भी सपत्निक पण्डाल में ही थे। मेहमानों की आवाभगत के साथ-साथ दिग्विजय क्षणिक अंतराल पर मेन गेट की ओर भी देखते जा रहे थे। पण्डाल में कोई वेस्टर्न धुन चल रही थी।

"मृत्युंजय कहाँ रह गया?" दिग्विजय रिस्टवॉच देखते हुए बड़बड़ाये।

"पॉलिटिशियन लोग हैं भइया। समारोहों में प्रतीक्षा करवाना इनकी आदत में शुमार होता है।" चन्द्रोदय ने कहा।

इससे पहले कि चन्द्रोदय की बात पर दिग्विजय ठहाका लगा पाते उनकी प्रतीक्षा के क्षण थम गए। मेन गेट से कई गाडियां अप्रत्याशित तेजी के साथ अंदर दाखिल हुईं।

"मंत्री साहब आ गये भइया।" अरुणोदय ने उत्साहित स्वर में कहा।

मंत्री महोदय के बी.एम.डब्ल्यू. के आगे और पीछे चार-चार काले मार्शल थे, जिन पर चढ़े ब्लैक शीशों में पण्डाल के ज्यादातर हिस्सों के अक्स छप गये। सारी गाड़ियाँ एक ही स्विच से जुड़ी हों; कुछ इसी अंदाज में रुकीं। सभी मार्शल्स के डोर एक साथ खुले। सुरक्षाकर्मी बाहर निकले और पण्डाल में छिटककर पोजीशन अख्तियार कर लिए। इस गहमागहमी के बीच वहाँ की हलचल थम सी गयी थी। थोड़ी देर पहले चल रही वेस्टर्न धुन भी रोक दी गयी। गाड़ियों की कतार के ठीक बीच में खड़ी बी.एम.डब्ल्यू. के भी डोर खुले। सबसे पहले मंत्री महोदय के चार निजी अंगरक्षक बाहर आये तत्पश्चात मंत्री महोदय के पाँव गाड़ी से बाहर आये। दिग्विजय इत्यादि एक साथ उनकी ओर लपके।

मृत्युंजय के साथ उसकी पत्नी और एकलौता बेटा भी था। मृत्युंजय सांवले वर्ण और औसत कद का पचास की उम्र पार कर चुका प्राणी था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं, जो चेहरा भरा हुआ होने कारण कोटरों में धंसी हुई नजर आती थीं। उसके जिस्म पर मौजूद सफेद कुर्ता तोंद पर से होते हुए घुटनों तक लटक रहा था।

मृत्युंजय की पत्नी का कद नाटा था। उसका रंग गोरा तो था लेकिन नैन-नक्श इस दर्जे के न थे कि उसे 'खूबसूरत' विशेषण से नवाजा जा सकता। चर्बीयुक्त बेडौल जिस्म पर लदे गहने देख कर उसे औरत की बजाय गहनों की चलती-फिरती दुकान कहना ज्यादा मुनासिब था। वैभव नामधारी मृत्युंजय के बेटे का कद अधिक ऊँचा न होते हुए भी कम से कम माँ-बाप से तो ऊँचा ही था। उसके बाल घुंघराले थे। चमड़े की रंगत बाप की रंगत से मेल खाती थी। रंगीनमिजाजी में वह बाप से भी कई हाथ आगे था। निस्तेज आँखों में व्याप्त लालिमा के बीच नशे के डोरे भी नजर आ रहे थे। कदमों की लड़खड़ाहट बता रही थी कि उसने पी रखी था। शायद यही वजह थी, जो मंत्री महोदय के निजी अंगरक्षकों में से एक उसके करीब था ताकि उसके कदमों की लड़खड़ाहट उसके लुढ़कने की वजह न बनने पाए।

"राजमहल में तुम्हारा स्वागत है मृत्युंजय।" दिग्विजय अपनी दोनों बाँहें फैलाये हुए मृत्युंजय की ओर बढ़े और देखते ही देखते वे दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

"माफी चाहता हूँ ठाकुर साहब, थोड़ी सी देर हो गयी।" मृत्युंजय मुँह फाड़ते हुए बाकी लोगों की ओर मुखातिब हुआ।

"हमें कोई ऐतराज नहीं है मंत्री महोदय। हमने ये समझकर संतोष कर लिया कि आप करीबी दोस्त की पार्टी को भूल से किसी स्कूल या कॉलेज का फंक्शन समझ बैठे होंगे।"

अरुणोदय के कथन पर ठहाके गूँजे। मृत्युंजय, अरुणोदय और चन्द्रोदय से भी उतनी ही गर्मजोशी से मिला, जितनी गर्मजोशी से उनके बड़े भाई से मिला था।

"कई अर्से गुजर गये इस आपसी रिश्ते को 'करीबी दोस्ती' का नाम देते हुए। हम कब से इसी दिन का इंतजार कर रहे थे।" मृत्युंजय की बीवी ने खींसे निपोरी।

"इंतज़ार का आलम इधर भी कुछ कम नहीं था भाभी जी।"

"तुम्हारी बिटिया कहीं नजर क्यों नहीं आ रही है?" मृत्युंजय ने चारों ओर निगाहें घुमाते हुए कहा।

"संस्कृति कहाँ रह गयी सुजाता?" दिग्विजय, सुजाता की ओर मुड़ी।

"अभी तैयार हो रही होगी शायद। गाँव की लड़कियाँ उसके साथ हैं।"

"अगर संस्कृति को तैयार करने के लिये तुमने गाँव की लड़कियों को लगाया है तो इस काम में अभी एक घण्टा और लगेगा। उनका ध्यान संस्कृति को तैयार करने में कम और बिलायत के अनुभव सुनने में ज्यादा होगा। तुम जाओ और उसे अपने साथ लेकर आओ।"

"अभी जाती हूँ।"

सुजाता पलटीं और महल की ओर बढ़ चलीं।

“विराजिए मंत्री जी।”

मृत्युंजय बीवी और बच्चे के साथ अपने लिए निर्धारित स्थान पर विराजमान हो गया। थोड़ी ही देर में नौकरों ने मेज को नाश्ते से भर दिया।

“राजनीतिक जीवन कैसा चल रहा है मृत्युंजय?”

“अभी तक पानी शांत है।” मृत्युंजय ने अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ कहा- “विपक्ष की ओर से कंकड़ मारकर कोई हलचल पैदा करने की कोशिश नहीं की गयी है।”

“आगामी चुनाव में आपको विपक्ष की ओर से कड़ी टक्कर मिलने की उम्मीद है। आपकी सरकार की दो-चार खामियों को मुद्दा बनाकर उन्होंने कई दिनों तक विधानसभा की कार्यवाही को ठप्प कर रखा था।”

“विपक्ष की ओर से अगर इतना भी हंगामा न हो तो फिर उसे विपक्ष कौन कहेगा।” मृत्युंजय ने लापरवाह अंदाज में हो-हो किया- “फिलहाल हमारी पार्टी भी चुनावी जीत का चाणक्य कही जाने वाली दिग्गज हस्तियों से भरी पड़ी है। इस बार भी जीत हमारी ही होगी।”

“आमीन।”

उनके बीच चल रही इस प्रकार की बातों का सिलसिला लगभग बीस मिनट बाद तब थमा जब सुजाता, संस्कृति को लेकर आती हुई नजर आयीं। वैभव की निगाहें संस्कृति पर ठहरीं तो फिर वहाँ से हट न सकीं।

उसने गोल्डन बॉर्डर वाली नीली साड़ी पहन रखी थी और उसी के साथ मैच करता स्लीवलेस ब्लाउज भी। चूँकि उसने पहली बार साड़ी पहनी थी, इसलिये संभल कर चलने के प्रयास में नजाकत उसकी चाल में खुद-ब-खुद ही शामिल हो गयी थी। उसकी खूबसूरती वैभव के दिल पर बिजली बनकर गिरी। रोकने के लाख प्रयासों के बाद भी उसके होठों से अस्फुट स्वर में निकल ही पड़ा- “गॉर्जियस।”

संस्कृति ने आते ही सबसे पहले मृत्युंजय और उसकी बीवी के पाँव छुए।

“जीती रहो।” मृत्युंजय के कुछ बोलने से पहले ही उसकी बीवी चहक उठी- “हमें डर था कि कहीं हमारी होने वाली बहु बिलायती संस्कारों में रंग कर भारतीय परम्पराओं को भूल न गयी हो लेकिन भगवान भला करें कि ऐसा नहीं हुआ और बिलायत में रहने के बाद भी इसके अंदर भारतीय संस्कार जीवित हैं।”

संस्कृति पर मानो वज्रपात हुआ। *‘होने वाली बहु।’* इस वाक्यांश ने उसे पाषाणप्रतिमा में तब्दील कर दिया। मृत्युंजय की बीवी के साथ-साथ वहाँ मौजूद हर शख्स के चेहरे पर मुस्कान देख वह सुजाता की ओर पलटी। सुजाता उसकी निगाहों में नजर आते सवालों को भाँप गयीं। उन्होंने मृत्युंजय के बगल में बैठे वैभव, जिसकी निगाहें अब तक एक पल के लिये भी संस्कृति के चेहरे से नहीं हटी थी, की ओर इशारा करते हुए कहा- “ये मंत्री साहब का इकलौता लड़का वैभव है। इसी साल एमबीए पासआउट हुआ है।”

वैभव मानो इसी घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। संस्कृति की ओर से कोई प्रतिक्रिया आती, इससे पहले ही वह तपाक से उठ खड़ा हुआ और अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला- “आपको देख कर खुशी हुई मिस गॉर्जियस। यू ऑर रियली सो हॉट एण्ड सेक्सी।”

बोलते समय उसकी साँसों से आती शराब की दुर्गंध से संस्कृति को ऊबकाई आयी। पहली मुलाकात में ही उसका जेहन वैभव के प्रति घृणा से भर गया। उसे ज़रा भी अनुमान नहीं था कि वैभव सभ्यता से इतनी दूर होगा कि बड़ों के सामने ही उसके लिए ‘हॉट एण्ड सेक्सी’ जैसे घटिया कॉम्प्लिमेण्ट का प्रयोग कर देगा। उसने ऐसे इंसान के साथ हाथ मिलाने के बजाय हाथ जोड़ना बेहतर समझा।

“सेम हियर।” संस्कृति ने हाथ जोड़ा और होंठ फैलाकर मुस्कुराने जैसा भाव प्रकट कर दिया।

वैभव ने झेंपते हुए अपना हाथ वापस खींच लिया जबकि अन्य लोग संस्कृति के इस व्यवहार को नारी सुलभ आचरण समझ कर हँस पड़े।

“हमें इन दोनों को अकेला छोड़ कर किसी और टेबल पर चलना चाहिए, ताकि घोषणा होने तक ये दोनों एक-दूसरे से अच्छे से रु-ब-रु हो जाएँ।”

दिग्विजय के प्रस्ताव पर सभी खड़े हो गये। संस्कृति समझ गयी कि उसके पिता क्या घोषणा करने वाले हैं। *‘पापा मेहमानों के सामने इस लम्पट के साथ मेरी शादी की ऑफिसियल अनाउंसमेंट करेंगे।’* इस विचार के जेहन में आते ही उसने एक बार फिर असहज होकर सुजाता की ओर देखा। सुजाता भी अन्य लोगों की तरह वहाँ से जा रही थीं लेकिन संस्कृति उन पर झपट पड़ी।

“य....ये अचानक हो क्या रहा है मम्मी? क्या डैडी के पास टाइम पास करने के लिये यही एक घटिया जोक था?”

“धीरे बोल। तेरे ग्रेजुएट होने की खुशी में तेरे पापा ने तुझे सरप्राइज गिफ्ट दिया है।”

“ये नमूना? य..ये नमूना मेरा सरप्राइज गिफ्ट है?” हैरान संस्कृति ने वैभव पर हिकारत भरी नजर डाली।

“हाँ, अब जा।”

“लेकिन मम्मी......।”

संस्कृति की बात अनसुनी करते हुए सुजाता भी वहाँ से निकल गयीं। माँ-बेटी के बीच हुए इस संक्षिप्त वार्तालाप को कोई तीसरा न सुन सका। संस्कृति टेबल की ओर मुड़ी, जहाँ अकेला बैठा वैभव किसी बिलौटे की तरह उसी की ओर देख रहा था। संस्कृति ने निचला होंठ दाँतों तले दबाया, आँखें बंद की, गहरी साँस लेकर आने वाली चुनौतियों के लिये खुद को तैयार की और टेबल के पास पहुँची।

“मैंने सुना है कि तुम उस कॉलेज से पढ़कर आयी हो, जहाँ से न्यूटन ने अपनी रिसर्च पूरी की थी।” संस्कृति के बैठते ही वैभव ने कहा।

“हाँ।” ‘तुम’ संबोधन पर संस्कृति फिर से तिलमिलाई लेकिन उस इंसान की ओर से ‘आप’ संबोधन की उम्मीद उसे पहले से ही नहीं थी इसलिए उसने अपनी तिलमिलाहट का असर अपने जवाब पर नहीं पड़ने दिया और आगे कहा- “कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के ट्रिनिटी कॉलेज से। यहीं से स्टीफन हॉकिंग ने भी कॉस्मोलॉजी में रिसर्च की थी।”

“तुमने मुझसे हाथ क्यों नहीं मिलाया?”

“क्योंकि मुझे अजनबियों से शेकहैंड करना पसंद नहीं है।”

“हम अजनबी नहीं हैं। हम दोनों के परिवार वाले एक-दूसरे के बेहद करीब हैं।”

"मैं हर उस शख्स को अजनबी मानती हूँ, जिसे मैं पर्सनली नहीं जानती।"

"हम एक दूसरे को पर्सनली जान सकें, इसलिये हमें अकेला छोड़ा गया है। तुम मेरे बारे में जो कुछ जानना चाहती हो, पूछ सकती हो।"

"मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"कमाल है।" वैभव ने खींसे निपोरी- "हमारी शादी होने वाली है इसलिए एक-दूसरे से जुड़ी बेसिक चीजें तो हमें जाननी ही होंगी।"

"किसने कहा कि हमारी शादी होने वाली है?"

संस्कृति के सख्त लहजे पर वैभव भौचक्क रह गया।

"तो क्या....तो क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारे कैंब्रिज से लौटने की खुशी के नाम पर ये पार्टी इसीलिये ऑर्गेनाइज की गयी है ताकि मेरे और तुम्हारे डैडी, हम दोनों की शादी की ऑफिसियल अनाउंसमेंट कर सकें?"

"हाँ, लग तो मुझे भी ऐसा ही रहा है कि मुझे बताये बिना ही मेरी लाइफ की
एक इम्पोर्टेण्ट डिसिजन ली जा चुकी है लेकिन इतना तो फिक्स है कि इस टॉपिक पर जब तक मैं कुछ नहीं कहूँगी तब तक किसी भी अनाउंसमेंट को ऑफिसियल नहीं कहा जा सकता क्योंकि शादी मुझे करनी है, मेरे डैड को नहीं।"

वैभव आसामान से सीधा जमीन पर आ गिरा। उसे सूझा ही नहीं कि क्या जवाब दे।

"क्या हुआ? साड़ी में लिपटी एक लड़की के मॉडर्न ख्यालों को सुनकर झटका लगा?" संस्कृति, वैभव की मनोदशा पर खुल कर हँसी।

"जब खुद को इतना मॉडर्न समझती हो कि अपने किसी फैसले में पैरेण्ट्स की थिंकिंग को कोई अहमियत नहीं देती हो तो फिर भारतीय आचरण का ये दिखावा किसलिये?" वैभव चिढ़ गया।

"सच कहूँ तो मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैंने बस घरवालों की खुशी के लिए ये साड़ी-वाड़ी पहनी क्योंकि वे चाहते थे कि मैं मेहमानों के सामने भारतीय परम्पराओं में ढली लड़की के रूप में पेश आऊँ।" घरवालों की अनुपस्थिति में संस्कृति को मानो अपनी भड़ास निकालने का पूरा मौका मिल गया था।

"तुम कहना क्या चाहती हो?" वैभव आशंकित नजर आने लगा।

"मैं पापा के फैसले के पक्ष में नहीं हूँ।" संस्कृति ने दो टूक लहजे में कहा।

"यानी कि तुम इस शादी से इनकार कर रही हो?"

"हाँ, क्योंकि मैंने अभी शादी के बारे में कुछ नहीं सोचा है।"

"तो अब सोचो। हमारे देश में लड़कियों की शादी के लिये मिनिमम एज बार अट्ठारह साल है। तुम उस एज बार को क्रॉस कर चुकी हो।"

"जरूरत होने पर जरूर सोचूँगी।"

"तो मैं ये मान लूँ कि तुम अपने पैरेण्ट्स के खिलाफ जाकर हमारे रिश्ते को नामंजूर कर दोगी?"

"बेशक। मुझे तो यहाँ आने तक ये पता भी नहीं था कि मेरे ग्रेजुएट होने की खुशी में डैडी मुझे ऐसा बेहूदा सरप्राइज गिफ्ट देने वाले हैं।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकती।" अब तक नर्म स्वर में बातें करता वैभव अचानक उग्र हो उठा। उसने हाथ के दोनों पंजे मेज पर टिकाए और संस्कृति की आँखों में झाँकते हुए बोला- "मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।"

वैभव की साँसों से आती शराब की दुर्गंध को संस्कृति झेल न सकी। आखिरकार उसने नाक पर रुमाल रख लिया।

"आप बेवकूफ हैं।"

"माइण्ड योर लैंग्वेज।" वैभव इतनी तेज चीखा कि आस-पास के मेहमानों का रुख उन दोनों की ओर हो गया- "मैं कोई तमाशा नहीं करना चाहता।"

"तमाशा मैं भी नहीं करना चाहती हूँ इसीलिये ये बातें अकेले में कह रही हूँ। चाहती तो उसी समय कह सकती थी, जिस समय आपकी माँ ने ओवर एक्साइटमेंट में मुझे होने वाली बहु का दर्जा दे दिया था।"

"यदि तुमने ये रिश्ता ठुकराया तो तुम्हारा बाप तुम्हें जीते जी जमीन में दफन कर देगा।" वैभव की आँखों से चिंगारियां बरसने लगीं। नशे के कारण पहले से ही सूर्ख उसकी आँखें और अधिक सूर्ख हो उठीं।

"आप मेरी कब्र पर दिये जलाने जरूर आना।"

संस्कृति के अब तक के बेबाक अंदाज पर वैभव बुरी तरह तिलमिला उठा था। उसने दूर मौजूद टेबल पर बैठे अपने माँ-बाप को देखा। यहाँ के हालात से बेखबर वे अपने आप में मगन थे।

"तुम जानती नहीं हो कि तुम क्या कर रही हो।"

"मैं बस उस रिश्ते को ना कह रही हूँ, जो मुझे मंजूर नहीं है।"

वैभव गुस्से को निगलने के प्रयास में वह इधर-उधर देखने लगा।

"तो अब मैं चलूँ?" जब खामोशी लम्बी हो गयी तो संस्कृति ने उठने का उपक्रम करते हुए कहा।

"जाते-जाते इतना याद रखना कि मुझे तीखी मिर्च बेहद पसंद है।" वैभव ने दांत पीसते हुए कहा।

"यदि हमारे यहाँ मिर्च की खेती होती होगी तो जाते समय आपकी गाड़ी में दो-चार टोकरे रखवा दूँगी।" संस्कृति ने सामान्य स्वर में मुस्कुराते हुए कहा और कुर्सी से खड़ी हो गयी।

JJJ

"ये सब क्या है मम्मी? मैंने आपको अपना डिसिजन बता दिया है, उसके बाद भी आपने पापा को...।"

"मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है।" संस्कृति की बात काट कर सुजाता ने सख्त स्वर में कहा- "जो फैसला उन्होंने सालों से ले रखा है, उसे तुम्हारी जिद के आगे पल भर में नहीं बदल सकते।"

"क्यों नहीं बदल सकते? क्या उनका फैसला मेरी जिन्दगी से बढ़कर है? आप भी कभी मेरी तरह एक लड़की रही होंगी तो क्या उस समय आपने भी पति के रूप में एक ऐसे वहशी और शराबी की ख्वाहिश की थी, जो किसी लड़की को चाय या कॉफी समझकर उसे 'हॉट' जैसे बेहूदे कॉम्प्लिमेण्ट्स पास करता है?"

"वैभव उतना बुरा नहीं है, जितना तुम समझ रही हो। हमारी जिन्दगी में कई बार ऐसा होता है कि हम पहली नजर में जिससे नफरत करते हैं, आने वाले दिनों में उसी से बेइंतहा प्यार कर बैठते हैं।"

"ऐसा सिर्फ नाइंटीज की हिंदी फिल्मों में होता था मम्मी। हिरोईनें जिसे थप्पड़ मारती थीं, बाद में उसी से चोंच लड़ाने लगती थीं।"

"वैभव में तुम्हें क्या बुराई नजर आयी? वह पोस्टग्रेजुएट है। उसके पिता एक पावरफुल पॉलिटिशियन हैं। आलीशान बंगला है, परिवार भी छोटा है।"

"मुझे उसकी आँखों में वह बात नहीं नजर आयी, जो एक लड़की अपने पति की आँखों में देखना चाहती है। उसकी मुस्कुराहट, घूरने का अंदाज और बॉडी लैंग्वेज; सब-कुछ मुझे थर्ड क्लास का लगा। जिसके साथ पाँच मिनट स्पेण्ड में मुझे वोमिंग जैसी फीलिंग आने लगी, उसके साथ मैं पूरी लाइफ कैसे स्पेण्ड करूँगी? मैं तो ये सोचकर सरप्राइज्ड हूँ कि मुझसे एक बार भी बात किये बगैर पापा ने इस रिश्ते को अपनी ओर से पक्का कैसे कर दिया? एनी वे, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। पापा ने इस टॉपिक पर अभी कोई बिग अनाउंसमेंट नहीं की है। उनके फैसले से अभी तक केवल हमारा और वैभव का परिवार ही वाकिफ है। आप उन्हें कुछ भी बोलने से रोक लीजिए। दो परिवारों की इज्जत नीलाम होने से रह जाएगी।"

"और अगर उन्होंने तुम-दोनों के रिश्ते की घोषणा कर दी तो क्या करोगी तुम?" सुजाता ने आशंकित लहजे में पूछा।

संस्कृति के चेहरे पर दृढ़ता नजर आने लगी। उसने निर्णायक लहजे में कहा- "तो मैं चाहकर भी दो परिवारों की बदनामी को नहीं रोक पाऊँगी। पापा जब इस रिलेशन को लेकर अनाउंसमेंट करेंगे तो उसके तुरंत बाद गेस्ट्स के सामने ही मैं उस रिश्ते को ये कहकर खारिज कर दूँगी कि वैभव मुझे पसंद नहीं है।"

"तो क्या तुम मेहमानों के सामने ये उदाहरण रखोगी कि ठाकुर खानदान की लड़कियाँ अब माँ-बाप की पसंद के बजाय अपने पसंद के लड़कों से शादी करने लगी हैं?"

"हाँ।" संस्कृति ने लापरवाही से कंधे ऊँचकाये- "इसमें गलत क्या है? लोग तो डेली रुटीन की चीजें भी खरिदते वक्त अपने पसंद के रंगों का ध्यान रखते हैं, ऐसे में जब हम लड़कियाँ लाइफ पार्टनर ढूँढते वक्त अपनी पसंद को ऊपर रखेंगी तो इसमें हैरानी की बात क्या है?" इससे पहले कि सुजाता कुछ बोलतीं, स्टेज पर मौजूद दिग्विजय की आवाज़ माइक पर गूँज उठी- "लेडिज एण्ड जेण्टलमैन, शायद मुझे आपको ये बताने की जरूरत नहीं कि संस्कृति अपने परदादा के बाद कैंब्रिज से ग्रेजुएट होने वाली ठाकुर खानदान की दूसरी शख्सियत बन गयी है।"

दिग्विजय के खामोश होते ही पण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। चूँकि अब संस्कृति लोगों की निगाहों का केन्द्रबिन्दु बन गयी थी, इसलिये माँ-बेटी के बीच चल रही महत्वपूर्ण बातचीत का अंत हो गया। तालियों की गड़गड़ाहट तब तक नहीं थमी, जब तक दिग्विजय ने दाहिना हाथ उठाकर लोगों को शांत होने का इशारा नहीं किया। तालियों का स्वर शांत होने के बाद दिग्विजय ने माइक सम्भाला और आगे कहा- "विश्वस्तरीय संस्थान से सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई पूरी करके संस्कृति ने न सिर्फ ठाकुर खानदान को बल्कि पूरे शंकरगढ़ को इस बात के लिये फख्र करने का मौका दिया है कि गाँवों में बसने वाले भी विदेशों में जाकर अपनी योग्यता का परचम लहरा सकते हैं। संस्कृति की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के उपलक्ष्य में आज मैं उसे ऐसा उपहार देने वाला हूँ, जिसे पाने के बाद उसका सारा जीवन इतराते हुए गुजरेगा। आप सभी ये जानते हैं कि एक बाप की ओर से बेटी के लिये सबसे कीमती उपहार एक योग्य जीवनसाथी से बेहतर और कुछ नहीं होता है, इसलिये आज इस महफिल में मैं ये घोषणा करने वाला हूँ कि संस्कृति के जीवन की डोर किस लड़के के जीवन से बंधेगी।"

एक ओर पण्डाल में मौजूद प्रत्येक प्राणी रोमांचित हो उठा तो वहीं दूसरी ओर संस्कृति की चेतावनी का ख्याल कर सुजाता बुरी तरह सहम उठीं। अब इतना वक्त नहीं था कि वे स्टेज पर जाकर पति को बेटी के फैसले से अवगत करा पातीं। भावी अनिष्ट को टालने के लिये उन्होंने आँखें बंद कर ली और मन ही मन भगवती की स्तुति करने लगी। ठीक इसी क्षण दिग्विजय की आवाज़ दोबारा गूँजी- "लेकिन घोषणा करने से पहले मैं संस्कृति को अपने पास बुलाना चाहता हूँ।"

सुजाता ने चौंककर आँखें खोल दी। उनकी स्तुति अधूरी रह गयी। बगल में देखने पर उन्होंने पाया कि संस्कृति अब अपनी जगह पर नहीं थी, वह आगे बढ़ चुकी थी। उसके कदम भले ही स्टेज की ओर बढ़ रहे थे लेकिन निगाहें सुजाता पर ही ठहरी हुई थीं, मानो आँखों के जरिये जता रही थीं कि दो खानदानों की साख का तमाशा बनने की वजह वही हैं। सुजाता जड़वत् रह गयीं। उनकी हिम्मत नहीं हुई कि स्टेज पर जा सकें। बेटी के एक फैसले ने उन्हें दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया था।

माँ के अंतर्द्वंद्व की परवाह न करते हुए संस्कृति स्टेज पर पहुँची, जहाँ दिग्विजय के साथ-साथ मृत्युंजय, उसकी पत्नी और वैभव भी थे। संस्कृति ने पहले से ही सोच रखा था कि उसे क्या प्रतिक्रिया देनी है।

संस्कृति के फैसले से अनभिज्ञ दिग्विजय ने उसे वात्सल्यपूर्वक अपने वक्षस्थल से लगाया और दूसरे हाथ में माइक सम्भालते हुए बोले- "हम अपनी बेटी की शादी राज्य के ऊर्जामंत्री मृत्युंजय सिंह ठाकुर के सुपुत्र वैभव सिंह ठाकुर के साथ करने की आधिकारिक घोषणा करते हैं।"

पण्डाल में एक बार फिर तालियों की बाढ़ आ गयी लेकिन इस बार दिग्विजय ने तालियों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

"साइलेन्स प्लीज।"

पण्डाल में अचानक संस्कृति की आवाज़ गूँजते ही तालियों का शोर अप्रत्याशित ढंग से बंद हो गया। लोगों ने देखा कि संस्कृति माइक अपने हाथ में ले चुकी थी। कुछ बोलने से पहले उसने दिग्विजय की ओर देखा। उसकी हरकत पर दिग्विजय, मृत्युंजय और उसकी बीवी सकते में आ गये थे जबकि वैभव के चेहरे पर मौजूद भाव बता रहे थे कि वह संस्कृति की हरकत का आशय भाँप चुका था। स्टेज के नीचे मौजूद सुजाता का कलेजा हलक में आ फँसा।

"हमारी लाइफ में कुछ डिसीजन्स ऐसे होते हैं, जिन्हें हम कभी-कभी अपने पैरेन्ट्स से कहीं ज्यादा बेहतर ढंग से ले सकते हैं।" संस्कृति ने माइक को दोनों हाथों से थामकर होठों तक ले जाते हुए कहा- "शादी उन्हीं डिसीजन्स में से एक है।"

पण्डाल में उपस्थित प्रत्येक शख्स अवाक् रह गया। दिग्विजय को यकीन ही नहीं हुआ कि जिस बेटी की उपलब्धियों पर उन्होंने थोड़ी देर पहले फख्र जताया था, उसी बेटी ने लोगों को चौंका दिया है। उनकी निगाहें सुजाता को तलाशने लगीं लेकिन सुजाता उन्हें कहीं नहीं नजर आयीं। मौके की नजाकत को भाँपते हुए उन्होंने वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा था। धीरे-धीरे मेहमानों के बीच खुसर-फुसर शुरु हो गयी।

“मैं ये बताते हुए जरा भी गिल्टी नहीं फील नहीं कर रही हूँ कि पापा जिसे मेरा लाइफपार्टनर चुनना चाहते है, उसे मैं इस काबिल नहीं समझती कि वह मेरा पति बन सके।”

मेहमानों की खुसर-फुसर को ब्रेक लग गया। ऐसा लगा जैसे किसी थ्रिलर फिल्म का क्लाइमेक्स अभी-अभी समाप्त हुआ हो। माहौल में व्याप्त हुए तनाव के बीच किसी में इतना साहस नहीं हुआ कि वह कोई ध्वनि उत्पन्न कर सके। दिग्विजय के चेहरे पर हैरत और अविश्वास के साथ-साथ क्रोध भी था, जो गुजरने वाले हर सेकेण्ड के साथ गहराता चला गया।

“मैं लोगों की प्राइवेसी की रेस्पेक्ट करती हूँ, इसलिये मिस्टर वैभव की उन कमियों को यहाँ नहीं बताना चाहती, जिनके कारण मैंने इन्हें खुद के लिये इलिजिबल नहीं समझा।” कहने के बाद संस्कृति ने माइक छोड़ दिया और लम्बे-लम्बे डग भरते हुए स्टेज से नीचे उतर गयी।

दिग्विजय कुछ भी बोल पाने की स्थिति में नहीं रहे। बोलते भी क्या? संस्कृति तो उनके मुँह पर कालिख पोतकर स्टेज से उतर चुकी थी। गुस्से के कारण मृत्युंजय की हालत खस्ता थी। वह सिर्फ संस्कृति पर ही नहीं बल्कि दिग्विजय पर भी ये सोचकर भड़का हुआ था कि जब खुद की बेटी पर उसका अख्तियार नहीं था तो उसने उसे स्टेज पर बुलाकर सरेआम जलील क्यों किया? मृत्युंजय की गोल-मटोल बीवी के हाथों के भी तोते उड़े हुए थे, उसे अब तक यकीन नहीं हो पाया था कि नालायक बेटे के लिये ‘हाई एजुकेटेड’ बहु लाने का उसका सपना दो मिनट पहले धराशायी हो चुका है। वैभव की हालत तो ऐसी थी जैसे लोगों के सामने किसी शरारती बच्चे ने उसकी पतलून खींच दी हो।

N

2

P

साहिल ने फ्लैट का दरवाजा अंदर की ओर धकेला। अंदर से खुला होने के कारण दरवाजा खुलता ही चला गया। फ्लैट में दाखिल होने के बाद उसने हाथ में मौजूद सब्जियों का थैला टेबल पर रखा और उस लड़के को लक्ष्य करके कहा, जो सोफे पर बैठा किसी पुरानी एल्बम की तस्वीरें देख रहा था- "हाउ वाज द डे यश?"

"फाइन।" लड़के ने एल्बम से नजरें उठाए बगैर कहा।

"तुम्हारे पसंद की सब्जी लाया हूँ।"

"थैंक यू।" यश ने सब्जी के थैले पर नजर डाले बगैर कहा।

वॉशरूम जाने से पहले साहिल ने उसे गौर से देखा। तस्वीरों को देखने का उसका अंदाज बता रहा था कि वह उनके जरिये यादों की बिखरी हुई कड़ियाँ जोड़ने की कोशिश कर रहा था। साहिल के चेहरे पर अनगिनत भाव आये और चले गये। उसके वाशरूम जाने के बाद यश ने टेबल पर पड़े सब्जियों के थैले को देखा। थैले में आलू, टमाटर आदि के अलावा कुछ बैंगन भी थे।

लगभग बीस मिनट बाद साहिल बाहर आया। रेफ्रीजरेटर से कोल्डड्रिंक का बॉटल निकाला और काँच के दो गिलास के साथ यश के पास आकर बैठ गया। कोल्डड्रिंक को गिलास में पलटने के दौरान उसकी निगाहें यश पर ही ठहरी हुई थीं लेकिन उसके वॉशरूम से आकर सोफे पर बैठने के दौरान यश ने एक भी बार उसकी ओर नहीं देखा था।

"ये मम्मी-पापा हैं।" साहिल ने एक तस्वीर पर उँगली रखते हुए कहा। उसकी टिप्पणी के बाद यश ने उस फोटो को थोड़े गौर से देखा।

"य....यही मम्मी-पापा हैं?"

"हाँ, तुम गौर से देखोगे तो पाओगे कि तुम्हारी आँखों का रंग और होठों की शेप बिल्कुल मम्मी के जैसी हैं। मैंने तो माँ-बाप से अनुवांशिक विरासत के रुप में केवल पापा का चौड़ा माथा और लम्बी नाक ही पायी है।"

यश मुस्कुराया। साहिल के कथन की सच्चाई परखने के लिये उसने पहले उसके चेहरे पर दृष्टिपात किया, फिर तस्वीर पर, जिसमें एक जोड़ा गार्डन के झूले पर बैठा मुस्कुरा रहा था।

"कोल्डड्रिंक लो।" साहिल ने गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

यश ने गिलास थामने के बजाय चेहरे पर नासमझी का भाव लिये हुए उसकी
ओर देखा।

"माउण्टेन ड्यू, तुम्हारी फेवरिट कोल्डड्रिंक। डर के आगे जीत है, भूल गए?"

यश ने एल्बम बंद करके सोफे पर रखने के बाद गिलास थाम लिया।

"चीयर्स नहीं करोगे?"

"ओह....या....चीयर्स।"

काँच के टकराने की ध्वनि समाप्त होते ही दोनों ने गिलास अपने-अपने होठों से लगा लिया।

"अरे हाँ।" साहिल चौंका- "एक बात तो मैं तुम्हें बताना ही भूल गया। जस्ट अ मिनट।"

साहिल ने गिलास सेंटर टेबल पर रखा और जीन्स की साइड पॉकेट से वैलेट निकाला। थोड़ी देर बाद उसके हाथ में दो मूवी टिकट्स थे।

"ये 'द नन' के मैटिनी शो के टिकट्स हैं। तुम हॉलीवुड की हॉरर फिल्मों के शौकीन हो, स्पेशियली 'द कांजरिंग यूनिवर्स' की फिल्मों के; इसीलिये मैं ले आया। यह फिल्म द कांजरिंग सीरीज की अब तक आयी फिल्मों की प्रीक्वल है। इसमें वैलक की ओरिजिन के बारे में बताया गया है।"

"ये कितनी अजीब बात है न भइया कि मेरी पसंद के बारे में मुझसे ज्यादा आप जानते हैं। जिन सब्जियों को आप मेरी पसंद का बता रहे हैं, मुझे खुद नहीं मालूम कि उन्हें मैंने आखिरी बार कब खाया था। जिस जॉनर की फिल्मों को आप मेरी पसंदीदा फिल्में बता रहे हैं, उस जॉनर की किसी फिल्म का नाम तक मुझे नहीं मालूम।" यश ने झुंझलाकर गिलास सेंटर टेबल पर रख दिया- "अतीत को खोकर जीना कितना मुश्किल होता है, ये मुझे आज समझ में आ रहा है। जेहन में अब न तो किसी दोस्त की पहचान बाकी रह गयी है और न ही किसी दुश्मन की। चारों ओर फैली धुंध भरी वीरानी में अपनी पहचान तलाशने के लिए मैं जितनी बार भटकता हूँ, उतनी बार ठोकर खाकर गिर पड़ता हूँ। करोड़ों की भीड़ में खुद को एक ऐसे इंसान के रूप में अकेला पाता हूँ, जो कभी तस्वीरों के जरिये माँ-बाप को पहचानने की कोशिश करता है तो कभी एक अनजान शख्स के जरिये अपनी पसंद-नापसंद से रु-ब-रु होता है।"

"नहीं यश।" साहिल ने भी गिलास सेंटर टेबल पर रख दिया और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा- "मैं तुम्हारे लिए कोई अनजान शख्स नहीं हूँ। तुम्हारा भाई, तुम्हारा सगा हूँ मैं। हमने....हमने साथ में बचपन बिताया है यार।"

"जो अपनी पहचान से महरूम हो, जो खुद के वजूद से अनजान हो और जो अपने आप को भी सगा नहीं कह सकता, वह किसी और को सगा कैसे मान सकता है?"

"तुम्हारी यादें वापस आएंगी। मैं वापस लाऊँगा उन्हें।"

साहिल की ऐसी सांत्वनायें यश पहले भी सुन चुका था और अब फिर से नहीं सुनना चाहता था, इसीलिये उसने बगैर कुछ कहे चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। साहिल ने उसकी आँखों में भर आये पानी की पहचान आँसुओं के रुप में की। दोनों में से किसी ने सेंटर टेबल पर रखे गिलास को दोबारा हाथ नहीं लगाया। काफी देर की खामोशी के बाद यश अपनी जगह से उठा।

"कहाँ जा रहे हो?" साहिल ने पूछा।

"टैरेस पर। शायद शाम की खूबसूरती मेरे दर्द और बेचैनी को कम कर सके।"

कहने के बाद यश बाहर निकल गया। उसके जाने के बाद साहिल थोड़ी देर तक ख्यालों में गुम रहा, फिर उसने 'द नन' की टिकट को वापस वैलेट में रखा और स्टडी टेबल के पास पहुँचा। लैपटॉप का पॉवर बटन ऑन किया। सिस्टम के स्टार्ट होने तक उसने टेबल पर बिखरी बुक्स और नोटबुक्स को किनारे कर दिया।

लैपटॉप स्टार्ट होने के बाद उसने डेक्स्टॉप पर मौजूद क्रोम ब्राउजर के आइकन पर क्लिक किया। गूगल के सर्च बॉक्स में हिन्दी इनपुट टूल की सहायता से 'ब्रह्मराक्षस' टाइप किया और एण्टर पर क्लिक करने के बाद सर्च रिजल्ट की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में मॉनीटर पर ब्रह्मराक्षस से जुड़ी जानकारियाँ रखने वाले ब्लॉग्स और वेबसाइट्स की सूची नजर आने लगी। साहिल ने इत्मीनान से उस सूची का अवलोकन किया और फिर एक यू.आर.एल. पर क्लिक कर दिया। यू.आर.एल. के वेबपेज पर ब्रह्मराक्षस के विषय में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध थी। लगभग बीस मिनट तक उसने उस वेबपेज पर मौजूद कंटेंट को पढ़ा और फिर एक ब्लैंक पेपर पर उनका सारांश लिखने लगा।

'हिन्दू धर्म में वर्णित चौरासी लाख योनीयों में से एक योनी ब्रह्मराक्षस की होती है। इनमें देवताओं और राक्षसों के गुण समान रूप से पाये जाते हैं। पीपल के पुराने पेड़ और वीरान पड़ी हवेलियों में इनका वास होता है। ब्रह्मराक्षस योनी को प्रायः वे ब्राह्मण प्राप्त होते हैं, जो दुराचारी होते हैं और अकाल मृत्यु के कारण शरीर त्यागते हैं।

अब तक ज्ञात सभी पैशाचिक शक्तियों में ब्रह्मराक्षस को सर्वोच्च पैशाचिक शक्ति माना गया है। इन्हें सामान्य तांत्रिक अनुष्ठानों से काबू में नहीं किया जा सकता है। ये दिखने में सामान्य मनुष्यों की भांति होते हैं किंतु इनकी शारीरिक भाषा और चेहरे के हाव-भाव डरावने होते हैं। रक्त इतना सर्वाधिक पसंदीदा पेय होता है। शिकार के दौरान ये पशु का रूप धारण कर लेते हैं। ज्यादातर ये भेड़िया-मानव का रूप धारण करते हैं। श्रीमद्भागवत गीता के श्लोक और स्वास्तिक चिन्ह इनकी सबसे बड़ी कमजोरी होती है, इसलिये इन्हें काबू में करने वाले अनुष्ठानों में गीता के श्लोक और स्वास्तिक चिन्हों को महत्ता दी जाती है। मध्य भारत और दक्षिणी भारत में ब्रह्मराक्षस के मंदिर पाये जाते हैं, जिनमें केरल के कोट्टायम जिले का ब्रह्मराक्षस-मंदिर सर्वाधिक प्रसिध्द है।'

ब्लैंक पेपर पर उपर्युक्त सारांश लिखने के बाद साहिल ने वेबपेज को क्लोज कर दिया। उसका चेहरा तनावग्रस्त हो उठा था। उसने माथा थामकर कुछ देर तक चिंतन-मनन किया, फिर खड़ा हो गया।

JJJ

चटाक।

दुबली-पतली संस्कृति, दिग्विजय के तेज थप्पड़ का आवेग सह न सकी और लहराकर सोफे पर जा गिरी। दिग्विजय के भीषण क्रोध के आगे परिवार का हर सदस्य सहम कर रह गया था। संस्कृति एक बार सोफे पर पड़ी तो पड़ी ही रह गयी। उसने उठने का प्रयास नहीं किया और पुश्त पर माथा टिकाकर सिसकने लगी। सुजाता बेटी की ओर बढ़ने को उद्यत हुई ही थीं कि दिग्विजय दहाड़ उठे- "वहीं ठहर जाओ सुजाता। किसी भी प्रकार की ममता जताने की कोई जरूरत नहीं है। हमारे थप्पड़ की चोट, उस थप्पड़ की चोट से अधिक नहीं होगी, जो इसने भरी महफिल में हमारे सम्मान के गाल पर मारा है। चार दिन तक अँधेरी कोठरी में बंद रहेगी तो इसके अंदर से वह बिलायती संस्कार खुद-ब-खुद बाहर निकल जाएगा, जो महज कुछ सालों में ही इसकी रग-रग में दाखिल हो चुका है।"

कोई कुछ नहीं बोला। मेहमानों के सामने हुए अपमान की तिलमिलाहट दिग्विजय के चेहरे के जर्रे-जर्रे से नुमाया हो रही थी। क्रोध की अधिकता के कारण उनके चेहरे का गौर वर्ण रक्तिम पड़ गया था और साँसों की गति हाँफने के स्तर तक तेज हो चुकी थी। उनके शरीर का कम्पन देख कर कोई भी इस गफलत का शिकार हो सकता था कि वे जूड़ी के मरीज हैं।

"वर्षों के कमाये हुए मेरे शान और रुतबे को इस लड़की ने पल भर में ही नेस्तनाबूंद कर दिया। ठाकुर खानदान के माथे पर इसने कलंक का जो टिका लगाया है, वह काला टीका इसके आँसुओं से नहीं धुल सकता।" क्रोध के कारण दिग्विजय की वाणी लड़खड़ायी किंतु शीघ्र ही संयत होकर उन्होंने आगे कहा- "अगर तुम्हारी ये जिद है कि तुम मृत्यंजय के बेटे से शादी नहीं करोगी तो हमारी भी ये जिद सुन लो कि राजमहल की दहलीज से तुम्हारी डोली उठेगी तो सिर्फ मृत्युंजय सिंह ठाकुर की दहलीज तक जाने के लिये।"

दिग्विजय का फैसला सुन संस्कृति ने आँसुओं से भीगा चेहरा ऊपर उठाया, और हिचकियों के बीच कहा- "मेरी जिद के आगे आपकी जिद हार जाएगी। मैं मरना कुबूल कर लूँगी लेकिन उस लड़के से शादी करना कभी नहीं कुबूल करूँगी, जिसकी आँखों में मैंने खुद के लिये वहशीपन देखा है। आप अपना पॉलिटिकल कैरियर संवारने के चक्कर में अपनी बेटी की जिन्दगी एक हैवान के साथ जोड़ना चाहते हैं। आप मेरी लाइफ की इतनी इम्पोर्टेन्ट डिसिजन बिना मुझे बताये कैसे ले सकते हैं? क्या मुझे इतना भी अधिकार नहीं कि मैं उस शख्स को अपनी कसौटी पर परख सकूँ, जिसके साथ मुझे जिन्दगी गुजारनी है?"

"ये तुम नहीं तुम्हारी बिलायती सोच बोल रही है। आधुनिक बनने की अंधी दौड़ में आज की युवा पीढ़ी इस कदर गुमराह हो चुकी है कि माँ-बाप की पसंद को अपने पैमाने पर परखने की माँग करने लगी है। मृत्युंजय के बेटे को इस परिवार का हर सदस्य तुम्हारे लिये योग्य मानता है।"

"हर फैमिली मेम्बर नहीं पापा। सिर्फ आपके जिद ने वैभव को मेरे लिये परफैक्ट माना है। कोई भी फैमिली मेम्बर ये जानते हुए भी कि वह एक अय्याश पॉलिटिशियन का शराबी और निकम्मा बेटा है, नो वन कैन एक्सेप्ट हिम एज माय हसबैंड।"

"इस बेवकूफ लड़की की सोच से कितने लोग सहमत हैं?" दिग्विजय ड्राइंग रुम में मौजूद सदस्यों को लक्ष्य करके चिल्ला उठे- "कितने लोग हैं, जो ये मानते हैं कि हम अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिये इसे एक हैवान के साथ बाँधना चाहते हैं?"

सभी सदस्यों ने नजरें झुका ली। वे दिग्विजय के भीषण क्रोध के दावानल से भयभीत थे या वास्तव में उनके फैसले से सहमत थे; कहना मुश्किल था।

"देखा तुमने? हर कोई ये मान रहा है कि हमारा फैसला तुम्हारे हित में है।"

संस्कृति बगैर कुछ कहे सिसकती रही।

"हम कल कुलगुरु को विवाह का मुहूर्त निकलवाने के लिये राजमहल बुला रहे हैं। हमें उम्मीद है कि तब तक तुम हमारे फैसले को स्वीकार कर चुकी होगी।"

कहने के बाद दिग्विजय वहाँ एक पल भी नहीं ठहरे।

JJJ

वह कमरा राजमहल का स्टोररूम था, जिसमें संस्कृति को बंद किया गया था क्योंकि दिग्विजय को विश्वास था कि यदि उसे चार दिन तक अँधेरे कमरे में बंद कर दिया जाएगा तो वह वैभव से शादी न करने की जिद छोड़ देगी।

रोशनी के नाम पर कमरे में केवल एक मोमबत्ती जल रही था, जिसकी लौ रोशनदान से आती हवाओं के कारण कभी इधर-उधर लहरा रही थी तो कभी बुझने के कगार पर पहुँच जा रही थी। कमरे का आधा से अधिक हिस्सा उन चीजों से भरा पड़ा था, जो घर की मरम्मत और साफ-सफाई के दौरान बतौर कबाड़ निकलती हैं। बाकी बचे हिस्से के एक कोने में संस्कृति

सिमटी हुई थी। उसके चेहरे पर शिकन या अफसोस के बजाय दृढ़ता के भाव थे। उसने मन ही मन ये फैसला कर लिया था कि वैभव जैसे लम्पट से शादी करने से बेहतर यही था कि वह जिन्दगी भर इस काल-कोठरी में पड़ी रहे।

थोड़ी देर बाद वह ऊबकर खड़ी हो गयी और खिड़की के पास पहुँची। खिड़की के पट खुलते ही सर्द हवा का झोंका उसके जिस्म से टकराया। उमस से राहत पाने के बाद उसने आसमान की ओर देखा। रात पूनम की थी। पूरे आकार का चाँद, आसमान में तैर रहे सफ़ेद बादलों के कतरों के बीच अठखेलियाँ कर रहा था। हालाँकि कमरे में हवा आने के बाद मोमबत्ती बुझ गयी थी लेकिन कमरे में दाखिल होने वाली धवल चाँदनी ने संस्कृति को उसकी कमी नहीं महसूस होने दी।

स्टोररूम राजमहल के भूतल पर था। खिड़की के सामने से ईंटों की एक पतली सड़क गुजरती थी, जो गाँव के विभिन्न मुहल्लों से होते हुए बाहर खेतों की ओर चली जाती थी। संस्कृति कुछ देर तक ठंडी हवा खाने के ध्येय से खिड़की की ग्रिल पकड़कर खड़ी हो गयी। रात नित्य की अपेक्षा थोड़ी डरावनी थी। वातावरण में जब पत्तों की सरसराहट गूँजती थी तो भ्रम होता था कि बादलों से भरी खामोश रात किसी की मौत पर सिसक रही है। आसामान से तारे नदारद थे। जब बादलों का कोई टुकड़ा चाँद को ढांप लेता था तो धवल चाँदनी में नहायी हुई पूर्णिमा की रात अमावस की स्याह रात में तब्दील हो जाती थी। कुछ रात का असर था तो कुछ कभी न खोले जाने वाले कमरे में अकेले मौजूद होने का एहसास, जो संस्कृति पर अब धीरे-धीरे खौफ हावी होने लगा।

उसे स्टोररूम में बंद हुए चार घण्टे से ऊपर हो गये थे। इस बीच कोई उसकी दशा देखने नहीं आया था। एक-दो बार दरवाजे पर हुई आहट से संस्कृति ने अनुमान लगाया था कि सुजाता दरवाजे की झिर्री इत्यादि से झाँककर उसकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त होने आयी थीं।

आखिरकार सुजाता, पत्नी और माँ होने से पहले एक स्त्री थीं। वह जानती थीं कि संस्कृति का फैसला बिल्कुल सही था लेकिन एक हाई प्रोफाइल पॉलिटिशियन से सम्बन्ध बनाने की महत्वाकांक्षा ने दिग्विजय को इस कदर अंधा कर दिया था कि उन्होंने वैभव के सारे अवगुणों को नजरअंदाज कर दिया था। जब-जब सुजाता वैभव की कमियों को गिनाते हुए उसे संस्कृति के लिये अयोग्य साबित करने की कोशिश की थी तब-तब दिग्विजय ने यही कहा था कि शादी के बाद एक लड़की के सारे अरमान आरामदायक जीवन जीने की इच्छा के इर्द-गिर्द ही सिमट कर रह जाते हैं। वैभव भले ही अवगुणों की खान हो, लेकिन संस्कृति को एक आरामदायक जीवन तो मुहैया करा ही सकता है।

सुजाता जानती थीं कि जिस खानदान में वह ब्याह कर लायी गयी थीं, उस खानदान में शुरु से ही स्त्री को 'सजावट की वस्तु' से अधिक नहीं समझा गया था। इसी कारण वे स्त्री की भावनाओं, संवेदनाओं इत्यादि का हवाला देकर बहस को अधिक लम्बा नहीं खींच पाती थीं। आज जब खुद संस्कृति ने वैभव को सरेआम इनकार कर दिया था, तो कहीं न कहीं उनके अंदर बैठी स्त्री आह्लादित हो उठी थी लेकिन उस इंसान की पत्नी होने के कारण, जो अपनी बेटी के वजह से भरी महफिल में जलील हो गया था, वह चाह कर भी स्त्रित्व की खुशी में शामिल नहीं हो सकीं।

संस्कृति समझदार थी और माँ के अंतर्द्वंद्व से वाकिफ भी थी लेकिन साथ ही साथ ये भी समझती थी कि अगर आज उसने माँ के अंतर्द्वंद्व पर तरस खाकर, पिता के खानदानी साख जैसे 'मनोरोग' के आगे घुटने टेककर जीवन के साथ समझौता कर लिया तो उसे ताउम्र अपने अरमानों का गला घोंटकर जिन्दगी को घसीटना पड़ जाएगा इसलिये उसने परिणाम की परवाह न करते हुए प्रतिरोध करने की ठान ली थी।

उसने रिस्टवॉच पर नजर डाली। दस बजकर लगभग सात मिनट हो रहे थे। उसे अब खिड़की के पास खड़े हुए पंद्रह मिनट से अधिक हो चले थे। वह पलटने ही वाली थी कि अचानक हवाओं का वेग इस सीमा तक तीव्र हो गया कि स्टोररूम में मौजूद कबाड़ खड़खड़ा उठे। वातावरण में कई कुत्तों के रोने का समवेत स्वर गूँजा और संस्कृति का कलेजा हलक में आ फंसा। कुत्तों का रोना और मौसम के रुख में आकस्मिक परिवर्तन उसे सामान्य नहीं लगा। उसने खिड़की बंद करने के उद्देश्य से पल्लों को हाथ लगाया ही था कि सरसराती हवाएं उसके कान में कुछ कह गयीं।

"मा.....या.....।"

वह बुरी तरह चौंकी। बिजली सी तेजी के साथ पीछे पलटी लेकिन पीछे कुछ नहीं था। हवा के कारण दिवारों पर टंगी पुरानी तस्वीरों और कबाड़ों के हिलने की आवाजें जरूर आ रही थीं लेकिन वे इस श्रेणी की नहीं थीं कि उसे स्पष्ट रुप से 'माया' शब्द में तब्दील होकर सुनाई दे जाएं। वह आवाज़ ऐसी थी, जैसे किसी ने पीछे खड़े होकर उसके कानों में फुसफुसाकर अपनी मौजूदगी का एहसास कराया हो। संस्कृति ने सीने पर हाथ रखकर इत्मीनान की साँस ली। इस घटना को वहम का नाम देकर जेहन से बाहर किया और दोबारा खिड़की की ओर मुड़ी। कुत्तों का रोना अब तेज हो उठा था। वातावरण के अचानक बदले रूख ने उसकी मानसिकता पर भी प्रभाव डाला। थोड़ी देर पहले जो चाँद सामान्य नजर आ रहा था, वही चाँद अब उसे डरावना लगने लगा।

"अ...अचानक..अचानक ये सब क्या होने लगा?" उसके होंठ थरथराये।

"मा......या.....।" एक बार फिर वही फुसफुसाहट।

"क.....कौन है....?"

प्रत्युत्तर में हवा का एक तेज झोंका कमरे में प्रविष्ट हुआ और स्टोररूम के कबाड़ यूँ खड़खड़ा उठे, मानो उसकी अवस्था पर अट्ठहास कर रहे हों। संस्कृति का जिस्म बर्फ की मानिंद सर्द पड़ने लगा। उसका शक यकीन में तब्दील हो गया। कोई तो जरूर था स्टोररूम में, जिसने उसे अपनी मौजूदगी का एहसास कराया था। लेकिन कहाँ? कमरे का ज्यादातर हिस्सा टूटे हुए फर्नीचर्स तथा धूल-धूसरित कबाड़ से भरा पड़ा था और खाली हिस्से में तो वह खुद थी।

"क....कौन है? ये कैसा बेहूदा मजाक है?" संस्कृति डर से हकला उठी।

"मा....या....।"

आवाज़ एक बार फिर आयी लेकिन इस बार संस्कृति के होठों से शब्द नहीं फिसल सके। भय से थरथराते हुए उसने प्रत्येक कोने का मुआयना किया लेकिन आवाज़ का उद्गम तलाशने में विफल रही। फुसफुसाहट किसी कोने से न आकर इस प्रकार उसके कानों में पड़ रही थी, जैसे फुसफुसाने वाला ठीक उसके पीछे खड़ा हो।

"तुम....हमारी.....हो......सिर्फ हमारी।"

संस्कृति उछल पड़ी। इस बार फुसफुसाहट उस कोने से आयी थी, जहाँ पुराने और टूटे हुए फर्नीचर्स का ढेर लगा हुआ था। वह अपना कलेजा मजबूत रखते हुए, थरथराते कदमों के साथ उस कोने की ओर बढ़ी। लकड़ी के टुकड़ों का कम्पन देखकर लग रहा था जैसे ढेर के नीचे दबा हुआ कोई प्राणी बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हो। संस्कृति ने हाथ आगे

बढ़ाकर उन्हें छुआ। परिणाम चौंका देने वाला था। लकड़ियों का कम्पन आश्चर्यजनक ढंग से थम गया। नीचे से इस प्रकार साँस लेने की आवाज़ आयी, जैसे दर्द से तड़प रहे किसी इंसान के जख्मों पर मरहम लगा दिया गया हो।

अनिश्चितताओं से घिरी संस्कृति ने लकड़ी के टुकड़ों को हिलाया। साँसों का स्वर तेज हुआ। दोबारा हिलाया, इस बार भी साँसों के स्वर में वृध्दि हुई। संस्कृति के मन-मस्तिष्क में खौफ और कौतुहल का द्वंद्व शुरु हो गया। अंततः जीत कौतुहल की हुई और उसने एक-एक करके लकड़ी के टुकड़ों को हटाना शुरु कर दिया। उन पर जमी धूल की मोटी परतें हवा में तैरने लगीं लेकिन संस्कृति ने अपना काम जारी रखा। जैसे-जैसे लकड़ी के टुकड़े हटते गये, वैसे-वैसे अज्ञात साँसों की ध्वनि बढ़ती गयी और उसी अनुपात में संस्कृति की साँसें भी रफ़्तार पकड़ती गयीं। लगभग पन्द्रह मिनट बाद स्टोररूम का वह कोना खाली हो गया और ये सच सामने आया कि हाँफने का स्वर लकड़ियों के नीचे से नहीं बल्कि फ़र्श के नीचे से आ रहा था।

“हाउ इज इट पॉसिबल?” संस्कृति दंग रह गयी- “फ़र्श के नीचे कौन हो सकता है?”

संस्कृति का जेहन उपर्युक्त सवाल के जवाब में कोई तर्क प्रस्तुत करता, इससे पहले ही दरवाजे पर दस्तक पड़ी। दस्तक पड़ते ही हाँफने का स्वर आश्चर्यजनक रूप से बंद हो गया।

“संस्कृति!” बाहर से सुजाता ने पुकारा लेकिन संस्कृति को वह पुकार नहीं सुनाई पड़ी। वह आँखों में खौफ लिये हुए फ़र्श के उसी हिस्से को घूर रही थी, जिसे देखकर अब ये अंदाजा लगाना मुश्किल था कि उसके नीचे से थोड़ी देर पहले किसी के हाँफने की आवाज़ आ रही थी।

“संस्कृति।” दस्तक के साथ सुजाता की आवाज़ दोबारा आयी।

इस बार संस्कृति ने चौंककर दरवाजे की ओर देखा। *‘दरवाजे पर कोई है।’* इसका आभास उसे पहली दफा हुआ। उसने दरवाजा खोला। सामने भोजन की थाली लिये हुए सुजाता खड़ी थीं। उनके पीछे एक नौकर था, जिसके एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथ में केरोसिन का छोटा सा गैलन था। संस्कृति की अवस्था देखते ही सुजाता बुरी तरह चौंक पड़ीं।

“क्या कर रही थी तू?” उन्होंने धूल और पसीने से सनी अपनी बेटी को सिर से पाँव तक घूरा और उसके जवाब की प्रतीक्षा किये बगैर अंदर दाखिल हो गयीं। नौकर ने लालटेन को एक खूंटी पर टांगा और केरोसिन का गैलन फ़र्श पर रखकर लौट गया।

“ये सब क्या है?” सुजाता ने फ़र्श के उस कोने पर नजर डाली, जहाँ मौजूद

लकड़ी के टुकड़े अब कमरे में चारों तरफ बिखरे नजर आ रहे थे- “तू इतनी घबरायी हुई क्यों है?”

“क्या आपको भी फ़र्श के नीचे से किसी के हाँफने की आवाज़ सुनाई दे रही है?”

“नहीं तो?” सुजाता ने उसे हैरानी के साथ घूरा- “लेकिन तू ये पूछ क्यों रही है?”

“क्योंकि मुझे सुनाई दे रही थी।” संस्कृति ने बदहवास लहजे में कहा- “ऐसा लग रहा था कि हाँफने की आवाज़ लकड़ियों के नीचे से आ रही है लेकिन लकड़ियों को हटाने पर पता चला कि आवाज़ फ़र्श के नीचे आ रही थी।”

“अगर ऐसा है तो अब क्यों नहीं आ रही है आवाज़?”

“प...पता....पता नहीं। आपके आने से पहले तक तो आ रही थी।”

सुजाता पहले तो हैरान हुईं लेकिन शीघ्र ही इसे संस्कृति का वहम मानकर मुस्कुरा उठीं।

“लगता है कमरे में अकेले होने के कारण तू डर गयी। यहाँ पर ऐसा कुछ भी नहीं है।” कहने के बाद सुजाता फ़र्श के उस भाग पर जाकर खड़ी हो गयीं।

“हाँ। मैं डर गयी थी लेकिन मेरे डर की वजह वहम नहीं था मम्मी। मैंने पूरे होश-ओ-हवाश में आवाज़ सुनी। शायद इस फ़र्श के नीचे कोई तहखाना है, जिसमें जाने का रास्ता किसी दूसरे कमरे में से है।”

“इस कमरे के नीचे कोई तहखाना नहीं है। तुमने ये कैसे सोच लिया कि तहखाना हो सकता है? अगर तहखाना होता भी तो इतनी रात गये कोई तहखाने में हाँफता क्यों? और हाँफता भी तो उसकी आवाज़ तुम तक कैसे पहुँच पाती?”

संस्कृति कुछ नहीं बोली। उसका ध्यान ‘माया’ शब्द पर आकर ठहर गया, जिसे किसी ने उसके कानों में दो दफे फुसफुसाकर बोला था। पहले तो वह इसके बारे में सुजाता को बताने को उद्यत हुई लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने ये विचार त्याग दिया।

“बाहर चल, तू इस कमरे में डर गयी है। यहाँ रहना अब ठीक नहीं।” सुजाता ने संस्कृति की बाँह पकड़ी। भोजन की थाली को उन्होंने एक पुराने मेज पर रख दिया था।

“नहीं।” संस्कृति ने झटका देकर अपनी बाँह छुड़ा ली- “मैं बाहर नहीं आऊँगी। तब तक नहीं आऊँगी, जब तक पाप वैभव के साथ मेरी शादी की जिद छोड़ नहीं देते।”

सुजाता असमंजस में पड़ गयीं। संस्कृति के विचारों से वह सहमत तो थीं लेकिन खुलकर उसका समर्थन नहीं कर सकती थीं।

“तू डर गयी है। अकेले इस कमरे में रही तो और ज्यादा डर जाएगी। तेरी तबीयत खराब हो जाएगी।”

“मैं डरी नहीं हूँ। अभी-अभी आपने ही तो कहा कि मैं वहम का शिकार हुई थी।” संस्कृति का लहजा दृढ़ हुआ। वह भयभीत करने वाली उन घटनाओं को भूल गयी, जो थोड़ी देर पहले इस कमरे में उसके साथ घटी थीं।

“जिद मत कर। तेरे पापा तुझसे भी अधिक जिद्दी हैं। अपनी जिद पूरी करने के लिये वे तुझे महिनों तक इस कोठरी में बंद कर सकते हैं।”

“ये मेरे लिये भी ठीक रहेगा। तब तक मैं मर जाऊँगी और उस लम्पट से शादी न करने की मेरी जिद पूरी हो जाएगी।”

“क्या तुझे ये लगता है कि हमने तुझे इसलिये बड़ा किया है ताकि अँधेरी कोठरी में बंद करके मार सकें?” सुजाता झल्ला उठीं।

“नहीं, आप लोगों ने तो मुझे इसलिये बड़ा किया है ताकि एक जानवर के साथ जीवन भर तिल-तिलकर मरने के लिये मजबूर कर सकें।” संस्कृति ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

“ये भी तो हो सकता है कि शादी के बाद वैभव सुधर जाए।”

“ये भी तो हो सकता है कि शादी के बाद वह और बिगड़ जाए।”

“तो तूने ये पक्का कर लिया है कि हमारे बुलाने पर भी इस कमरे से बाहर नहीं आएगी?”

“आऊँगी, लेकिन तभी जब पापा अपना फैसला बदल देंगे।”

सुजाता ने मेज पर रखे भोजन की थाली पर नजर डाली और बोलीं- “खाना तो खाएगी न?”

“आप छोड़ जाइए। जरूरत महसूस हुई तो खा लूँगी।”

सुजाता ने कुछ नहीं कहा और हारकर वहाँ से चली गयीं। उनके बाहर जाते ही संस्कृति ने लपककर दरवाजा बंद कर लिया। वह दौड़कर कोने में पहुँची और फर्श से कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगी लेकिन कुछ नहीं सुनाई दिया। हाँफने का स्वर अब शायद पूरी तरह बंद हो चुका था। अंतत: उसने अपने कान हटा लिये और कमरे में चारों ओर नजरें दौड़ाने लगी। फावड़ा और कुदाल पर दृष्टि पड़ते ही उसकी मुँहमागी मुराद पूरी हो गयी।

N

3

P

ड्राइंग हॉल के सोफे पर आसीन सन्यासी के शरीर पर गेरुआ कपड़े थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक थी और माथे पर त्रिपुण्ड व गले में बड़े-बड़े मनकों वाली रुद्राक्ष माला थी। लावण्यमय चेहरे पर गंभीर भाव थे, मानो समाधीग्रस्त हों। बतौर शिष्य सोफे के इर्द-गिर्द दो युवा सन्यासी खड़े थे। वृद्ध सन्यासी के सम्मुख मौजूद सोफे पर राजमहल का प्रत्येक सदस्य उपस्थित था, सिवाय संस्कृति के।

“हमने संस्कृति का विवाह करने का निश्चय किया है कुलगुरु।” दिग्विजय ने शालीन स्वर में कहा- “इसीलिए हमने आपको मुहूर्त और कुण्डली-मिलान इत्यादि औपचारिकताओं को पूर्ण करने हेतु राजमहल में आमंत्रित किया है।”

दिग्विजय के इशारे पर सुजाता ने दो जन्मपत्रिकायें कुलगुरु की ओर बढ़ा दीं, जिन्हें एक शिष्य ने थामा।

“ये संस्कृति और उसके होने वाले वर की कुण्डली है कुलगुरु। कृपया इन्हें देखकर बताएं कि ज्योतिषिय दृष्टि से ये विवाह उपयुक्त है या नहीं।”

“सबसे पहले वर की जन्मपत्री दिखाओ।”

आदेश का पालन हुआ। जन्मपत्री के मुख्यपृष्ठ पर वैभव की जन्मतिथि; दिन और समय के साथ अंकित थी। मुख्यपृष्ठ पर दर्ज विवरण को पढ़ने के बाद कुलगुरु ने कई पन्नों को एक साथ पलटा और जन्मपत्री के उस पृष्ठ पर पहुँच गये, जिस पर जातक के जन्म-काल की ग्रह-दशाओं का विवरण अंकित था।

ड्राइंग हॉल की पैनी खामोशी के बीच राजमहल के प्रत्येक सदस्य की निगाहें कुलगुरु पर ही ठहरी हुई थीं। करीब दस मिनट तक ग्रह दशाओं का अवलोकन करने के पश्चात कुलगुरु ने दाहिनी ओर खड़े शिष्य की ओर हथेली फैलायी, जो शिष्य के लिए संकेत था कि उन्हें कागज-कलम की आवश्यकता है। शिष्य संकेत समझ गया और कंधे से लटकी झोली से कागज-कलम निकालकर उनकी फैली हुई हथेली पर रख दिया।

कुलगुरु ने पहले उंगलियों की गाठों पर कुछ गणनाएं की तत्पश्चात आँखे बंद करके कुछ देर तक चिंतन किया। उपर्युक्त क्रियाकलापों के बाद उन्होने कागज़ पर एक आयत खींचा और उसके दो विकर्ण खींचकर उसे चार छोटे-छोटे त्रिभुजों में विभक्त कर दिया। अपने चिंतन को उन्होंने अंकों और अक्षरों के रूप में उन छोटे त्रिभुजों में प्रदर्शित कर दिया। इसके बाद सोफे की पुश्त से सिर टिकाकर इस प्रकार गहरी साँस लिए मानो उस निष्कर्ष पर पहुँच चुके हों, जिस पर पहुँचना चाहते थे। दो मिनट की खामोशी के बाद उन्होंने अपना रुख दिग्विजय की ओर किया और कहा- “क्या तुमने वैभव नाम के इस लड़के के साथ संस्कृति की शादी करने का पूरा मन बना लिया है ठाकुर?”

“ह...हाँ कुलगुरु। वैभव हमें अपनी बेटी के लिये योग्य वर लग रहा है।”

कुलगुरु ऐसे अंदाज में मुस्कुराये, जैसे दिग्विजय के निर्णय का उपहास कर रहे हों।

“किसी निर्णय का अस्तित्व में आना मनुष्य के विवेक पर निर्भर करता है, लेकिन उस निर्णय का साकार होना परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है।”

“हम समझे नहीं कुलगुरु।”

“इस लड़के के साथ तुम्हारी बेटी के विवाह का कोई संयोग नहीं बन रहा है।”

ड्राइंग हॉल में पैना सन्नाटा खींच गया। सुजाता ने मन ही मन प्रसन्न होते हुए दिग्विजय की ओर देखा। उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। स्थापित राजनेता के साथ सम्बन्ध बनाने की उनकी महत्वाकांक्षा धू-धू कर जल उठी थी।

“इस लड़के की वर्तमान ग्रह-दशाएं इंगित कर रही हैं कि ये अपनी आयु पूर्ण कर चुका है। इसके जीवन में अब मात्र सात दिन ही शेष रह गये हैं।”

“तो क्या इसका मतलब है कि सात दिन के अंदर वैभव की मौत हो जाएगी?”

“केवल मौत नहीं, भयावह मौत होगी। राहू का मारकेश प्रबल हो चुका है। कोई कुछ नहीं कर सकता। राहू का प्रभाव हमारे जीवन पर छाया के रूप में पड़ता है। इसके मारक योग बनने का तात्पर्य होता है कि जातक के जीवन पर पड़ने वाली उसकी छाया नकारात्मक अर्थात अनिष्ट की द्योतक हो चुकी है। ऐसी स्थिति में ये मान लेना चाहिए कि जातक किसी अपवित्र ऊर्जा अर्थात प्रेतबाधा के प्रभाव में है। ऐसे जातकों की दिल दहलाने वाली प्रेतजनित मौत होती है।” कुलगुरु का स्वर विषादपूर्ण हो गया। वैभव के भयावह मौत की कल्पना मात्र से वे द्रवित हो उठे थे।

“प्रेतबाधा? प्रेतजनित मौत? य..ये सब क्या है कुलगुरु?” रोमांच के कारण दिग्विजय के रोंगटे खड़े हो गये। यही हाल वहाँ उपस्थित अन्य लोगों का भी था- “वैभव के जीवन में कोई अमानवीय व्यतिक्रम कैसे हो सकता है?”

“विधि का विधान है।” कुलगुरु ने पूर्ववत् गंभीर स्वर में कहा- “और विधि के विधान हमारे पूर्वजन्म के कर्मों द्वारा निर्धारित होते हैं। इस जन्म में हम जो सुख या दुःख भोगते हैं, वे हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के फल ही तो होते हैं।”

“क्या इस विधान को टाला नहीं जा सकता?” दिग्विजय ने पूछा।

“ज्योतिष शास्त्र भावी घटनाओं की ओर इशारा मात्र करता है। उन घटनाओं में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना इस शास्त्र की परिभाषा में शामिल नहीं है। यदि वैभव के संदर्भ में कोई उपाय शेष रहता तो उसकी कुण्डली में ऐसा दुर्लभ संयोग बनता ही नहीं।”

“तो क्या अब हमें अपना निर्णय स्थगित करना होगा?”

“नहीं भी करोगे तो नियति यह कार्य स्वयं कर देगी।”

ड्राइंग हॉल में एक बार फिर निस्तब्धता छा गयी।

“हमें अब चलना चाहिए।” लम्बी खामोशी को निरर्थक प्रतीत होता देख कुलगुरु ने कहा।

“आप एक बार संस्कृति की जन्मपत्री भी देख लीजिए। हो सकता है, कोई समाधान निकल आए।” अरुणोदय ने कहा।

“कोई लाभ नहीं है अरुण। संस्कृति की जन्मपत्री हमने ही बनायी है, इसलिये हमें मालूम है कि ग्रह-दशाएं उसके जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं।”

कहने के बाद कुलगुरु प्रस्थान के ध्येय से खड़े हो गये।

JJJ

“एक्सक्यूज मी गाइज! क्या आप में से कोई बता सकता है कि मैथेमेटिक्स डिपार्टमेण्ट किस ओर है?” साहिल ने कॉरिडोर में खड़े छात्रों के हुजूम से पूछा।

“आप इस कॉरिडोर के एण्ड में जाकर राइट टर्न ले लीजिए, खुद को मैथेमेटिक्स डिपार्टमेण्ट के कॉरिडोर में ही खड़ा पाएंगे।”

“थैंक यू।”

आभार ज्ञापन के बाद साहिल तेज कदमों से कॉरिडोर के छोर की ओर बढ़ा, जहाँ से दायीं ओर मुड़ने पर गणित विभाग का कॉरिडोर आरंभ हो गया। प्रोफेसर्स के चैम्बर के दरवाजों पर लिखे नामों पर दृष्टिपात करते हुए वह आगे बढ़ा। अंततः उसकी तलाश का अंत हुआ। वह जिस चैम्बर के सामने ठिठका था, उस पर अंग्रेजी में लिखा था- ‘प्रो. उदयराज चौहान : सीनियर प्रोफेसर एण्ड हेड ऑफ डिपार्टमेण्ट’। शायद यही चैम्बर साहिल का गंतव्य था। उसने दरवाजे को आहिस्ता से नॉक किया।

“यस।” अंदर से किसी लड़की की मधुर आवाज़ आयी।

साहिल अंदर झांका। रिवॉल्विंग चेयर खाली था। प्रोफेसर इस वक्त चैम्बर में नहीं थे।

“प्रोफेसर से मुलाकात कब तक हो सकती है?”

“अभी नहीं हो सकती है। फाइनल ईयर की क्लास ले रहे हैं।”

विजिटर्स चेयर पर मौजूद लड़की ने बगैर साहिल की ओर देखे हुए कहा। किसी किताब के अध्ययन में व्यस्त उस लड़की की उम्र पच्चीस वर्ष के आस-पास थी। रंग गोरा और परिधान में सादगी का समावेश था।

“कब तक लौटेंगे?”

लड़की ने वॉलक्लॉक की ओर देखा और कहा- “पीरियड ओवर होने में अभी पन्द्रह मिनट का समय है। आप चाहें तो उनके आने तक वेट कर सकते हैं।”

“जी शुक्रिया।”

साहिल अंदर प्रविष्ट हुआ और लड़की के बगल वाले विजिटर्स चेयर पर आसीन हो गया। चैम्बर की खामोशी इस दर्जे की थी कि ए.सी. चलने की आवाज़ भी स्पष्ट सुनाई दे जा रही थी। करीब बीस मिनट बाद प्रोफेसर ने केबिन में कदम रखा और साहिल अपनी जगह से खड़ा हो गया।

“हैलो साहिल।” प्रोफेसर ने सुखद आश्चर्य के साथ कहा और रिवॉल्विंग चेयर पर आसीन होने के बाद साहिल को भी बैठने का इशारा करते हुए कहा- “तुम्हारे भाई की हालत अब कैसी है?”

प्रोफेसर का वाक्य सुन कर लड़की हौले से चौंकी। उसे पहली दफा पता चला था कि आने वाला शख्स यश का भाई था।

“इसी सिलसिले में मुझे आपसे कुछ बात करनी है प्रोफेसर।”

“यस ऑफकोर्स।” प्रोफेसर ने गर्मजोशी के साथ कहा- “मेरा अगला पीरियड चालीस मिनट बाद है। तब तक के लिये मैं फ्री हूँ।”

साहिल ने एक नजर लड़की पर डाली, जो अब किताब बंद करके प्रोफेसर और उसके वार्तालाप में रुचि लेने लगी थी।

“क्या आप बता सकते हैं कि पिछले दिनों जब यश दो महिने का वर्कशॉप अटैण्ड करने के लिये कैंब्रिज गया था तो उसके साथ क्या हुआ था?”

“मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूँ कि कैंब्रिज में यश के साथ ऐसी कोई भी घटना नहीं घटी थी, जिसे याद्दाश्त चले जाने जैसी दुर्घटना की वजह समझा जा सके।”

“प्लीज आप याद करने की कोशिश कीजिए प्रोफेसर। दिमाग पर जोर डालिये। कैंब्रिज में जरूर उसके साथ कुछ हुआ था, अन्यथा मेरा हँसता-खेलता भाई वहाँ से लौटने के दो दिनों के भीतर ही यूँ अपनी पहचान नहीं खो देता।”

“मैं तुम्हारी दशा समझ रहा हूँ साहिल लेकिन सच वही है जो मैंने तुम्हें बताया।” प्रोफेसर चौहान ने चश्मा उतारकर मेज पर रखते हुए कहा- “कैंब्रिज में ऐसा कुछ नहीं हुआ था, जैसा तुम समझ रहे हो।”

“नहीं, मैं नहीं मान सकता।” साहिल ने भावावेश में आकर दोनों मुक्का मेज
पर इतनी तेजी से मारा कि उस पर मौजूद वस्तुएं हिल गयीं- “यश का दो महिने का कैंब्रिज टूर सामान्य नहीं गुजरा था सर। उसके साथ कुछ तो जरूर हुआ था।”

साहिल की हरकत पर उसके बगल में मौजूद लड़की ने प्रोफेसर चौहान की ओर देखा। उसके चेहरे के भावों से लग रहा था कि यदि प्रोफेसर ने उसे बोलने का मौका दिया तो वह कुछ महत्वपूर्ण बातें बता सकती है लेकिन प्रोफेसर ने उसे बोलने का मौका नहीं दिया और खुद कहा- “गेट रिलैक्स्ड साहिल, यदि यश की याद्दाश्त अचानक गुम हुई है तो अचानक ही लौट भी आएगी। मेडिकल साइंस में ऐसा अक्सर होता है। तुम्हें डॉक्टर्स पर भरोसा रखना चाहिए।”

“डॉक्टर्स भी इस सडेन मेमोरी लॉस की कोई वजह नहीं तलाश पा रहे हैं। हर कोई ये सोचकर शॉक्ड है कि नॉर्मल कण्डिशन में एक इंसान की अचानक पूरी याद्दाश्त कैसे गुम हो सकती है?”

“सॉरी साहिल, मैं नहीं मान सकता कि कैंब्रिज में यश के साथ कोई अप्रिय घटना घटी थी।”

साहिल शांत हो गया। उसने कुर्सी की पुश्त से सिर टिकाकर आँखें बंद कर ली।

“तुमने अभी-अभी कहा कि यश कैंब्रिज से लौटने के दो दिन बाद अपनी पहचान खोया था। कहीं ऐसा तो नहीं कि जिस घटना को तुम वजह के रूप में तलाश रहे हो, वह घटना उन्हीं दो दिनों में घटी है?”

“कैंब्रिज से लौटने के बाद यश दो दिनों तक फ्लैट से बाहर नहीं निकला था। उसने पूरे अड़तालीस घण्टे फ्लैट पर मेरे साथ ही गुजारे थे। इन दो दिनों में उसका व्यवहार बहुत बदल चुका था। हमेशा बकबक करने वाला यश गुमशुम रहने लगा था। उन अड़तालीस घण्टों में उसने सिवाय नेटसर्फिंग के और कुछ भी नहीं किया था। उस वक्त मैं यही सोचता रहा कि वह सोशल मीडिया पर एक्टिव होगा। फिर तीसरे दिन की सुबह मैंने उसे आइने के सामने खड़ा पाया। अपने अक्स को वह यूँ घूर रहा था मानो इस बात को लेकर दुविधा में हो कि वह अक्स

उसी का है या किसी और का। मेरे हस्तक्षेप पर उसने मुझसे सवाल किया कि मैं कौन हूँ? पहले तो मुझे लगा था कि वह मजाक कर रहा है लेकिन धीरे-धीरे उसकी हरकतों ने स्पष्ट कर दिया कि वह अपनी पहचान खो चुका है।”

“डॉक्टर्स ने इन सबके बारे में क्या बताया है?”

“ब्लड टेस्ट की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि उसके ब्लड में विटामिन बी 12 का लेवल नॉर्मल लेवल से बहुत कम है। डॉक्टर्स के मुताबिक़ बी 12 नर्व सेल्स की प्रॉपर फंक्शन के लिये जरूरी विटामिन होता है और शरीर में इसकी मात्रा में अनियमितता होने से चेतना से जुड़ी बीमारियाँ होती हैं।”

“इसका मतलब कि यश पहले से ही अल्जाइमर जैसी भूलने की बीमारी से ग्रसित था?”

“डॉक्टर ने तो फिलहाल यही कहा है प्रोफेसर। उनके अनुसार यश बहुत पहले से ही अल्जाइमर का पेशेण्ट था। नजरअंदाज किये जाने के कारण भूलने का साधारण सा रोग इस हद तक बढ़ गया कि उसके समूचे याद्दाश्त का दुश्मन बन बैठा।”

“बट सर....।” काफी देर बाद लड़की ने मुँह खोला- “यश की हरकतों से हमें कभी ऐसा नहीं महसूस हुआ था कि वह भूलने की बीमारी से ग्रसित है। इवेन कभी-कभी तो हम उसकी मेमोरी-पॉवर देखकर शॉक्ड भी हुए थे। लम्बे-लम्बे एक्वेशन्स और प्रॉसिजर्स उसकी जुबान पर रहते थे। यदि वह मेमोरी लॉस की शिकायत के साथ जी रहा था तो मैथ्स का अच्छा स्टूडेंट कैसे था?”

“यही तो मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ। यश के मेडिकल टेस्ट की रिपोर्ट्स जो बता रही हैं, उस पर यकीन करना आसान नहीं है। ऐसा लगने लगा है कि टेस्ट ठीक से कंडक्ट नहीं किए गये हैं।” थोड़ी देर रुक कर साहिल ने आगे कहा- “क्या आप जानना चाहेंगे प्रोफेसर कि कैंब्रिज से लौटने के बाद दो दिन तक उसने नेटसर्फिंग के दौरान क्या सर्च किया था?”

“ऑफकोर्स।”

साहिल ने जेब से यश का सेलफोन बाहर निकाला और ब्राउजर हिस्ट्री ओपन करने के बाद मोबाइल प्रोफेसर को थमा दिया। ब्राउजर हिस्ट्री में कई हिन्दी ब्लॉग और वेबपेज के यू.आर.एल. नजर आ रहे थे। हैरानी तो इस बात की थी कि सारे वेबपेज एक ही सर्च टर्म से जुड़े हुए थे।

“ब्रह्मराक्षस।” प्रोफेसर के होठों से अस्फुट सा स्वर निकला और इसी के साथ उनके माथे पर बल पड़ गये।

“यस प्रोफेसर। मुझे लगा था कि वह सोशल मीडिया पर एक्टिव है जबकि वास्तविकता ये थी कि वह दो दिन से इसी नाम यानी ब्रह्मराक्षस से जुड़ी ब्लॉग्स और वेबसाइट्स खंगाल रहा था।”

“लेकिन क्यों?”

“आई डोण्ट नो। सब-कुछ अजीब है। उसे अचानक ब्रह्मराक्षस के विषय में जानने की क्या जरूरत पड़ गयी थी?”

“सॉरी साहिल।” प्रोफेसर ने मोबाइल साहिल की ओर बढ़ाते हुए कहा- “नॉर्मल पर्सन काण्ट डू एनिथिंग इन सच कण्डिशन। यू शुड टेक हिम टु अ स्पेशलिस्ट।”

“श्योर सर। थैंक्स फॉर योर टाइम।”

साहिल उठा और शेकहैण्ड के बाद चैम्बर से बाहर आ गया। जिस उम्मीद के साथ वह यहाँ आया था, उस उम्मीद का स्थान अब तमाम उलझनों ने ले लिया था। वह लम्बे-लम्बे डग भरते हुए कॉरिडोर पार कर ही रहा था कि तभी पीछे से आवाज़ आयी- “एक्सक्यूज मी।”

वह ठहरा, पीछे मुड़ा। जिस लड़की को उसने प्रोफेसर के चैम्बर में देखा था, वही लड़की लगभग दौड़ते हुए उसकी ओर आ रही थी।

“क्या हुआ? आपने मुझे रोका क्यों?” उसके पास आते ही साहिल ने पूछा।

“मैं शायद आपकी कुछ हेल्प कर सकती हूँ।” लड़की ने तेज चलने के कारण उखड़ चुकी साँसों को नियंत्रित करने का प्रयास करते हुए कहा।

“रियली?” साहिल रोमांचित हुआ- “लेकिन कैसे?”

“मेरा नाम कोमल अवस्थी है। मैं भी आपके भाई की तरह एक रिसर्च स्कॉलर हूँ। मेरे प्रोफेसर दो हफ्ते के लिए एज अ गेस्ट लेक्चरर ‘रामानुजन इंस्टिट्यूट ऑफ मैथेमेटिक्स, चेन्नई’ गये हुए हैं इसलिए मेरे पास एक हफ्ते से कोई काम नहीं है, सिवाय एक चैम्बर से दूसरे चैम्बर में फुदकने के।”

“आप किस प्रकार मेरी हेल्प कर सकती हैं?”

“दरअसल मैं बताना चाहती थी कि कैंब्रिज के दो महीने की वर्कशॉप में मैं भी यश के साथ थी। मैं कुछ जानती हूँ या फिर कह सकते हैं कि मेरे पास कुछ चीजें हैं, जो ये बता सकती हैं कि वहाँ उसके साथ क्या हुआ था?”

“चीजें बता सकती हैं? आई मीन कि आप नहीं बता सकतीं?”

“एक्चुअली पूरी बात मुझे भी नहीं मालूम है कि यश के साथ क्या हुआ था, लेकिन मेरे पास कुछ क्लू हैं, जिन्हें देखने के बाद आप किसी नतीजे पर पहुँच सकते हैं और इसके लिए आपको आज शाम मेरे फ्लैट पर आना होगा।”

“एड्रेस?”

“मैं यूनिवर्सिटी कैम्पस में ही रहती हूँ। रोहिणी हॉस्टल के पीछे वाले अपार्टमेण्ट के सारे फ्लैट रिसर्च स्कॉलर्स के ही हैं। उनमें से ग्राउण्ड फ्लोर का फ्लैट नं. नाइन मुझे तब तक के लिए अलॉट किया गया है, जब तक कि मेरी रिसर्च पूरी नहीं हो जाती।”

“थैंक यू, लेकिन टाइम?”

“मैं यूनिवर्सिटी से पाँच बजे फ्री होती हूँ। छः बजे के बाद आप एनी टाइम आ सकते हैं। मुझे इंतजार रहेगा।”

“श्योर।” साहिल ने कृतज्ञता भरी मुस्कान के साथ कहा।

JJJ

“ये उसका कोई बेहूदा बहाना होगा, स्टोररुम से बाहर आने का।” दिग्विजय ने क्रोध से फुंफकारते हुए कहा।

“नहीं जी, ऐसी बात नहीं है। मैंने उसके चेहरे पर सचमुच डर देखा था। मैंने उसके सामने स्टोररुम से बाहर आने का प्रस्ताव भी रखा था। अगर वह केवल स्टोररुम से बाहर आने के लिये झूठ बोल रही होती तो मेरे प्रस्ताव को मानकर उसी समय स्टोररुम से बाहर आ जाती।” सुजाता ने कहा।

“तो क्या तुम ये मान रही हो कि उसने जो कहा, वह सच था? उसने जमीन के नीचे से किसी के हाँफने की आवाज़ सुनी थी; क्या तुम इस पर यकीन करने लगी हो?”

“न जाने क्यों उसकी बातें सच लग रही हैं। वह स्टोररुम साल में बस एक-दो बार ही खुलता है, ऐसे में.....।”

“देखो सुजाता...।” दिग्विजय ने उनकी बात काटकर तीखे स्वर में कहा- “मैं इसी राजमहल में जन्मा हूँ। यहाँ के चप्पे-चप्पे के बारे में पता है मुझे। स्टोररुम के नीचे कोई तहखाना नहीं है।”

“तो फिर...तो फिर संस्कृति को जमीन के नीचे से हाँफने की आवाज़ क्यों सुनाई दी?”

“उसे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी थी। ये सब या तो उसका वहम रहा होगा या फिर हमें परेशान करने के लिए की गयी कोई भद्दी शरारत।”

सुजाता कुछ बोलने को उद्यत हुईं लेकिन दिग्विजय के इस वाक्य ने उन्हें खामोश कर दिया- “मैं पहले से ही कुलगुरु की बातों को सोच-सोचकर परेशान हूँ। बेहतर होगा कि तुम अपनी बेटी के कारनामें सुनाकर मेरी उलझनें और मत बढ़ाओ।”

कहने के बाद दिग्विजय कमरे से बाहर निकल गये।

JJJ

“आप करते क्या हैं?” कोमल ने चाय का ट्रे सेंटर टेबल रखा और साहिल के सामने वाले सोफे पर बैठते हुए पूछा।

“क्या मतलब?”

“आई मीन आप किस प्रोफेशन से जुड़े हुए हैं?”

“फ्रिलांस ग्रॉफिक डिजायनर हूँ। लिंक्ड इन पर अच्छा नेटवर्क बना चुका हूँ इसलिये घर बैठे ही अच्छे क्लाइण्ट्स मिल जाते हैं।”

“आपने अभी तक चाय का कप क्यों नहीं उठाया?”

“मैं चाय पीने से ज्यादा ये जानने के लिए उतावला हूँ कि कैंब्रिज में मेरे भाई के साथ क्या हुआ था?” साहिल ने चाय का कप उठाया तो जरूर लेकिन उसे होठों से लगाए बगैर ही कहा।

“कुछ अजीब तो उसके साथ जरूर हुआ था।” कोमल ने चाय की चुस्कियाँ लेते हुए कहा- “कुछ ऐसा, जिसके होने के बाद ऊटपटांग आदतें उसके जीवन का हिस्सा बन गयीं थीं। वर्कशॉप में साथ गये प्रोफेसर चौहान को उसने कुछ नहीं बताया था क्योंकि उसे डर था कि यदि प्रोफेसर चौहान को ये पता चल गया कि वह मानसिक रुप से बीमार होने लगा है तो उसे उस वर्कशॉप को बीच में ही छोड़ कर इंडिया लौटना होगा, जिसमें शिरकत करने के लिए मैथ्स का हर रिसर्च स्कॉलर तरसता है।”

“यानी वह जिन अजीब आदतों का शिकार हुआ था, वे आदतें उसके मानसिक रुप से बीमार होने की परिचायक थीं?”

“ह...हाँ, शायद ऐसा ही कुछ।” कोमल ने थोड़े दबे स्वर में कहा।

“क्या उसने आपको बताया था कि उसके साथ क्या हुआ था?”

“नहीं।”

“तो फिर आपको कैसे पता चला कि समथिंग स्ट्रेंज वाज हैप्पेण्ड विद हिम?”

“क्योंकि मैंने यश में वे अजीब से चेंजेज अपनी आँखों से देखे थे, जो एक रहस्यमयी घटना के बाद उसकी लाइफस्टाइल का हिस्सा बन गये थे।”

“क्या थे वे चेंजेज? और तुम किस रहस्यमयी घटना की बात कर रही हो?”

“यश अटेम्प्ट टू मर्डर का शिकार हुआ था।”

“व्हाट?” साहिल चौंका- “हाउ इज इट पॉसिबल? कैंब्रिज में उसका कौन दुश्मन पैदा हो गया?”

“पता नहीं।” कोमल ने कंधे ऊंचकाये- “पराये देश में, जहाँ वह पहली बार एक एजुकेशनल टूर पर गया था; उस पर जानलेवा हमला हुआ। वजह मेरे समझ से परे है, तभी तो मैंने उस घटना को रहस्यमयी कहा।”

“यश उस अटेम्प्ट टू मर्डर से बचा कैसे? ये बात आपको कैसे पता चली? आई मीन प्रोफ़ेसर चह्वाण को क्यों नहीं पता चल पायी?”

“यश पर अटैक सुबह के टाइम एक पार्क में हुआ था। उस वक्त केवल मैं उसके साथ थी। हम दोनों जॉगिंग के लिए निकले थे। उसका लक अच्छा था, जो बुलेट उसकी कनपटी के पास से होते हुए निकल गयी थी। पब्लिक प्लेस होने के कारण अटैकर को दूसरा मौका नहीं मिल पाया था। प्रोफ़ेसर चह्वाण को यश ने ये सब नहीं बताया था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि इस बात को लेकर कोई बखेड़ा हो और उसका वर्कशॉप स्पॉइल हो जाए।”

“ये लड़का भी अजीब है। इतनी बड़ी घटना को छुपा ले गया।” साहिल झुंझलाया।

“उससे भी अजीब बात ये है कि अज्ञात हमलावर ने उस पर हमला करने के लिए पब्लिक प्लेस को चुना।”

“उसका दुश्मन कौन हो सकता है? और फिर यदि हमलावर का पहला अटेम्प्ट फेल हो चुका है तो संभव है कि वह यहाँ इंडिया में फिर से प्रयास करे।”

“आई एग्री।”

“लेकिन उस अटेम्प्ट टू मर्डर का उसके याद्दाश्त चले जाने से क्या कनेक्शन हो सकता है?”

“यही सवाल तो मेरे जेहन में भी है।”

“इस अटेम्प्ट टू मर्डर के बाद वे कौन सी ऊटपटांग आदतें थीं, जो उसकी जीवन-शैली का हिस्सा बन गयी थीं?”

“अटेम्प्ट टू मर्डर की घटना के बाद मैं अक्सर उसके कमरे से बातचीत की आवाजें सुना करती थी। शायद वह खुद से बातें करता था। मैंने कई बार उसे रात के समय कॉरिडोर में टहलते हुए देखा था, ठीक वैसे ही जैसे कोई शख्स नींद में चलता है।”

“ये विश्वास करना बेहद मुश्किल है कि केवल अटेम्प्ट टू मर्डर के कारण यश को स्लीप-वॉकिंग और सेल्फ-टॉकिंग जैसी आदतें पड़ गयीं। उसके साथ कुछ और भी हुआ रहा होगा। आई मीन कुछ ऐसा, जिसका उस पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा।”

“सॉरी टू से बट यदि उसके साथ ऐसा कुछ हुआ रहा होगा तो मुझे इस बारे में कुछ नहीं मालूम है।”

“तो क्या आपने केवल यही बताने के लिये मुझे यहाँ बुलाया था?”

“नहीं। मेरे पास कुछ है, जो मैं आपको दिखाना चाहती हूँ लेकिन उससे पहले मैं ये जानना चाहती हूँ कि क्या आप माया नाम की किसी ऐसी लड़की को जानते हैं, जिसके साथ यश का अफेयर है?”

“टोटल बकवास।” साहिल के चेहरे पर सख्त विरोध के भाव उभरे- “वह खुले विचारों का जरूर है लेकिन किसी अफेयर में इन्वॉल्व नहीं है। आपने ये क्यों पूछा? आपको ऐसा क्यों लगा कि उसका माया नाम की किसी लड़की के साथ अफेयर है?”

“क्या यश को ड्राइंग का शौक है?”

जवाब के बजाय एक और सवाल से साहिल झुंझलाया लेकिन बात को अधिक लम्बा न खींचने के ध्येय से बिना किसी टिप्पणी के कह दिया- “नहीं। वह स्कूल टाइम से ही ड्राइंग में कमजोर है।”

“एक मिनट रुकिये।”

कोमल अपनी जगह से उठी और स्टडी टेबल तक पहुँची। जब वापस आई तो उसके हाथ में कुछ ड्राइंग शीट थे, जिन्हें उसने साहिल की ओर बढ़ाते हुए कहा- “ये स्केचेज आपके भाई ने ही बनाए हैं।”

साहिल ने चेहरे पर कौतुहल का भाव लिए हुए उन पन्नों को थाम लिया, जो संख्या में चार थे। पहले पन्ने पर एक महल का स्केच था। दूसरे पन्ने पर जलते हुए पीपल का पेड़ दिखाया गया था, जिसके तने पर कोई इंसान बंधा हुआ नजर आ रहा था। तीसरे पन्ने पर एक व्यक्ति को दर्शाया गया था, जिसकी वेशभूषा पुरातन काल के ब्राह्मणों से मिलती-जुलती थी। साहिल उस स्केच को देखकर चौंका क्योंकि पुरातन काल के उस ब्राह्मण की मुखाकृति यश की मुखाकृति से मिलती-जुलती थी। चौथे पन्ने पर तालाब के किनारे घास पर लेटी एक राजकुमारी का स्केच उकेरा गया था, जो दाहिने गाल पर हाथ रखे हुए तालाब के जल में अपनी परछाईं देख रही थी।

“मुझे नहीं मालूम कि ये स्केचेज किस चीज़ से जुड़े हैं लेकिन इस स्केच के बारे में यश ने मुझे एक बात बतायी थी।” कोमल ने उस स्केच पर उँगली रखते हुए कहा, जिसमें तालाब के किनारे लेटी राजकुमारी पानी में अपनी परछाईं देख रही थी।

“क्या ये स्केचेज वास्तव में यश ने ही बनाये हैं?”

“ऑफकोर्स, उसी ने बनाये हैं।”

“आपको उसने इस राजकुमारी जैसी लड़की के बारे में क्या बताया था?”

“उसने कहा था कि माया नाम की ये लड़की उसकी ड्रीम गर्ल है।”

“और आपने यकीन कर लिया? क्या आपने उससे ये नहीं पूछा कि सैकड़ों साल पुरानी दुनिया की ये लड़की उसकी ड्रीम गर्ल कैसे हो सकती है?”

“हर कोई अपने पार्टनर में प्रिंसेज या प्रिंस की छवि देखता है इसलिए मुझे लगा कि उसने माया नाम की अपनी गर्लफ्रेंड को प्रिंसेज के रूप में रिप्रेजेंट के लिए ये स्केच बनाया होगा।”

“क्या आपको यकीन है कि ड्राइंग से दूर भागने वाला एक लड़का किसी प्रोफेशनल स्केच आर्टिस्ट की तरह ये स्केचेज बना सकता है?”

“इट मे बी पॉसिबल।” कोमल ने कंधे ऊंचकाये- “हो सकता है उसने कहीं से स्केचिंग सीखी हो।”

“क्या उसने ये स्केचेज आपके सामने बनाये थे?”

“नहीं। उसने मुझे ये स्केचेज बनाने के बाद दिखाए थे।”

“तो फिर आप इस बात को लेकर इतनी श्योर कैसे हो सकती हैं कि ये
स्केचेज उसी ने बनाए हैं?”

“क्योंकि ये बात खुद उसी ने मुझसे कही थी। इवेन मैंने उससे पूछा भी था कि उसे स्केचिंग कैसे आती है तो उसने इस जवाब से मुझे चौंका दिया कि स्केचिंग उसके जीवन का हिस्सा रह चुका है।”

“ये स्केचेज अभी तक आपके पास क्यों है?”

“बाय मिस्टेक मैं इन्हें अपने कमरे में लेकर आ गयी थी। सोचा था बाद में रिटर्न कर दूँगी मगर भूल गयी।”

“ये सब कुछ इंडिया लौटने से कितने दिन पहले हुआ था?”

“लगभग हफ्ते भर पहले।”

साहिल के पास अब कहने को कुछ नहीं बचा इसलिए वह खामोश रह गया।

“मुझे लगता है कि आपको अब यश के विषय में किसी पैरासाइकोलॉजिस्ट से कंसल्ट करना चाहिए।”

“क्या मैं इन स्केचेज को अपने साथ ले जा सकता हूँ?”

कोमल ने गर्दन हिलाकर ‘हाँ’ में जवाब दिया।

“थैंक्स फॉर योर सपोर्ट।”

कहने के बाद साहिल सोफे से खड़ा हो गया।

JJJ

संस्कृति का जिस्म धूल और पसीने से तर हो चुका था। उसने हाँफते हुए फर्श में किए गये सुराख की ओर देखा। सुराख में नजर आ रहा घुप्प अँधेरा खौफनाक था। स्टोररूम के नीचे तहखाना होने की उसकी शंका बेबुनियाद नहीं थी। पिछली रात और आज पूरे दिन उसने कुदाल और फावड़े की मदद से फर्श में इतना पर्याप्त सुराख बना डाला था कि अब वह आसानी से तहखाने में उतर सकती थी। जिस कोने में उसने सुराख किया था, उस कोने में रखे हुए टूटे फर्नीचर्स को उसने दरवाजे के पास जमा कर दिया था, ताकि कोई दरारों से झांककर ये न जान सके कि वह फर्श की खुदाई कर रही है। हालाँकि अब तक परिवार का कोई भी सदस्य उसकी कुशलता के प्रति आश्वस्त होने के लिए नहीं आया था, सिवाय सुजाता के। सुजाता दिन में तीन बार आकर दरवाजा पीट चुकी थीं लेकिन हर बार उसने कोई जवाब नहीं दिया था।

सुराख हुए तीन घंटे से ऊपर हो गए थी यानी कि उसमें मौजूद जहरीली गैसें बाहर निकल चुकी थीं। तहखाने में उतरने से पहले संस्कृति ने उसकी गहराई का आंकलन करने के लिए सुराख में एक पत्थर छोड़ा। पत्थर के तल से टकराने के बाद आई आवाज़ से उसने अंदाजा लगाया कि तल तकरीबन आठ फीट नीचे था। उसने कोने में पड़ी रस्सी उठायी। योजना के मुताबिक उसने रस्सी का एक सिरा दरवाजे के हैण्डल से बांधा और दूसरा सिरा सुराख में लटका दिया। इसके बाद खूंटी से लालटेन उतारकर तहखाने में झांकी।

लालटेन की रोशनी ने अपने सामर्थ्य के अनुसार तहखाने में व्याप्त अँधेरे का हनन किया। संस्कृति को वही नजर आया, जिसकी उसने पहले से ही कल्पना कर रखी थी। पक्का फर्श और उस पर जमी धूल की मोटी परत। उसके द्वारा लटकाई गयी रस्सी फर्श से दो फीट ऊपर समाप्त हो रही थी। यानी कि वह रस्सी पर फिसलते हुए बिना किसी कठिनाई के तहखाने में उतर सकती थी।

उसने बाएं हाथ में लालटेन लटकाया और दाहिने हाथ से रस्सी पकड़कर नीचे लटक गयी। कुछ ही सेकेण्ड में उसके पैर 'धप्प' की आवाज़ करते हुए तहखाने के तल से टकराये। फर्श पर जमी धूल की मोटी परत हवा में उड़ी। कुछ पल ठहरकर उसने धूल का गुब्बार छंटने का इंतजार किया तत्पश्चात लालटेन की रोशनी में तहखाने के जर्रे-जर्रे का मुआयना करने लगी।

N

4

P

“क्या तुम जानते हो यश कि तुम मैथ्स के एक अच्छे स्टूडेंट हो?” साहिल ने यश के प्लेट में चावल डालते हुए कहा। एक बज चुका था। लंच का वक्त होने के कारण दोनों डायनिंग टेबल पर थे।

“मैथ्स क्या है?”

“एक सब्जैक्ट।”

“और सब्जैक्ट?”

“हम जब किसी टॉपिक को लेकर डिटेल स्टडी करते हैं तो वह टॉपिक सब्जेक्ट कहलाने लगता है।”

“यानी कि टॉपिक किसी सब्जैक्ट का छोटा रुप होता है?”

“डेफिनेटली।” इस बार साहिल का स्वर उत्साहित था। यश के सोचने-समझने की शक्ति सही-सलामत पाकर वह आशान्वित हो उठा था।

“मैथ्स में किस टॉपिक की डिटेल स्टडी की जाती है?”

“मैं मैथ्स के बारे में ज्यादा नहीं जानता लेकिन एक बार जब तुम्हारी यादें तुम्हारे साथ थीं तब तुमने ही मुझे बताया था कि ईश्वर ने ब्रह्माण्ड के नियमों को एक स्पेशल लैंग्वेज में लिखा है, उसी लैंग्वेज को मैथ्स कहते हैं। यानी कि मैथ्स की स्टडी का मतलब है, उन नियमों को समझना जिनसे ये ब्रह्माण्ड संचालित होता है। ये ऐसा लैंग्वेज हैं, जिसे वर्ड्स और सेन्टेस के बजाय नम्बर्स और एक्वेशन्स के फॉर्म में लिखा जाता है।”

यश ने आँखें बंद कर लीं। उसके अंदाज से लगा कि वह साहिल की बातों को समझने की कोशिश कर रहा था लेकिन जल्द ही इस प्रयास में असफल होने के बाद उसने आँखें खोल दी।

“लैंग्वेज किसे कहते हैं? नम्बर्स और एक्वेशन्स क्या होते हैं? ब्रह्माण्ड क्या है?” उसने व्यग्र लहजे में कई सवाल किये।

“भाषा विचारों को दूसरों के सम्मुख रखने का एक माध्यम है। संख्याएं हमारे जीवन को सुनियोजित रखने वाली राशियां हैं। किसी स्टेटमेण्ट का मैथेमैटिकल फॉर्म एक्वैशन और हमारा परिवेश ब्रह्माण्ड कहलाता है।” जल्दी-जल्दी कहने के बाद साहिल ने लम्बी साँस लेकर आगे कहा- “मैं जानता हूँ कि मौजूदा हालात में ये सब समझना तुम्हारे लिये आसान नहीं है लेकिन मेरा एकेडमिक बैकग्राउण्ड इतना ब्राइट नहीं रहा है कि मैं ये सब तुम्हें सिम्पल वे में समझा सकूँ।”

हर बार की तरह इस बार भी यश ने भावशून्य प्रतिक्रिया दी और चावल के बीच दाल उड़ेलने लगा।

“मैं समझता हूँ कि मैथ्स में गहरी रुचि होने के कारण उससे जुड़ी कुछ चीजें तुम्हारे सबकॉन्शियस माइण्ड का हिस्सा बन गयी होंगी। मेरे कहने का मतलब है कि याद्दाश्त खो देने के बाद भी अपने सब्जेक्ट से जुड़ी कुछ चीजें तुम अभी भी जानते होगे।”

“क्या आपकी ये थ्योरी मुझे मेरी पहचान वापस दिलाने में कोई मदद कर सकती है?”

साहिल ने खामोशी अख्तियार कर ली और यश की प्लेट देखने लगा। वह प्लेट में चम्मच बस चला रहा था। अब तक की बातचीत के दौरान उसने एक भी निवाला हलक से नीचे नहीं उतारा था।

“मैं नहीं जानता कि कब और किस परिस्थिति में तुम्हारी चेतना वापस आ सकती है लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि यदि तुमने सबकॉन्शियस माइण्ड का सहारा लिया तो बेहतर परिणाम सामने आ सकते हैं।”

“मैंने आपसे वही तो पूछा कि मेरा सबकॉन्शियस माइण्ड मेमोरी रिगेन करने में कैसे मेरी हेल्प कर सकता है?”

“ये समझने के लिए तुम्हें सबसे पहले सबकॉन्शियस माइण्ड की कार्यप्रणाली को समझना होगा। हमारे दिनचर्या की काफी एक्टिविटीज ऐसी होती हैं, जिन्हें पूरा करने के लिये हमें उन्हें याद नहीं रखना पड़ता क्योंकि उन एक्टीविटीज को पूरा करने की जिम्मेदारी हमारे अवचेतन मस्तिष्क यानी कि सबकॉन्शियस माइण्ड की होती है। उदाहरण के तौर पर रेस्पायरेशन को ही लेते हैं। क्या हमें ये याद रखना पड़ता है कि हमें एक मिनट में साठ बार साँस लेना है? नहीं, हमें याद रहे या न रहे ये क्रिया सतत रुप से चलती रहती है। उस वक्त भी, जब हम नींद में होते हैं। हमारे फेफड़ों को हमेशा साँस लेने की याद दिलाते रहने वाला कौन होता है?”

“सबकॉन्शियस माइण्ड?”

“एक्सैक्ट्ली। रेस्पायरेशन इज अ कम्पल्सरी नीड ऑफ आवर लाइफ और जो चीजें हमारी लाइफ के लिए कम्पल्सरी होती हैं, उन्हें पूरा करने की जिम्मेदारी कॉन्शियस माइण्ड की नहीं बल्कि सबकॉन्शियस माइण्ड की होती है क्योंकि कॉन्शियस माइण्ड फ्लफी नेचर का होता है। बायोलॉजिकल प्रोसेस के साथ-साथ वो सभी एक्टिविटीज या अचीवमेंट, जिन्हें हम अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बना लेते हैं, पूरा करने की रेस्पोंसिबिलिटी सबकॉन्शियस माइण्ड को हैण्डओवर हो जाती है। जब सबकॉन्शियस माइण्ड हमारी किसी फिजिकल नीड को फुलफील करने में एबल नहीं होता है तो वह उसके लिये फेवरेबल
एटमास्फीयर बनाने लगता है।

मैं इसे एक एग्जाम्पल की हेल्प से तुम्हें और बेहतर ढंग से समझा सकता हूँ। सपोज दैट, कोई स्टूडेंट एग्जाम में टॉप मोस्ट रैंक सेक्योर करने के लिये पजेस्ड है और वह दिन-रात यही सोचता है कि उसे एट एनी कॉस्ट टॉप रैंक एचीव करनी ही करनी है। वह ज्यों-ज्यों अपने लक्ष्य के प्रति उग्र चिंतन करता जाता है, त्यों-त्यों लक्ष्य प्राप्त न होने की दशा में उसके अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या कर लेने या फिर मानसिक संतुलन खो बैठने की संभावना भी प्रबल होती जाती है। अंततः टॉप रैंक सेक्योर करना उसके जीवन का अनिवार्य लक्ष्य बन जाता है, अ कम्पल्सरी नीड। और ऐसा होते ही अवचेतन मस्तिष्क जागृत हो उठता है। लड़के का कॉन्शियस माइण्ड पढ़ाई करने की जो भी स्ट्रेटेजी बनाता है, सबकॉन्शियस माइण्ड उस स्ट्रेटेजी के फॉलोअप के लिये फेवरेबल कंडीशन बनाने लग जाता है। चेतन मस्तिष्क और अवचेतन मस्तिष्क का ये सम्मिलित प्रयास तब तक चलता रहता है जब तक कि लड़का अपने टारगेट को हिट नहीं कर लेता।”

"इतने लम्बे-चौड़े एग्जाम्पल का सीधा सा मतलब यही है कि हम जैसा सोचते हैं, हमारे आस-पास वैसा ही एटमास्फीयर क्रियेट होना शुरु हो जाता है।"

"एब्सल्युटली राइट।" साहिल ने हौले से मेज पर मुक्का मारा। यश ने बिल्कुल वही समझा था, जो वह उसे समझाना चाहता था- "यही तो कारण है कि बी पॉजिटिव थ्योरी हर मोटिवेशनल स्पीकर के शो का अहम् हिस्सा होती है। हर इंटरप्रेन्योर इसीलिए इस बात पर जोर देता है कि हमेशा उस चीज के बारे में सोचो, जो तुम बनना चाहते हो या फिर जिसे अपने जीवन में साकार होते हुए देखना चाहते हो क्योंकि हमारे विचार ही हमारी सफलता के लिये आवश्यक परिवेश का निर्माण करते हैं।"

"आपके अनुसार मैं अपनी चेतना भले ही गंवा चुका हूँ लेकिन वो चीजें आज भी मेरे सबकॉन्शियस माइण्ड का हिस्सा होंगी, जो कभी मेरे जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं हुआ करती थीं।"

"यस। यू आर ऑन राइट ट्रैक। मैथ्स तुम्हारे जीवन का अभिन्न अंग था। तुम मैथ्स के लिये पजेस्ड हुआ करते थे इसलिए इस चेतनाविहीन अवस्था में भी वह तुम्हारे अवचेतन मस्तिष्क में संरक्षित होगा।"

"यानी कि मैं किसी अनजान शक्ति के वशीभूत होकर इस कंडीशन में भी मैथ्स के प्रॉब्लम्स सॉल्व कर सकता हूँ?"

"उसे अनजान शक्ति नहीं अवचेतन मस्तिष्क की शक्ति कहते हैं। एक मिनट रुको।"

साहिल इतना रोमांचित हो उठा था कि ये भी भूल गया कि वह लंच के लिए
बैठा है। उसने नैपकिन से हाथ पोछा और शो-केस की ओर बढ़ गया। उसके काँच के कपाट के उस पार नजर आ रही गणित की अनगिनत किताबों के बीच रखा एक फाइल उठाया और उसे लेकर वापस डायनिंग टेबल पर आया।

"इस फाइल को देखो यश।"

यश ने फाइल थाम लिया। उसके अंदाज से झलकती निराशा अब उत्सुकता में तब्दील हो चुकी थी।

"सिग्निफिकेन्स ऑफ डिफरेन्शियल एक्वेशन्स इन मेडिकल साइंस: हॉडकिन हक्सले मॉडल।"

फाइल का टाइटल पढ़ने के बाद यश ने साहिल के चेहरे पर दृष्टिपात किया।

"इस टाइटल को पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में क्या आ रहा है?" साहिल ने पूछा।

"ये नाम कहीं सुना हुआ लग रहा है। ऐसा लगता है जैसे मैं इस टॉपिक के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ लेकिन उसे आपके सामने रख नहीं पा रहा हूँ।" यश ने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा।

"कोशिश करो यश।" साहिल ने उकसाया- "ये तुम्हारा ही लिखा हुआ रिसर्च पेपर है, जिसे तुमने कैंब्रिज में रिप्रजेन्ट किया था। तुम्हें इस टॉपिक के बारे में कुछ न कुछ जरूर याद आएगा।"

यश ने आँखें बंद कर ली। उसके माथे पर पड़ने वाली सिलवटों ने इंगित किया कि मौजूदा फाइल की विषयवस्तु को याद करने के प्रयास में वह एक मानसिक द्वंद्व से जूझने लगा था।

"नहीं याद आ रहा है मुझे।" अंततः उसने आँखें खोल दी और लंबी-लंबी साँसें लेते हुए बोला उसका चेहरा तनावग्रस्त हो उठा था।

"पानी पी लो।" साहिल ने पानी का गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

यश को सचमुच पानी की जरूरत थी। उसने गिलास को एक ही साँस में खाली करके टेबल पर रख दिया। लंच का ख्याल दोनों के ही जेहन से रुख्सत हो चुका था।

"लिखने की कोशिश करो।" थोड़ी देर की खामोशी के बाद साहिल ने जेब से पेन निकाला और उसे यश की ओर बढ़ाते हुए कहा- "हो सकता है कि तुम जिसे बता नहीं पा रहे हो, उसे शब्दों में ढाल सको।"

यश ने पेन लिया और फाइल का ब्लैंक पेज खोला। पेन हाथ में आते ही मानो उसकी उंगलियाँ मचलने लगीं थीं। किसी अज्ञात प्रेरणा के सम्मोहन में बंधे यश द्वारा पेन की नोक को कागज पर रखने भर की देर थी कि शब्द खुद-ब-खुद कागज पर उतरने लगे। सुखद आश्चर्य के सैलाब में डूबा साहिल, यश की उन बातों को शब्दों का रूप लेते हुए देखता रहा, जिन्हें वह लफ्जों का रूप देने में विफल रहा था। उसके अंदाज से लग रहा था कि वह मात्र एक जरिया था, शब्द किसी और की प्रेरणा से पन्ने पर उतर रहे थे। करीब दस मिनट तक लिखने के बाद यश ने लिखे हुए वाक्यों को साहिल की ओर बढ़ा दिया।

"तुम खुद मुझे सारांश सुना दो क्योंकि मेरी इंग्लिश कमजोर है।"

"संक्षेप में कहा जाए तो ये रिसर्च ऑर्टिकल मेडिकल साइंस में डिफरेन्शियल एक्वेशन के सिग्निफिकेन्स के बारे में है। ये ऑर्टिकल विशेष रुप से हॉडकिन-हक्सले मॉडल पर केन्द्रित है। दरअसल हॉडकिन-हक्सले मॉडल एक गणितीय मॉडल है, जो न्यूरॉन्स में एक्शन पोटेन्शियल के प्रारम्भ होने और उनके संचरित होने का विवरण प्रस्तुत करता है। ये मॉडल नॉन-लीनियर डिफरेन्शियल एक्वेशन्स का सेट होता है, जो न्यूरॉन जैसे उत्तेजनशील कोशिकाओं के इलेक्ट्रिकल कैरेक्टरस्टिक्स........।"

"बस....।" साहिल ने ऊबकर यश की बात काट दी क्योंकि वह भारी-भरकम सिद्धांत उसके सिर के ऊपर से जाने लगा था- "मैं जो जानना चाहता था, मुझे पता चल गया।" साहिल की आँखों में व्याप्त हो उठी चमक बता रही थी कि उसे पहली दफा यश की हालत को लेकर सकारात्मक संकेत प्राप्त हुए थे। उसने आगे कहा- "इस वक्त मैथ्स से अनजान होने के बावजूद भी तुमने मैथ्स के एक रिसर्च ऑर्टिकल को समराइज कर डाला। अब तो तुम्हें यकीन हो गया होगा कि मैंने जो कुछ कहा वह सब सच है, कोई काल्पनिक सिद्धांत नहीं। तुम्हारा चेतन मस्तिष्क जिन बातों को भुला चुका है, वे बातें अभी भी तुम्हारे अवचेतन मस्तिष्क में संरक्षित हैं।"

"वह सब तो ठीक है। लेकिन मेरा ये सवाल तो अब भी अपनी जगह पर है कि मैं मेरी मेमोरी रिगेन कैसे कर सकता हूँ?"

"गुड क्वेश्चन यश।" साहिल ने चुटकी बजाते हुए कहा- "मेडिकल साइन्स में मेमोरी लॉस के अब तक जितने भी केसेज आए हैं, उनमें से अधिकतर का इलाज डॉक्टर्स के एफर्ट के बजाय पेशेण्ट के सेल्फ एफर्ट से ही कारगर हो पाया है इसलिए तुम्हें मेमोरी रिगेन करने के लिये मेरे साथ कोशिश करनी होगी।"

"लेकिन वह कोशिश होगी क्या?"

"इसके लिये तुम्हें सबसे पहले कॉन्फिडेण्ट होना पड़ेगा।" साहिल ने गहरी साँस ली और कहा- "इसके बाद हम साथ मिलकर अपने आस-पास बिखरी कड़ियों को जोड़ेंगे और उनकी एनालिसिस से ये पता लगाएंगे कि कैंब्रिज में तुम्हारे साथ क्या हुआ था? तुम्हारी एक रिसर्च फेलो ने मुझे बताया कि वहाँ तुम पर जानलेवा हमला हुआ था।"

"तो क्या वह अटैक ही मेरे मेमोरी लॉस की वजह है?"

"शायद। डायरेक्टली या इनडायरेक्टली तुम पर हुआ अटैक भी तुम्हारे सडन मेमोरी लॉस के अज्ञात कारणों में से एक हो सकता है।"

"इसका मतलब कि कारण और भी कई हैं, जो आपको नहीं मालूम हैं।"

"हाँ, क्योंकि तुम पर जो अटैक हुआ था, वह फेल हो गया था। जिस अटैक में तुम्हें खरोंच तक नहीं आयी थी, उस अटैक को सडन मेमोरी लॉस की वजह मान लेना थोड़ा अजीब लग रहा है। इसीलिये मैंने कहा कि तुम्हारे सडन मेमोरी लॉस के और भी कई कारण हो सकते हैं, जो अज्ञात हैं। मुझे लगता है कि तुम कैंब्रिज में सिर्फ अटैम्प्ट टू मर्डर का ही नहीं बल्कि कुछ अन्य रहस्यमयी गतिविधियों का भी शिकार हुए थे।"

"ऐसा क्या हुआ रहा होगा मेरे साथ, जो अचानक मुझे अपनी पहचान से हाथ धोना पड़ा?"

"ये जानने का एक जरिया मेरे पास है।" साहिल ने क्षण भर के मौन के बाद आगे कहा- "कैंब्रिज के वर्कशॉप में पार्टिसिपेट करने वाले इण्डियन रिसर्च स्टुडेण्ट्स के ग्रुप को तुम्हारे रिसर्च गाइड यानी कि प्रोफेसर उदयराज चौहान लीड कर रहे थे। इसलिये प्रोफेसर के पास उन इण्डियन रिसर्च स्टूडेंट्स के पेपर प्रेजेण्टेशन का रिकॉर्ड मौजूद होगा।"

"उस रिकॉर्ड से हमें क्या फायदा हो सकता है?"

"उस रिकॉर्ड के जरिए हम ये पता कर सकते हैं कि तुम्हारे अलावा और ऐसे कितने स्टूडेंट थे, जिन्होंने अपने रिसर्च पेपर में मेडिकल साइंस में मैथ्स के सिग्निफिकेंस को लेकर नयी संभावनाओं की ओर प्रोफेसर्स का ध्यान आकर्षित किया था।"

यश खामोशी के साथ साहिल को घूरता रहा। वह अभी तक उसके कथन का आशय नहीं समझ पाया था।

"देखो यश....।" साहिल ने समझाने वाले अंदाज में कहा- "स्टूडेंट लाइफ में कुछ स्टूडेंट्स के कई प्रतिद्वंद्वी ऐसे भी होते हैं, जो उनसे आगे निकलने की होड़ में उन्हें शारिरिक और मानसिक रूप से हानि पहुँचाने से भी परहेज नहीं करते। मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारे उत्कृष्ट शोध कार्य को दबाने के लिए तुम्हारे ही किसी प्रतिद्वंद्वी ने ऐसी गतिविधियों को अंजाम दिया है, जिसके कारण तुम अब तक अर्जित की हुई अपनी सभी उपलब्धियों को गंवाकर स्वयं की पहचान भी खो बैठे
हो।"

"यदि ऐसा है तो मेरा वह प्रतिद्वंद्वी कौन हो सकता है?"

"इसके लिये हमें प्रोफेसर चौहान के पास मौजूद रिकॉर्ड को खंगालना होगा।
हमारे शक की सुई उस रिसर्च स्कॉलर के ऊपर ठहरेगी, जिसके रिसर्च पेपर का टॉपिक तुम्हारे टॉपिक से मिलता-जुलता होगा।"

यश ने कुछ नहीं कहा।

"बातें बहुत हो चुकीं। अब लंच को रीस्टार्ट करते हैं।"

"श्योर....।" कहने के बाद यश ने पहला निवाला मुँह में रखा।

"एक बात कहूँ यश?" थोड़ी देर बाद साहिल ने उसे अर्थपूर्ण नजरों से देखते हुए कहा।

"हाँ जरूर।" यश मुस्कुराया, अब उसके चेहरे पर रौनक थी।

साहिल ने थोड़ी देर तक उसके चेहरे के भावों को परखा। पिछले कई दिनों से उसके चेहरे पर नजर आने वाले अवसाद को छंटता देख उसे अपना सवाल पूछने के लिये ये समय उपयुक्त लगा।

"क्या सोचने लगे आप?"

"तुम ब्रह्मराक्षस के बारे में कुछ जानते हो?"

"मैं तो अपने बारे में भी कुछ नहीं जानता तो फिर इस ब्रह्मराक्षस के बारे में कैसे जान सकता हूँ?" यश ने लापरवाह अंदाज में कहा और पानी का गिलास होठों से लगा लिया।

"कोई बात नहीं। मैंने बस यूँ ही पूछ लिया था।" साहिल ने भी लापरवाह होने का दिखावा किया और लंच में व्यस्त हो गया। उसने जान-बूझकर माया और कैंब्रिज टूर के दौरान उसके बनाए हुए स्केचेज का जिक्र नहीं किया।

JJJ

राजमहल में कोहराम मचा हुआ था। संस्कृति का ऐसे तहखाने में बेहोश पाया जाना, जिसके अस्तित्व से आज तक राजमहल का कोई भी सदस्य वाकिफ नहीं था; हर किसी के हैरत की खुराक बना हुआ था। सुबह-सुबह ही एक नौकर ने स्टोररूम के दरवाजे की दरारों से भीतर झाँकने की कोशिश की थी। हालाँकि उसे कुछ नजर नहीं आया था लेकिन वह इतना जरूर समझ गया था कि कोई अंदर का माहौल न देख सके, इसके लिये छोटी मालकिन ने दरवाजे पर कबाड़ का ढेर जमा कर दिया था। वह दौड़ते हुए दिग्विजय के पास पहुँचा था और उनके सामने अपने विचार कुछ इस तरह रखे थे:

'स्टोररूम में छोटी मालकिन न जाने क्या कर रही हैं। उन्होंने अंदर से दरवाजा केवल बंद ही नहीं किया है बल्कि दरवाजे पर कबाड़ भी जमा कर दिया है ताकि कोई ये न देख सके कि वे क्या कर रही हैं।'

ये बात साधारण नहीं थी और न ही समझ के दायरे के भीतर की चीज थी, इसलिये दिग्विजय तत्काल नौकर के साथ स्टोररूम की ओर दौड़ पड़े थे। दरवाजा
पीटे जाने के बाद भी कोई उत्तर न मिलने पर जल्द ही पूरे राजमहल में ये बात जंगल में लगे आग की तरह फैल गयी थी कि स्टोररूम में बंद संस्कृति कोई जवाब नहीं दे रही है। और फिर, राजमहल का हर सदस्य और नौकर दरवाजे पर जमा हो गया था। दरवाजे पर अनगिनत थाप देने के बाद भी अंदर से कोई प्रतिक्रिया न पाकर लोगों को संदेह हुआ कि कहीं संस्कृति ने खुद को कोई हानि तो नहीं पहुँचा ली। अंततः दिग्विजय ने आदेश दिया था- *'दरवाजा तोड़ दो।'*

मालिक का आदेश पाते ही नौकर अपने प्रयास में जुट गये थे। करीब आधे घंटे की कमरतोड़ मेहनत के बाद मजबूत दरवाजा टूट तो गया था लेकिन अंदर से कबाड़ का ढेर जमा होने के कारण कमरे में दाखिल होने के लिये जगह बनाने में भी उन्हें पन्द्रह मिनट अतिरिक्त लग गये थे।

स्टोररुम के एक कोने का फ़र्श तोड़कर सुराख बनाया गया था। संस्कृति की गैरमौजूदगी और सुराख में लटक रही रस्सी ने उन लोगों को बताया था कि वह तहखाने में थी। *'सदियों पुराने राजमहल में एक तहखाना भी था'* इस सच्चाई ने हर किसी को स्तब्ध कर दिया था। कौतुहल और अविश्वास के बोझ तले दबकर कोई कुछ नहीं बोल पाया था।

सुजाता ने दिग्विजय को इस अंदाज में देखा था, मानो उन्हें याद दिलाना चाहती थीं कि संस्कृति के जिस भय को उन्होंने वहम कहकर टाल दिया था, वह भय जायज था। दिग्विजय के आदेश पर दो नौकरों ने तहखाने में उतरकर उन्हें बताया था कि अंदर छोटी मालकिन बेहोश पड़ी हुई हैं। सुनते ही सुजाता समेत सभी महिलाओं का कलेजा हलक में आ फंसा था। अनिष्ट की आशंका से पुरुषों के भी रोंगटे खड़े हो गये थे।

'व...वह...ठ...ठीक तो...है...?' सुजाता ने रुंधे गले से पूछा था।

'जी हाँ मालकिन। नब्ज चल रही है।' तहखाने से नौकर ने जवाब दिया था।

'उसे जल्दी बाहर निकालो।' ये जानने के बाद कि संस्कृति को सिवाय निश्चेतना के और कुछ नहीं हुआ है, दिग्विजय का खोया हुआ हौसला लौट आया था। और तब, आनन-फानन में उसे तहखाने से बाहर निकाला गया था।

इस समय में वह होश में थी और कमरे में सिवाय महिलाओं के और कोई नहीं था। बेड के सिरहाने सुजाता बैठी हुई थीं। उनके अलावा कमरे में संस्कृति की दोनों छोटी मांएं और दो नौकरानियाँ थीं।

"मैंने आपसे कहा था कि फर्श के नीचे तहखाना है।" संस्कृति ने काँपते लहजे में सुजाता की ओर देखकर कहा।

"घबराओ मत। अब तुम्हें कुछ नहीं होगा। हम उस तहखाने को बंद करवा देंगे।" सुजाता ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"ये इतना आसान नहीं होगा मम्मी। मुझे पता चल चुका है कि हाँफने की आवाज़ केवल मुझे ही क्यों सुनाई दे रही थी, आपको क्यों नहीं सुनाई दी थी।"

"तहखाने में तुम्हारे साथ क्या हुआ था, ये हम बाद में जानेंगे संस्कृति। अभी तुम आराम करो।" चन्द्रोदय की पत्नी शतरूपा ने कहा।

"नहीं छोटी माँ।" संस्कृति ने यूँ भय खाकर कहा, मानो यदि वह लोगों को अपनी आप-बीती नहीं बता पायी तो फिर जिन्दगी उसे ये मौका दोबारा नहीं देगी- "मुझे बताने दीजिए। यदि मैं उन घटनाओं को आप लोगों को नहीं बताऊँगी तो शायद मेरी हालत कभी नहीं सुधर पाएगी।"

शतरूपा ने जेठानी की ओर देखा। सुजाता के भावों से ज्ञात हुआ कि वे तहखाने में बेटी के साथ घटी घटना जानने के लिए उत्सुक थीं।

"ठीक है संस्कृति। बताओ क्या हुआ था तहखाने में?"

"आप लोग यकीन तो करेंगी न?" संस्कृति के आशंकित नेत्र दोनों छोटी मांओं और सुजाता पर ठहर गये।

"देखो संस्कृति। स्टोररुम के नीचे गुप्त तहखाने का पाया जाना, सामान्य घटना नहीं है। तुम्हारे साथ तहखाने में घटी घटना यदि यकीन करने लायक नहीं होगी तो भी हमें उस पर यकीन करना ही होगा। तुम पहले बताओ कि तहखाने में हुआ क्या था?"

अरुणोदय की पत्नी और अपनी दूसरी छोटी माँ अनुजा का आश्वासन पाकर संस्कृति ने कहना शुरु किया।

JJJ

तहखाना मध्यम आकार के किसी सभागार जैसा था, जिसकी लम्बाई और चौड़ाई एक माप की थी। संस्कृति ने अनुमान लगाया कि वह वर्गाकार तहखाना सिर्फ स्टोररुम के नीचे ही नहीं बल्कि राजमहल के कई कमरों के नीचे तक फैला होगा। उसकी हैरानी का सबसे बड़ा सबब ये था कि तहखाने में आने-जाने के लिए कोई रास्ता नहीं था। दीवारों पर लाल रंग से कुछ वाक्य लिखे हुए थे। संस्कृति ये तो समझ गयी कि वे वाक्य संस्कृत के श्लोक थे लेकिन ये नहीं समझ पायी कि वे श्लोक श्रीमद्भागवत गीता से उद्धृत थे। वर्गाकार फर्श के केन्द्र पर एक ताबूत रखा हुआ था लेकिन लालटेन का प्रकाश इतना पर्याप्त नहीं था कि वह अपने यथास्थान से ही उस ताबूत का मुआयना कर पाती। एक ऐसे तहखाने में, जिसमें न तो आवागमन का कोई मार्ग था और न ही उसके अस्तित्व से राजमहल का कोई सदस्य वाकिफ था; एक पुराना ताबूत पाकर संस्कृति रोमांचित हो गयी थी। कौतुहल के वशीभूत होकर वह आहिस्ता कदमों से ताबूत की ओर बढ़ी। तहखाने के लोमहर्षक सन्नाटे में उसकी पदचाप गूँजती सी लग रही थी। ज्यों-ज्यों उसके और ताबूत के बीच का फासला कम होता गया त्यों-त्यों ताबूत की छवि स्पष्ट होती गयी।

नजदीक पहुँचकर संस्कृति ने देखा कि ताबूत का आकार इतना पर्याप्त था कि उसमें अच्छी कद-कादी का कोई आदमी बगैर किसी कठिनाई के लेट सकता था। वह पंजों के बल बैठ गयी और लालटेन को ताबूत के नजदीक ले जाकर उसका मुआयना करने लगी। ताबूत पर भी दीवारों की भांति गीता के श्लोक लिखे हुए थे और स्वास्तिक-चिह्न बने हुए थे। ताबूत से लटक रहे सिन्दूर पुते ताले की आकृति भी काफी हद तक स्वास्तिक से मेल खा रही थी। ताले पर मौली धागे के कई फेरे लपेटे हुए थे। ताबूत की दशा देख संस्कृति के मन में ये विचार सहज ही आ गया कि ये कोई पुरानी तंत्र-क्रिया है, जो सालों से यहाँ बंद है। *'लेकिन ऐसे एग्जार्सिज्म की जरूरत कब और क्यों पड़ी थी?'* उसने खुद से पूछा मगर किसी संभावित सवाब तक न पहुँच सकी।

मन में उठ रहे अनगिनत सवाल उसके कौतुहल को पोषित करने लगे लेकिन जवाब जानने का उसके पास कोई जरिया नहीं था सिवाय ताबूत को खोलने के। कुछ सोचकर उसने ताले को हाथ लगाया। ठीक उसी पल भीतर से किसी के साँस लेने की ऐसी आवाज़ आयी, जैसे ताले के स्पर्श मात्र से अंदर सो रहे शख्स की नींद में खलल पड़ गया हो। संस्कृति ने खौफजदा होकर ताले से अपना हाथ हटा लिया लेकिन इसके बाद भी साँस लेने की आवाज़ बंद नहीं हुई। आवाज़ हूबहू वैसी ही थी, जैसी उसने स्टोररुम में सुनी थी।

"ओह...गॉड, तो इसका मतलब व..वह इसी ताबूत....में हैं।"

संस्कृति का कलेजा हलक में आ फंसा। पिछली रात उसे डराने वाली साँसों की आवाज़ चारों ओर से बंद तहखाने में मौजूद ताबूत से आ रही थी, इस रहस्योद्घाटन ने उसे जड़ कर दिया। भय उसके मुकम्मल वजूद पर हावी होता चला गया। वह पीछे मुड़ने का साहस भी न जुटा सकी क्योंकि मन में ये आशंका सिर उठाने लगी थी कि पीछे मुड़ने पर उसका सामना उसी से होगा, जो ताबूत में लेटा साँसें ले रहा था।

"मा....या.....।" सहसा साँसों के बीच वही पुकार सुनाई दी, जो वह पहले भी सुन चुकी थी।

संस्कृति का हलक सूख गया। डर उसके कौतुहल पर भारी पड़ने लगा। वह तहखाने में अब एक पल भी नहीं ठहरना चाहती थी। जिस्म की कंपकंपी को संभालते हुए वह उठी। अब उसे तहखाने का कोना-कोना डरा रहा था। आस-पास

किसी साए की मौजूदगी का वहम भी उसके साहस का इम्तिहान ले रहा था।

ताबूत पर नजरें गड़ाए हुए वह पीछे खिसकने लगी। तब तक खिसकती रही,

जब तक कि वह उस रस्सी से नहीं टकरा गयी, जिसे उसने यहाँ आने का जरिया बनाया था। हालाँकि रस्सी तक पहुँचते-पहुँचते उसमें इतना साहस नहीं शेष था कि ऊपर स्टोररुम में जाने की कोशिश कर सकती लेकिन जिजीविषा ने उसके भीतर साहस का संचार किया। उसने रस्सी को दोनों मुट्ठियों में भींचा और हवा में लटक गयी ताकि दोनों पैरों की उंगलियों को रस्सी में फंसाकर हाथ की पेशियों का सहारा लेकर ऊपर उठ सके लेकिन उसके साथ कोढ़ में खाज वाली बात ये हो गयी कि रस्सी उसके भार का वहन न कर सकी और टूट गयी।

'धप्प' की आवाज़ सन्नाटे में गूँजी और हाथ में रस्सी का टुकड़ा लिए हुए संस्कृति फर्श पर आ गिरी। चोट से कहीं ज्यादा वह इस ख्याल से भयभीत हो गयी कि वहाँ से बाहर निकलने का रास्ता अब बंद हो चुका था। उसे ऐसा लगा मानो उस स्थान पर वजनी पत्थर रख दिया गया हो, जहाँ कलेजा पाया जाता है। विस्फारित नेत्रों से उसने ताबूत की ओर देखा। पास ही पड़े लालटेन की पीली रोशनी में वह पहले से अधिक रहस्यमयी लगने लगा था। उसमें से आती साँसों की आवाज़ संस्कृति के कानों तक मक्खी की भिनभिनाहट के रूप में पहुँच रही थी। उसने स्टोररुम के दरवाजे पर कबाड़ का ढेर जमा कर दिया था ताकि राजमहल का कोई सदस्य उस वक्त झिर्री से अंदर न झाँक सके, जब वह तहखाने में उतरने का रास्ता बना रही हो। अतएव उसने बाहर से मदद मिलने की आस तब तक के लिये छोड़ दी, जब तक कि लोगों को ये नहीं पता चल जाता कि अब वह स्टोररुम के बजाय एक गुप्त तहखाने में है। बाहर निकलने की कोशिश में वह कई दफे उछली लेकिन ऊँचाई अधिक होने के कारण स्टोररुम का फर्श उसके हाथ न आ सका।

"प्लीज गॉड, हेल्प मी।"

ईश्वर से गुहार लगाने पर भी उसे तहखाने से बाहर निकलने का कोई दूसरा विकल्प नहीं मिलना था, सो नहीं मिला। सुराख से लटक रही रस्सी अब उसे मुँह चिढ़ाती हुई लग रही थी। आँखों में दहशत लिये हुए वह फिर से ताबूत की ओर मुड़ी। सहसा पिछली रात की भांति एक बार फिर हवा का कोई झोंका ये नाम उसके कान में फुसफुसाते हुए गुजर गया- "मा....या....।"

"क....कौन......हो.....त...तु...म..?"

संस्कृति ने शून्य को लक्ष्य करके कहा क्योंकि अब वह मान चुकी थी कि उसे पुकारने वाला हवा में घुला हुआ था।

"हमारे निकट आओ।" इस बार आवाज़ प्रत्यक्ष रुप से ताबूत से आयी थी। ताबूत में अब कम्पन भी होने लगा था।

"निकट आओ हमारे।"

ताबूत से आती रहस्यमयी आवाज़ में निहित आकर्षण संस्कृति के डर पर हावी होने लगा और उसके कदम जेहन से बगावत करके खुद-ब-खुद उसकी ओर बढ़ गये।

"स्वतंत्र करो हमें।" इस बार आवाज़ का लहजा आदेशात्मक था।

"त...तुम..कौन हो?"

"सर्वप्रथम स्वतंत्र करो हमें।"

"नहीं, मैं तुम्हें बाहर नहीं निकाल सकती क्योंकि तुम इंसान नहीं हो सकते। कोई भी इंसान इतने सालों तक ताबूत में जिन्दा नहीं रह सकता।"

"हाँ, हम मनुष्य नहीं हैं और न ही तुम संस्कृति हो।" ताबूत से आयी आवाज़ इस बार खौफनाक थी- "हम वो है, जिसे पीपल के तने से बांधकर जीवित जलाया गया था और तुम वो हो, जिससे प्रेम करने का मूल्य हमें अपने प्राण देकर चुकाना पड़ा था। तुम माया हो और हम...।"

"म....मैं माया नहीं हूँ.....।"

"हमें बाहर निकालो। हम सब-कुछ स्मरण करा देंगे तुम्हें।"

"इट्स इम्पॉसिबल। मेरा...मेरा तुमसे कोई सम्बन्ध कैसे हो सकता है?"

"हो सकता है क्योंकि तुम हमारी हो।"

इस बार आवाज़ में इस हद तक क्रोध भरा हुआ था समूचा ताबूत हिल गया। ऐसा लगा जैसे अंदर जो कोई भी था, संस्कृति को झांसे में लेने में विफल होकर झुंझला उठा था। ताबूत के ढक्कन पर अंदर से पड़ती तेज थाप से आभास हो रहा था कि वह बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था।

'अगर ये बाहर आ गया तो क्या होगा?

जवाब की कल्पना मात्र से ही संस्कृति की रुह फना हो गयी लेकिन फिर उसने ये सोचकर राहत की साँस ली कि अगर अंदर कैद वह भयानक मखलूक बुरी आत्मा जैसी कोई चीज था तो वह ताबूत से तब तक आजाद नहीं हो सकता था, जब तक स्वास्तिक की आकृति वाला वह ताला उससे लटक रहा था। संस्कृति को इस सवाल का जवाब मिल चुका था कि राजमहल का वह तहखाना गुप्त क्यों था, उसमें आने-जाने का कोई रास्ता क्यों नहीं था और राजमहल का कोई सदस्य उसकी मौजूदगी से वाकिफ क्यों नहीं था। संस्कृति के मन में कुछ हद तक निर्भयता का बोध जागृत हुआ और उसने अपना कदम वापस खींच लिया।

"तुम वापस नहीं जा सकती माया। तुम्हारे पग जिस क्षण इस भूमिगत कक्ष के धरातल पर पड़े, तभी हमें बोध हो गया कि अब हम सदियों के बंधन से मुक्त होने वाले हैं।"

आवाज़ के खामोश होते ही ताबूत के किनारों से सफेद धुंध निकलकर

तहखाने में फैलने लगी और संस्कृति उस धुंध की चपेट में आते ही होश खोकर गिर पड़ी।

JJJ

संस्कृति के इर्द-गिर्द मौजूद महिलाओं के चेहरे पर दहशत के साये मंडरा रहे थे। उसकी कहानी पर पहली टिप्पणी शतरुपा ने की।

"त...तहखाने में ताबूत...? य....ये तो भयानक है।"

"उससे भी भयानक ये है छोटी माँ कि ताबूत में जो एंटिटी थी, उसका कहना था कि उसे पीपल से बाँधकर जिंदा जला दिया गया था।"

"क्या आपको राजमहल के इतिहास में घटी ऐसी किसी घटना के बारे में मालूम है दीदी।" अनुजा, सुजाता से मुखातिब हुई।

"नहीं।" सुजाता ने चिंतित स्वर में कहा- "यदि राजमहल के रहस्यों के बारे में मुझे इतना ही मालूम होता तो क्या मुझे स्टोररुम में तहखाना होने की बात नहीं पता होती?"

काफी देर तक किसी ने कुछ नहीं कहा। तलवार के धार सी पैनी खामेशी को एक बार फिर शतरुपा ने ही भंग किया- “संस्कृति के अनुसार ताबूत पर सिन्दूर पुते हुए थे। मौली धागे बांधे गये थे और स्वास्तिकाकार ताले से उसे बंद किया गया था। बड़े भाई साहब को भी उस तहखाने के बारे में नहीं मालूम था।” शतरुपा ने एक नजर सुजाता पर डाली और पहले की अपेक्षाकृत थोड़े दबे स्वर में बोलीं- “कहीं ऐसा तो नहीं दीदी कि हमारे पूर्वजों ने किसी पुराने अभिशाप को तंत्र-क्रिया से बांधकर राजमहल के तहखाने में कैद कर दिया था? शायद वे नहीं चाहते थे कि आने वाली पीढ़ी कौतुकवश तहखाने में उतरकर उस अभिशाप को जगाए इसलिये न तो उन्होंने तहखाने में जाने का कोई रास्ता बनवाया और न ही अपने बाद की पीढ़ियों को उसके बारे में कुछ बताया।”

“अगर ऐसा है तो मैं तहखाने में जाकर उस अभिशाप को जगा चुकी हूँ। उसका पहला शिकार मैं ही बनूँगी।” संस्कृति ने भयभीत लहजे में कहा।

“ऐसा कुछ भी नहीं होगा संस्कृति।” सुजाता ने संस्कृति के सिर पर हाथ फेरते हुए दृढ़ स्वर में कहा- “हम ताबूत को खुलने ही नहीं देंगे।”

इसी क्षण एक नौकर ने आकर सूचना दी कि तहखाने में एक ताबूत पाया गया है, जिसे ठाकुर साहब के आदेश पर बाहर निकाला जा रहा है।

JJJ

साहिल स्तब्ध रह गया। उसे बस इतना महसूस हुआ कि कोई गर्म वस्तु तेजी से उसके कान के पास से गुजर गयी। इस एहसास के कुछ ही पलों बाद एक चीख उसके कानों में पहुँची। वह तेजी से चीख की दिशा में मुड़ा। रेस्टोरेण्ट के लॉन में पड़ी कुर्सियों में से एक पर मौजूद यश के सामने रखा काँच का गिलास टुकड़ों में तब्दील होकर बिखर चुका था। वह हतप्रभ था क्योंकि गिलास के ध्वस्त होने का कारण अभी तक नहीं समझ पाया था लेकिन साहिल के जेहन में बिजली कौंध चुकी थी। वह भाँप गया था कि यश पर एक बार फिर हमला हुआ था लेकिन साथ ही किस्मत भी उस पर एक बार और मेहरबान हुई थी। बुलेट उसके गिलास को ध्वस्त करता हुआ उस वेटर के जिस्म में जा धंसा था, जो पास के टेबल पर आर्डर सर्व कर रहा था।

पहले तो लोग भौचक्क हुए लेकिन जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि लॉन में फायरिंग हुई है, वे बदहवास नजर आने लगे। भीरू प्रवृत्ति के लोग भागने का रास्ता तलाशने लगे, भलमनसाहत से नाता रखने वाले कुछ लोग घायल वेटर की ओर बढ़े जबकि साहिल उस दिशा में मुड़ा, जिस दिशा से गोली चली थी। लॉन के गेट पर एक संदिग्ध व्यक्ति दिखा, जो साहिल की नजर पड़ते ही तेजी से बाहर निकल गया। साहिल को माजरा समझते देर नहीं लगी। वह किंकर्तव्यविमूढ़ होकर खड़े यश की ओर लपका।

“हरी अप।” उसने यश की बाँह पकड़ी और गेट की ओर दौड़ लगा दी।

“क्या हुआ?” भौचक्क यश ने उसके साथ दौड़ते हुए सवाल किया लेकिन साहिल बगैर कोई जवाब दिये, उसे लिए हुए गेट के पास पहुँचा। उसका शक सही हो गया था। हमलावर उन दोनों के दृष्टि-विस्तार से परे हो चुका था, लेकिन शायद ये हमलावर का दुर्भाग्य था या फिर साहिल की तेज निगाह का कारनामा, जो उसे सौ गज के फासले पर दायीं ओर मुड़ने वाली गली में किसी के घुसने की हल्की सी झलक मिल गयी थी।

JJJ

वह आदमी बुरी तरह हाँफ रहा था। गली के एक मोड़ पर ठहरकर उसने पीछे देखा। अपने पीछे गली सुनसान पाकर उसने राहत की साँस ली और दीवार की टेक लेकर पंजों के बल बैठ गया। *‘पीछा करने वाले दोनों आदमी गलियों की भुलभलैया में उलझ गये।’* इस ख्याल से उसे थोड़ी राहत मिली। उसका सीना तेजी से ऊपर-नीचे हो रहा था। दौड़ने के कारण पसलियों के पास होने वाले दर्द के ख़त्म होने तक उसने वहीं पर बैठकर सुस्ताने का निर्णय किया और आँखें बंद कर लीं। उसके जिस्म पर मौजूद कपड़े इस श्रेणी के नहीं थे कि उसे भगौड़ा या लुच्चा समझा जा सकता। उसकी वर्तमान दशा इंगित कर रही थी कि वह तीन किलोमीटर से कम की दौड़ लगाकर नहीं आया था। झुग्गी-झोपडियों से भरी वह गली ये बताने के लिये पर्याप्त थी कि वह शहर का स्लम एरिया था। गली में कोई नहीं नजर आ रहा था, सिवाय कुछ कुत्तों के, जो गली में जगह-जगह पर जमा गंदगियों पर मुँह मार रहे थे।

“वह आदमी इसी ओर आया था यश।”

गली के सन्नाटे में उपर्युक्त वाक्य के गूँजते ही खौफ की एक सर्द लहर आदमी के जिस्म में सरगोशी करती चली गयी। उसने आँखें खोली और खुद को दीवार से चिपकाए हुए पीछे देखा। गली के जिस मोड़ पर वह छिपा हुआ था, उसके ठीक पहले वाले मोड़ पर दो आदमी ठहरकर उधर-उधर देख रहे थे। उनमें से एक सामान्य था जबकि दूसरे की शारीरिक भाषा ऐसी थी, जैसे उसे ये संसार नया लग रहा हो। मोड़ पर आकर उनके ठिठक जाने की वजह ये थी कि उसी मोड़ से एक अन्य गली दूसरी दिशा में गयी थी। वे जरूर इस सवाल में उलझ गये थे कि भागने वाला शख्स किस गली में गया होगा। जिस मोड़ पर वे दोनों थे, आदमी उसके ठीक बाद वाले मोड़ पर ही छिपा हुआ था। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वे दोनों आपस में कुछ विचार करने के बाद इस मोड़ के विपरीत दिशा में जाने वाली गली में घुस गए थे। भगौड़े ने राहत की साँस ली और लम्बे-लम्बे डग भरते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया।

करीब दस मिनट बाद वह एक झुग्गी के सामने पहुँचकर ठहरा। उसकी हालत अब पचहत्तर फीसदी सामान्य हो चुकी था। वह झुग्गी भी गली के अन्य झुग्गियों जैसी ही थी; टीन की सीलिंग और पैरों की एक मजबूत ठोकर तक न झेल सकने वाला लकड़ी का कमजोर दरवाजा।

ताला खोलने के ध्येय से आदमी ने जेब से चाबी निकाली लेकिन उस वक्त चौंक पड़ा जब उसने देखा कि दरवाजे पर ताला नहीं लटक रहा था। यानी कि अंदर कोई था। उसने सावधानीपूर्वक दरवाजा भीतर की ओर धकेला और भीतर दाखिल हुआ। झुग्गी में जो भी था, उसके होने का अनुमान आदमी ने पहले ही लगा लिया था।

“अरुणा दादी आप? इस समय?”

उस औरत की उम्र पचास साल से अधिक थी और रंग निहायत ही गोरा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और कजरारी थीं। उसके बदन पर काले रंग की प्लेन साड़ी और दोनों भौहों के ठीक बीच में पचास पैसे के सिक्के के आकार की लाल बिन्दी थी। उसकी मांग सूनी थी और काले, लम्बे व अधपके बाल कमर तक लटक रहे थे। उसके गले में बड़े-बड़े मनकों की माला थी। उसकी आँखों को देखकर बोध हो रहा था कि उसने सूरमे का इस्तेमाल आँखों की खूबसूरती बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि उन्हें भयानक बनाने के उद्देश्य से किया था। वह आदमी के ठीक सामने मौजूद एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठकर एक पैर जमीन पर टिकाए हुए थी जबकि दूसरे को घुटने से मोड़कर कुर्सी पर ही रखे हुए थी। उसके बाएं हाथ में एक लाठी थी, जिसका ऊपरी सिरा चमगादड़ की मुखाकृति वाला था और दाहिने हाथ में एक लंबा चाकू था, जिसके चमचमाते हुए फल में वह अपना अक्स निहार रही थी। भीषण क्रोध के कारण उसका खूबसूरत और रहस्यमयी चेहरा बेहद डरावना नजर आ रहा था। उसके होठों की बेपनाह सुर्खी, उसके लगातार पान चबाने की आदी होने की चुगली कर रही थी। आदमी का सम्बोधन पाकर अरुणा नाम की उस भयानक औरत ने चाकू में नजर आ रहे अपने अक्स से ध्यान हटाकर उसकी ओर देखा।

“अ....आप...इस वक्त...?” आदमी ने हकलाते हुए टूटे-फूटे लहजे में पूछा।

"एक चाकू खरिदा है हमने।" अरुणा ने चाकू के फल पर अपनी उंगलियाँ फिराते हुए भयानक अंदाज में कहा- "इसके धार की जाँच करना चाहते थे, इसलिए यहाँ चले आए।"

"म...मैं...स...समझा नहीं अरुणा दा....दी।" आदमी का हलक सूख गया।

चाकू के फल पर उंगलियाँ फिराने के कारण अरुणा की उँगलियों से खून बह निकला था। उसने उस खून पर जीभ फिराते हुए पूर्ववत् भयानक लहजे में कहा- "दरवाजा बंद करके हमारे पास आओ। हम ढंग से समझा देते हैं तुम्हें।"

आदमी शायद उसका अंदाज देखकर उसके इरादे की कल्पना कर चुका था। दरवाजा बंद करके उसकी ओर बढ़ते हुए उसकी टांगें कांप रही थीं। लम्बी दौड़ के बाद शक्ति क्षीण होने में जो कसर बाकी रह गयी थी, उसे अरुणा के खौफ ने पूरा कर दिया था।

"घुटनों पर बैठ जाओ।" उसके निकट आ जाने पर अरुणा ने आदेश दिया।

खौफजदा आदमी ने आदेश का पालन किया। अरुणा ने चाकू के फलक में फिर से अपना अक्स देखा, तत्पश्चात उसे अपनी आँखों के नजदीक ले जाकर धार की तीक्ष्णता परखी और अगले ही पल आदमी के गले पर लाल रंग की एक पतली रेखा खींच गयी। उसकी गर्दन की कई नसें एक साथ कटीं और उनसे बहती खून की लकीरें तेजी से उसकी कमीज की ओर सरकने लगीं। उसके होंठ काँपे लेकिन कोई शब्द नहीं उगल पाए। उसने पलकें खोले रखने की कोशिश की लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे पलकों पर वजनी पत्थर डाल दिए गए हों। उसका बेजान होता शरीर जमीन पर गिरता, उससे पहले ही अरुणा ने उसके लम्बे बालों को अपनी मुट्ठी में भींच लिया और उसका जिस्म जमीन पर गिरने के बजाय लहराकर रह गया। उसकी तेजी से फड़फड़ाती पलकें बता रही थीं कि वह जीने की चाह में आँखें खोले रखने की कोशिश कर रहा था लेकिन शरीर पर से उसका अख्तियार पल-प्रतिपल क्षीण पड़ता जा रहा था। वह प्राणोत्सर्जन के अंतिम चरण
में पहुँच चुका था।

"क्यों?" अरुणा ने उस अधमरे इंसान के चेहरे पर इस कदर दृष्टिपात किया मानो वह जीवित हो। उसकी भाव-भंगिमाओं में तेजी से परिवर्तन हुआ। कजरारी लेकिन भयानक आँखों में खून उतर आया। वह इस कदर दांत पीसी, मानो शब्दों को उगलने से पहले चबाना चाहती हो- "क्यों तूने बेवकूफी कर दी भीमा? झुग्गी में रहने वाले तुझ जैसे भिखारी को हमने कैंब्रिज की चमक-धमक से रु-ब-रु कराया, क्या इसीलिये कि तू नाकामयाब हो जाए? तेरी पहली खता को माफ करते हुए हमने तुझे यश को ठिकाने लगाने के लिये यहाँ दूसरा मौका दिया, क्या इसलिये कि तू फिर से नाकामयाब होकर इस बार उसके भाई को अपने ठिकाने का पता भी बता दे? तुझसे बहुत उम्मीदें थीं भीमा। हमारे पूर्वज राजमहल के तहखाने में कैद जिस अभिशाप के उपासक थे, उस अभिशाप को एक बार फिर राजमहल पर जलजला बनकर टूटते हुए देखने की अपनी चाहत को पूरा करने के लिए हमने तुझे सहयोगी के रुप में चुना था लेकिन तू...तू हमारी एक भी कसौटी पर खरा नहीं उतर पाया। कैंब्रिज में यश पर सार्वजनिक जगह पर हमला करने की गलती करके तूने अपनी मूर्खता का पहला परिचय दिया और फिर यहाँ उसी गलती को दोहराकर तूने अपनी मौत के फरमान पर दस्तखत कर दिया।"

अपनी बात समाप्त करने के बाद अरुणा ने भीमा का बाल छोड़ दिया। भीमा का जिस्म कटे पेड़ की भांति लहराकर जमीन पर गिरा और छटपटाकर शांत हो गया। अरुणा ने चाकू पर लगा खून साड़ी में पोछा और उसकी नोक को भीमा के खून में डूबाकर जमीन पर कुछ लिखने लगी।

JJJ

"वह इसी गली में आया था लेकिन अब कहाँ गायब हो गया?" गली को सुनसान पाकर साहिल ने उलझे हुए स्वर में कहा।

"पर वो था कौन?"

"शायद वही, जिसने तुम पर पहले भी अटैक किया था।" साहिल, यश की ओर घुमा- "मैंने तुमसे पहले ही कहा था यश कि कोई जरूर है, जो तुम्हारी जिंदगी से ग्रहण की तरह जुड़ चुका है।"

"लेकिन क्यों? मैं किसी अज्ञात हत्यारे के निशाने पर क्यों आ गया हूँ?"

"इस क्यों के जवाब को ही तो तलाशना है यश।"

"मुझे लगता है, हम गलत दिशा में आ गये हैं।"

इससे पहले कि साहिल कुछ कहता, पीछे से एक आवाज़ आयी- "किसी की तलाश है क्या तुम दोनों को?"

दोनों लगभग एक साथ आवाज़ की दिशा में मुड़े। पीछे अधेड़ उम्र की एक
औरत थी, जिसके हाव-भाव सामान्य होने के बावजूद भी रहस्यमयी लग रहे थे। उसके हाथ में एक लाठी थी। लाठी के जिस सिरे को उसने थाम रखा था वह चमगादड़ की मुखाकृति वाला था। वह यश को ऐसे घूर रही थी, जैसे कोई डायन अपने शिकार को घूरती है।

"ह....हाँ... लेकिन आपको कैसे पता?"

"गलत दिशा में आ गये हो तुम दोनों। भगौड़ा उल्टी दिशा में भागा था। यानी इस गली के ठीक सामने वाली गली में।"

साहिल ने यश की ओर देखा। दोनों ने एक दूसरे की आँखों में यही सवाल पाया कि उन्हें इस औरत की बातों पर विश्वास करना चाहिए या नहीं। महिला उनकी दुविधा भाँप गयी। उसने कहा- "मैं उसी गली से होकर आ रही हूँ। थोड़ी देर पहले एक आदमी को बदहवास सा भागते हुए देखा और फिर यहाँ तुम दोनों को देखा तो मुझे लगा कि वह तुम्हीं लोगों से बचकर भाग रहा है।"

"क्या आप जानती हैं कि वह किस ओर गया?"

"उसकी झोपड़ी इसी गली में है। जाहिर है कि अपनी झोपड़ी में ही गया होगा।" महिला की आँखों में एक तेज चमक उभरी लेकिन साहिल और यश में से किसी ने इस पर गौर नहीं किया।

"क्या....क्या अप हमें उसकी झोपड़ी तक पहुँचा सकती हैं?"

"सामने वाली गली में नाक की सीध में दो सौ गज जाने पर जिस झोपड़ी के दरवाजे खुले हुए मिलेंगे, वही उसकी झोपड़ी होगी। ज्यादा मुश्किल नहीं होगी पहुँचने में।"

महिला, यश पर एक नजर डालते हुए मुस्कुराकर आगे बढ़ गयी जबकि साहिल, यश से मुखातिब होकर बोला- “अगर वह आदमी हमारे हाथ लग गया तो कोई खुलासा जरूर कर सकता है।”

यश भी रोमांचित हो उठा। अपनी यादों पर पड़े धूल के आवरण हटाने के लिए वह भी उद्वेलित था इसलिए बिना किसी वाद-प्रतिवाद के साहिल के पीछे दौड़ पड़ा। जल्द ही वे महिला के कहे अनुसार खुले दरवाजे वाली झोपड़ी के सामने खड़े थे।

“शायद वह इसी झोपड़ी की बात कर रही थी।”

साहिल ने यश को यथास्थान खड़े रहने का संकेत करके पहले खुद झोपड़ी की चौखट पर कदम रखा लेकिन अंदर झाँकते ही बुरी तरह घबरा गया।

“क...क्या...ह...हुआ?” यश ने सशंकित लहजे में पूछा।

“ल...लाश....अंदर तो एक आदमी की लाश है।” साहिल हकलाया।

बौखलाकर यश भी उसके पास पहुँचा।

अंदर मौजूद लाश औंधे मुँह पड़ी हुई थी। उसकी गर्दन के नीचे से खून बहकर जमीन पर फ़ैल रहा था। जिस स्थिति में लाश पड़ी हुई थी, उस स्थिति में चौखट पर रहकर ये जानना मुश्किल था कि उसकी गर्दन पर चाकू फेरा गया है।

“अब हमें क्या करना चाहिए?” यश ने पूछा।

साहिल ने आस-पास देखा। गली में सन्नाटा फैला हुआ था। सिवाय उन दोनों के वहाँ एक परिंदा तक नहीं नजर आ रहा था। उसके जेहन में कोई विचार तेजी से कौंधा। उसने यश की कलाई पकड़ी और उसे साथ लिये हुए बिजली की तेजी से झोपड़ी में प्रविष्ट होकर दरवाजा बंद कर लिया। यश ने कुछ बोलने से पहले ही उसने कहा- “इससे पहले कि हत्या की खबर फैले और पुलिस यहाँ आ जाए, हमें इस जगह की छान-बीन करके इस आदमी के बारे में कुछ जानना चाहिये।”

वे दोनों लाश के पास पहुँचे। साहिल ने मरने वाले को पहचान लिया। ये वही था, जिसे उसने रेस्टोरेंट से भागते हुए देखा था। उसकी गर्दन से खून रिसते हुए अभी तक जमीन पर फैल रहा था। झोपड़ी को देखकर हत्प्राण की आर्थिक हैसियत का अंदाजा लगाया जा सकता था। सरसरी नजर से माहौल का जायजा लेने के बाद साहिल के जेहन में दो सवाल आये। पहला ये कि उसके पास रिवाल्वर कहाँ से आया और दूसरा ये कि भिखारी जैसी हैसियत वाला वह आदमी कैंब्रिज कैसे पहुँचा था। पहली नजर में वह कोई ऐसा सुपारी किलर भी नहीं लग रहा था कि अपने शिकार पर घात लगाए हुए कैंब्रिज तक पहुँच जाये। उपर्युक्त के अलावा साहिल की हैरत का सबसे बड़ा कारण जमीन पर खून से लिखा हुआ वह वाक्य था, जिसके ज्यादातर अक्षर खून के बहाव के कारण बिगड़ गये थे लेकिन फिर भी लिखा हुआ वाक्य अच्छी तरह समझ में आ रहा था।

‘माया आ चुकी है। श्मशानेश्वर भी आयेंगे। वह मरेगा, जो दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक-चिह्न के साथ जन्मा है।’

साहिल ने यश की ओर देखा। वह सहमा हुआ और हैरान था। वह लपककर उसके पास पहुँचा और उसकी दाहिनी कलाई पर नजर डाली। वहाँ जो जन्मजात निशान नजर आ रहा था, वह काफी हद तक स्वास्तिक से मिल रहा था। साहिल को उस निशान का इल्म पहले से ही था लेकिन इससे पहले न तो उसने और न परिवार के किसी अन्य सदस्य ने उस निशान की पहचान स्वास्तिक के रूप में की थी।

‘तो क्या यश पर दो बार हुए हमले की वजह ये स्वास्तिक है? क्या कोई केवल इसलिए इसे मारना चाहता है कि ये इस स्वास्तिक-चिह्न के साथ जन्मा है? लेकिन कौन और क्यों?’

अब तक यश भी खून से लिखे वाक्य को पढ़ चुका था और साहिल की व्यग्रता का करण भी समझ चुका था।

“क्या मेरी कलाई का ये निशान ही स्वास्तिक है?”

साहिल ने अधरों पर जुबान फेरते हुए ‘हाँ’ में गर्दन हिलाई।

“तो क्या...तो क्या मैं मरने वाला हूँ?”

“पागल मत बनो यश।” साहिल ने झुंझलाते हुए कहा- “मेरे होते हुए कोई तुम्हारी परछाईं तक को नहीं छू सकता है। एक बात तो अब बिल्कुल साफ़ हो चुकी है कि तुम्हारी यादों के जाने का तुम्हारे ऊपर हुए हमलों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमलावर तुम्हें मारना चाहता था। उसने तुम्हें मारने के लिए तुम पर गोली चलाई थी, न कि तुमसे तुम्हारी पहचान छिनने के लिए।”

“तो फिर मेरी याद्दाश्त कैसे गयी? मुझे याद क्यों नहीं आ रहा है कि मेरे साथ क्या हुआ था?” यश के लहजे में विवशता थी।

“वह औरत सब-कुछ जानती है। श्मशानेश्वर कौन है, माया कौन है; ये सब उसे मालूम होगा। उसने ही इस आदमी को मारा है। वरना उसे कैसे पता चला कि हम इसी आदमी का पीछा कर रहे थे।”

“लेकिन वह इसे क्यों मारेगी?”

“क्योंकि ये दो-दो बार तुम्हारी जान लेने में नाकाम हुआ था और इस बार तो हम भी इसके पीछे पड़ गये थे। अगर ये ज़िंदा हम लोगों के हाथ लग जाता तो कई रहस्यों से परदा उठ सकता था, इसलिये उसने इसे मार डाला।”

“लेकिन...लेकिन वह थी कौन?”

“यही पता करना है हमें।”

“हमें उसे ढूँढना चाहिए। वह ज्यादा दूर नहीं गयी होगी।”

“नहीं, वह निकल चुकी होगी। अगर उसने पुलिस को फोन कर दिया होगा तो हमारे यहाँ रुकने में भी खतरा है। हमें यहाँ से निकलना होगा, चलो।” साहिल, यश की बाँह पकड़कर उसे दरवाजे की ओर खींचते हुए बोला।

III

“तुम्हारी बेटी की हालत अब कैसी है?” ड्राइंग हॉल की निस्तब्धता के कुलगुरु के गंभीर स्वर ने भंग किया।

“काफी हद तक सुधार है लेकिन अब भी बहुत ज्यादा डरी हुई है।” दिग्विजय ने जवाब दिया।

ड्राइंग हॉल में कुलगुरु के साथ केवल तीनो भाई थे। इनके अलावा वहाँ न तो कुलगुरु के अंगरक्षक शिष्य थे और न ही राजमहल के अन्य सदस्यों में से कोई था। थोड़ी देर पहले ही कुलगुरु ने ये कहकर लोगों को वहाँ से हटा दिया था कि वे तीनों भाइयों के साथ जो परिचर्चा करने वाले हैं, उसमें राजमहल के इतिहास का जिक्र होगा और उस इतिहास की गोपनीयता के लिए ये जरूरी है कि इस परिचर्चा में केवल विश्वसनीय और महत्वपूर्ण लोग ही उपस्थित रहें।

तहखाने से निकला ताबूत भी ड्राइंग हॉल में ही था। संस्कृति की खौफनाक कहानी सुनने के बाद किसी की हिम्मत ने उसे खोलने के पक्ष में गवाही नहीं दिया था और आखिरकार कुलगुरु को ही बुलाने का निर्णय लिया गया था।

“उसका भय अकारण नहीं है और न ही उस भूमिगत कक्ष का अस्तित्व अकारण होगा।”

“तो क्या सचमुच सदियों पहले हमारे पूर्वजों द्वारा किसी को जिंदा जलाया गया था? क्या उस अत्याचार के बाद जन्मे अभिशाप को उन्होंने ताबूत में बंद करके तहखाने में दफ़न कर दिया था ताकि आने वाली पीढ़ी भी उनके कुकृत्य का मोल चुका सके?” चन्द्रोदय ने कहा।

“इस विषय में मुझे भी कोई ज्ञान नहीं है किंतु इतना अवश्य स्मरण है कि सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में जब इस देश में तंत्र-साधना अपने चरम पर थी तब उन्हीं दिनों शंकरगढ़ में कापालिकों का एक समुदाय गुप्त रूप से पनप रहा था। कापालिक उन तांत्रिकों को कहा जाता था, जो अपनी तंत्र-साधना का गलत इस्तेमाल करते थे। उनकी साधना; विलासिता, वीभत्सता और नरबलि से परिपूर्ण हुआ करती थी। ये कापालिक मानव-बस्तियों से षोडश वर्षीय अक्षत यौवनाओं का अपहरण कर लिया करते थे, तत्पश्चात उन्हें या तो माँ काली को बलि चढ़ा दिया करते थे या फिर अपनी भैरवी बना लिया करते थे। चूँकि राज्य में इस प्रकार की तंत्र साधनाएं निषिद्ध थीं, इसलिए कापालिक अपनी साधनाएं गुप्त रूप से राज्य के दक्षिण के घने जंगल में करते थे। उन्हीं में से एक कापालिक अभयानन्द भी था, जिसके बारे में सुनने में आता है कि वह राज्य की तात्कालिक राजकुमारी माया पर आसक्त था और उसे अपनी भैरवी बनाने हेतु प्रयत्नशील था। जब ये बात महाराज तक पहुँची तो उन्होंने उसके लिए अत्यंत भयावह मृत्यु की घोषणा की। उन्होंने उसे पीपल के पेड़ से जीवित जला देने का आदेश दिया था।”

“लेकिन..लेकिन जब उसे जीवित जला दिया गया था तो फिर तहखाने और ताबूत के अस्तित्व का उससे क्या सम्बन्ध?”

“हमने तुम लोगों से पूर्व में ही कहा कि इस विषय में हमें अधिक ज्ञान नहीं है। चूँकि ताबूत में मौजूद रहस्यमयी शक्ति ने संस्कृति को माया नाम से संबोधित किया, इसलिए हमें ये संदेह हो रहा है कि इस ताबूत में जो कुछ भी है, वह अभयानन्द की घटना से ही जुड़ा हुआ है। अभयानन्द एक कापालिक था इसलिए संभव है कि जलाए जाने के पश्चात वह अतृप्त आत्मा के रूप में पुन: लौट आया रहा हो और तब उस पर किसी प्रकार नियंत्रण पाकर उसकी किसी कमजोरी को इस ताबूत में बंद कर दिया गया हो। ताबूत को अन्यत्र दफनाने से कालांतर में उसका भेद खुलने का भय था, इसलिए उसे राजमहल में ही एक भूमिगत कक्ष बनाकर सुरक्षित रखा गया। आने वाली पीढ़ी उस ताबूत के साथ छेड़खानी करने का दुस्साहस न कर सके इसलिए न तो उस कक्ष में आवागमन का कोई मार्ग बनाया गया और न ही आने वाली पीढ़ियों को उसके अस्तित्व से अवगत कराया गया।” कुलगुरु ने क्षणिक खामोशी के पश्चात आगे कहा- “किंतु ये मात्र हमारा अनुमान है। सत्य इससे सर्वथा भिन्न भी हो सकता है। अभयानन्द का पूरा प्रकरण जानने के लिए हमें राजमहल के इतिहास पर शोध करने की आवश्यकता है। हमें इस राजमहल में बने उस ग्रंथालय में जाना होगा, जहाँ इस खानदान से जुड़े ऐतिहासिक ग्रंथ संरक्षित हैं।”

“इसमें जो कुछ भी था, उसने संस्कृति को माया नाम से बुलाया था।” दिग्विजय ने ताबूत की ओर देखते हुए कहा- “कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने संस्कृति को माया का पुनर्जन्म समझा हो?”

“संभव है।” कुलगुरु ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

“तो फिर अब हमारे सामने क्या रास्ता है कुलगुरु? इस ताबूत का हम करें क्या?”

“फिलहाल तो इसे खोलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इसे खुलने से रोकने के लिए ही इतनी गोपनीय रीती से इसे छिपाया गया था। उचित तो यही है कि इसे पुन: उसी भूमिगत कक्ष में रखकर कक्ष को पुन: पहले जैसा कर दिया जाए किंतु इसमें एक बाधा ये है कि ताबूत में जो है, उसने संस्कृति को माया का पुनर्जन्म समझ लिया है और अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो इस ताबूत के राजमहल में रहने से संस्कृति के जीवन की शांति भंग हो जायेगी और वह बार-बार उस भूमिगत कक्ष की ओर आकर्षित होती रहेगी।”

“तो इस ताबूत से छुटकारा कैसे पायें हम?” चन्द्रोदय ने कहा।

“इसे बगैर खोले बिल्कुल इसी अवस्था में श्मशान भूमि में दफ़न करवा दिया जाए।” कुलगुरु ने कुछ देर तक मनन करने के बाद कहा- “संस्कृति पर विशेष निगरानी रखी जाए। यदि उसके साथ कोई असामान्य घटना घटती है तो इसे उसका वहम कहकर नजरअंदाज करने के बजाय हमें सूचित किया जाए। इसके अतिरिक्त तुम हमें संस्कृति की कुण्डली दे दो। हमें उसके विश्लेषण की आवश्यकता महसूस हो रही है।”

कहने के बाद कुलगुरु प्रस्थान के ध्येय से खड़े हो गए।

N

5

P

पहले तेज बिजली कौंधी, फिर बादलों की कर्णभेदी गर्जना से पूरा इलाका दहल उठा। जब हवाएं दरख्तों से सिर टकराकर चीखीं तो ऐसा लगा जैसे किसी पिशाचिनी के चंगुल में फंसा शिकार तड़पकर छटपटा उठा हो। ये शंकरगढ़ का वही मरघट था, जहाँ राजमहल वालों ने कुलगुरु के निर्देशानुसार तहखाने से बरामद हुए ताबूत को दफनाया था।

वह औरत अधेड़ उम्र की थी और उसकी साड़ी बारिश में बुरी तरह भीगकर उसके बदन से लिपट गयी थी। सर्दी से उसके दांत बज रहे थे लेकिन वह मौसम की मार से बेपरवाह होकर तन्मयतापूर्वक फावड़ा चला रही थी। वह लगभग एक हाथ गहरी खुदाई कर चुकी थी लेकिन ऐसे भयावह वातावरण में जिस ताबूत को बाहर निकालने के लिए कृतसंकल्प थी, उसके मिलने की संभावना अभी तक नजर नहीं आयी थी। वह शायद इस बात के प्रति आश्वस्त थी कि ताबूत को उसी जगह पर दफनाया गया है क्योंकि खुदाई करते हुए लंबा वक्त गुजर जाने के बाद भी उसके चेहरे पर शिकन का भाव नहीं था बल्कि इसके विपरीत हर गुजरते लम्हे के साथ उसके फावड़े की गति तेज होती जा रही थी।

लगभग घंटे भर बाद जब वह दो हाथ गहरी खुदाई करके हटी, तब उसे महसूस हुआ कि इस बार उसका फावड़ा किसी सख्त चीज से टकराया है और उसके परिश्रम का सार्थक परिणाम जल्द ही सामने आने वाला है। उसने ताबूत बाहर निकालने के लिए किनारे से मिट्टी निकालनी शुरु की।

लगभग बीस मिनट बाद जब बिजली की चमक से मरघट दोबारा रोशन हुआ तो गड्ढे में ताबूत स्पष्ट नजर आया। उस पर नजर पड़ते ही औरत की आँखों में खौफनाक चमक उभरी। उसका वीभत्स चेहरा भयानक हो उठा।

“राजमहल का अतीत अब वर्तमान को तबाह कर देगा। पुरखों के जुल्म-ओ-सितम का हिसाब वर्तमान पीढ़ी को चुकाना होगा। वे आयेंगे, अपनी माया को हासिल करने के लिए वे आयेंगे। राजमहल ने जिस शाप को सदियों तक अपने गर्भ में कैद रखा, वही शाप अब उस पर जलजला बनकर टूटेगा। वे मेरे प्रभु के आगे घुटने टेककर उनके साथ किये हुए अपने अत्याचार की माफी माँगेंगे, मगर माफ़ नहीं किये जायेंगे। शंकरगढ़ में फिर वही खौफ पाँव पसारेगा। गौण के वंशजों की तपस्या आज पूरी हुई। मेरे प्रभु के अवतरण का समय आ गया। उस रक्तरंजित गाथा के पूरे होने का समय आ गया, जिसे मेरे प्रभु को ज़िंदा जलाने के बाद अधूरा छोड़ दिया गया था। मैं धन्य हुई। इस धरती पर आपका पुन: स्वागत है श्मशानेश्वर।”

ताबूत बाहर निकालने से पहले औरत ने जी भर अट्टहास किया। उसकी खौफनाक हँसी के आगे बारिश का स्वर भी दब गया। उसकी हँसी तब थमी, जब उसे कहीं दूर से किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी।

उस करुण क्रंदन को सुनते ही औरत को कुछ याद आया। उसने एक नजर ताबूत पर डाली फिर रोने की दिशा में मुड़ी और अँधेरे को लक्ष्य करके बोली- “कुछ क्षण और ठहर जा। उसके बाद हमेशा के लिए तेरी चीत्कार बंद कर दूँगी।”

III

“मुझे ऐसा क्यों लग रहा है मम्मी कि कहीं कुछ होने वाला है। कुछ ऐसा, जिसे नहीं होना चाहिए।” दूध लेकर कमरे में आयी सुजाता को देखते ही संस्कृति ने खौफजदा लहजे में कहा।

सुजाता ने चेहरे पर बड़ा सा प्रश्नचिह्न लिए हुए उसकी ओर देखा। वह बिस्तर पर पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई थी और उसकी हालत बता रही थी कि थोड़ी देर पहले ही उसकी नींद उचटी थी। मौसम खराब देखते हुए गाँव में बिजली-आपूर्ति बाधित कर दी गयी थी और शायद राजमहल में बिजली-आपूर्ति के व्यक्तिगत स्रोत भी आज ठप्प पड़े हुए थे क्योंकि इस समय राजमहल का अधिकांश हिस्सा अँधेरे में डूबा हुआ था। कमरे में जल रहे पोर्टेबल लैंप की रोशनी केवल इतनी ही पर्याप्त थी कि आपात स्थिति में टटोलने की नौबत नहीं आ सकती थी।

सुजाता, संस्कृति के निकट पहुँचीं और दूध का गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए बोलीं- “तुम तहखाने की घटना अभी तक नहीं भूली हो इसीलिये तुम्हारे मन में ऐसे ख्याल आ रहे हैं।”

संस्कृति द्वारा दूध का गिलास थाम लिए जाने के बाद सुजाता खिड़की की ओर बढीं। बाहर तूफानी बारिश थी। हवा के तेज झोंकों के कारण खिड़की के कपाट जोर-जोर से चीख रहे थे। सुजाता ने खिड़की बंद करके चिटकनी चढ़ा दी।

“बारिश तेज हो गयी है।” उन्होंने बिस्तर के सिरहाने पर पड़ी एक स्टूल पर बैठते हुए कहा। संस्कृति ने अभी तक दूध का एक घूँट तक नहीं पीया था।

“दूध पी लो संस्कृति।”

“पता नहीं क्यों मुझे बार-बार ऐसा लग रहा है कि ताबूत वहाँ से गायब हो चुका है, जहाँ उसे दफनाया गया है।”

“ताबूत का खौफ तुम पर हावी हो गया है, जो तुम्हें बेवजह परेशान कर रहा है। जहाँ उसे दफनाया गया है, वहाँ लोग दिन में भी जाने में काँपते हैं तो भला भयानक बारिश वाली इस अँधेरी रात में वहाँ जाने की हिम्मत कौन करेगा?”

“ये मेरा डर नहीं बल्कि मेरी इनर इंस्टिक्ट कह रही है कि किसी ने उस ताबूत को बाहर निकाला है। वह ताबूत साधारण नहीं है। वी कान’ट गेट रीड ऑफ़ इट इजली। समथिंग टेरिबल इज अबाउट टू हैप्पेन मम्मी, प्लीज बिलीव मी।”

“तो तुम ये कहना चाहती हो कि किसी ने ताबूत को दफनाई हुई जगह से निकाल लिया?”

संस्कृति ने ‘हाँ’ में गर्दन हिलाया।

“वहम हो रहा है तुझे।” सुजाता ने जानबुझकर लापरवाह अंदाज में कहा ताकि उसका डर और न बढ़ने पाए।

“कोई मरने वाला है मम्मी।” सहसा संस्कृति ने विस्फोट कर दिया।

“दिमाग खराब हो गया तेरा।” सुजाता चौंकीं और साथ ही झुंझलाई भी।

“नहीं...नहीं...मम्मी।” संस्कृति ने दूध का गिलास बिस्तर पर रखा और सुजाता की दोनों हथेलियों को अपनी हथेलियों के बीच लेते हुए कुछ ऐसे अंदाज में बोली, जैसे उसे अपने पूर्वाभास पर पूरा यकीन हो- “मेरा विश्वास करो मम्मी, कोई इंसान मरने वाला है। मैं बादलों की गड़गड़ाहट में छिपे डर को महसूस कर रही हूँ। बारिश की छम-छम में घुला मौत का संगीत मुझे सुनाई दे रहा है। मुझे बारिश में धुली हुई एक वीरान सड़क नजर आ रही है। एक दरिंदा सधी हुई चाल से अपने शिकार की ओर बढ़ रहा है...और..और...वह....शिकार...।”

“संस्कृति!” सुजाता ने उसे जोर से झकझोरा दिया, जिससे गिलास का दूध छलककर बिस्तर पर फ़ैल गया।

“ये कैसी अनाप-शनाप कल्पनाएँ कर रही है तू? हर रात की तरह ये रात भी साधारण है। कहीं कुछ नहीं होने वाला है। ताबूत में जो कुछ भी था, वह ताबूत के साथ ही मरघट में दफ़न हो चुका है।”

“ये रात साधारण नहीं है मम्मी।” संस्कृति ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए, लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए कहा- “आप यकीन क्यों नहीं करतीं कि किसी की जान खतरे में है। कोई मरने वाला है।”

“अगर तुझे अपनी कल्पना पर इतना ही भरोसा है तो नाम बता उसका।” सुजाता की झुंझलाहट बढ़ गयी।

“शायद..।” संस्कृति ने कुछ याद करने की कोशिश करते हुए कहा- “शायद वैभव।”

“वैभव?” सुजाता सिहर उठीं। उन्हें कुलगुरु की वह चेतावनी याद आ गयी, जिसके अनुसार मृत्युंजय का वह नकारा बेटा सात दिनों के अंदर बेहद बुरी मौत मरने वाला था।

“लेकिन....लेकिन तुझे कैसे पता?” इस दफे सुजाता का भी लहजा काँप गया। वे संस्कृति के रहस्यमय बर्ताव को नजरअंदाज न कर सकीं।

“पता नहीं मम्मी। मेरी इनर इंस्टिंक्ट बस यही कह रही है कि किसी ने ताबूत को बाहर निकाला है। मुझे शायद....मुझे शायद प्रीमोनिशन हो रहा है। हाँ मम्मी, मुझे पूर्वाभास हो रहा है।”

सुजाता परेशान हो गयीं।

“आप वैभव के घर कॉल कीजिये।”

“ऐसे कैसे कर दूँ? थोड़ी देर पहले ही तेरे पापा ने फोन पर उन्हें रिश्ते के लिए मना किया है। वे हमसे भड़के हुए हैं। पार्टी वाले दिन तूने स्टेज पर जो कुछ किया था, उस वजह से भी वो लोग हमसे सख्त नाराज हैं। पता नहीं हमारी कॉल रिसीव करेंगे भी या नहीं।”

“आप ट्राई तो कीजिये।”

“ठीक है, कोशिश करती हूँ।”

सुजाता टेलीफोन तक आयीं, कोई नंबर डायल कीं और रिंग जाने का स्वर सुनते ही रिसीवर कान से लगा लीं। जब तक वह फोन पर बात करती रहीं, तब तक संस्कृति की निगाह उन पर ही ठहरी रही। ज्यों ही उन्होंने रिसीवर क्रेडिल पर रखा त्यों ही उसने अधीर लहजे में पूछा- “क्या हुआ?”

“आधे घंटे पहले वैभव अपने कमरे में था। थोड़ी देर पहले बंगले के चौकीदार ने उसे गाड़ी लेकर अकेले बाहर जाते हुए देखा। उसने किसी को नहीं बताया है कि वह कहाँ जा रहा है।”

सुनते ही संस्कृति के तन-बदन में सिहरन दौड़ गयी।

III

चारों ओर से खुला वह मंदिर शंकरगढ़ के मरघट के ठीक बीच में था लेकिन उसमें जो मूर्ति स्थापित थी, उसे किसी भी दृष्टिकोण से देव-प्रतिमा नहीं कहा जा सकता था। वहाँ व्याप्त अँधेरे में वह मूर्ति ऐसी शक्ल अख्तियार की हुई थी, जैसे कोई पिशाच दम साधे हुए अपने शिकार की राह देख रहा हो।

क्षणिक अंतराल पर कौंधती बिजली जब दोबारा कौंधी तो उस मूर्ति का वजूद रोशनी से नहा उठा। वह संहार की मुद्रा में खड़े एक नरभेड़िये की मूर्ति थी। उसका विकराल मुँह खुला हुआ था। उसके होठों के किनारों से झाँकते रक्तरंजित दांत नश्तर की मानिंद नुकीले थे। उसकी आँखों में पुतलियों के रूप में कंचे जड़े हुए थे, जो अँधेरे में चमक रहे थे। उसके बायें हाथ की मुट्ठी में एक नरमुंड की केशराशि थी। मुंड के उस हिस्से से खून टपकता हुआ दर्शाया गया था, जो धड़ पर अवस्थित होता है। वह दाहिने हाथ में कटार थामे हुए था। शिल्पकार ने नरभेड़िये की उपर्युक्त मुद्रा शायद ये दर्शाने के लिए निर्मित की थी कि सजीव अवस्था में वह पहले बायें हाथ की मुट्ठी में इंसानों के बाल पकड़ता था और फिर दाहिने हाथ में थमी कटार से उनका शीश धड़ से अलग कर देता था तत्पश्चात रक्तपान से तृप्त होकर आदमजात को खौफजदा करने के लिए उनकी बस्तियों में उस कटे हुए मुंड के साथ तांडव करता था।

मूर्ति काले रंग की थी। कपड़े के रूप में उसकी कमर में मात्र एक लंगोट का आकार उकेरा गया था, जो घुटने से थोड़ा ऊपर ही समाप्त हो गया था। उसके हाथ-पैर की उँगलियों के नख बड़े और नुकीले दर्शाए गये थे। शिल्पकार ने उस मूर्ति के निर्माण में इस दर्जे का कौशल अपनाया था कि कमजोर दिल वालों को सहज ही ये भ्रम हो सकता था कि वह नरभेड़िया सजीव है। मरघट के एक निर्जन मंदिर में पाषाण-प्रतिमा के रूप में स्थापित वह प्राणी जो कोई भी था, उसके विषय में ये निर्विवाद सत्य था कि यदि यह किसी काल में जीवित रहा होगा तो एक नरसंहारक के रूप में कुख्यात रहा होगा।

मूर्ति के सामने एक बलि यूथ बना हुआ था, जिससे थोड़े ही फासले पर लगभग सात या आठ महीने की आयु का एक नग्न शिशु लिटाया गया था, जिसका क्रंदन मरघट के भयावह वातावरण में करुण रस घोल रहा था।

लगभग आधा घंटा गुजर गया। इस दौरान मंदिर कई दफे प्रकाशित हुआ और कई दफे गहन अँधेरे में डूबा। शिशु के रोने का स्वर अब धीमा हो चला था शायद अत्यल्प अवधि का वह अबोध अपने जीवन की आख़िरी साँसें गिनने लगा था। मंदिर के बाहर बारिश की छम-छम के बीच कोई आहट गूँजी। शायद कोई था, जो मंदिर की ही ओर आ रहा था।

सीढ़ियों के निकट पहुँचने पर आगंतुक की आकृति स्पष्ट हुई। वो वही थी, जो थोड़ी देर पहले खुदाई करके ताबूत निकाल रही थी और अब उसे घसीटते हुए यहाँ तक ले आयी थी। ताबूत वजनी था क्योंकि उसे सीढियों पर चढ़ाकर मंदिर में ले आने के बाद वह बुरी तरह हाँफने लगी थी। उसने कुछ देर तक शरीर को विश्राम दिया और फिर अँधकार की चादर में लिपटी उस भयानक मूर्ति से मुखातिब हुई।

“हे श्मशानेश्वर! कापालिकों के वंश की आखिरी निशानी और आपकी दासी अरुणा अपने लक्ष्य के बेहद करीब है। प्रणाम स्वीकार करें।” अरुणा ने मूर्ति के सम्मुख श्रद्धाभाव से मस्तक नवाया तत्पश्चात विजयी स्वर में घोषणा की- “जो कार्य कापालिकों के पूर्वज सैकड़ों सालों में नहीं पूरा कर सके, उस कार्य को आज मैं पूरा करने जा रही हूँ। आज मैंने अपना जन्म सार्थक कर लिया प्रभु। आज मैं इस धरा पर आपके पुन: अवतरित होने की निमित्त बनकर आपकी कृपा-पात्र हो गयी और राजमहल में होने वाले महाविनाश की सूत्रधार भी बन गयी।” अरुणा की आँखें जल उठीं। किसी पुराने जख्म की टीस को महसूस कर वह तड़पकर बोली- “मैंने महसूस किया है प्रभु। उस कष्ट को मैंने महसूस किया है, जो आपको तब हुआ था, जब राजमहल के क्रूर पूर्वजों ने आपको पीपल के तने से बांधकर ज़िंदा जला दिया था। कापालिकों के वंश की प्रत्येक संतति को कापालिक-दीक्षा के समय ज़िंदा जलाए जाने पर होने वाले असहनीय कष्ट की अनुभूति कराई जाती है ताकि वह भी आपके कष्ट को महसूस करके प्रतिशोध की ज्वाला में जल उठे। मैंने भी कापालिका बनते समय दाह का कष्ट भोगा है। उसी कष्ट का प्रतिशोध साधने के जूनून में मैं उस कार्य-सिध्दी के निकट पहुँच चुकी हूँ, जिसमें मेरे पूर्वज भी विफल रहे थे।”

सहसा अरुणा के कानों में बच्चे के रोने की आवाज़ गयी और उसका वक्तव्य थम गया। आत्ममुग्धता से बाहर निकलकर उसने अपना ध्यान फिर से उस जरुरी काम पर केन्द्रित किया, जिसे पूरा करने के लिए ताबूत को यहाँ तक खींचकर लाई थी। उसने ताबूत को नरभेड़िये की मूर्ति के सामने बलि यूथ के ठीक पहले एक विशेष कोण पर रखा। इसके बाद मूर्ति के पीछे वाली दीवार में किसी खूंटी से टंगी कपड़े की थैली उतार लायी और चेहरा मूर्ति के सामने रखते हुए, ताबूत के सम्मुख पद्मासन मुद्रा में बैठ गयी। कुछ देर तक मनन करते हुए उसने अनुष्ठान के चरणों को मन ही मन दोहराया और कपड़े की थैली में से पाँच दीपक निकालकर उनमें तेल और बाती सजाने लगी। उपर्युक्त कार्य को पूर्ण करने के पश्चात उसने चार दीपों को ताबूत के चारों कोनों पर तथा पाँचवे दीप को ताबूत के केंद्र पर रख दिया। तत्पश्चात उसने अपने नेत्र बंद किये और मन ही मन कोई मंत्र-जाप करने लगी। करीब पाँच मिनट बाद उसके होठों का कम्पन थमा और इसी के साथ पाँचों दीप स्वत: प्रज्ज्वलित हो गए। तेज आँधी और बारिश की बौछारों का उन दीपों पर कोई असर नहीं हो रहा था कारण कि वे अभिमंत्रित थे और उद्देश्य पूर्ण होने से पूर्व अपनी लौ नहीं खो सकते थे।

दीपों के प्रज्ज्वलित होते ही अरुणा ने आँखें खोल दी। पीली रोशनी में उसका गोरा चेहरा रहस्यमयी हो उठा था। वह विलाप कर रहे बच्चे पर नजर डालते हुए मुस्कुराई। उसने अपनी खुली हुई केशराशि चेहरे पर बिखेर ली और दोनों मुट्ठियों को भींचकर घुटनों पर टिका लिया। ताबूत पर दीप निर्बाध प्रज्ज्वलित थे।

कुछ देर तक वह गर्दन नीचे किये हुए निश्चल बैठी रही तत्पश्चात जब चेहरा ऊपर उठायी तो उसके रंग-रुप में इतना परिवर्तन आ चुका था कि उससे पूर्व-परिचित शख्स भी अब उसे पहचान नहीं सकता था।

उसका चेहरा अब ख़ूबसूरत नहीं रह गया था। उसके रक्तिम होंठ काले हो चुके थे और आकर्षक चेहरा झुर्रियों से भरकर विकृत हो चुका था। रतनारी आँखें संकुचित होकर कोटरों में धंसी हुई नजर आने लगी थीं। काले बाल सफ़ेद हो चुके थे। सारांश ये कि वह अब अस्सी साल की बुढ़िया में तब्दील हो चुकी थी। उसने फेफड़ों में हवा भरकर अपनी साँस रोक ली और 'ट्रांस' की मुद्रा अख्तियार करके झूमने लगी। उसके होठों से कुछ अस्पष्ट मंत्रोच्चार भी निकल रहे थे। सहसा परिवेश में 'खट' की आवाज़ गूँजी और अरुणा 'ट्रांस' की अवस्था से बाहर आ गयी। सामान्य अवस्था में लौटते ही उसने सबसे पहले ताबूत से लटक रहे स्वास्तिकाकार ताले को देखा, जो अब खुल चुका था। उसने ताले को निकालकर मंदिर से बाहर अँधेरे में उछाल दिया और फिर अपने दृष्टिपात मात्र से ही ताबूत पर जल रहे पाँचों दीपों को बुझा दिया।

उसने श्मशानेश्वर की मूर्ति की ओर देखा। हालाँकि दीपों के बुझ जाने के बाद मंदिर में अँधकार छा गया था लेकिन फिर भी श्मशानेश्वर का भयानक चेहरा इस कदर प्रदीप्तमान था, मानो थोड़ी देर पहले वातावरण में व्याप्त प्रकाश को अवशोषित करके उसे अब उत्सर्जित कर रहा हो। सामान्य प्राणी के लिए ये आश्चर्य का विषय था लेकिन अरुणा की भाव-भंगिमाओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसके लिए ये घटना इस बात का संकेत थी कि उसका अनुष्ठान सही दिशा में अग्रसर है। इसके बाद अरुणा के ताबूत खोलने भर की देर थी कि उसमें से काले धुंए का एक गुब्बार निकला और थोड़ी देर तक हवा में चक्कर काटने के बाद श्मशानेश्वर की मूर्ति में समा गया। ऐसा होते ही न जाने कहाँ से एक दबी हुई उल्लासपूर्ण हँसी उद्गमित होकर बारिश की छम-छम में घुल गयी। आभास हुआ जैसे कोई सदियों की कैद से आजाद हुआ था। श्मशानेश्वर की मूर्ति पहले से अधिक प्रदीप्त हो उठी। मानो सजीव होने के लिए प्रयत्नशील हो उठी हो।

ताबूत में एक हाँडी रखी हुई थी, जिसका मुँह काला कपड़ा बाँधकर बंद किया गया था। अरुणा ने हाँडी को बाहर निकालकर बच्चे के बगल में रखा और ताबूत को घसीटकर मंदिर के बाहर अँधेरे में धकेल दिया क्योंकि उस पर लिखे गीता के श्लोक उसके अनुष्ठान में बाधक थे। उसने हाँडी पर बंधा कपड़ा खोला और उसमें आकंठ भरे हुए रख को भूमि पर उड़ेल दिया। वह शव-दाह के पश्चात बचने वाली राख थी। राख में यत्र-तत्र दिखाई दे रही अस्थियों को उसने चुन-चुनकर अलग कर लिया। इसके बाद उसने राख के ढेर को इस प्रकार व्यवस्थित किया, मानो उसे गूंथने वाली हो।

उपर्युक्त गतिविधियों के पश्चात उसने बच्चे को उठाया। उसकी आँखों में व्याप्त हिंसक चमक देखते ही बच्चा फिर से रोने लगा लेकिन अरुणा ने उसके रोने की परवाह न करते हुए उसे बलि यूथ पर लिटा दिया और बगल में रखी कटार उठा ली।

JJJ

वैभव का क्रोध सातवें आसमान पर था क्योंकि थोड़ी देर पहले ही दिग्विजय ने सूचित किया था कि ग्रह-दशाएं अनुकूल न होने के कारण वे संस्कृति और उसकी शादी का इरादा त्याग कर चुके हैं। उनका यह निर्णय वैभव और मृत्युंजय की इच्छाओं पर तुषारापात था। एक ओर शंकरगढ़ को वोट बैंक के रूप में भुनाने की मृत्युंजय की महत्वाकांक्षा खतरे में पड़ चुकी थी तो दूसरी ओर संस्कृति के रूप में ख़ूबसूरत बीवी पाने का वैभव का सपना धराशायी हो चुका था। दिग्विजय की ओर से रिश्ते के विषय में विवशता जताए जाने के बाद मन में ज्वार की तरह उफनने वाले विचारों पर बाप ने नियंत्रण पा लिया था और अपना हेतु साधने के लिए कोई दूसरी योजना बनाने में जुट गया था लेकिन बेटे का जवान खून उबल पड़ा था। संस्कृति की ओर से उपेक्षित किये जाने पर वह ये सोचकर अपने क्रोध पर अंकुश लगाए हुए था कि उस अपमान की कीमत शादी के बाद सूद समेत वसूल कर लेगा लेकिन अब, जब संस्कृति उसे हाथ से निकलती हुई नजर आयी तो वह अपना आप खो बैठा और बारीश भरी उस तूफानी रात की परवाह न करते हुए गाड़ी लेकर शंकरगढ़ की ओर कूच कर गया। उसका इरादा राजमहल में जाकर उत्पात मचाने का था। इस समय वह जंगल से गुजर रहा था। उसकी क्रोधाग्नि इतनी प्रचंड थी कि उसे ये तक नजर नहीं आ रहा था कि वातावरण कितना भयानक रूप अख्तियार किये हुए है। वह अपने हित-अहित से जुड़े विचारों को नजरअंदाज करके घर से निकला था। इस काम में किसी को साथ लेना तो दूर उसने किसी को बताना भी जरूरी नहीं समझा था।

सहसा उसने गाड़ी की रफ़्तार धीमी कर दी और फिर मजबूरन रोक दी। सामने एक पेड़ गिरा होने के कारण रास्ता बंद था। गाड़ी रुकते ही वैभव मानो यथार्थ की दुनिया में वापस लौटा। उसे पहली दफा बोध हुआ कि इस वक्त वह एक खौफनाक जंगल में है और यह रात बाकी रातों जैसी नहीं है।

"डैम इट।" क्रोध में बड़बड़ाते हुए उसने अपना हाथ स्टीयरिंग पर पटका। आगे बढ़ने का कोई विकल्प नहीं था क्योंकि उस पेड़ को हटाना उसके अकेले के वश की बात नहीं थी। उसने निचला होंठ दाँतों तले दबाया, स्टीयरिंग पर सिर टिकाकर कुछ देर तक चिंतन-मनन किया और फिर यू-टर्न लेने के ध्येय से गाड़ी को स्टार्ट करना चाहा लेकिन गाड़ी स्टार्ट होने की बजाय विचित्र शोर करते हुए शांत हो गयी। उसने कई दफे कोशिश की मगर नतीजा सिफर रहा। ऐसे भयानक मौसम में बाहर निकलकर खराबी दुरुस्त करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। हारकर उसने सेलफोन बाहर निकाला मगर यहाँ एक और निराशाजनक परिस्थिति उसका इंतज़ार कर रही थी। सेलफोन का नेटवर्क आइकन पूरी तरह खाली था। झुंझलाकर उसने सेलफोन को डैशबोर्ड पर पटक दिया और गुस्से में लिए गए अपने निर्णय पर पछताने लगा लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था। बाहर बारिश उफान पर थी। समूचा जंगल अँधकार में डूबा हुआ था। ऐसे में बाहर निकलकर मदद तलाशने का कोई औचित्य नहीं था। खराब मौसम के कारण नेटवर्क का आना भी अब मुश्किल था। हर दिशा में सोच-विचार करने के बाद

उसने गाड़ी के सारे दरवाजों को लॉक किया और सीट की पुश्त से सिर टिकाकर आँखें बंद कर ली। उसका क्रोध अब इस विवशता में बदल चुका था कि वह तब तक गाड़ी में बंद रहे जब तक कि नेटवर्क उपलब्ध नहीं हो जाता या फिर किसी चमत्कार के तहत उसकी गाड़ी स्टार्ट नहीं हो जाती।

उसे आँखें बंद किये हुए कुछ ही पल बीते थे कि अचानक 'ठक-ठक' की आवाज़ सुन उसकी तन्द्रा भंग हो गयी। कोई बाहर से ड्राइविंग डोर के शीशे को ठकठका रहा था। उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, इससे पहले ही ड्राइविंग डोर के शीशे पर पड़ती थाप तेज होने लगी। अँधेरे के कारण शीशे के उस पार कुछ स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था। उसने सेलफोन का फ़्लैशलाइट ऑन किया लेकिन फिर भी शीशे पर बारिश की बौछारें जमा हो जाने के कारण उस पार किसी की मौजूदगी का बस एहसास मात्र हुआ, उसकी शक्ल अब भी स्पष्ट नहीं हो सकी। वैभव को लगा बाहर मौजूद शख्स भी उसी की भांति बारिश में फंसा कोई राहगीर है। कंपनी मिल जाने की चाह में उसने दरवाजा खोला।

"कौन...?" उसने बगैर नीचे उतरे ही बाहर झाँकने की कोशिश की लेकिन अगले ही पल उसे लगा, मानो उसकी गर्दन किसी शिकंजे में जकड़ गयी हो। इससे पहले कि वह कुछ सोच पाता, उसने स्वयं को हवा में तैरता हुआ महसूस किया। कुछ पलों बाद उसकी गर्दन अज्ञात शिकंजे से मुक्त हुई और वह द्रुतगति से पीठ के बल सड़क से टकराया।

"आह....।" वह पीड़ा से दोहरा होते हुए चीखा।

कुछ देर बाद जब दर्द बर्दाश्त के काबिल हुआ तो उसने आँखें खोली लेकिन आस-पास नजर पड़ते ही वह बुरी तरह चौंक पड़ा। वह गाड़ी के पास नहीं था। असहनीय पीड़ा को नजरअंदाज करते हुए वह कुहनी के बल आधा उठकर बैठ गया। उसे अपनी कार काफी दूर नजर आयी। तो क्या उसे गर्दन से पकड़कर हवा में उछालने वाला इतना अधिक शक्तिशाली था? लेकिन इस सवाल से भी कहीं

ज्यादा हैरतनाक वह दृश्य था, जो उसकी नज़रों के सामने था।

"ओह माय गॉड! य....य..ये क्या चीज है?" वैभव पीछे खिसकते हुए चीखा।

कार की ड्राइविंग डोर से थोड़ी दूर पर खड़ा वह आठ फीट ऊँचा जीवधारी इंसान नहीं था और न ही उसे जंगली जानवर कहा जा सकता था। वह दो पैरों पर खड़ा एक विशालकाय भेड़िया था। उसके चेहरे पर लाल आँखें ऐसी लग रही थीं जैसे कोटरों में दहकते अंगारे रख दिए गये हों। उसके दाहिने हाथ में कटार थी। अपने शिकार को भयभीत होकर पीछे खिसकता देख वह चिंघाड़ते हुए उसकी ओर बढ़ा।

"वु...उल्फ....वेयरवुल्फ.....!" खौफजदा वैभव ढंग से चीख भी न सका।

N

6

P

अलार्म जोरों से चीखा और साहिल ने हड़बड़ाकर आँखें खोल दी। वह पहले ही चार बार स्नूज कर चुका था इसलिए इस दफा स्नूज नहीं किया और अनमने ढंग से चादर एक ओर फेंककर अलार्म बंद करने के बाद रोज की तरह सबसे पहले वाट्सएप मेसेज चेक किया फिर फेसबुक नोटिफिकेशंस और अंत में जी-मेल का इनबॉक्स चेक करके बिस्तर से नीचे उतर गया। दिन काफी चढ़ चुका था। पिछली शाम यश को गाँव छोड़कर आने के बाद उसने रात के दो बजे तक एक क्लाईंट के ग्राफिक नॉवेल के इंटीरियर पेजेस के कुछ इलस्ट्रेशन्स पर काम किया था। यही वजह थी कि उसकी नींद आज सुबह दस बजे खुली थी।

लम्बी जम्हाई लेते हुए वह किचन में पहुँचा। ओवन में चाय उबलने के लिए रखने के बाद ड्राइंग हॉल में आया। 'दैनिक जागरण' का आज का अंक फर्श पर दरवाजे के पास पड़ा हुआ था। उसे लिए हुए वह फिर से किचन में आ गया। आदत के मुताबिक़ चाय उबलने में लगने वाले कुछ मिनटों को वह अखबार की हेडलाइंस पढ़ते हुए गुजारता था। उसने फोल्ड किया हुआ न्यूज़पेपर खोला और जैसे ही मुख्य पृष्ठ पर मौजूद हेडलाइन पर नजर पड़ी, वह बुरी तरह उछल पड़ा।

राज्य ऊर्जा मंत्री मृत्युंजय सिंह ठाकुर के एकलौते बेटे की हत्या।

उपर्युक्त हेडलाइन के अंतर्गत छपे समाचार का मजमून कुछ यूँ था-

कल रात ग्यारह बजे सूबे के ऊर्जा मंत्री माननीय मृत्युंजय सिंह के एकलौते बेटे वैभव सिंह की लाश शंकरगढ़ के जंगल से क्षत-विक्षत अवस्था में बरामद हुई। लाश को देखने मात्र से ये अनुमान लगाना मुश्किल है कि हत्यारा इंसान है या फिर कोई वहशी जानवर। हमारे संवाददाता के मुताबिक लाश का सिर धड़ से अलग पाया गया है। चेहरे से दोनों आँखें गायब हैं। धड़ पर भी नाखूनों से खरोंचे जाने के गहरे निशान पाए गये हैं, जो इस बात की तस्दीक कर रहे हैं कि हत्यारा मरने वाले के साथ बेहद बेरहमी से पेश आया था। हत्प्राण के जिस्म पर बने खरोंचों के निशान उसकी हैवानियत के प्रत्यक्ष साक्षी हैं।

द्रवित कर देने वाली क्षत-विक्षत लाश के अलावा घटनास्थल से जो चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है, वो ये है कि गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर वैभव के खून को स्याही बनाकर बतौर चेतावनी 'माया केवल हमारी है' लिखा हुआ पाया गया है। ये इबारत कई सवाल तो खड़े कर ही रही है साथ ही इस संभावना को भी खारिज कर रही है कि वैभव की हत्या में किसी जंगली जानवर का हाथ है।

सूत्रों के मुताबिक़ वैभव रात के लगभग नौ बजे बगैर किसी को कुछ बताये घर से अकेले निकला था। उसकी लाश पुलिस की पेट्रोलिंग वैन को मिली थी। ज्ञातव्य हो कि दो दिन पहले ही शंकरगढ़ के राजसी परिवार की एकलौती लड़की संस्कृति की ओर से वैभव की शादी का प्रस्ताव ठुकराए जाने पर मंत्री जी की व्यापक स्तर पर किरकिरी हुई थी। बताते चलें कि संस्कृति शंकरगढ़ और आस-पास के क्षेत्र की प्रतिष्ठित शख्सियत दिग्विजय ठाकुर की एक मात्र संतान है, जो कुछ दिन पहले ही कैंब्रिज से मैथ्स में ग्रेजुएट होकर लौटी है। अपनी घर-वापसी की खुशी में आयोजित किये गये समारोह में संस्कृति ने बिना कोई विशेष कारण बताये वैभव को अपने लिए अयोग्य करार दे दिया था।

दिल दहला देने वाले इस बड़े हत्याकांड ने लोगों के दिलों में दहशत भर दिया है। हमारी टीम को अभी तक इस पूरे प्रकरण पर मंत्री जी की प्रतिक्रिया जानने का अवसर नहीं मिल पाया है।

माया कौन है? उसका वैभव की हत्या या फिर हत्यारे से क्या ताल्लुक है? वजह क्या थी, जो वैभव तूफानी रात होने के बावजूद भी फ्रस्टेशन की अवस्था में शंकरगढ़ की ओर अकेले रवाना हुआ? खबर लिखे जाने तक उपर्युक्त सवालों के

जवाब नहीं मिले हैं।

"माया...।" पूरा समाचार पढ़ते ही साहिल के होठों से अनायास ही निकल पड़ा- "य....ये तो वही नाम है, जिसके बारे में कोमल ने बताया था। उसके कहे अनुसार यश ने जिस राजकुमारी का स्केच बनाया था, उसे माया नाम से ही संबोधित किया था।"

साहिल ने चाय का मग ओवन से बाहर निकाल लिया लेकिन उसे छानने के बजाय जस का तस रहने दिया। वह सनसनीखेज खबर पढ़ने के बाद उसके जेहन से चाय का ख्याल रुख्सत हो गया था।

"कहीं ये माया वही तो नहीं, जिसका सम्बन्ध यश की याद्दाश्त चले जाने से है?" उसने खुद से कहा और फिर से ड्राइंग हॉल में आ गया।

"नहीं-नहीं।" उसने उलझे हुए स्वर में खुद ही जवाब दिया- "ऐसा कैसे हो सकता है। इन चीजों का ताल्लुक एक पालीटिशियन के लड़के की हत्या से कैसे हो सकता है?...एक मिनट...।"

साहिल के जेहन में कोई विचार आया। उसने खबर के मजमून पर दृष्टि डाली और अधोलिखित अंश को फिर से पढ़ गया:

ज्ञातव्य हो कि दो दिन पहले ही शंकरगढ़ के राजसी परिवार की एकलौती लड़की संस्कृति की ओर से वैभव की शादी का प्रस्ताव ठुकराए जाने पर मंत्री जी की व्यापक स्तर पर किरकिरी हुई थी। बताते चलें कि संस्कृति शंकरगढ़ की सर्वाधिक प्रतिष्ठित शख्सियत दिग्विजय ठाकुर की एक मात्र संतान है, जो कुछ दिन पहले ही कैंब्रिज से मैथ्स में ग्रेजुएट होकर लौटी है। अपनी घर-वापसी की खुशी में आयोजित किये गये समारोह में संस्कृति ने बिना कोई विशेष कारण बताये वैभव को अपने लिए अयोग्य करार दे दिया था।

"खबर के मुताबिक संस्कृति नाम की इस लड़की का एकेडेमिक बैकग्राउंड मैथ्स है और यह हाल में ही कैंब्रिज से लौटी है। इट में बी पॉसिबल कि इसने भी उस वर्कशॉप में हिस्सा लिया रहा हो या फिर उस वर्कशॉप के बारे में कुछ जानती हो।" साहिल के होठों ने सोचने की मुद्रा अख्तियार कर ली- "मुझे इससे मिलना चाहिए। हो सकता है कोई नई जानकारी हाथ लगे।"

उक्त नतीजे पर पहुँचने के बाद साहिल को अपने चाय की याद आयी। वह किचन में पहुँचा और चाय छानते हुए कांटेक्ट लिस्ट में प्रोफ़ेसर चौहान का नंबर ढूँढने लगा। उसका इरादा प्रोफ़ेसर चौहान से भी मिलने का था, ये जानने के लिए कि वर्कशॉप में हिस्सा लेने वाले ऐसे कितने स्टूडेंट्स थे, जिनका टॉपिक यश की टॉपिक से मिलता-जुलता था।

JJJ

"ये सब चीजें कांफिडेंशियल केटेगरी में आती हैं। उन्हें किसी बाहरी के साथ साझा करना ठीक नहीं है।"

“प्लीज प्रोफ़ेसर।” साहिल ने विनीत लहजे में कहा- “मेरी हेल्प कीजिये। मैं रिसर्च पेपर्स के बारे में नहीं बल्कि उन स्कॉलर्स के बारे में जानना चाहता हूँ जिनके रिसर्च का टॉपिक यश के टॉपिक के करीब था।”

“लेकिन क्यों? इस बात से तुम उसकी बीमारी के बारे में क्या नतीजा निकाल सकते हो?”

जवाब में साहिल ने बगल की विजिटर्स चेयर पर मौजूद कोमल पर नजर डाली। वह अभी भी चौहान के चैम्बर में ही पाई जाती थी। उसके चेहरे पर कोई भाव न पाकर साहिल ने प्रोफ़ेसर को लक्ष्य करके कहा- “आपको वे बातें नहीं पता हैं सर, जो कोमल ने मुझे बतायी हैं। यश के साथ कैंब्रिज में कुछ एब्नार्मल हुआ था। कोमल ने उस बारे में आपको इसलिए नहीं बताया क्योंकि यश ने उसे मना किया था। वह नहीं चाहता था कि उसे वर्कशॉप बीच में ही छोड़ना पड़े।”

“ऐसी क्या बात हुई थी, जो तुमने मुझे नहीं बतायी?” प्रोफ़ेसर ने चश्मा दुरुस्त करते हुए कोमल पर दृष्टिपात किया।

“एक्चुअली सर यश की मानसिक हालत कैंब्रिज से ही बिगड़ने लगी थी।” जवाब साहिल ने दिया। उसने जानबूझकर हमले का जिक्र नहीं किया क्योंकि इतनी बड़ी बात छिपा ले जाने की एवज में कोमल को प्रोफ़ेसर की नाराजगी झेलनी पड़ सकती थी।

“क्या होने लगा था उसे?” प्रोफ़ेसर ने आशंकित स्वर में पूछा।

“वह नींद में चलने लगा था और अजीब हरकतें करने लगा था। जैसे कि खुद से बातें करना...।”

“लेकिन...।” प्रोफ़ेसर ने साहिल की बात काटते हुए पूछा- “उसकी इन हरकतों की वजह तलाशने के लिये तुम वर्कशॉप के पेपर प्रेजेंटेशन का रिकॉर्ड क्यों खंगालना चाहते हो?”

साहिल ने वही तर्क प्रोफ़ेसर के सामने भी रखा, जो यश के सामने रखा था, जिसे सुनने के बाद प्रोफ़ेसर ने गहरी साँस लेकर कहा- “तुम्हें पुलिस की मदद लेनी चाहिए। वही इस मामले की सही ढंग से पड़ताल कर सकती है।”

“जरूरत पड़ने पर मैं ऐसा भी करूँगा सर लेकिन फिलहाल आप मेरी मदद कीजिये। प्लीज मुझे उन स्कॉलर्स के बारे में बताइए।”

प्रोफ़ेसर, साहिल के आग्रह को टाल न सके और थोड़ी देर तक मनन करने के बाद बोले- “यश का पेपर ‘एच-एच मॉडल’ यानी कि ‘हाडकिन-हक्सले मॉडल’ पर केन्द्रित था। इस मॉडल का उपयोग ह्यूमन फिजियोलॉजी में होता है। यह न्यूरोनल सेल मेम्ब्रेन से गुजरने वाले आयन करंट और मेम्ब्रेन वोल्टेज के बीच के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित है, जो न्यूरॉन्स में एक्शन पोटेंशियल की उत्पत्ति और उनके संचरण का विवरण प्रस्तुत करता है। जहाँ तक मुझे याद आ रहा है, उस वर्कशॉप में ‘हाडकिन-हक्सले मॉडल’ के अलावा अन्य किसी बायोलॉजिकल न्यूरॉन मॉडल का जिक्र नहीं किया गया था और न ही किसी भारतीय या गैर भारतीय छात्र ने इस मॉडल पर आधारित कोई पेपर प्रेजेंट किया था। लेकिन हाँ, एक लड़की जरूर थी जिसके पेपर का टॉपिक एच-एच मॉडल तो नहीं था लेकिन थीम वही था। उसने ह्यूमन फिजियोलॉजी में प्रयुक्त होने वाले गणितीय मॉडल्स पर काफी दिलचस्प आलेख पढ़ा था।”

“क्या नाम था उसका? इज शी फ्रॉम इंडिया?” साहिल ने उद्वेलित लहजे में पूछा।

“थी तो इंडिया से ही लेकिन स्टूडेंट कैंब्रिज की थी। दरअसल वह वहाँ की फाइनल इयर की स्टूडेंट थी।”

“लेकिन वर्कशॉप तो रिसर्च स्कॉलर्स के लिए था। परम्परागत छात्र होते हुए भी उसने उस वर्कशॉप में हिस्सा कैसे ले लिया?”

“उसे डीन की स्पेशल परमिशन मिली हुई थी। वह कैंब्रिज के ब्राइट स्टूडेंट्स में से एक थी।”

“क्या नाम था उसका?” साहिल ने अपना सवाल दोहराया।

“संस्कृति ठाकुर।”

“स....संस्कृति ठाकुर..।” साहिल के जेहन में मानो कोई काँच असंख्य टुकड़ों में टूटकर बिखरा- “आर यू श्योर अबाउट दिस नेम प्रोफ़ेसर?”

“यस....आयम श्योर। मैं ही क्यों, उसका आर्टिकल सुनने वाला कोई भी प्रोफ़ेसर उसका नाम नहीं भुला होगा लेकिन तुम इस तरह हैरान क्यों हो रहे हो? क्या इसे पहले से जानते हो?”

“नहीं, लेकिन इस नाम की एक लड़की आज सुबह से ही मेरे लिए सेंटर ऑफ अट्रैक्शन बनी हुई है। अगर आपने आज की सबसे बड़ी न्यूज़ पढ़ी होगी तो आपको मालूम होगा कि उस लड़की का भी यही नाम है, जिसने दो दिन पहले ही मंत्री के बेटे से शादी करने से साफ़ मना कर दिया था।”

“हाँ। वह भी हाल-फिलहाल ही कैंब्रिज से ही लौटी है। इट मे बी कि ये वही हो, जिसका मैंने अभी-अभी जिक्र किया।”

“मुझे इससे मिलना है।” साहिल खड़ा हो गया। वह व्यग्र नजर आने लगा था- “थैंक्स फॉर योर टाइम प्रोफ़ेसर।”

JJJ

मरघट में खामोशी पसरी हुई थी। एक छोर से धुआं उठकर आकाश में विलीन हो रहा था। शायद किसी शव का दाह-संस्कार चल रहा था। दूर-दूर तक परिंदे भी नजर नहीं आ रहे थे। अरुणा ने दृष्टि की सीमा तक फैले जनशून्य श्मशान पर नजर डाली और फिर उस प्राणी की ओर मुड़ी, जो नरभेड़िये की मूर्ति के पास खड़ा था।

उसकी मुखमुद्रा अजीबोगरीब थी और अवस्था लगभग तीस साल थी। उसके सांवले चेहरे पर अप्रत्याशित तेज था। वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से शून्य को यूँ घूर रहा था, जैसे उसे कुछ नजर आ रहा हो। उसके जिस्म पर अत्यंत उजली धोती थी, चौड़े मस्तक पर त्रिपुंड था और सफाचट सिर पर किसी वयस्क के अंगूठे के समान मोटी चोटी थी, जो गर्दन तक लटक रही थी। आठ फीट की असामान्य लम्बाई होने के बावजूद उसकी कमर में लेशमात्र भी झुकाव नहीं था। गठीली देहयष्टि और चेहरे पर व्याप्त अप्रतिम तेज के कारण वह किसी देव सदृश नजर आ रहा था। उसकी शारीरिक भाषा और भाव-भंगिमाएं सामान्य नहीं थीं।

अरुणा उसके निकट पहुँची और सम्मानपूर्ण लहजे में बोली- “संकेत प्राप्त हो रहे हैं प्रभु कि द्विज का बड़ा भाई शहर से यहाँ आने के लिए प्रस्थान कर चुका है।”

आदमी की मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

“उसके साथ द्विज नहीं है। संभव है कि द्विज को उसने किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया है।”

आदमी की मुद्रा में इस बार भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

“प्रतिक्रिया दीजिये प्रभु।”

आदमी ने अरुणा की ओर गर्दन घुमाई। हलचल केवल उसके धड़ के ऊपरी हिस्से में ही हुई, गर्दन के नीचे के हिस्से में जरा भी कम्पन नहीं हुआ। उसने प्रभावशाली लहजे में कहा- “आज रात्रि हम उसका शिकार करेंगे।”

N

7

P

वैभव की आखिरी चीख केवल शहर में ही नहीं, शंकरगढ़ में भी गूँजी थी। उसकी मौत ने न केवल सूबे की राजनीति में बल्कि राजमहल में भी भूचाल ला दिया था। मृत्युंजय, बेटे की चिता पर भी सियासत की रोटियाँ सेंकने से बाज नहीं आया था और अपोजिशन को पानी पी-पीकर कोसते हुए बेटे के मौत की सिम्पैथी बटोरने में लग गया था। जबकि दूसरी ओर कुलगुरु की भविष्यवाणी को सच हुआ देख राजमहल वालों की नींद उड़ी हुई थी। दिग्विजय के चैन-ओ-सुकून के खोने जो कसर बाकी रह गयी थी, उसे सुजाता ने ये कहकर पूरा कर दिया था कि पिछली रात संस्कृति को पूर्वाभास हुआ था और उसने महसूस किया था कि कहीं कुछ अप्रत्याशित घटित होने वाला है। शहर में अटकलों का बाजार गर्म था और राजमहल में दहशत का।

“तबीयत कैसी है अब उसकी?” दिग्विजय ने खिड़की के पास खड़ी सुजाता से पूछा।

“कल रात देर से नींद आने के कारण आज सुबह दस बजे तक सोती रही। मैंने भी ये सोचकर उसे जगाना ठीक नहीं समझा था कि कम से कम जब तक सोई रहेगी, डर के साये से दूर रहेगी।”

“इस समय क्या कर रही है?”

“अपने कमरे में है। शतरूपा है उसके साथ।”

दिग्विजय ने कुछ नहीं कहा और सेंटर टेबल पर पड़ा अखबार उठाकर हेडलाइन पर सरसरी नजर डालने लगे। वैभव की हत्या की उस खबर को वह सुबह से कई दफे पढ़ चुके थे। टी.वी. पर उस भयानक हत्याकाण्ड की लाइव रिपोर्टिंग भी देख चुके थे। थोड़ी देर बाद सुजाता उनके करीब आयीं और चिंतित लहजे में बोलीं- “कुलगुरु ने आपको क्या बताया था?”

“कुछ विशेष नहीं।” दिग्विजय ने अखबार एक ओर रखने के बाद चश्मा उतारकर सेंटर टेबल पर रखा और कुर्सी की पुश्त से सिर टिका लिया।

“फिर भी कुछ तो बताया ही होगा न?” सुजाता का लहजा व्यग्र हुआ।

“बस इतना कि माया नाम की एक राजकुमारी हमारे खानदान में जन्मी थी और उस पर तांत्रिक अभयानन्द की कुदृष्टि थी।”

“तो क्या ताबूत में से संस्कृति को माया नाम से बुलाने वाला वही अभयानन्द था? क्या वह लौट आया है और संस्कृति को माया का पुनर्जन्म समझ रहा है?”

“कुलगुरु ने भी ऐसी ही संभावना व्यक्त की है।”

“और अगर वह संभावना सच हुई तो?”

“फिलहाल उन्होंने कुछ नहीं बताया है। वे पहले इतिहास का अध्ययन करके अभयानन्द की पूरी कहानी से वाकिफ होंगे, तभी कुछ बता पायेंगे।”

सुजाता कुछ नहीं बोलीं और चेहरे पर चिंता के भाव लिए हुए दिग्विजय के पास ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गयीं। जब खामोशी अधिक लम्बी हो गयी तो उन्होंने कहा- “कुछ भी ठीक नहीं लग रहा है। कुलगुरु ने वैभव को लेकर जो भविष्यवाणी की थी वह भविष्यवाणी भी आखिरकार सच हो गयी। न केवल सच हुई बल्कि संस्कृति को उसका पूर्वाभास भी हुआ।”

इससे पहले कि दिग्विजय कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करते, एक नौकरानी ने आकर सूचित किया- “शहर से कोई आदमी आया है। अपना नाम साहिल बता रहा है। रामू ने ड्राइंग हॉल में बैठाया है उसे।”

“आने की वजह बतायी उसने?” दिग्विजय ने एक नजर सुजाता पर डालने के बाद नौकरानी से पूछा।

“छोटी मालकिन से मिलना चाहता है।”

“संस्कृति से मिलना चाहता है?” दिग्विजय ने भवें ऊंचकाई।

“जी मालिक।”

शहर में संस्कृति की पहचान का कौन पैदा हो गया; मन ही मन सोचते हुए दिग्विजय ड्राइंग हॉल में पहुँचे। उनके पीछे-पीछे सुजाता भी पहुँची। वहाँ मौजूद साहिल ने नमस्कार की औपचारिकता पूरी करने के बाद अपना परिचय दिया।

“मेरा नाम साहिल है। पेशे से ग्राफिक डिजायनर हूँ और प्रयागराज में रहता हूँ।”

“संस्कृति से क्यों मिलना चाहते हो?” दिग्विजय ने गंभीर लहजे में पूछा।

“मेरे पास कुछ जानकारियाँ हैं, जिनका सम्बन्ध आपकी बेटी से है।”

“उन जानकारियों को तुम हमें भी तो बता सकते हो।”

“जरूर बता सकता हूँ ठाकुर साहब लेकिन मैं जो कुछ जानता हूँ, उसे लेकर किसी नतीजे पर तभी पहुँच सकता हूँ, जब मेरी बात सीधे संस्कृति से हो।”

“तुम्हें किसी नतीजे पर पहुँचने की जरूरत क्यों है?” दिग्विजय ने आशंकित लहजे में पूछा।

“क्योंकि मेरे भाई की याद्दाश्त चली गयी है और मुझे यकीन है कि संस्कृति इसमें मेरी हेल्प कर सकती है।”

“अपने इस यकीन की वजह बता सकते हो?” दिग्विजय ने साहिल को पारखी निगाहों से घूरते हुए पूछा।

“वजह ये है ठाकुर साहब कि मेरे भाई की याद्दाश्त एक रहस्यमयी घटना के तहत गयी है और वह रहस्यमयी घटना उसके साथ कैंब्रिज में ही घटी है, जहाँ से आपकी बेटी हाल ही में डिग्री लेकर लौटी है।”

“तो क्या तुम्हारा भाई संस्कृति को जानता था?”

“कह नहीं सकता।”

“तो फिर ऐसा क्या जानते हो तुम, जो तुम्हें लगता है कि तुम्हारे भाई की यादों को वापस लाने में संस्कृति तुम्हारी मदद कर सकती है?”

“दरअसल ठाकुर साहब..।” साहिल ने हिचकिचाते हुए कहा- “मैं माया के बारे में जानता हूँ।”

“मा..या...?” दिग्विजय के होठों से सिसकारियाँ छूट गयीं। उन्होंने सुजाता की ओर देखा। सुजाता भी उन्हीं की भांति हैरान हुई थीं।

"इस नाम से हमारा कोई वास्ता नहीं है।" दिग्विजय ने साहिल के बातों की सच्चाई परखने के ध्येय से झूठ कहा।

"मुझसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है ठाकुर साहब क्योंकि जब मैं शंकरगढ़ आने के बाद आपके महल तक पहुँचने के लिए लोगों से रास्ता पूछ रहा था तो उन्होंने मुझे यहाँ घटी घटना के बारे में भी बताया। माया वही नाम है, जिसे लेकर ताबूत में से किसी ने संस्कृति को पुकारा था। केवल इतना ही नहीं, वैभव की गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर भी उसके खून से यही नाम लिखा हुआ था।"

दिग्विजय और सुजाता हैरान रह गये। उन्हें सूझा ही नहीं कि क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

"मेरा यकीन कीजिये ठाकुर साहब। माया नाम सिर्फ आपकी बेटी की जिन्दगी से ही नहीं बल्कि मेरे भाई की जिन्दगी से भी जुड़ा हुआ है।"

थोड़ी देर तक विचार करने के बाद दिग्विजय ने सुजाता से मुखातिब होकर कहा- "संस्कृति को लेकर आओ।"

सुजाता ड्राइंग हॉल का जीना चढ़कर ऊपर चली गयीं और जब वापस लौटीं तो संस्कृति उनके साथ थी। दिग्विजय ने उसे साहिल से अवगत कराने के बाद उससे पूछा- "क्या तुम इन्हें पहचानती हो?"

संस्कृति ने साहिल पर नजर डाली तो जरूर मगर उसे पहचानने की कोशिश किये बगैर 'नहीं' में गर्दन हिला दी।

"मैंने ये नहीं कहा था ठाकुर साहब कि मैं संस्कृति को या संस्कृति मुझे पहचानती है। मैंने ये कहा था कि मुझे उससे कुछ बात करनी है।"

"कैसी बात?" संस्कृति ने उत्सुक लहजे में पूछा।

"एक्चुअली मैं एक फ्रिलांस आर्टिस्ट हूँ। मेरा भाई भी तुम्हारे आने से कुछ
दिनों पहले ही कैंब्रिज से लौटा है। वह रिसर्च स्कॉलर है और एक एजुकेशनल टूर के तहत वहाँ गया था।"

"हाँ। पिछले दिनों यूनिवर्सिटी की 'सोसाइटी ऑफ़ मैथेमेटिक्स' की ओर से एक इंटरनेशनल वर्कशॉप ऑर्गेनाइज किया गया था। उसमें कुछ रिसर्च स्कॉलर्स इंडिया से भी थे।"

"मुझे उसी सिलसिले में तुमसे कुछ बात करनी है।" साहिल ने बैग से कोमल के दिये हुए स्केचेज बाहर निकाले और उन्हें संस्कृति की ओर बढ़ाते हुए बोला- "मेरे पास ये कुछ स्केचेज हैं। मैं चाहता हूँ कि पहले तुम इन्हें एक बार ध्यान से देख लें।"

"ऐसा क्या हैं इनमें?"

संस्कृति ने उन स्केचेज को थाम लिया। उत्सुकतावश सुजाता और दिग्विजय भी उन स्केचेज पर झुक गये। संस्कृति ने सरसरी तौर पर एक-एक करके उन्हें देखने के बाद कहा- "मुझे इनमें कुछ भी स्पेशल नजर नहीं आ रहा है।"

"मैंने इन्हें ध्यान से देखने के लिए कहा था।"

इस बार ध्यान से देखने पर आखिरकार संस्कृति को उन स्केचेज में वो विशेषता नजर आ गयी, जो साहिल उसे दिखाना चाहता था।

"य...ये तो मेरी ही स्केच लगती है।" उसने उस स्केच को देखते हुए कहा, जिसमें किसी राजकुमारी जैसी वेशभूषा वाली लड़की तालाब में अपना अक्स निहार रही थी।

"और ये उस महल का, जिसमें इस वक्त हम खड़े हैं।" साहिल ने राजमहल के स्केच की ओर संकेत करते हुए कहा।

"किसने बनाया है इन्हें?" दिग्विजय ने अचम्भित स्वर में पूछा।

"मेरे भाई यश ने।"

"आपके भाई ने? लेकिन कैसे? डज ही नो मी?"

"यही तो जानने के लिए मैं यहाँ आया हूँ। मुझे पता चला है कि उस वर्कशॉप में तुमने भी शिरकत की थी।"

"सही पता चला है। इसके लिए मुझे डीन की स्पेशल परमिशन मिली थी।"

"मैं उसी वर्कशॉप की बात कर रहा हूँ। और तुम ये जानकर हैरान रह जाओगी कि उस वर्कशॉप से लौटने के दो दिनों के अंदर ही यश अपनी याद्दाश्त खो बैठा।"

"बट....बट हाउ कैन इट बी कनेक्टेड विद मी?" संस्कृति सचमुच हैरान हुई। यही हाल सुजाता और दिग्विजय का भी था।

"कनेक्शन है संस्कृति, बहुत गहरा कनेक्शन है। न तो तुम उसे जानती हो और न ही वह तुम्हें जानता है; बावजूद इसके उसने तुम्हारा और तुम्हारे घर
का स्केच बना दिया। ये जानने के बाद भी तुम कनेक्शन पूछ रही हो?"

"साफ़-साफ़ बताओ साहिल...।" दिग्विजय ने कहा- "कि तुम कहना क्या चाहते हो?"

"साफ़-साफ़ बात ये है ठाकुर साहब...।" साहिल, दिग्विजय से मुखातिब होकर बोला- "कि जब से मैंने कैंब्रिज की घटनाओं की पड़ताल शुरु की है, तब से एक नाम बार-बार रहस्यमयी बनकर सामने आ रहा है और वह नाम है-माया। यश के जीवन में बदलाव की शुरुआत उस पर कैंब्रिज में हुए एक जानलेवा हमले के बाद से हुई थी। कोमल नाम की उसकी रिसर्च फेलो ने, जो टूर में उसके साथ थी, मुझे बताया कि उस हमले के बाद यश का बर्ताव बदल गया था। वह खुद से बातें करने लगा था और नींद में चलने लगा था। ड्राइंग बनाने के मामले में फिसड्डी होने के बावजूद उसने ये चार स्केचेज बना डाले थे। कोमल के अनुसार उसने तुम्हारी शक्ल से मिलती-जुलती शक्ल वाली इस राजकुमारी को माया कहकर सम्बोधित किया था। सिर्फ इतना ही नहीं उसने तो इस माया को अपनी प्रिंसेज तक कह डाला था।"

सुजाता और दिग्विजय की धड़कनें तेज हो गयीं। *'संस्कृति, माया का पुनर्जन्म हो सकती है।'* ये सम्भावना उन दोनों को सच का रूप लेती नजर आने लगी।

"फिर क्या हुआ?" संस्कृति ने पूछा।

"पता नहीं। वर्कशॉप खत्म होने के बाद इण्डिया लौटने पर वह दो दिनों तक नेट सर्फिंग में बिजी रहा था। फिर उसके बाद मुझे पता चला कि वह अपनी याद्दाश्त खो चुका था। उसके सेलफोन की ब्राउजर हिस्ट्री चेक करने पर मैंने पाया कि वह उन दो दिनों में ब्रह्मराक्षस के बारे में छान-बीन कर रहा था।"

"ब्रह्मराक्षस?" संस्कृति के माथे पर सिलवटें उभरीं- "ये क्या होते हैं?"

"ये एक पिशाच योनी होती है। इसमें अकाल मौत मरने वाले दुराचारी ब्राह्मण जन्म लेते हैं।"

संस्कृति ने चेहरे पर भय लिए हुए सुजाता और दिग्विजय की ओर देखा।

"लेकिन गणित के एक छात्र को ब्रह्मराक्षस के बारे में जानने की क्या जरूरत पड़ गयी?" दिग्विजय ने पूछा।

"इसी सवाल ने तो आज मुझे आप लोगों के सामने लाकर खड़ा कर दिया है।" साहिल दोबारा संस्कृति से मुखातिब होते हुए बोला- "क्या तुम पुनर्जन्म में यकीन करती हो?"

"यू मीन रिइनकारनेशन?"

"यस।"

"एक्चुअली मेरे साथ अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है, जिससे मैं इस पर
यकीन करने या न करने के बारे में सोच सकूं।"

"तो अब सोचो संस्कृति।" साहिल ने गहरी साँस लेकर कहा- "सोचो ही नहीं बल्कि यकीन भी कर लो कि लोग मरने के बाद एक नए शरीर के साथ इस दुनिया में फिर से आते हैं। गीता में कही गयी बात सच है।"

"ब..बट व्हाई?" संस्कृति ने चेहरे पर उलझन लिए हुए अपने माँ-बाप की ओर देखा, जो साहिल की बातों को दिलचस्पी के साथ सुन रहे थे।

"क्या तुम ये नहीं पूछोगी कि स्केचिंग की एबीसीडी तक न जानने वाले यश ने ये स्केचेज कैसे बना लिये? उसने तुम्हारी शक्ल वाली लड़की की स्केच को माया क्यों कहा?"

संस्कृति खामोश रही। कोई जवाब न दे सकी।

"यश ने वे स्केचेज इसलिए बना लिये क्योंकि स्केचिंग की ये एबिलिटी उसमें पिछले जन्म से आयी है। उसने तुम्हारी स्केच वाली लड़की को माया इसलिए कहा क्योंकि...क्योंकि शायद तुम पिछले जन्म में माया थी और...और यश की प्रिंसेज थीं।"

दिग्विजय और सुजाता के रोंगटे खड़े हो गये। जो संभावना उनके कुलगुरु ने व्यक्त की थी और जो संभावना खुद उनके जेहन में सिर उठा रही थी, उसी के पक्ष में एक अजनबी शहरी के ठोस तर्कों को सुनकर दोनों रोमांचित होने लगे।

"तुम इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो?" दिग्विजय ने साहिल पर अर्थपूर्ण दृष्टि डालते हए पूछा।

"हालाँकि अभी ये महज अनुमान है ठाकुर साहब कोई यकीन नहीं लेकिन जल्द ही यही सच बनकर सामने आयेगा। मैंने रिइनकारनेशन के बारे में इण्टरनेट पर और किताबों में पढ़ा है, इसलिए इस सिद्धांत में मेरी आस्था है।"

"तुम्हारे इस अनुमान के पीछे आस्था से इतर कोई ठोस वजह?" दिग्विजय ने पूर्ववत् अंदाज में पूछा।

"मुझे रास्ते में यहाँ के वाशिंदों ने एक कहानी सुनाई। उस कहानी के अनुसार माया नाम की एक राजकुमारी सैकड़ों साल पहले आपके खानदान में जन्मी थी। उस पर अभयानन्द नाम के किसी तांत्रिक की कुदृष्टि थी। रियासत में तंत्र पर प्रतिबंध होने के बावजूद उस तांत्रिक ने तंत्र को अपनाया था और राजघराने की लड़की पर बुरी नजर डालने का दुस्साहस किया था; इस दोहरे अपराध के कारण राजा के आदेश पर शंकरगढ़ के लोगों ने उसे पीपल के पेड़ से बांधकर जिंदा जला दिया था। कुछ लोगों ने तो ये संभावना भी जताई कि अकाल मौत के कारण अभयानन्द को मुक्ति नहीं मिली थी और वह ब्रह्मराक्षस बन गया था। वही ब्रह्मराक्षस ताबूत में से संस्कृति को बुला रहा था।"

"तो इसका मतलब ताबूत से आती आवाज़ का मुझे माया कहना बेवजह नहीं था?" संस्कृति ने खौफजदा लहजे में पूछा।

"तहखाने में तुम्हारे साथ हुआ क्या था?" साहिल का रुख एक बार फिर संस्कृति की ओर हुआ।

संस्कृति ने एक ही साँस में अपनी आप बीती सुना दी।

"देखा आपने ठाकुर साहब?" साहिल, दिग्विजय से मुखातिब होकर बोला- "ताबूत से आती आवाज़ की कही हुई बातें और यहाँ के लोगों द्वारा मुझे बतायी गयी बातें एक-दूसरे को सही साबित कर रही हैं। ताबूत में आती आवाज़ किसी और की नहीं, अभयानन्द की ही थी। ये है मेरे इस अनुमान की असली वजह कि संस्कृति और मेरे भाई यश का कोई पास्ट लाइफ कनेक्शन है और उस पास्ट लाइफ कनेक्शन में अभयानन्द यानी कि ब्रह्मराक्षस भी शामिल है।"

ड्राइंग हॉल में पैनी खामोशी छा गयी।

"बहुत सी बातें ऐसी हुई हैं, जो रहस्यमय हैं और एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।" खामोशी लम्बी पाकर साहिल ने मुँह खोला- "मेरा भाई अज्ञात कारणों से अपनी चेतना गँवा देता है, रहस्यमय परिस्थितियों में कई स्केच बना देता है और माया नाम की किसी लड़की को अपनी प्रिसेंज बता देता है; दूसरी ओर संस्कृति एक रहस्यमयी तहखाने में उतरती है और उसी माया नाम से पुकारी जाती है, जिसे मेरा भाई अपनी प्रिंसेज कह चुका होता है। इन घटनाओं के बीच ब्रह्मराक्षस और माया की सदियों पुरानी एक कहानी उभरकर सामने आती है। उसी ब्रह्मराक्षस की कहानी, जिसके बारे में याद्दाश्त खोने से पहले मेरे भाई ने लगातार दो दिनों तक छान-बीन की थी। अतीत के पन्नों में कोई तो हैरतअंगेज दास्ताँ जरूर दर्ज है ठाकुर साहब, जो तभी निकलकर सामने आयेगी, जब हम इन घटनाओं को जोड़कर देखेंगे। मंत्री के बेटे वैभव की दर्दनाक मौत भी इन घटनाओं से अलग-थलग नहीं है।"

वैभव की मौत का जिक्र छिड़ते ही सुजाता और दिग्विजय को कुलगुरु की चेतावनी याद आ गयी।

'केवल मौत नहीं, भयावह मौत होगी। राहू का मारकेश प्रबल हो चुका है। कोई कुछ नहीं कर सकता।'

"तो फिर...तो फिर इन सबका साल्यूशन क्या है?" संस्कृति ने हलकान लहजे में कहा- "हम...हम आगे होने वाली घटनाओं को कैसे ठीक कर सकते हैं? सबसे बड़ा सवाल कि हमें ये पता कैसे चलेगा कि आगे क्या होने वाला है।"

"इट इज क्रिस्टल क्लियर कि तुम माया की पुनर्जन्म हो।" साहिल ने थोड़ी देर तक कुछ सोचने के बाद कहा- "लेकिन यश, वह किसका पुनर्जन्म है? वह अभयानन्द का तो पुनर्जन्म नहीं हो सकता है क्योंकि वह तो ताबूत में है या शायद था।"

"हो सकता है कि...।" दिग्विजय ने कहा- "अभयानन्द के अलावा कोई और भी रहा हो, जो माया से प्रेम करता रहा हो। तुम्हारा भाई उसी का पुनर्जन्म हो।"

"ओह, यस।" साहिल के जेहन में मानो कोई बिजली कौंधी- "मेरा ध्यान इस पर अभी तक क्यों नहीं गया था? आपकी एप्रोच सही हो सकती है ठाकुर साहब वरना यश, माया की स्केच कैसे बना पाता? उसे अपनी प्रिंसेज क्यों कहता?"

"अगर ऐसा है तो हमें उसके बारे में कैसे पता चलेगा, जो अभयानन्द के अलावा माया पर आसक्त था?" सुजाता ने पूछा।

"क्या गाँव वालों ने अभयानन्द के अलावा किसी ऐसे आदमी का जिक्र नहीं किया, जो माया को पसंद करता था?" दिग्विजय ने साहिल को लक्ष्य करके पूछा।

"नहीं।" साहिल की ओर से संक्षिप्त जवाब आया।

ड्राइंग हॉल में एक बार फिर खामोशी छा गयी क्योंकि हर किसी का जेहन उपर्युक्त सवालों का संभावित जवाब तलाशने में नाकाम साबित हो रहा था। थोड़ी देर बाद एक बार फिर साहिल ने ही खामोशी को भंग करने की पहल की।

"अगर किसी तरह ये पता चल जाए कि यश के याद्दाश्त जाने की असली वजह क्या है तो कई बातों का खुलासा हो सकता है।" वह, संस्कृति से मुखातिब होता हुआ आगे बोला- "मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ संस्कृति।" संस्कृति की खामोश सहमति पाकर उसने कहा- "तुम कैंब्रिज में यश से मिली थीं?"

"ये भला मैं कैसे बता सकती हूँ। मैं तो आपके भाई को जानती तक नहीं।"

"ओह, सॉरी।" साहिल को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने सेलफोन की गैलरी में से यश की एक तस्वीर निकालकर संस्कृति को दिखाते हुए कहा- "क्या तुम इस हुलिए वाले किसी लड़के से मिली थीं?"

"नहीं, मैं इन्हें पहली बार ही देख रही हूँ।" संस्कृति ने कुछ देर तक दिमाग पर जोर डालने के बाद कहा।

"आर यू श्योर?"

"ऑफ़कोर्स।"

साहिल के चेहरे पर निराशा नजर आने लगी। उसे उम्मीद थी कि संस्कृति से मिलकर कुछ खुलासा जरूर होगा लेकिन यहाँ तो एक अलग ही कहानी चल रही थी। हाँ, कुछ ऐसे सूत्र जरूर हाथ लगे थे, जिनकी मदद से वह रहस्य की तह तक पहुँच सकता था।

"तुम्हारा भाई इस वक्त कहाँ है?" दिग्विजय ने पूछा।

"उस पर यहाँ इंडिया में एक बार फिर हमला हुआ था। शहर मुझे उसके लिए
सुरक्षित नहीं लगा इसलिए मैंने उसे चोरी-छिपे गाँव भेज दिया।"

"आपके भाई की जान कौन लेना चाहता है? उसकी याद्दाश्त चली गयी, फिर भी हमलावर उसके पीछे पड़ा है; आखिर क्यों?"

"इस सबके पीछे शायद एक अधेड़ उम्र की औरत है।"

"औरत, कौन सी औरत?" दिग्विजय ने चौंके हुए स्वर में पूछा।

"दरअसल जब यश पर दूसरा हमला हुआ तो हमलावर मेरी निगाहों की जद में आ गया था। मैं यश को लिए हुए उसके पीछे भागा था लेकिन वह स्लम एरिया की तंग गलियों में हमें चकमा देने में कामयाब हो गया था। थोड़ी देर बाद एक औरत हमसे मिली। उसने हमें उस हमलावर का पता बताया लेकिन उस वक्त हमारे पैरों तले जमीन खिसक गयी, जब हमें उसके बताये हुए पते पर हमलावर नहीं बल्कि उसकी लाश मिली। उसके गले पर कोई धारदार हथियार फिरा दिया गया था और पास में ही उसके खून से लिख दिया गया था कि माया आ चुकी है। श्मशानेश्वर भी आयेंगे। वह मरेगा जो दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक-चिह्न के साथ जन्मा है। पता बताने वाली औरत अजीबोगरीब लग रही थी। मुझे पूरा विश्वास है कि उस हमलावर की हत्या उसी ने की है क्योंकि वह हमारी नज़रों में आ चुका था और उसके जरिये हम रहस्यों की तह तक पहुँच सकते थे।"

"खून से लिखे हुए अल्फाजों के मुताबिक़ उसे मरना है, जो दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक चिह्न के साथ जन्मा है तो क्या यश की कलाई पर स्वास्तिक है, जो अधेड़ उम्र वाली वह औरत उसे मारना चाहती है?"

संस्कृति के सवाल का साहिल ने गहरी सांस लेकर 'हाँ' में जवाब दिया।

"लेकिन एक स्वास्तिक तो संस्कृति की कलाई पर भी उसके बचपन से ही है।" कहने के साथ ही सुजाता ने संस्कृति की कलाई ऊपर उठाई और उसे साहिल के आगे कर दिया। साहिल ने उस निशान को देखा। वह स्वास्तिक हू-ब-हू यश के स्वास्तिक जैसा था।

"ये इस बात की ओर एक और इशारा है कि यश और संस्कृति का पिछले जन्म से कोई ताल्लुक है। यदि संस्कृति, माया का पुनर्जन्म है तो यश किसका पुनर्जन्म है?" अपने सवाल के संभावित जवाब के लिए साहिल ने दिग्विजय, सुजाता और संस्कृति की ओर देखा, मगर किसी के चेहरे पर उसे कोई जवाब नहीं नजर आया।

"अगर ये स्वास्तिक ही यश पर हुए हमले की वजह है तो हमला मुझ पर भी हो सकता है क्योंकि मेरे पास भी स्वास्तिक के रूप में ये बर्थ मार्क है।"

"तुम पर शायद हमला नहीं होगा क्योंकि अगर ऐसा होना होता तो अब तक हो चुका होता। तुम उस औरत की हिटलिस्ट में नहीं हो सकतीं क्योंकि तुम माया हो और अभयानन्द, तुम्हें मारने के बजाय अपने जैसा बनाना चाहेगा। मुझे पूरा यकीन है कि वह अधेड़ औरत, अभयानन्द की परंपरा से ही सम्बन्ध रखने वाली कोई तांत्रिक है। वह यश को रास्ते से हटाने की कोशिश इसलिए कर रही है क्योंकि पिछले जन्म में माया का प्रेमी होने के कारण यश इस जन्म में अभयानन्द और माया यानी कि तुम्हारे पुनर्मिलन में बाधाएं खड़ी कर सकता है। उसने वैभव को भी इसीलिये बेरहमी से मार डाला क्योंकि वह तुमसे शादी करने के लिए पजेस्ड था।"

"वैभव को जिस बेरहमी से मारा गया, उस बेरहमी की उम्मीद किसी इंसान से नहीं की जा सकती है।" सुजाता ने आँखों में भय लिए हुए दिग्विजय की ओर देखा- "कहीं अभयानन्द लौट तो नहीं आया?"

सुजाता के सवाल ने सभी को जड़ कर दिया। एक अनजाना भय उनकी रगों में गर्दिश कर उठा।

"तहखाने से ताबूत निकालने के बाद उसका क्या किया गया?"

"उसे मरघट में दफना दिया गया।" साहिल के सवाल का जवाब दिग्विजय ने दिया।

"लेकिन न जाने क्यों कल रात मुझे लगा था कि किसी ने ताबूत को बाहर निकाला है।"

"सचमुच?" साहिल की आँखें गोल हो गयीं।

"केवल यही नहीं, मुझे वैभव की मौत का भी पूर्वाभास हुआ था। मुझे बार-बार ऐसा लग रहा था कि कहीं कुछ होने वाला है।"

"तुम्हें किसी की मौत का पूर्वाभास हुआ और वह पूर्वाभास सच भी हो गया। इट इज स्ट्रेंज, वैरी स्ट्रेंज।" साहिल ने बेचैनीपूर्वक अपने होंठ काटे।

"आई वांट टू गेट रीड ऑफ़ दिज थिंग्स मम्मी।" संस्कृति ने भयभीत लहजे में सुजाता को लक्ष्य करके कहा- "आई..आई कान'ट इमेजिन कि ये सब मेरे साथ हो रहा है।"

“डोंट बी नर्वस।” सुजाता से पहले ही साहिल ने संस्कृति को ढांढस बंधाते हुए कहा- “सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैं एक पैरासाइकोलॉजिस्ट से वाकिफ हूँ। उन्होंने स्प्रिचुअल ट्रेनिंग ली है और एक बौद्ध मठ में रहकर पास्ट लाइफ रिग्रेशन में दक्षता भी हासिल की है। मैं..मैं चाहूँगा कि एक बार तुम मेरे साथ उनके पास चलो।”

कहने के बाद साहिल ने प्रतिक्रिया जानने के लिए दिग्विजय की ओर देखा।

“संस्कृति कहीं नहीं जायेगी।” दिग्विजय ने दो-टूक लहजे में कहा- “हमें तुम्हारे भाई के साथ सहानुभूति है लेकिन संस्कृति के मामले में हमें किसी बाहरी का दखल बर्दाश्त नहीं। हम अपनी बेटी के लिए कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे और कोशिश करेंगे कि उस रास्ते से तुम्हारे भाई का भी भला हो जाये।”

JJJ

हालाँकि पूर्णिमा की रात थी लेकिन पूरे आकार के चाँद पर जब थोड़े समय के लिए स्याह बादलों के कतरे छा जाते थे तो परिवेश में अमावास सा गहन अँधकार व्याप्त हो जाता था और उस अँधकार में मरघट के जनशून्य हिस्से में खड़ा वह मंदिर किसी विशालकाय दानव सदृश नजर आने लगता था, जिसमें नरभेड़िये की पाषाण-प्रतिमा स्थापित थी।

अरुणा गोबर के कण्डों से जलाई हुई आग पर रखी हाँडी को घूर रही थी। भोजन का यह प्रबन्ध वह स्वयं के लिये कर रही थी क्योंकि मंदिर में एक ओर खड़ा वह पुरुष शाकाहारी नहीं था, जिसकी दृष्टि दूर जल रही चिताओं पर टिकी हुई थी। अरुणा ने हाँडी के नीचे रखे उपलों को व्यवस्थित किया और उसके निकट आयी।

“आस-पास के इलाकों से आने वाले शवों की संख्या बढ़ गयी है प्रभु। कभी-कभी इतनी अधिक संख्या में शवदाह देख दिग्दाह का भ्रम होने लगता है।” अरुणा ने भी चिता की लपटों पर दृष्टिपात करते हुए कहा।

पुरुष ने कुछ नहीं कहा, बस शवदाह के कारण रक्तिम हो रहे क्षितिज को देखता रहा।

“आपको कोई अनुभूति हो रही है प्रभु?”

‘प्रभु’ नाम से सम्बोधित वह पुरुष अरुणा की ओर मुड़ा। उसके अपलक नेत्रों को देख अरुणा हमेशा की तरह सहम गयी।

“हाँ।” उसने गंभीर लहजे में कहा- “हमें हमारे शिकार के कदमों की ध्वनि सुनाई दे रही है।”

“तो...तो क्या वह स्वयं मरघट में आया है?”

प्रत्युत्तर में उस पुरुष ने पूरे आकार के चाँद की ओर देखा, जो अकस्मात ही बादलों की ओट से निकल आया था। धवल चाँदनी से रु-ब-रु होते ही उसकी आँखें पलक झपकने भर के अंतराल में भेड़िये की ऐसी आँखों में परिवर्तित हो गयीं, जिनमें वहशत और खून की प्यास के सिवाय कोई अन्य भाव नहीं था। तत्पश्चात वह नभोन्मुख हुआ और अगले ही पल मरघट का वह जनशून्य हिस्सा भेड़िये की गर्जना से थर्रा उठा।

JJJ

साहिल ठिठक गया। वजह वह भयानक आवाज़ थी, जो अभी-अभी सन्नाटे को चीरती हुई गूँजी थी। आवाज़ किसी भेड़िये के रुदन सदृश भयावह थी और उसकी तीव्रता से आभास होता था कि अभीष्ट भेड़िया निकट ही था। साहिल ने टार्च पर पकड़ मजबूत रखते हुए रोशनी का दायरा उन वृक्षों और झुरमुटों पर केन्द्रित किया, जहाँ किसी पशु के छिपे होने की संभावना थी लेकिन उसे न तो वृक्षों की ओट में कुछ नजर आया और न ही झाड़ियों में कोई ऐसी हलचल दिखाई पड़ी, जिससे वहाँ कुछ होने का आभास होता। वह पीछे भी मुड़ा लेकिन वहाँ भी कुछ नहीं था, सिवाय नागिन की तरह बलखाती हुई कुछ दूर जाकर अँधेरे के आगोश में समा गयी उस पतली पगडण्डी के, जिस पर चलकर उसने यहाँ मरघट तक का फासला तय किया था।

यदि शंकरगढ़ के कुत्तों के भौंकने को खातिर में न लिया जाता तो भेड़िये की रुदन भरी उस भयानक गर्जना के बाद वातावरण फिर से खामोश हो गया था लेकिन न जाने क्यों साहिल को वह खामोशी अब पहले की अपेक्षा अधिक भयानक लगने लगी थी। उसने एक बार फिर सतर्क निगाहों से आस-पास का मुआयना किया और किसी की मौजूदगी न पाकर सतर्क चाल से दोबारा आगे बढ़ा। उसकी चाल अब मंथर पड़ चुकी थी, रोंगटे खड़े होने लगे थे और चेहरे पर भी शिकन व भय नजर आने लगा था।

उसे चौंकन्ना होकर आगे बढ़ते हुए दस मिनट और गुजर गये। इस दौरान उसे कोई अपसामान्य अनुभव नहीं हुआ सिवाय इसके कि हवा अब अचानक अपना रुख बदलने लगी थी। हालाँकि भेड़िये की आवाज़ दोबारा नहीं आयी थी लेकिन उस आवाज़ के बाद परिवेश में व्याप्त हुआ खौफ अभी तक कम नहीं हुआ था।

सहसा साहिल को अपने पीछे किसी की पदचाप सुनाई पड़ी। वह ठिठक गया और उसके ठिठकते ही पदचाप भी खामोश हो गयी। शायद कोई था, जो उसके पीछे आ रहा था लेकिन उसके ठहरते ही खुद भी ठहर गया था। पीछे मुड़ने से पहले साहिल का दिल जोरों से धड़का। पहले तो उसने आहट के जरिये ये पता लगाने की कोशिश की कि वास्तव में कोई पीछे है या ये मात्र उसका वहम है लेकिन जब नाकाम रहा तो आखिरकार पीछे मुड़ा।

पीछे कोई नहीं था। उसका एहसास महज एक भ्रम साबित हुआ।

‘कदमों की आहट किसकी थी?’ जवाब में दूर तक केवल खौफनाक अँधेरा फैला हुआ था।

“कौन है?” उसकी आवाज़ मरघट के सन्नाटे में गूँजी मगर प्रतिक्रया फिर भी न आयी। उसने एक बार फिर टॉर्च के सीमित प्रकाश में आस-पास का मुआयना किया लेकिन नतीजा पहले जैसा ही रहा।

इससे पहले कि वह दोबारा आवाज़ लगाता या अपने वहम को नजरअंदाज करके आगे बढ़ता; कुछ दूरी पर मौजूद झाड़ी में तेज हलचल हुई। इस दफे उसे वहम नहीं हो रहा था। झाड़ी में हो रही हलचल उसे पूरे होश-ओ-हवाश में, जागती आँखों से नजर आ रही थी। झाड़ियों के हिलने का ढंग कुछ ऐसा था, जैसे कोई बाहर आने की कोशिश कर रहा हो।

साहिल ने शुष्क अधरों पर जुबान फेरी और टॉर्च को दोनों हाथों से इस कदर थाम लिया मानो वह कोई हथियार हो। उसने प्रकाश का गोल दायरा झाड़ी पर केन्द्रित रखा। हर गुजरते पल के साथ हलचल तेज होती गयी और इसी अनुपात में साहिल के बदन की कंपकपी भी बढ़ती गयी। लेकिन ठीक उसी क्षण, जब उसे लगने लगा था कि झाड़ियों में से अब कोई बाहर आया ही आया; हलचल थम गयी। झाड़ी यूँ स्थिर हो गयी, मानो उसमें कोई हलचल रही ही न हो।

“य...ये...क्या था?” साहिल ने चेहरे के पसीने को आस्तीन से पोछा और श्मशानव्यापी अँधेरे पर नजर डालते हुए खौफजदा लहजे में बड़बड़ाया।

“क....कौन है? सामने क्यों नहीं आता?” झाड़ियों को लक्ष्य करके वह चीखा।

"द्विज कहाँ है?"

साहिल के कान खड़े हो गए। सर्द लहजे में पूछा गया ये सवाल उसके पीछे से आया था। उसकी कनपटी से पसीने की लकीरें ढलकने लगीं। उसने हलक तर किया, चेहरे के पसीने को आस्तीन से पोंछा और अंततः कांपते जिस्म के साथ पीछे मुड़ा। इस दफे कोई धोखा नहीं था। एक रहस्यमयी मखलूक उसकी आँखों के सामने था।

टॉर्च की रोशनी में सामने खड़ा वह इंसान साहिल को निहायत ही विचित्र नजर आया। उसके बदन पर वैसी ही सफ़ेद धोती थी, जैसी वह मंदिर के पुजारियों के बदन पर देखता था। उसके सफाचट सिर पर शिखा थी और कंधे से यज्ञोपवीत लटक रहा था। उसका कद आठ फीट से भी अधिक था। उसके व्यक्तित्व का सबसे डरावना पहलू ये था कि उसकी पलकें नहीं झपक रही थीं। साहिल को अपलक घूरतीं उसकी बड़ी-बड़ी आँखें रक्तिम थीं। उसे देखकर भ्रम हो रहा था कि खुली आँखों वाली कोई लाश अचानक अपने पैरों पर खड़ी हो गयी हो।

"क...क्या तुम ही अभयानन्द हो?" साहिल की जुबान लड़खड़ाई।

"द्विज कहाँ है?" साहिल के सवाल को नजरअंदाज करते हुए और अपने सवाल को दोहराते अभयानन्द आगे बढ़ा।

"रुको।" साहिल भी पीछे खिसका- "म....मैं किसी द्विज को नहीं जानता।"

"द्विज कहाँ है?" अभयानन्द ने अपने सवाल की पुनरावृत्ति जारी रखी। उसके कदम भी नहीं थमे। उसकी भयानक आँखें मानो साहिल को नहीं शून्य को घूर रही थीं।

"तो क्या...तो क्या संस्कृति का पूर्वाभास सही था? ये इंसान ताबूत से ही बाहर आया है?"

साहिल ने हलकान लहजे में बड़बड़ाते हुए पहले आस-पास बचने का कोई जरिया तलाशना चाहा लेकिन फिर निराश होकर उसने अभयानन्द की ओर देखा, जो अभी भी निरंतर उसकी ओर बढ़ रहा था।

"रुक जाओ।" इस बार साहिल का लहजा चेतावनी भरा था- "मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ है।"

उसने पतलून की जेब में हाथ डाली। जब उसका हाथ बाहर आया तो खाली नहीं था। उसने स्वास्तिक को अभयानन्द की ओर लहराते हुए निडर होकर कहा- "मैं जानता हूँ कि तुम इस पवित्र चिह्न से डरते हो।"

स्वास्तिक पर नजर पड़ने के बाद अभयानन्द के हलक से भेड़िये की गुर्राहट सुनकर साहिल को हैरानी नहीं हुई क्योंकि अब उसे यकीन होने लग गया था कि अभयानन्द का पैशाचिक रुप नरभेड़िया ही था। अगर उसे हैरानी हुई तो इस बात की कि अभयानन्द स्वास्तिक को देखकर भयभीत होने के भाव से नहीं बल्कि उपहास के भाव से गुर्राया था।

"स्टॉप इट।" अभयानन्द के कदम थमते न पाकर साहिल की दुविधा बढ़ने लगी। यद्यपि उसे एहसास होने लगा था कि सुरक्षा का उसका एकलौता इंतजाम धराशायी हो चुका है, स्वास्तिक पर भरोसा करके उसने बड़ी भूल कर दी है फिर भी वह मैदान में डटा रहा।

"द्विज कहाँ है?" इस दफे अभयानन्द का लहजा पहले से अधिक कर्कश था।

साहिल को मौत सामने दिखाई देने लगी थी। उसने स्वास्तिक को यूँ निरखा जैसे दुश्मन के सामने खड़े आदमी को ये बोध अकस्मात हुआ हो कि उसकी रिवाल्वर का चैंबर खाली है।

"म....मैं किसी द्विज को नहीं जानता।" वह खौफजदा होकर पीछे खिसकते हुए हकलाया।

"द्विज कहाँ है?" इस बार ब्रह्मपिशाच गरज उठा। उसकी गर्जना से भयभीत होकर आस-पास के वृक्षों से कई चमगादड़ उड़े।

"त...तुम वापस क्यों आये हो? तुमने मेरे भाई के साथ क्या किया है? तुम संस्कृति के साथ क्या करना चाहते हो?" साहिल ने आखिरकार एक वृक्ष की ओट लेते हुए पूछा।

अभयानन्द ने इस बार भी जवाब नहीं दिया। अपनी स्थिति छिपाने के लिए साहिल ने टॉर्च बुझा दी। अब अँधेरे में मात्र ये आभास भर हो रहा था कि कोई दैत्याकार साया लगातार उसकी ओर बढ़ रहा था। वह दम साधे हुए वृक्ष की ओट में छिपा रहा लेकिन फिर मात्र एक सेकेण्ड के लिए उसका ध्यान अभयानन्द पर से हटा और कहर टूट पड़ा। उसे मात्र इतना महसूस हुआ कि उसकी गर्दन एक फौलादी पंजे की गिरफ्त में आ चुकी है, नश्तर सरीखे नाखून उसकी नसों में चुभने लगे है और वह आवाज़ निकालने में नाकाम हो चुका है।

ठीक उसी पल चाँद बादलों की ओट से बाहर आया और परिवेश दुधिया प्रकाश से नहा उठा। अभयानन्द का खौफनाक चेहरा साहिल ने करीब से देखा। उसकी आँखें अब पहले जैसी नहीं रह गयी थीं। जिन कोटरों में उसे थोड़ी देर पहले इंसानी आँखें नजर आयी थीं, उन्हीं कोटरों में अब एक जोड़ी भेड़िये की आँखें थीं। उसके जबड़े के दोनों किनारों के दांत लम्बे और नुकीले होकर बाहर निकल आए थे। अब वह एक ऐसे मखलूक के रूप में साहिल से रु-ब-रु था, जिसका चेहरा इंसान और भेड़िये की शक्ल का मिला-जुला रूप था। जिस पंजे से उसने साहिल की गर्दन दबोची थी, वह पंजा भी धीरे-धीरे भेड़िये के पंजे का रूप अख्तियार करने लगा था।

"द्विज कहाँ है?" तेजी से नरभेड़िये में तब्दील हो रहे अभयानन्द ने एक-एक हर्फ़ को चबाते हुए अपना पुराना सवाल दोहराया। उसका अंदाज बता रहा था कि साहिल को कोई क्षति पहुँचाए बिना जवाब जानने का ये उसका अंतिम प्रयास था।

"म...मैं किसी द्विज को नहीं जानता।" साहिल ने घुटे-घुटे स्वर में कहा।

पुराना जवाब एक बार फिर सुनकर अभयानन्द का क्रोध चरम को लांघ गया और उसने चन्द्रमा की ओर उन्मुख होकर भेड़िये के स्वर में तीव्र गर्जना करते हुए साहिल को दूर उछाल दिया। इसके बाद मरघट में साहिल की चीख के साथ-साथ अभयानन्द की दहाड़ भी गूँजी। दूर जाकर गिरे साहिल को लगा जैसे हजारों भेड़िये समवेत स्वर में रो रहे हों और फिर उसके देखते ही देखते अभयानन्द का समूचा वजूद नरभेड़िये में तब्दील हो गया।

अभयानन्द का नया अवतार पिशाच की परिभाषा पर मुकम्मल तौर पर खरा उतर रहा था। वह दो पैरों पर खड़े, लगभग आठ फीट ऊँचे भेड़िया-मानव में तब्दील हो चुका था। मानव स्वरुप में उसने जो धोती तन ढापने के लिए इस्तेमाल की थी, वह धोती अब उसके लिए लंगोट का काम कर रही थी। उसका समूचा बदन घने बालों से आच्छादित हो चुका था। सफाचट सिर पर अब घने बाल थे, जो तेज हवाओं के कारण किसी शेर के अयाल की भांति लहरा रहे थे। उसकी दाहिने हाथ में कटार थी और बायाँ हाथ स्वतंत्र था। आँखों में वहशी चमक और चेहरे पर क्रोध का दावानल लिए हुए वह साहिल की ओर बढ़ा।

साहिल ने खड़े होने की कोशिश की लेकिन कांपते पैर जिस्म का बोझ न संभाल सके, पीछे खिसकाना चाहा मगर हौसले ने साथ नहीं दिया। मौत सामने देख चीखना भी चाहा मगर जुबान तालू से जा चिपकी।

अभयानन्द महज कुछ कदमों में ही साहिल के करीब पहुँचा और उसका बाल बायीं मुट्ठी में जकड़कर दाहिने हाथ में ली हुई कटार को हवा में लहराया। कुछ क्षणों में साहिल का सिर धड़ से अलग होकर उसके हाथ में थमा रह जाने वाला था। मौत को चंद लम्हों की दूरी पर पाकर साहिल ने आँखें बंद कर लीं। उसका जेहन ज्ञानशून्य हो चुका था। बाकियों की तरह उसने भी कभी कल्पना नहीं की थी कि मौत उसे इतनी आसानी से निगल जायेगी। बंद आँखों के अँधेरे में उसे अपना अतीत नजर आने लगा लेकिन इससे पहले कि वह ढंग से चीख भी न पाता और उसका धड़ प्राणविहीन होकर, हवा में लहराकर जमीन पर गिर पड़ता; एक चमत्कार हुआ। साहिल को लगा कि उसके बाल अभयानन्द की गिरफ्त से आजाद हो गये हैं। पहले तो उसे यकीन नहीं हुआ कि ऐसा हुआ है लेकिन जब यकीन हो गया तो उसने धीरे-धीरे आँखें खोली।

जो कुछ हुआ था, वह अपेक्षातीत था। अभयानन्द, साहिल से बेहद दूर इस कदर जमीन पर पड़ा हुआ था, जैसे किसी ने पैरों की मजबूत ठोकर से उसे रुई के ढेर की भांति उछाल दिया था। उसका रुख साहिल की ही ओर था। साहिल को अभयानन्द की खौफनाक आँखों में भय जरूर नजर आता अगर उसकी आँखें अंगारों सी सुर्खी न लिए होतीं।

साहिल ने खुद को संभाला और साँसों को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा। हालाँकि उसकी निगाहें अब भी अभयानन्द पर ही थीं।

“अ...आप ठीक तो हैं न?”

पीछे से संस्कृति की आवाज़ सुनते ही साहिल ने हैरतजदा होकर गर्दन पीछे घुमाई। उसे कोई भ्रम नहीं हुआ था। पीछे वास्तव में संस्कृति थी। उसके हाथ में टॉर्च था और चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे वह खुद भी न समझ पायी हो कि थोड़ी देर पहले जो कुछ हुआ, वह कैसे हुआ। हैरतअंगेज बात ये थी कि उसकी दाहिनी कलाई के स्वास्तिक से तेज चमक निकल रही थी। साहिल भाँप गया कि उछलकर दूर जा गिरे अभयानन्द की निगाहें उस पर नहीं बल्कि उसके पीछे खड़ी संस्कृति पर ठहरी हुई थीं। साहिल ने उठने की कोशिश की लेकिन पाँवों की थरथराहट के कारण सफल न हो सका।

संस्कृति अपनी खौफजदा निगाहें अभयानन्द पर केन्द्रित किये हुए साहिल की ओर बढ़ी। उसे अपने शिकार की ओर बढ़ता देख अभयानन्द उछलकर उठ खड़ा हो गया। संस्कृति सहमकर ठिठक गयी। टॉर्च की रोशनी सामने रखने के उपक्रम में उसकी दाहिनी कलाई का रुख अभयानन्द की ओर हुआ और उस पर अंकित स्वास्तिक से फूटती चमक पूर्व की अपेक्षा अधिक तीक्ष्ण हो गयी।

अभयानन्द, चन्द्रमा की ओर उन्मुख होकर गरजा और संस्कृति की आँखों के सामने ही चमत्कार हो गया। अभयानन्द को नरभेड़िये का स्वरुप त्यागकर दोबारा मानुष तन धारण करने में मात्र कुछ ही पल लगे मगर आँखें अब भी भेड़िये की आँखों जैसी ही रहीं।

“हाथ नीचे करो माया। हमारा शरीर तप रहा है।” अभयानन्द ने अपने चेहरे को दोनों हथेलियों के बीच छिपाते हुए कहा।

संस्कृति की तवज्जो पहली दफा स्वास्तिक की चमक पर गयी। स्वास्तिक यूँ चमक रहा था, जैसे अँधेरे में ग्लोइंग टैटूज चमकते हैं।

“मैं माया नहीं हूँ।” स्वास्तिक की शक्ति पर यकीन होते ही संस्कृति के लहजे में आत्मविश्वास भर गया।

“तुम माया हो।” अभयानन्द एक तने की ओट लेते हुए बोला- “हमें राजा उदयभान ने पीपल से बांधकर अग्नि को समर्पित कर दिया था क्योंकि उनकी दृष्टि में हमने तुमसे प्रेम करने का दुस्साहस किया था। अब उसी दुस्साहस को दोहराने के लिए सदियों पश्चात हमारा पुनरागमन हुआ है।”

संस्कृति ने साहिल पर नजर डाली, जो खड़े होने की कोशिश कर रहा था।

“प्लीज लीव मी। मैं किसी उदयभान को नहीं जानती और न ही ये जानती हूँ कि तुम कौन हो।”

“आंग्ल भाषा का प्रयोग मत करो माया। घृणा है हमें इस भाषा से।” इस बार अभयानन्द के लहजे में अतिरिक्त कोप था- “राजमहल के खानदान में सदियों पहले तुमने माया के रूप में जन्म लिया था। उदयभान तुम्हारे पिता थे।”

संस्कृति कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त कर सकी। जिस संभावना को वह सच के रूप में पहले ही स्वीकार कर चुकी थी, उस संभावना पर जब स्वयं अभयानन्द ने सत्यता की मुहर लगाई तो उसके पास प्रतिरोध करने की कोई वजह न रही।

“तुम ही माया हो।” संस्कृति के मौन को सहमति का सूचक समझकर अभयानन्द ने आगे कहा- “हमारी अतृप्त इच्छा को पूर्ण करने हेतु नवीन काया धारण की है तुमने।”

“तुमने यश के साथ ऐसा क्या किया, जो उसकी याद्दाश्त चली गयी? तुम ताबूत में कैसे पहुँचे? तुम ब्रह्मराक्षस कैसे बने?”

“हम तुम्हारे समस्त प्रश्नों के उत्तर दे देंगे किंतु उससे पूर्व हमारा प्रेम-अनुरोध स्वीकार कर लो।”

“और अगर मैंने नहीं किया तो?” संस्कृति ने आशंकित लहजे में पूछा।

“हम तुमसे सम्बन्ध रखने वाले प्राणियों के जीवन को यातनामय बना देंगे। उन्हें तब तक प्रताड़ित करेंगे, जब तक तुम भी हमारी तरह ब्रह्मराक्षस योनी स्वीकार नहीं कर लोगी।”

“नहीं।” अभयानन्द की कुत्सित मंशा जानकर संस्कृति दहल उठी- “तुम ऐसा नहीं करोगे। मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगी।”

“तुम अज्ञानता के वशीभूत होकर हमसे वार्तालाप कर रही हो माया। यदि हमारे सामर्थ्य और क्रोध की पराकाष्ठा का आंकलन करना चाहती हो तो राजमहल के ग्रंथालय में रखे शंकरगढ़ के इतिहास के उस अध्याय को पढ़ो, जो हमने शंकरगढ़ के सैकड़ों पशुओं और नागरिकों के रक्त से लिखा है अथवा अपने कुलगुरु से उस भयावह रक्तपात की गाथा सुनो, जो श्मशान में सजीवन की हत्या से आरंभ होकर द्विज की हत्या पर समाप्त हुआ था।”

“व....वापस चलो संस्कृति।” साहिल अब संयत हो चुका था। उसने हाँफते हुए कहा- “ये अब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम्हारी दाहिनी कलाई का स्वास्तिक तुम्हारी सुरक्षा के लिए ही है। शायद कोई था, जो जानता था कि ये पिशाच वापस लौटेगा, इसलिये उसने तुम्हें सुरक्षा चिह्न दिया।”

“इतनी बड़ी भूल मत करना माया अन्यथा एक बार फिर हमारा पशु-रुप काल बनकर शंकरगढ़ में तांडव करेगा। एक बार फिर शंकरगढ़ के निवासी रात्रि को घरों से बाहर निकलना बंद कर देंगे, एक बार फिर उन्हें अभयानन्द की चीखें सुनाई देंगी और एक बार फिर मृत्यु उनके घरों के द्वार खटखटायेगी।”

“तुम ऐसा नहीं कर सकते।” संस्कृति का लहजा काँपा।

“हम करेंगे, हमारी अतृप्त इच्छा की पूर्ति के लिए हम ऐसा ही करेंगे। शंकरगढ़ के वासियों के प्राण अब तुम्हारे निर्णय पर टिके हुए हैं माया। हम तुम्हें आठ प्रहर का समय देते हैं। यदि तुम समर्पण हेतु तैयार हो जाना तो मरघट के उजाड़ मंदिर में आकर हमें अपने निर्णय से अवगत करा देना। यदि आठ प्रहर व्यतीत हो जाने के पश्चात तुम मंदिर में नहीं आयी तो हम तुम्हारे इस कृत्य को ही तुम्हारी अस्वीकृति समझ लेंगे और उसी रात्रि शंकरगढ़ में एक भेड़िया-मानव कटार लेकर आएगा।”

संस्कृति बगैर कुछ कहे उस तने को निरखती रही, जिसके पीछे अभयानन्द छिपा हुआ था लेकिन काफी समय गुजर जाने के बाद भी उसकी आवाज़ दोबारा नहीं आयी।

“शायद वह चला गया।” साहिल ने कहा। अब तक वह खुद को पूरी तरह संभाल चुका था। उसके गले पर गहरे खरोंच थे, कुहनी छिल गयी थी और चेहरे पर भी हल्के-फुल्के घाव नजर आ रहे थे। उसकी आवाज़ सुनकर संस्कृति की तन्द्रा भंग हुई। वह तेजी से उसके निकट पहुँची।

“आप...आप ठीक तो हैं?”

“जान बचाने के लिए शुक्रिया।” साहिल ने लम्बी-लम्बी साँस लेते हुए कहा- “मौत को पहली बार इतने करीब से देखा मैंने। लेकिन तुम यहाँ कैसे?”

“मुझे एक बार फिर वही एहसास हुआ था, जो एहसास वैभव की मौत की रात हुआ था। मुझे लगा आज रात फिर कुछ होने वाला है।”

“क्या ये बात किसी को मालूम है?”

“नहीं। मैंने किसी को नहीं बताया वरना कोई मुझे आने ही नहीं देता।”

“उसने तुम्हें फैसला करने के लिए चौबीस घंटे का समय दिया है। इनकार की दशा में वह एक बार फिर वही तबाही मचाएगा, जो शायद उसने सैकड़ों साल पहले भी मचायी थी।”

“तो फिर...तो फिर अब क्या करना होगा?” संस्कृति हलकान हुई।

“तुम्हारे पास दो रास्ते हैं; या तो तुम खुद को एक पिशाच की बाँहों में सौंप दो या फिर शंकरगढ़ को तबाही के रास्ते पर धकेल दो।”

“और मैं ये दोनों ही नहीं कर सकती।”

“तो फिर हमारे पास एक तीसरा रास्ता भी है।” संस्कृति ने कुछ नहीं कहा तो साहिल ने आगे कहा- “हमें कुछ ऐसा करना होगा कि चौबीस घंटे के बाद पिशाच विनाशलीला रचने के लिए मौजूद ही न रहे।”

“यानी कि हम उसे चौबीस घंटे के अंदर मार दें?”

“हाँ।” साहिल ने दृढ़ लहजे में कहा।

“बट हाउ कैन इट बी पॉसिबल?”

“हमें पहले अभयानन्द की पूरी कहानी जाननी होगी। इसके लिए हमारे पास दो रास्ते हैं। पहला ये कि हम राजमहल में रखा शंकरगढ़ का इतिहास पढ़ें और दूसरा ये कि तुम किसी ऐसे पैरासाइकोलॉजिस्ट का सेशन अटेंड करो, जो पास्ट लाइफ रिग्रेशन में स्पेशलिस्ट हो।”

“यानी कि आपको यकीन हो चुका है कि मैं ही माया थी?”

“तो क्या तुम्हें अब भी यकीन नहीं है?”

संस्कृति कुछ नहीं बोली।

“देखो संस्कृति, हमारे पास वक्त बहुत कम है। तुम्हारे पिछले जन्म के बारे में जानने के लिए हम हस्तलिखित पांडुलिपियों को खंगालने में समय नहीं गंवा सकते हैं। ऐसे में हमारे पास केवल यही रास्ता बचता है कि हम किसी पैरासाइकोलॉजिस्ट के पास जायें।”

“अभयानन्द आपसे क्या पूछ रहा था?”

“द्विज नाम के किसी व्यक्ति का पता पूछ रहा था। मैंने जो संभावना व्यक्त की

थी, वही सच निकली। अभयानन्द और माया के बीच कोई तीसरा भी था और उस तीसरे का नाम द्विज था। मुझे सब-कुछ समझ में आ गया है।” साहिल के चेहरे पर ऐसे भाव आये, जैसे उसने कोई बहुत बड़ी गुत्थी सुलझा ली हो- “यश पर दो बार हुए हमले का कारण साफ़ हो चुका है। वही पिछले जन्म में वह द्विज था, जो अभयानन्द के अलावा माया का दूसरा लवर था। इस जन्म में अभयानन्द अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी यश यानी कि पिछले जन्म के द्विज को अपने रास्ते से हटाना चाहता है। इस काम में वह साधारण आदमियों की मदद ले रहा है क्योंकि जो स्वास्तिक तुम्हारी दाहिनी कलाई पर बना है, वही स्वास्तिक यश की कलाई पर भी बना हुआ है इसलिए वह यश को खुद अपने हाथों से ख़त्म नहीं कर सकता है। शायद यही वजह है, जो यश पर हुए दोनों हमले जानलेवा तो थे लेकिन उन्हें अंजाम देने वाला एक साधारण इंसान था।”

“मुझे आपकी थ्योरी में झोल नजर आ रहा है।” संस्कृति ने कुछ सोचते हुए कहा- “अभयानन्द तब वजूद में आया, जब राजमहल के बेसमेंट से ताबूत निकाला गया जबकि यश की याद्दाश्त तो उससे पहले ही गुम हुई है। यहाँ तक कि उस पर दोनों हमले भी अभयानन्द के जागने से पहले ही हुए हैं। ये कैसे पॉसिबल है कि यश पर हुए हमले और उसकी याद्दाश्त जाने के पीछे अभयानन्द है?”

“शायद तुम उस औरत को भूल रही हो संस्कृति, जिसने जानबूझकर मुझे और यश को हमलावर की लाश का पता बताया था।”

“ओह।” संस्कृति को मानो पल भर में ही सब-कुछ स्पष्ट हो गया- “इट मीन्स कि यश की याद्दाश्त जाने से लेकर अभयानन्द के जागने तक में उस रहस्यमयी औरत का ही हाथ है।”

“हाँ। वो औरत ही है, जो हमें रहस्यों की तह तक पहुँचा सकती है।”

“लेकिन हम उसे ढूंढेंगे कहाँ?”

“हमें उसे ढूँढने की जरूरत नहीं है। अब उसके आदमी खुद हम पर नजर रखेंगे क्योंकि अभयानन्द को मैंने अभी तक यश का ठिकाना नहीं बताया है। वह किसी भी कीमत पर यश तक पहुँचना चाहेगा और उसे यश तक पहुँचाने के चक्कर में वह औरत कम से कम एक बार हमारे सामने जरूर आयेगी लेकिन पहले मुझे तुम्हारे और यश के पिछले जन्म की कहानी जाननी है क्योंकि पिछले जन्म की कहानी में ही इन सवालों के जवाब छिपे हुए हैं कि अभयानन्द ने किस प्रकार द्विज को मौत के घाट उतारा? उसके प्रकोप को किस प्रकार शांत किया गया था? जो ताबूत तहखाने से बरामद हुआ, उस ताबूत के तहखाने में होने के पीछे क्या रहस्य है? और उस ताबूत में आखिर था क्या? द्विज और अभयानन्द के बाद माया का क्या हुआ?”

“लेकिन मुझे मेरा पिछला जन्म कैसे याद आएगा?”

"जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि इसके लिए तुम्हें किसी पैरासाइकोलॉजिस्ट की कंसल्टेंसी की जरूरत होगी। मैं एक ऐसे डॉक्टर को जानता भी हूँ, जो पास्ट लाइफ रिग्रेशन में दक्ष हैं। वे प्रयागराज और प्रतापगढ़ के बीच पड़ने वाले एक छोटे से कस्बे राजगढ़ में प्रैक्टिस करते हैं।"

"तो फिर हम राजगढ़ के लिए कब निकालेंगे?"

"अभी।"

"अभी?" संस्कृति चौंकी।

"हाँ, अभी। ये मत भूलो कि हमारे पास सिर्फ चौबीस घंटे हैं। एक-एक सेकंड हमारे लिए कीमती है और उन्हें हम व्यर्थ सोचने में नहीं गँवा सकते हैं।"

संस्कृति, साहिल से सहमत तो नजर आयी मगर साथ ही दुविधाग्रस्त भी।

N

8

P

"असंभव।"

अभयानन्द ने चिंघाड़कर मंदिर के खम्भे पर एक मजबूत प्रहार किया। जर्जर खम्भा प्रहार सह नहीं सका और ध्वस्त हो गया। खम्भे और छत से ईंट-पत्थर उखड़कर अभयानन्द के ऊपर गिरे। वह चोटिल हुआ लेकिन उसके मुँह से सिसकारी तक न निकली, जिस्म में लेशमात्र भी जुम्बिश न हुई। अरुणा सिहर उठी। कुछ अभयानन्द के क्रोध से तो कुछ इस भय से कि कहीं उसकी प्रचण्ड क्रोधाग्नि पूरे मंदिर को ही न नष्ट कर दे।

"शांत हो जाइए प्रभु।" वह विनीत स्वर में बोली- "ये पराजय नहीं है आपकी। हम संस्कृति की कलाई पर मौजूद सुरक्षा चिह्न का कोई उपाय ढूंढ़ निकालेंगे।"

"संस्कृति नहीं....।" अभयानन्द यूँ चीखा मानो मेघ गरजे हों- "वह माया है। वही माया, जिसके साथ हमारे संसर्ग की लालसा अधूरी रह गयी थी, जिसे हम अपनी भैरवी बनाने में विफल रहे थे।"

"मैं क्षमाप्रार्थी हूँ प्रभु। मुझे ज़रा भी भान नहीं था कि जो सुरक्षा चिह्न द्विज के नए जन्म की कलाई पर है, वही माया के नए जन्म की कलाई पर भी होगा।"

"प्रश्न ये है अरुणा कि वह सुरक्षा चिह्न माया की कलाई पर आया कैसे? अघोरनाथ ने तो सुरक्षा चिह्न द्विज को दिया था, फिर वह माया की कलाई पर कैसे आ सकता है? यदि पिछले जन्म में द्विज ने अघोरनाथ के दिए हुए सुरक्षा चिह्न का स्वयं उपयोग न करके उसे माया को सौंप दिया था तो फिर नए जन्म में द्विज की कलाई पर वह कैसे आया?" अभयानन्द के मुखमंडल पर अरुणा को पहली दफा उलझन नजर आयी वरना इससे पहले उसने उसके चेहरे पर क्रोध का धधकता ज्वालामुखी ही देखा था। अभयानन्द ने आगे कहा- "सुरक्षा चिह्न केवल एक था। उसे या तो द्विज की कलाई पर होना चाहिए था या फिर माया की लेकिन वास्तविकता ये है कि सुरक्षा चिह्न माया और द्विज दोनों की कलाई पर है। कैसे? कैसे संभव है ऐसा?"

जवाब की आशा में उसने अरुणा की ओर देखा लेकिन उसके चेहरे पर ऐसे कोई भाव नहीं थे, जिससे उसे लगता कि वह जवाब जानती है।

"हमें आशंका हो रही है अरुणा कि हमारे साथ षड़यंत्र हुआ है, छल हुआ है।"

"कैसा षड़यंत्र प्रभु?"

"जब हम माया से वार्तालाप कर रहे थे तो उस युवक ने, जो इस जन्म में द्विज का भाई है, कहा था;

'ये अब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम्हारी दाहिनी कलाई का स्वास्तिक तुम्हारी सुरक्षा के लिए ही है। शायद कोई था, जो जानता था कि ये पिशाच वापस लौटेगा, इसलिये उसने तुम्हें सुरक्षा चिह्न दिया।'

हमें ये संभावना सत्य प्रतीत हो रही है अरुणा। अघोरी ने हमारे साथ षड़यंत्र रचा है। संभवत: उसे ये अनुमान हो चुका था कि कापालिकों का गौण नामक जो वंश हमारे दमन के पश्चात बिखर गया था, उसी वंश की कापालिका भविष्य में हमारे पुनरोत्थान का कारण बनेगी इसलिए उसने षड़यंत्र रचा। वह इस तथ्य से अवगत था कि स्वास्तिक नामक पवित्र चिह्न हमारी दुर्बलता का कारण है। यदि माया की कलाई पर वह चिह्न होगा तो हम उसे बलपूर्वक ब्रह्मपिशाच योनी अपनाने हेतु बाध्य नहीं कर पायेंगे, यही सोचकर उसने माया की कलाई पर पवित्र चिह्न के रूप में जन्म-जन्मान्तर तक न मिटने वाली अमिट छाप छोड़ दी।"

"ये..ये आपके उद्देश्य में बाधक है प्रभु। हमें तो अब तक यही ज्ञात था कि पवित्र चिह्न की अमिट छाप केवल द्विज की कलाई पर है इसलिए हम आपके जागने से पूर्व द्विज के नए जन्म को मार्ग से हटाकर आपके उद्देश्य तक पहुँचने का निष्कंटक मार्ग तैयार करना चाहते थे किंतु अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मात्र द्विज के नए जन्म को मार्ग से हटाकर आपका उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा।"

"पूर्ण होगा।" अभयानन्द के हलक से पैशाचिक गुर्राहट निकली- "हमारा उद्देश्य पूर्ण होगा। अघोरी ने माया को सुरक्षा चिह्न अवश्य दिया है किंतु स्वयं तो उसके साथ नहीं है न। हमारे संकेत पर शंकरगढ़ में मृत्यु का तांडव आरंभ होगा। उस तांडव पर अंकुश लगाने के लिए माया स्वयं ही विवश होकर उस पवित्र चिह्न की उपेक्षा कर देगी और उस उपेक्षा से चिह्न की शक्तियाँ नष्ट हो जायेंगी। तुम केवल आठ प्रहर की प्रतीक्षा करो अरुणा। उसके पश्चात यदि माया ने समर्पण नहीं किया तो मानव-रक्त की छींटों से शंकरगढ़ की धरती लाल हो जायेगी। मरघट में आने वाली चिताओं की लपटों से दिशाएं जल उठेंगी।"

अरुणा के चेहरे पर भयानक मुस्कान काबिज हो गयी। वह उस दृश्य की कल्पना में खो गयीं, जिसमें एक खौफनाक नरभेड़िया अपनी भयानक कटार से इंसानों के सिर काट रहा था।

"किंतु...!" अभयानन्द के हस्तक्षेप से अरुणा की कल्पना में विघ्न पड़ गया- "किंतु अरुणा ये स्मरण रहे कि द्विज को मार्ग से हटाना है क्योंकि यदि उसके नए जन्म यश को पूर्वजन्म का स्मरण हो गया तो संभव है कि वह एक बार फिर हमें चिरनिद्रा में सुलाने का विकल्प ढूँढ ले, जैसा उसने पूर्वजन्म में किया था।"

"अवश्य प्रभु। मैं कल ही अपने आदमियों को यश की तलाश में लगा दूँगी।"

"अपने सहयोगियों को अन्यत्र भेजने की आवश्यकता नहीं है अरुणा। उन्हें केवल द्विज के भाई पर दृष्टि रखने के लिए कहो। उसका पता स्वयं ज्ञात हो जाएगा।"

"जो आज्ञा प्रभु!"

अभयानन्द के चेहरे पर एक बार फिर वही खौफनाक भाव नजर आने लगा, जो थोड़ी देर पहले गहरे उलझनों के नीचे दब गया था।

JJJ

"ठण्ड लग रही है?"

'हाँ' में जवाब पाकर उस बारह साल के लड़के ने अपना कम्बल उतारकर एक छोटे बच्चे के बदन से लपेट दिया।

"अब भी लग रही है?"

छोटे बच्चे ने 'नहीं' में गर्दन हिलाई।

"भूख भी लगी है?"

इस बार भी जवाब 'नहीं' में आया।

'कौन हैं ये दोनों?'

अँधेरे में खड़े यश के माथे पर सिलवटें उभरीं। वह उन दो बच्चों को देख रहा था, जिनमें से एक आगे-आगे मशाल लेकर चल रहा था और दूसरा, जो आयु में उससे छोटा था; उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

थोड़ी देर बाद दोनों बच्चे आराम करने के उद्देश्य से मुख्य मार्ग से उतरकर एक पेड़ के नीचे आ गये। बड़े ने साफ़-सुथरी जगह देखकर छोटे को बैठा दिया और मशाल की सहायता से थोड़ी दूर पर आग जला दिया। अभी कुछ ही पल गुजरे थे कि वे दोनों चौंककर दक्षिण दिशा में देखने लगे। उन्हें शायद कोई आवाज़ सुनाई पड़ी थी। हालाँकि उनसे थोड़े ही फ़ासले पर अँधेरे में खड़े यश को कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी थी।

'आखिर..आखिर ये दोनों हैं कौन?' यश ने एक बार फिर खुद से पूछा।

उसके देखते ही देखते बड़े बच्चे ने छोटे को कुछ समझाया और मशाल लेकर दक्षिण दिशा में चला गया। उसके जाने के बाद छोटा बच्चा सोने की कोशिश करने लगा।

'मुझे इससे पूछना चाहिए।'

मन में उठे विचार को मूर्त रूप देने के लिए यश अँधेरे से बाहर निकलकर अकेले रह गए बच्चे की ओर बढ़ा, जो कम्बल में मुँह छुपाये हुए सोने की कोशिश कर रहा था। उसके पास पहुँचकर उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया ही था कि अचानक वहाँ मौजूद अलाव की रोशनी गायब हो गयी और परिवेश में गहन अँधकार व्याप्त हो गया। यश का दिमाग जब कुछ सोचने के काबिल हुआ तो उसे महसूस हुआ कि वह बिस्तर पर था और आँखों के आगे अँधेरा इसलिए था क्योंकि वह कमरे का बल्ब ऑफ़ करके सोया था।

'तो क्या ये एक सपना था?'

वह बिस्तर से उठा और अँधेरे में टटोलकर बल्ब ऑन किया। वह कमरे में ही था। उसने सचमुच सपना देखा था। वह बिस्तर से उतरा, टेबल तक पहुँचा और वहाँ रखे पानी के गिलास को खाली कर दिया। इस दौरान वह उस हल्के दर्द को नजरअंदाज करता रहा, जो ठीक उस जगह पर हो रहा था, जहाँ गर्दन और कंधे का जोड़ होता है।

इस वक्त यश गाँव में था। साहिल ने घर के किसी भी सदस्य पर ये जाहिर नहीं किया था कि उसका छोटा भाई अपनी पहचान गँवा चुका है। उसने यश को भी समझाया था कि वह परिवार के सदस्यों के प्रति अपने व्यवहार से ये दर्शाने की कोशिश करे कि वह सामान्य है और बस थोड़ा सा बीमार है। ये यश के लिए आसान नहीं था, फिर भी साहिल ने इसे कुछ हद तक आसान बनाने की कोशिश की थी। जैसे कि उसने फोटो एल्बम के जरिये उसे ये पहले ही बता दिया था कि परिवार के किस सदस्य से उसका क्या रिश्ता है। वापस शहर लौटने से पहले उसने उसे घर का नक्शा भी ढंग से समझा दिया था। लोग यश से अधिक बातचीत न कर सके इसके लिए उसने उन्हें हिदायत दी थी कि वह बीमार है और डॉक्टर ने उसे बिना किसी व्यवधान के ज्यादा से ज्यादा समय तक आराम करने की सलाह दी है। दिखावे के लिए वह शहर से कुछ टेबलेट्स भी लेता आया था, जो रंग-बिरंगी टॉफियों के अलावा कुछ नहीं थे। हालाँकि यश को ये सब बेहद अजीब लग रहा था। उसे बार-बार ये एहसास सता रहा था कि वह अजनबियों के बीच है, फिर भी उसका पिछला पूरा दिन आराम से गुजरा था। रात का खाना उस महिला ने उसके बेडरूम में ही पहुँचा दिया था, जो साहिल के अनुसार उन दोनों की माँ थीं।

प्यास बुझने के बाद यश का ध्यान दर्द की ओर गया, जो हर गुजरते क्षण के साथ बढ़ता जा रहा था। उसने गर्दन पर हाथ फेरा। उसने इसे एक ही पोजीशन में देर तक सो लेने के कारण होने वाला सामान्य दर्द समझकर नजरअंदाज करना चाहा लेकिन कर न सका क्योंकि दर्द ऐसा था, जैसे गर्दन और कंधे के जोड़ वाले स्थान पर कोई नश्तर चुभोया जा रहा हो। जिस अनुपात में दर्द बढ़ रहा था, उससे लग रहा था, जैसे हर लम्हे के साथ कोई नश्तर माँस में गहराई तक उतरता जा रहा हो। थोड़े समय बाद दर्द असहनीय सीमा तक तीव्र हो उठा। वह तड़पते हुए, गर्दन पकड़कर बिस्तर पर बैठ गया। दर्द अब उसके बर्दाश्त की सीमा लांघने लगा था। उसकी साँसें तेज और जिस्म पसीने से तर होने लगा था।

'आह!'

अंततः वह कराह उठा। उसे महसूस हुआ, जैसे दर्द वाले हिस्से से माँस काटकर अलग किया जा रहा हो। उसने गर्दन पकड़े हुए ही आदमकद आईने पर नजर डाली। सीलिंग फैन के पूरी गति से चलने के बावजूद भी पसीने से लथपथ अपना चेहरा देखकर वह घबरा गया। किसी तरह उसने खिड़की खोली। ताजी हवा के बदन से टकराते ही उसे कुछ सुकून नसीब हुआ। बेचैनी और दर्द के बीच उसे वही राहत मिली, जो जख्म पर औषधि में डूबी रुई का फाहा रखने पर मिलती है।

वातावरण में पूर्णमासी की चाँदनी छिटकी हुई थी। हल्के-फुल्के बादल क्षणिक अंतराल पर चाँद के ऊपर से तैरकर गुजर जा रहे थे। जल्द ही यश को गर्मी से निजात मिल गयी। इस बीच उसका दर्द भी आश्चर्यजनक ढंग से यूँ गायब हो गया, जैसे पहले कभी रहा ही न हो। दर्द से निजात पाकर उसने गर्दन पर हाथ फेरा। उसके अंग शिथिल पड़ने लगे थे। खिड़की बंद करके वह बिस्तर पर आ गया।

'सपने में नजर आये दोनों लड़के कौन थे? उन्हें कैसी आवाज़ सुनाई दी थी? क्या बड़ा लड़का फिर वापस उस जगह पर लौटा होगा? मेरे कंधे में अचानक दर्द क्यों उठा? चाँद की रोशनी पड़ते ही दर्द गायब कैसे हो गया?'

सामान्य परिस्थितियों में वह शायद अपने सपने को साधारण समझकर ख़ारिज कर देता लेकिन मौजूदा हालात इसके पक्ष में नहीं थे। बहरहाल उसकी नींद अब उचट चुकी थी। समय काटने के संसाधन की तलाश में उसने कमरे में नजर दौड़ाई। कंप्यूटर टेबल पर मौजूद प्रिंटर में लगे कुपियर पेपर पर नजर पड़ते ही उसे अजीब सा सुकून मिला। थोड़ी देर बाद उसके कलम की नोक कागज़ पर थिरक रही थी। जैसे-जैसे समय गुजरता गया, वैसे-वैसे सादे कागज पर एक आकृति जन्म लेती गयी। लगभग दस मिनट बाद जब यश ने उस स्केच को मुकम्मल मान लिया तो उसे गौर से देखा।

"ये..ये क्या बना दिया मैंने?"

अनजाने में ही उसने कुछ ऐसा बना दिया था, जिसे देखने के बाद उसकी स्वयं की आँखों में भी दहशत भर गयी।

JJJ

सुबह के पाँच बज रहे थे। साहिल, संस्कृति को लिए हुए अपने फ्लैट पर पहुँचा। वे दोनों मरघट से सीधे शंकरगढ़ रेलवे स्टेशन पहुँचे थे और वहाँ से गुजरने वाली एक पैसेंजर ट्रेन लेकर प्रयागराज आ गये थे।

"आप अभी तक बैचलर हैं?" फ्लैट पर ताला लगा देख संस्कृति ने पूछा।

"क्या मैं तुम्हें शादीशुदा लगता हूँ?" साहिल ताले में चाबी लगाते हुए मुस्कुराया। जब संस्कृति की ओर से कोई जवाब नहीं आया तो उसने दरवाजा भीतर की ओर धकेलते हुए खुद ही कहा- "दरअसल घर में सबसे बड़ा होने के कारण दबाव तो बहुत है। मम्मी हर रोज शिकायत करती है कि उसे खाना बनाने में दिक्कत होती है लेकिन मैं शादी को टालता आ रहा हूँ। दरअसल ये फ्लैट किराए का है और मैंने सोच रखा है कि जब तक खुद का फ्लैट, फोरव्हीलर और स्विट्जरलैण्ड में हनीमून मनाने के लिए पर्याप्त बैलेंस इकट्ठा नहीं कर लेता, तब तक शादी नहीं करूँगा।"

"काफी एम्बिसियस हैं आप।" संस्कृति, उसके साथ फ्लैट में दाखिल होती हुई मुस्कुराई।

"हर किसी को एम्बिसियस होना चाहिए क्योंकि एम्बिशन ही हमारी लाइफ में थ्रिल भरते हैं। बिना किसी महत्वाकांक्षा वाली जिंदगी बोरियत भरी होती है। और वैसे भी, जो चीजें लाइफ में केवल एक बार होने वाली हैं, उन्हें ग्रैण्ड तरीके से ही करना चाहिए।"

"इंटरेस्टिंग।"

"किचन उस साइड है।" साहिल ने लैपटॉप बैग सोफे पर रखा और किचन की ओर संकेत करते हुए कहा- "अगर तुम चाहो तो मेरे फ्रेश होने तक चाय बना सकती हो।"

"जरूर लेकिन शर्त है कि आपके किचन में ओवन होना चाहिए क्योंकि मुझे लाइटर जलाने में डर लगता है।"

"रियली?" साहिल के मस्तक पर बल पड़े।

"ऑफकोर्स। मुझमें ये डर बचपन से ही है। मेरे आस-पास अगर सिगरेट की लाइटर भी जल जाती है तो मैं नर्वस हो जाती हूँ। इस चक्कर में मैं न जाने कितने स्मोकर्स से लड़ चुकी हूँ। मैं तो अभी तक ये सोचकर हैरान हूँ कि मैं लालटेन लेकर तहखाने में कैसे उतर गयी थी।"

"कोई बात नहीं। वैसे मेरे पास ओवन है लेकिन तुम रहने दो। मैं वापस आकर खुद बना लूँगा।"

कहने के बाद साहिल वाशरूम की ओर बढ़ गया। लगभग आधे घण्टे बाद वे दोनों फ्रेश होकर एक साथ चाय सिप कर रहे थे।

"किसी को फोन करने वाले हैं आप?" संस्कृति ने साहिल को सेलफोन के कांटेक्ट लिस्ट में कुछ ढूँढता देखकर पूछा। साथ ही चाय का आखिरी घूँट भरकर कप को प्लेट में रख दिया।

"डॉक्टर पुष्कर त्रिवेदी को। वे मेरे रेगुलर क्लाइंट हैं। उनके कॉन्फ्रेंस या सेमिनार के लिए एड मटेरियल हमेशा मैं ही डिजाइन करता हूँ। उनकी वेबसाइट की थीम डिजाइनिंग से लेकर ग्राफिक डिजाइनिंग तक भी मैंने ही की है। इमरजेंसी एपॉइन्मेण्ट लेने के लिए मुझे उनसे पर्सनली कांटेक्ट करना होगा।"

साहिल को अभीष्ट नम्बर ढूँढने में अधिक वक्त नहीं लगा और वह*'एक्सक्यूज मी'* बोलकर बाहर चला गया। दस मिनट बाद जब वह वापस आया तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी।

"अच्छी खबर है। तुम्हारे केस में डॉक्टर पुष्कर का इंटरेस्ट जगाने में मैं कामयाब हो गया। वजह शायद ये रही कि अब तक की पूरी प्रैक्टिस के दौरान उनके पास पहली बार रीइनकारनेशन का कोई केस आया है।"

"तो क्या आपने उन्हें सब-कुछ बता दिया? आई मीन अभयानन्द के बारे में भी?"

"नहीं। मैंने उन्हें वेयरवुल्फ के बारे में नहीं बताया क्योंकि एक डॉक्टर ऐसी बातों पर कभी यकीन नहीं करेगा। मैंने उनसे केवल इतना कहा है कि राजमहल के छिपे हुए तहखाने में तुम्हें किसी के हाँफने की डरावनी आवाज़ सुनाई दी थी। तहखाने में उतरने के बाद तुम्हें पता चला कि वह आवाज़ वहाँ रखे एक ताबूत से आ रही थी और उस आवाज़ के अनुसार तुम अपने पिछले जन्म में किसी की प्रेमिका थी। पुनर्जन्म सिद्धांत की समर्थक होने के कारण तुम उनका पास्ट लाइफ रिग्रेशन सेशन अटेंड करने की इच्छुक हो।"

"टाइम क्या दिया है उन्होंने?"

"हमें उनकी ओपीडी शुरु होने के समय ही जाना होगा। चूँकि प्रत्यागमन के लिए पेशेंट को गहरे सम्मोहन की अवस्था में जाना होता है इसलिए मनोचिकित्सक सबसे पहले ये सुनिश्चित करता है कि पेशेंट दिमागी तौर पर इन चीजों के लिए तैयार है या नहीं। इसके लिए सम्बंधित व्यक्ति को मानासिक परीक्षणों की एक श्रृंखला से गुजरना होता है। इस प्रक्रिया के पूरे होने में और रिपोर्ट आने में दो से तीन घंटे का वक्त लगता है। इसके बाद अब ये रिपोर्ट पर निर्भर करता है कि पेशेंट का प्रत्यागमन सत्र तुरंत शुरु किया जाएगा या उसे कुछ मनोवैज्ञानिक सलाह देकर नेक्स्ट फॉलो अप के लिए बुलाया जाएगा।"

"इसका मतलब कि ये श्योर नहीं है कि मेरा सेशन आज से ही शुरु होगा।"

"हमें प्रे करना चाहिए कि ऐसा न हो क्योंकि तुम्हारे नेक्स्ट फॉलो अप तक सबकुछ तबाह हो चुका होगा।"

"अगर मेरा सेशन आज हो भी गया तो इसकी क्या गारंटी है कि हमें कोई न कोई रास्ता मिल ही जाएगा?" संस्कृति के चेहरे अवसाद के बादल मंडराए।

"बी पॉजिटिव संस्कृति। जब हमारे हाथ में कुछ नहीं होता है तो हमारी सकारात्मक सोच और संकल्प ही परिणाम के निर्णायक होते हैं क्योंकि ये हमारे अंदर छिपी हुई ईश्वरीय शक्तियों को जगाते हैं। ये हमारे दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति की ही देन है, जो आज हम चाँद पर पहुँच चुके हैं, ब्रह्माण्ड में व्याप्त ऊर्जा का उपयोग करना सीख चुके हैं और नंगी आँखों से नजर तक न आने वाले एक शुक्राणु से मानव-शरीर बनने की पूरी प्रक्रिया को समझ चुके हैं।"

"हम यहाँ से कब निकलेंगे?" साहिल के आशावादी विचारों से संस्कृति को कुछ तसल्ली हुई।

"ओपीडी आठ बजे शुरु होती है। यहाँ से राजगढ़ पहुँचने में एक घंटा लगता है।"

"यानी कि हमें सात बजे निकलना होगा।"

"हाँ लेकिन उससे पहले मैं एक जरूरी काम फिर से करना चाहता हूँ।"

साहिल अपनी जगह से उठा। संस्कृति को उसका जरूरी काम तब समझ में आया, जब उसने यश का बैग लाकर सोफे पर रखा

"मैं यश के लगेज को चेक करना चाहता हूँ। हालाँकि ये काम मैं पहले भी कर चुका हूँ लेकिन तुम्हारे सामने एक बार फिर से करना चाहता हूँ। हो सकता है, जो मुझे नजर नहीं आया, वह तुम्हें नजर आ जाए।"

साहिल ने बैग की जिप खोली लेकिन उसमें महज कुछ किताबें और नोटबुक्स ही थीं। संस्कृति उन्हें उलट-पलटकर देखने लगी।

"इसमें तो बस रिफरेन्स बुक्स और नोट्स ही हैं। मुझे इनमें ऐसा क्या नजर आ सकता है, जो हमारी तलाश के लिए फायदेमंद होगा?"

"ध्यान से देखो संस्कृति।" साहिल ने बैग की किताबों को एक-एक करके बाहर निकालते हुए कहा- "आई होप कि तुम्हें इन नोट्स और किताबों में कुछ ऐसा दिख सकता है, जो कैंब्रिज से जुड़ा होगा और जिसे हम सूत्र के रूप में इस्तेमाल करके आगे बढ़ सकते हैं।"

साहिल का मंतव्य समझकर संस्कृति उन नोट्स और किताबों को गंभीरता पूर्वक उलटने-पलटने लगी।

"मुझे तो इस बार भी कुछ नजर नहीं आया।" लगभग बीस मिनट बाद साहिल ने गहरी साँस लेकर स्पाइरल बाइण्डिंग वाली एक नोटबुक को सेंटर टेबल पर पटकते हुए कहा।

"एक मिनट।" किसी अन्य किताब के पन्ने पलट रही संस्कृति सेंटर टेबल पर पड़ी उस नोटबुक को देखते ही चौंकी। उसने हाथ में मौजूद किताब को एक ओर रखा और उस नोटबुक को उठा लिया।

"कुछ नजर आया क्या?" साहिल ने अधीर लहजे में पूछा।

संस्कृति की निगाहें नोटबुक के आखिरी ब्लैंक पन्ने पर लिखे टेक्स्ट पर ठहरी हुई थीं। वह किसी वेबपेज का एड्रेस था, जिसके ठीक नीचे एक आईडी और पासवर्ड लिखी हुई थी।

spiritualhealingcentre.com

login credentials:

id: research‌scholaryash1994@gmail.com

password: PLS1934

"य....ये यहाँ कैसे आ गया?" संस्कृति ने हैरतजदा लहजे में खुद से पूछा।

"क्या तुम इस वेबपेज के बारे में कुछ जानती हो?" साहिल ने उसे उस वेब एड्रेस और लॉग इन क्रेडेंशियल्स में रुचि लेता देख, कोई सूत्र हाथ लगने की उम्मीद में पूछा। उसकी उम्मीद निराधार नहीं थी। वह यकीनन एक सूत्र ही था।

"हाँ।" संस्कृति ने विस्फोट किया- "एक्चुअली ये कैंब्रिज में ही मौजूद एक फेमस स्प्रिचुअल सेंटर है। वहाँ ज्यादातर ऐसी सिचुएशन्स को हैंडल किया जाता है, जिनका मेडिकल साइंस के पास कोई एक्सप्लानेशन नहीं होता है।"

"तो इसका मतलब मेरा अनुमान सही था। यश के साथ कुछ ऐसा हुआ था, जिसका मेडिकल साइंस के पास भी कोई जवाब नहीं था। इसलिए उसे स्प्रिचुअल हीलिंग की जरूरत पड़ी थी।"

"यानी कि वैसा ही कुछ, जैसा मेरे साथ हो रहा है।"

"डेफिनेटली।" साहिल ने वेब एड्रेस और लॉग इन क्रेडेंशियल्स पर दृष्टिपात करते हुए उत्साहित लहजे में कहा- "अब सवाल ये है कि उस स्प्रिचुअल हीलिंग का क्या नतीजा निकला था? और यदि यश इतने बड़े स्प्रिचुअल सेंटर में इलाज के लिए गया था तो मुझे उसके सामान में ट्रीटमेंट से जुड़ा कोई डाक्यूमेंट क्यों नहीं मिला? जैसे कि फॉलो अप के डिटेल्स, टेस्ट्स की रिपोर्ट वगैरह।"

"स्प्रिचुअल सेंटर्स में किसी मेंटल इलनेस या फिर पैरानॉर्मल सिचुएशन्स को ट्रीट करने का वहाँ के एक्सपर्ट्स का अपना तरीका होता है। वे फिजिकल इक्विपमेंट्स के जरिये बॉडी का चेकअप नहीं करते हैं। बॉडी से निकलने वाली माइक्रोवेब्ज की फ्रीक्वेंसी को महसूस करके वहाँ के एक्सपर्ट्स बताते हैं कि पेशेंट की बीमारी की असली वजह क्या है? मैं इस तरह की स्ट्रेंज ट्रीटमेंट प्रोसीजर पर यकीन नहीं करती। यश के पास उस हीलिंग सेंटर से जुड़े किसी डिटेल्स के न मिलने का एक कारण ये भी हो सकता है कि वह नहीं चाहता था कि लोगों को उसकी मेंटल इलनेस के बारे में पता चले।"

"उसने हीलिंग सेंटर वाली बात कोमल से भी छिपाई थी क्योंकि कोमल ने मुझे इस बारे में कोई इनफ़ॉर्मेशन नहीं दी थी।" साहिल निचले होठ को दांतों तले दबाकर कुछ सोचता रहा फिर संस्कृति से मुखातिब हुआ- "तो क्या यश ने हीलिंग सेंटर में कराये हुए अपने ट्रीटमेंट के सभी पेपर्स कैंब्रिज में ही नष्ट कर डाले होंगे।"

"नहीं। मेरा अनुमान कहता है कि उसने ट्रीटमेंट का कोई फिजिकल डॉक्यूमेन्ट अपने पास रखा ही नहीं था।"

"ऐसा कैसे हो सकता है? एट लिस्ट पेमेन्ट्स के रिसिप्ट्स तो उसके पास होने चाहिए थे।"

"आप इस लॉग इन क्रेडेंशियल को भूल रहे हैं। हमारे सवालों के जवाब उस स्प्रिचुअल हीलिंग सेंटर की वेबसाइट पर मिलेंगे।"

साहिल, संस्कृति का मंतव्य नहीं समझ पाया जबकि संस्कृति ने लैपटॉप का रुख अपनी ओर किया।

"क्या आप अपने मोबाइल का डेटा शेयर कर सकते हैं?"

"ऑफकोर्स!"

संस्कृति ने लैपटॉप को हॉटस्पॉट के नेटवर्क से कनेक्ट किया और क्रोम ब्राउजर के एड्रेस बार में 'स्प्रिचुअल हीलिंग सेंटर' का वेब एड्रेस टाइप कर दिया। वेब पेज खुलते ही उसने 'लॉग इन' आइकन पर क्लिक किया और यश के नोटबुक से बरामद हुए लॉग इन इन्फॉर्मेशन की मदद से वह लॉग इन करने में सफल भी हो गयी। साहिल की समझ में जब सारा माजरा आया तो उसकी आँखें हैरत और प्रसन्नता से फैल गयीं। लॉग्ड इन होने के बाद खुलने वाले पेज पर उनके सभी सवालों के जवाब थे।

"बड़े हॉस्पिटल्स या हीलिंग सेन्टर्स में पेशेन्ट की टेस्ट्स रिपोर्ट, फॉलो अप डिटेल्स और एडवाइजेज वगैरह वेबसाइट पर उनके एकाउण्ट में फीड कर दी जाती हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर कभी भी एक्सेस किया जा सकता है। उस हीलिंग सेंटर में भी ऐसी ही व्यवस्था है। इसलिए यश ने अपने पास कोई फिजिकल डॉक्यूमेन्ट नहीं रखा। केवल एक जगह पर लॉग इन क्रेडेंशियल्स को नोट कर लिया था।"

मॉनिटर पर नजर आ रहा वेबपेज यश के एकाउण्ट का था, जिसमें न केवल उसकी बीमारी बल्कि हर फॉलो अप रिपोर्ट की भी पीडीऍफ़ फाइल थी।

"मैं इन डाक्यूमेंट्स को डाउनलोड कर लेती हूँ।"

संस्कृति ने साहिल की स्वीकृति की प्रतीक्षा नहीं की और एक सेपरेट फोल्डर बनाकर उन डाक्यूमेन्ट्स को सेव कर लिया।

"नाउ वी आर वैरी क्लोज टू सॉल्व द मिस्ट्री। मैं एक-एक करके इन फाइल्स को देखती हूँ।" संस्कृति ने रोमांचित लहजे में कहा जबकि साहिल मन ही मन उसके प्रजेन्स ऑफ माइण्ड की तारीफ़ करने लगा। संस्कृति ने सबसे पहले यश द्वारा भरे गये रजिस्ट्रेशन फॉर्म की पीडीऍफ़ खोली।

"आपके भाई का केस पास्ट लाइफ से जुड़े केसेज को हैंडल करने वाले डिपार्टमेंट को फॉरवर्ड किया गया था।" संस्कृति ने फॉर्म में दर्ज विवरण को परखने के बाद कहा।

"यानी कि यश को भी अपने पिछले जन्म की आहट सुनाई देती थी।"

"शायद।" संस्कृति कंधे ऊँचकाते हुए बोली- "रजिस्ट्रेशन फॉर्म में फिल्ड डिटेल्स यही कह रहे हैं; ये देखिए।" उसने फॉर्म के टॉप के राइट कॉर्नर में सेंटर की ओर से भरे गये केस नम्बर की ओर संकेत करते हुए कहा- "पीएलएस वन नाइन थ्री फोर। उसका केस नम्बर ही लॉग इन पासवर्ड है। पीएलएस मतलब पास्ट लाइफ सिम्प्टम्स। केस नम्बर के नीचे डिपार्टमेन्ट का नाम भी लिखा है।"

"तो क्या उसके साथ भी तुम्हारे जैसी ही कोई घटना घटी थी, जो उसका केस ऐसे डिपार्टमेंट को फॉरवर्ड किया गया?"

"कोई भी पेशेंट रजिस्ट्रेशन फॉर्म के साथ या तो किसी डॉक्टर का रेफरल लैटर अटैच करता है या फिर सिम्प्टम्स के कॉलम में अपनी प्रॉब्लम्स की डिटेल भरता है। यश ने सिम्प्टम्स के कॉलम में लिखा है कि उसे कोई सपना बार-बार परेशान करता है। चूँकि सपनों को अक्सर पास्ट लाइफ से जोड़कर देखा जाता है, इसलिए उसका केस पास्ट लाइफ के एक्सपर्ट्स को फॉरवर्ड किया गया था।"

"वह सपना क्या था?"

"इसके लिए मुझे फॉलो अप की फाइल देखनी होगी।"

संस्कृति ने दूसरी फाइल खोली।

"ये पहले फॉलो अप की रिपोर्ट है। उसकी कंसल्टेंट मिस मार्था थीं। इस रिपोर्ट के अनुसार वह सपने में दो बच्चों को रात के अँधेरे में कहीं जाते हुए देखता था। थोड़ी देर बाद बड़ा बच्चा छोटे को एक पेड़ के नीचे बैठाकर किसी आवाज़ का पीछा करने चला जाता था। उसके जाने के बाद यश जब छोटे बच्चे से कुछ पूछने के लिए आगे बढ़ता था तो उसकी नींद खुल जाती थी।"

"एनीथिंग मोर?"

"यस" संस्कृति ने फाइल को पढ़ते हुए कहा- "आगे जो कुछ भी लिखा है, वह अनबिलिवेबल है।"

"ये तो होना ही है। सब-कुछ अनबिलिवेबल ही तो है।"

"इसमें लिखा है कि जब सपने के कारण यश की नींद खुलती थी तो वह अपने गर्दन और कंधे के जोड़ पर ऐसा दर्द महसूस करता था, जैसे वहाँ से माँस काटकर बाहर निकाला जा रहा हो।" साहिल के नेत्र संकुचित हुए जबकि संस्कृति ने आगे कहा- "लेकिन जो बात इससे भी कहीं ज्यादा हैरान करती है वो ये है कि जब वह बेचैन होकर कमरे से बाहर आकर टहलने लगता था तो चाँद की रोशनी में उसका दर्द गायब हो जाता था। केस सुनने के बाद मिस मार्था ने उसे हीलिंग सेंटर में ही मैन्युफैक्चर्ड कुछ इंसेन्स स्टिक्स दिये थे। एडवाइज के तौर पर उन्होंने उन इंसेन्स स्टिक्स को कमरे में जलाने के लिए कहा था। एक्चुअली उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर ये नतीजा निकाला था कि पेशेंट किसी डॉर्क एनर्जी के कांटेक्ट में है और वे स्टिक्स उस डॉर्क एनर्जी को न्यूट्रीलाइज कर देंगे। उन्होंने उसे नेक्स्ट फॉलो अप के लिए एक हफ्ते बाद बुलाया था। नेक्स्ट फॉलो अप के दौरान क्या पता चला था, ये जानने के लिए उस फॉलो अप की रिपोर्ट देखती हूँ।" संस्कृति केवल तब तक के लिए खामोश रही, जब तक कि उसने दूसरी फाइल ओपन नहीं कर ली। दूसरे फाइल की टेक्स्ट पर नजर फिराते हुए उसने कहा- "इंसेन्स स्टिक्स का यश पर कोई प्रभाव नहीं हुआ था। जब वह दोबारा मिस मार्था से मिला था तो उसके पास चार स्केचेज थे। उसने मिस मार्था को बताया था कि उसे खुद भी नहीं मालूम कि उसने ये स्केचेज कैसे बना लिए? बस टाइम पास के लिए उसके अंदर स्केचिंग की इच्छा जगी थी और वे चार स्केचेज वजूद में आ गये थे।"

"ये वही स्केचेज रहे होंगे, जो हम पहले भी देख चुके हैं।"

"मैं उन स्केचेज की डिस्क्रिप्शन पढ़ती हूँ।"

डिस्क्रिप्शन पढ़ने के बाद संस्कृति ने साहिल के अनुमान पर सत्यता की मुहर लगा दी।

"हाँ, वही स्केचेज थे।"

"फॉलो अप रिपोर्ट में और क्या लिखा है?"

"मिस मार्था ने एडवाइस के तौर पर उसे पास्ट लाइफ रिग्रेशन सेशन अटेंड करने को कहा था। उन्हें ये कन्फर्म हो चुका था कि यश को दिखाई देने वाले सपने और सपने के तुरंत बाद होने वाले गर्दन के दर्द का सम्बन्ध उन यादों से था, जो आज भी उसके सबकॉन्शियस माइंड के किसी हिस्से में दफ़न हैं।"

संस्कृति ने अगले पीडीएफ़ डॉक्यूमेंट को ओपन किया। इस डॉक्यूमेंट में पेजों की संख्या पिछले डाक्यूमेंट्स से कहीं ज्यादा थी। उसने उन डाक्यूमेंट्स को दस मिनट तक गौर से पढ़ा।

"क्या लिखा है?" जब साहिल की प्रतीक्षा धैर्य से अधिक बढ़ गयी तो उससे रहा न गया।

"ये उन तीन सेशंस की रिपोर्ट है, जो यश ने चार-चार दिन के अंतराल पर अटेंड किये थे। उसे हर सेशन में अलग-अलग विजन नजर आये थे। पहले सेशन में उसने ह्यूमन सैक्रीफाइस जैसा हॉरिबल सीन देखा था।"

"ह्यूमन सैक्रीफाइस यानी नरबली?"

"हाँ। एग्जॉर्सिस्ट आई मीन तांत्रिक जैसे कुछ लोग वेयरवुल्फ की स्टेच्यू के सामने एक इंसान के अंगों को काट रहे थे। नेक्स्ट विजन में उसने पूरी तरह जल चुके एक इंसान को देखा था। शायद वह जिन्दा था क्योंकि एक दूसरा आदमी उसके जिस्म पर दवा लगा रहा था।"

"क्या विजन में यश ने उस आदमी का चेहरा देखा था?"

"नहीं। रिपोर्ट में लिखा है कि उस आदमी की पीठ यश की ओर थी और वह उसका चेहरा नहीं देख पाया था।"

"तीसरे विजन में क्या देखा था उसने?"

"तीसरे विजन में उसे एक लड़की जिन्दा जलती हुई नजर आयी थी। उसका पूरा जिस्म आग की गिरफ्त में था" कहने के बाद संस्कृति एक लम्बी साँस लेकर साहिल से मुखातिब हुई- "हीलिंग सेंटर की ओर से यश के अकाउंट में बस इतने ही डाक्यूमेंट्स अपलोड किये गये हैं।"

"ह्यूमन सैक्रीफाइस, पूरी तरह जला हुआ इंसान, जलती हुई लड़की; आखिर ये विजंस यश की पास्ट लाइफ से किस प्रकार कनेक्टेड हो सकते हैं?"

“अभी बहुत सारी कड़ियाँ छूटी हुई हैं। ये तो श्योर है कि ये विजंस उसकी पास्ट लाइफ के ही हैं।”

“यश ने इसके बाद कोई सेशन क्यों नहीं अटेंड किया था?”

“पता नहीं।” संस्कृति ने लैपटॉप के मॉनिटर की ओर देखा- “तीन दिन बाद उसे नेक्स्ट सेशन के लिए बुलाया गया था लेकिन वह गया नहीं था।”

उन दोनों के बीच खामोशी काबिज हो गयी।

“मुझे लगता है कि डॉक्टर पुष्कर का सेशन अटेंड करने के बाद अगर मुझे कोई विजन नजर आता है तो उसे यश के विजन के साथ को-रिलेट करके किसी कन्क्लूजन पर पहुँचा जा सकता है।”

साहिल ने वालक्लॉक की ओर देखा। छः बज चुका था।

N

9

P

'मुझे नहीं मालूम कि एक अनजान आदमी पर भरोसा करके उसके साथ जाने को आप क्या समझेंगे लेकिन ये जरूर मालूम है कि मैंने अनजाने में ही सही लेकिन समय के सीने में दफ़न एक पुराने राज़ को छेड़ने का जो दुस्साहस किया है, उसका अंजाम शंकरगढ़ के लोग न भुगतें, इसके लिए मेरा साहिल के साथ जाना जरूरी है।

पिशाच ने मुझे केवल चौबीस घण्टे का अल्टीमेटम दिया है। इन चौबीस घण्टों में मुझे कुछ सवालों के जवाब ढूंढ़ने हैं और इसीलिए मुझे अभी आधी रात से ही एक अनजान सफर पर जाना पड़ रहा है। मैं शहर जा रही हूँ। मुझे कोई अन्दाजा नहीं है कि जब मैं चौबीस घण्टे बाद उस सफ़र से लौटूंगी तो मेरे हाथ में शंकरगढ़ की तबाही का फरमान होगा या फिर ब्रह्मराक्षस की मौत का रहस्य।'

संस्कृति

अरुणोदय ने संस्कृति का लिखा ख़त पढ़कर ड्राइंग हॉल में मौजूद लोगों को सुनाया। नौकरों के सिवाय वहाँ राजमहल का प्रत्येक सदस्य उपस्थित था।

"आधी रात?" चंद्रोदय ने दिग्विजय से मुखातिब होकर कहा- "तो क्या वह आधी रात को ही शहर के उस लड़के के साथ चली गयी?"

दिग्विजय ने कुछ नहीं कहा। उनका मुखमंडल ये आभास करा रहा था कि वे संस्कृति के कृत्य को सही या गलत की श्रेणी में रखने को लेकर असमंजस में थे। यही हाल बाकी सदस्यों का भी था।

"अनजान सफ़र, शंकरगढ़ की तबाही, चौबीस घंटे का अल्टीमेटम।" झुंझलाये हुए दिग्विजय की निगाहें कर सुजाता पर ठहर गयीं- "आखिर क्या है ये सब? आधी रात को कहाँ चली गयी तुम्हारी बेटी?"

सभी लोग सुजाता को यूँ देखने लगे मानो उन्हें संस्कृति के जाने के विषय में सबकुछ मालूम हो जबकि वास्तविकता ये थी कि सुजाता को भी आभास नहीं था कि संस्कृति इस प्रकार कहीं चली जायेगी। सुजाता ही क्यों, खुद संस्कृति को भी कहाँ पता था कि पूर्वाभास से भयभीत होकर जब वह मरघट पहुँचेगी तो ऐसी परिस्थितियां निर्मित हो जायेंगी कि वह राजमहल नहीं लौट पायेगी। सुजाता मन ही मन ये अनुमान जरूर लगा रही थीं कि संस्कृति, साहिल के साथ उसी मनोचिकित्सक के पास गयी होगी, जो लोगों को उनके पूर्वजन्म की बातें याद दिलाता है। प्रत्यक्ष में उन्होंने कहा- "मुझे भी कुछ नहीं मालूम है। शायद मेरी
आँख लगने के बाद वह चुपके से बाहर निकल गयी होगी।"

"लेकिन उसे बाहर जाने की जरूरत पड़ी ही क्यों?"

"और फिर इस तरह आधी रात को वह कहाँ गयी होगी?"

"उसने ख़त में किस अल्टीमेटम और किस अनजान सफ़र की बात की है?"

उपर्युक्त सवाल पूछने वाले प्रत्येक सदस्य की निगाहों का केंद्रबिंदु सुजाता ही थीं। इसकी सबसे ठोस वजह ये थी कि पिछली रात वे ही संस्कृति के साथ थीं।

"इन सवालों को लेकर मैं भी उतने ही अँधेरे में हूँ, जितने अँधेरे में आप लोग हैं। मुझे संस्कृति से इस बेवकूफी की ज़रा भी आशा नहीं थी।" सुजाता ने सफाई पेश की।

"हम लोग भाभी पर नाहक ही गुस्सा हो रहे हैं भइया।" अरुणोदय ने सुजाता का पक्ष लिया- "हमें चौकीदारों से पूछताछ करनी चाहिए।"

"ये काम मैंने सबसे पहले ही किया था। उनका कहना है कि उन्होंने न तो संस्कृति को बाहर निकलते हुए देखा था और न ही गेट पर ख़त रखते हुए।"

"ऐसा कैसे हो सकता है? वह राजमहल से गायब तो हुई नहीं होगी। या तो हमारे चौकीदार काम को लेकर मुस्तैद नहीं हैं या फिर वे झूठ बोल रहे हैं।"

"ये सब बाद में सोचने वाली बातें हैं अरुणोदय। फिलहाल तो ये पता लगाना है कि वह बेवक़ूफ़ लड़की गयी कहाँ होगी?"

"खत में शहर का जिक्र है और हमारे यहाँ का नजदीकी शहर तो प्रयागराज ही है। जरूर वह प्रयागराज में ही होगी।"

"उसने चौबीस घंटे में लौट आने को कहा है।" सुजाता ने कहा।

"तो क्या तुम ये कहना चाहती हो कि हम खामोश रहें?" दिग्विजय ने सुजाता को जलती निगाहों से घूरा- "उसे आधी रात को घर छोड़ने की क्यों जरूरत पड़ी? उसे किस पिशाच ने चौबीस घंटे का अल्टीमेटम दिया और क्यों दिया? वह किन सवालों के जवाब तलाशने शहर गयी? क्या हम ये सब जानने की कोशिश न करें?" दिग्विजय के क्रोध के आगे सभी खामोश खड़े रह गये। वे संस्कृति के गायब होने को लेकर मन ही मन सुजाता पर झल्लाए हुए थे। इसलिए सुजाता की साधारण बातें भी उन्हें आंदोलित कर रही थीं। उन्होंने अरुणोदय के हाथ से संस्कृति का ख़त लिया और उसे सुजाता की आँखों के सामने लहराते हुए आगे कहा- "पढ़ो इसे। तुम्हारी बेटी ने लिखा है कि वह या तो शंकरगढ़ की तबाही का फरमान या फिर ब्रह्मराक्षस की मौत का रहस्य लेकर लौटेगी। क्या तुम्हारे जेहन में ये सवाल नहीं आ रहा है कि ब्रह्मराक्षस से उसकी मुलाक़ात कैसे हो गयी?"

"भाभी के कहने का मतलब है कि जब संस्कृति लौटेगी तो इन सवालों के जवाब खुद मिल जायेंगे।" अरुणोदय ने एक बार फिर सुजाता का पक्ष लिया।

"और अगर नहीं लौटी तो?" दिग्विजय का स्वर व्यग्र हो उठा- "क्या बीते दिनों इस राजमहल में जो हुआ वह साधारण था? कुलगुरु ने जो कहा है उसके अनुसार क्या ये नहीं लगता कि राजमहल पर कोई भारी अनिष्ट मंडरा रहा है? ऐसे में अगर..अगर वह किसी मुसीबत में पड़ गयी तो?"

"आप फ़िक्र मत कीजिये मैं प्रयागराज में मौजूद हमारे सभी सूत्रों के पास ये खबर भिजवा देता हूँ कि यदि संस्कृति उन्हें नजर आये तो उसे अपने पास रोके रखें और हमें सूचित करें। हम खुद भी उसकी तलाश में निकलते हैं।"

"हाँ!" दिग्विजय ने ठंडे स्वर में कहा। उन्हें आभास हुआ कि आवेशित होने से वे मुख्य उद्देश्य से भटक सकते हैं- "यही करना होगा।"

"आज कुलगुरु ने भी आने के लिए कहा था। वे हमें लेकर ग्रंथालय में जाने..।"

चंद्रोदय का कथन पूर्ण भी नहीं हुआ था कि एक नौकर ने सूचना दी- "कुलगुरु महाराज आये हैं।"

JJJ

ग्रंथालय राजमहल की पाँचवी मंजिल पर था।

कुलगुरु; दिग्विजय, अरुणोदय और चंद्रोदय को साथ लिए हुए ग्रंथालय के मुख्य द्वार पर पहुँचे। जनेऊ में पिरोई हुई चाबी को उन्होंने दरवाजे से लटक रहे मजबूत ताले में लगाया। राजमहल की पुरानी परंपरा के अनुसार खानदानी इतिहास को संरक्षित रखने की जिम्मेदारी पुरोहितों की हुआ करती थी। वंश की परम्पराओं के कट्टर पालक दिग्विजय की अगुवाई में ये परम्परा आज भी बरकरार थी। ग्रंथालय की एक चाबी कुलगुरु के पास होती थी और एक चाबी दिग्विजय के पास, ताकि नियमित रूप से ग्रंथालय की साफ़-सफाई होती रहे। ग्रंथालय में प्रवेश की अनुमति केवल पुरुषों को थी। दूसरे खानदान से आयी बहुओं या फिर शादी के बाद दूसरे खानदान में जाने वाली राजमहल की लड़कियों का ग्रंथालय में प्रवेश वर्जित था। साफ़-सफाई की जिम्मेदारी पुरुषों की थी, ये काम वे स्वयं करते थे।

ताला खोलने के बाद कुलगुरु ने भारी दरवाजे को भीतर की ओर धकेला। इस काम में तीनों भाइयों ने उनकी मदद की। ग्रंथालय में हवा आने के लिए सिवाय रोशनदान के और कोई साधन नहीं था। दिग्विजय ने दरवाजे के बगल में ही मौजूद स्विच बोर्ड की सहायता से कक्ष में प्रकाश करने के बाद दरवाजे को अंदर से बंद कर लिया।

कक्ष में ग्रंथों की आलमारी लाइब्रेरी की शक्ल में सजाई गयी थी, जहाँ राजमहल के इतिहास और देश की गौरवशाली संस्कृति से जुड़े दुर्लभ और
प्रमाणिक दस्तावेजों की भरमार थी। वहाँ पर व्याप्त शांति को महसूस करते हुए ऐसा लग रहा था जैसे सो रहे इतिहास से छेड़खानी करने से प्रकृति भी डर रही हो।

कुलगुरु एक विशेष आलमारी की ओर बढ़े। तीनों भाइयों ने भी उनका अनुसरण किया। कक्ष के सन्नाटे में अनगिनत पदचाप प्रतिध्वनित हो उठे।

“उन दिनों लगभग हर राजा के दरबार में लेखक का विशेष स्थान होता था, जिसका मुख्य काम राज्य के घटनाक्रमों का संकलन करना होता था।” कुलगुरु का गंभीर स्वर सन्नाटे में गूँजा- “हालाँकि हर राज्य का लेखक अपने राजा की उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर लिपिबध्द करता था लेकिन जब कोई दूसरा राजा उस राज्य पर आधिपत्य जमा लेता था तो उस राज्य के लेखक द्वारा संकलित ऐतिहासिक दस्तावेजों को जला देता था और अपने लेखक से उस राज्य का इतिहास नये सिरे से लिखवाता था, जिसमें पराजित शासक की घोर निन्दा और विजेता राजा का अतिशयोक्तिपूर्ण गुणगान होता था। इसीलिए आज भी ये कहा जाता है कि इतिहास हमेशा विजेताओं के गुण गाता है।”

कुलगुरु ने लाल कपड़े में लिपटा एक मोटा और भारी ग्रंथ आलमारी से निकालकर मेज पर रख दिया।

“इस हस्तलिखित ग्रंथ में शंकरगढ़ की सत्रहवीं शताब्दी का इतिहास है। माया और अभयानन्द के प्रकरण का उल्लेख इसी ग्रंथ में मिलेगा।”

कुलगुरु ने लाल कपड़े की पोटली खोली और उसमें मौजूद ग्रंथ को बाहर निकाला। वह ग्रंथ के रूप में भोजपत्रों का पुलिंदा था, जिसे चांदी के पतले तार से गूंथा गया था। तीनों भाई साँस रोके हुए इतिहास के सामने आने की प्रतीक्षा करने लगे। कई सौ भोजपत्रों को पलटने के बाद कुलगुरु की निगाहें उस भोजपत्र पर ठहरीं, जहाँ से उनके महत्व की घटना का उल्लेख शुरू होता था।

“हमारे राज्य की बागडोर राजा उदयभान सिंह के हाथों में है। भारतवर्ष में गोरों का आगमन हो चुका है। न केवल आगमन हुआ है, बल्कि यहाँ के राजाओं का आपसी कलह उनके उपनिवेशों की संख्या में भी आश्चर्यजनक वृद्धि कर रहा है।” भोजपत्र पर लिखे शब्द कुलगुरु के माध्यम से कक्ष के वातावरण में तैरने लगे- “महाराज उदयभान अपनी दूरदर्शिता से लुटेरे व्यापारियों की कूटनीती को भाँप चुके हैं। उपनिवेश की आंधी शंकरगढ़ तक पहुँचे, इससे पहले ही उन्होंने आस-पास के राज्यों को मैत्री-प्रस्ताव भेजकर उस विदेशी शक्ति के प्रति संगठित होने का संकेत भेज दिया है, जो आने वाले दिनों में पूरे भारतवर्ष को अपनी चंगुल में लेने के लिए प्रयत्नशील है किंतु आज मैं जिस प्रकरण को लिपिबद्ध करने बैठा हूँ, वह न तो राज्य की राजनीती से सम्बन्धित है और न ही महाराज उदयभान की
शौर्यगाथा से।

मैं जिन घटनाओं का उल्लेख करने जा रहा हूँ, वे इतनी भयावह हैं कि उनका वर्णन करने में मेरी लेखनी भी काँप रही है। हृदय किसी सूखे पत्ते की भांति थर्रा रहा है तथापि मैं उनका वर्णन करूँगा ताकि राजवंश की आने वाली पीढ़ियाँ आवश्यकता पड़ने पर ये जान सकें कि हमने किस प्रकार एक अमानवीय शक्ति का सामना किया था।

यह रक्तरंजित गाथा राज्य की राजकुमारी माया से शुरु हुई थी। माया, जिन्हें दरबार के कवियों ने सौन्दर्य-साम्राज्ञी के अलंकरण से विभूषित किया था, जिनकी विद्वता को देखकर गार्गी का स्मरण हो आता था और जिनके विषय में प्रचलित था कि उनकी मुस्कान मरणासन्न लोगों की साँसों में भी वृद्धि कर देती थी।

जिस अवस्था में सामान्य राजकुमारियाँ नृत्य और संगीत में रुचि लेती हैं, उस अवस्था में माया की रुचि चित्रकला और गणित में थी, विशेष रूप से वैदिक गणित में। उनके लिए महाराज ने वैदिक और आधुनिक गणित में पारंगत एक शिक्षक की नियुक्ति की थी। जिसका नाम द्विज था और जो राज्य के देवी-मंदिर के पुजारी का शिष्य था। मंदिर में संरक्षित दुर्लभ ग्रंथों की सहायता से उसने अत्यंत कम उम्र में ही गणित जैसे जटिल विषय में विशेषज्ञता अर्जित कर ली थी।

माया नित्य संध्याकाल को अध्ययन हेतु द्विज के पास जाया करती थी। कुछ दिनों तक ये क्रिया निर्बाध रूप से चलती रही, फिर एक दिन मनुष्य के भेष में छिपे एक नरपिशाच की दृष्टि उस पर पड़ी और शुरु हुई एक रक्तरंजित गाथा।”

JJJ

उस आदमी का कद छः फीट से भी अधिक था, जो एक खेत के किनारे पेट के बल लेटा हुआ किसी चौपाए पशु की भांति पानी पी रहा था। बरसात का मौसम होने के कारण खेत पानी से लबालब भरा हुआ था, जिसके बीच से गुजरती हुई एक कच्ची सड़क शंकरगढ़ की छोटी-छोटी बस्तियों से होते हुए दक्षिण के घने और रहस्यमयी जंगल में गुम हो गयी थी। आदमी उसी सड़क पर था।

सड़क की चौड़ाई इतनी पर्याप्त थी कि किचड़ न होने की स्थिति में वहाँ से शाही सवारी अपने लश्कर के साथ बिना किसी कठिनाई के गुजर सकती थी किंतु आज ये संभव नहीं था क्योंकि पिछले दिन हुए बारिश के कारण जगह-जगह की मिट्टी किचड़ में तब्दील हो चुकी थी और आकाश में तैरते बादल के टुकड़े कभी भी धरा पर अथाह जल उड़ेल देने की चेतावनी देते से लग रहे थे। पहियों के किचड़ में धंस जाने की फजीहत से बचने के लिए घोड़ागाड़ी को सड़क पर न उतारना ही तर्कसंगत था।

सड़क पर लेटकर पशु की शैली में पानी पी रहे आदमी की बड़ी-बड़ी आँखें
इस कदर लाल थीं कि उनमें लहू के कतरों के तैरने का आभास होता था। उसकी नाक लम्बी थी। दाढ़ी के बाल छाती तक लम्बे और मूछें काली तथा घनी थीं, जिन्हें रक्तरंजित देखकर अनुमान होता था कि उसने थोड़ी देर पहले ही किसी जानवर को कच्चा चबाया था; संभवतः चूहे या खरगोश को और अब प्यास बुझाने के लिए यहाँ लेटा हुआ था। उसका चेहरा स्याह और होंठ रक्तिम थे। जिस्म पर धूल-धूसरित काला लबादा था। अगर वह भयानक मखलूक हँसता तो उसे बेशक नरपिशाच समझ लिया जाता।

“मनुष्य जैसा दिखने वाला ये पशु कौन है?”

वातावरण में किसी नारी-स्वर के गूँजते ही उस विकृत पुरुष ने गिरगिट की मानिंद आवाज़ की दिशा में गर्दन उठायी। थोड़ी ही दूर पर एक खूबसूरत युवती अपनी दो सखियों और चार अंगरक्षक सैनिकों के साथ खड़ी थी। युवती; जो संभवत: इस क्षेत्र की राजकुमारी की हैसियत रखती थी, आज के खुशनुमा मौसम का लुफ्त उठाने हेतु पैदल ही गंतव्य के लिए निकली थी। आदमी ने ज्यों ही राजकुमारी की दिशा में देखा, उसका विकृत स्वरूप राजकुमारी को नजर आ गया। खून पुते दाढ़ी के काले बाल, डरावनी आँखें और खेत में भरा पानी पीने का उसका ढंग देख राजकुमारी के बदन में सनसनी भर गयी।

"ये अभयानन्द है राजकुमारी माया।" एक अंगरक्षक ने माया के कान में फुसफुसाते हुए कहा- "राज्य के लोग इसे पागल कहते हैं। ये वहशी भी है। इसके बारे में प्रचलित है कि यह भूख लगने पर चूहे, खरगोश और बिल्ली जैसे छोटे जानवरों को भी नहीं छोड़ता। उन्हें भी पकड़कर कच्चा चबा जाता है।"

उसका परिचय पाकर माया के चेहरे पर उसके प्रति घृणा नजर आने लगी।

"मार्ग से हट।" एक सैनिक ने अभयानन्द को लक्ष्य करके घृणित स्वर में कहा क्योंकि उसके लेटे होने के कारण उसका छः फुट का कद आधे से भी अधिक मार्ग को अवरुध्द किया हुआ था।

वह एक ही झटके में जमीन से उठकर खड़ा हो गया। उसकी निगाहें इस कदर माया के चेहरे पर ठहर गयीं, मानो उसे उसके अलावा कोई और नजर ही न आ रहा हो। माया को देखने के उसके अंदाज पर सैनिकों का क्रोध उबल पड़ा।

"दृष्टि नीचे रख नीच। क्या जानता नहीं कि ये राजकुमारी माया हैं?"

अभयानन्द पर चेतावनी का कोई असर नहीं हुआ। आँखों में वासना की धधकती लपटें लिए हुए वह सम्मोहित चाल से माया की ओर बढ़ने लगा।

"ठहर जा।"

अभयानन्द के इरादे भाँपकर माया के चारों अंगरक्षक भाले की नोक उसकी ओर रखते हुए आक्रमण की मुद्रा में आ गये। माया भी रोमांचित हो उठी। जीवित पशुओं को खाने वाले उस देव सरीखे प्राणी को अनवरत आगे बढ़ता देख वह घृणित स्वर में चिल्लाई- "इस पशु को भगाओ यहाँ से।"

एक सैनिक अभयानन्द को डराने के ध्येय से आगे बढ़ा किंतु उसके भाले की नोक उसे स्पर्श कर पाती इससे पहले ही अभयानन्द ने भाले को थाम लिया। सैनिक को प्रतिक्रिया का अवसर न देते हुए उसने दाहिने पैर का शक्तिशाली प्रहार उसकी छाती पर जड़ दिया। अगले ही क्षण उस विकृत पुरुष की शारीरिक शक्ति का नमूना सबके सामने था। प्रहार को उद्यत हुआ वह सैनिक हवा में हैरतअंगेज ऊँचाई तक उछलते हुए पानी से भरे खेत में जा गिरा।

शेष तीनों सैनिक, माया और उसकी दोनों सखियाँ स्तब्ध रह गयीं। माया के बदन में भय की तरंगें दौड़ गयीं। उसे लगा कि उस दानव से मुकाबला करने के लिए केवल चार सैनिक पर्याप्त नहीं थे।

माया के इस संदेह को विश्वास में बदलते देर नहीं लगी क्योंकि उस पर प्रहार करने हेतु एक साथ आगे बढ़े तीनों सैनिकों का भी वही हाल हुआ, जो पहले का हुआ था। उनमें से एक तो चट्टान से सिर टकराकर अपनी चेतना से ही हाथ धो बैठा।

"इ...इसके...इ...इरादे नेक नहीं हैं राजकुमारी जी।" माया की दोनों सखियां खौफ से हकला उठीं।

माया ने मुँह की खाए सैनिकों की ओर देखा। एक होश गंवाकर लुढ़का पड़ा था और शेष दो काफी दूर जाकर गिरे थे तथापि उठकर दौड़े चले आ रहे थे। पहला प्रहार करने वाला भी किचड़ से लथपथ होकर पानी में दौड़ लगा रहा था। फिर भी इतना तय था कि वे अभयानन्द को माया का स्पर्श करने से नहीं रोक सकते थे क्योंकि अब तक वह माया के बेहद करीब आ चुका था; इतने करीब कि हाथ बढ़ाकर उसे छू सकता था।

"दूर रह जानवर!"

माया ने उसे दुत्कारते हुए पीछे हटने की कोशिश की लेकिन अभयानन्द ने हाथ बढ़ाकर उसकी कलाई पकड़ ली। माया को लगा जैसे कलाई की हड्डियाँ चटक रही हों। स्वयं को छुड़ाने के उसके सारे प्रयत्न असफल रहे। उसकी दोनों सखियां भय के कारण सूखे पत्ते की तरह कांपने लगी थीं।

"सुन्दर, अति सुन्दर।" उस विकृत पुरुष ने पहली दफा मुँह खोला और माया के अंग-प्रत्यंग पर कामुक दृष्टि डालते हुए इस कदर जीभ लपलपाया, जैसे सदियों से नारी-जिस्म का भूखा हो- "भैरवी बनने की सभी योग्यताओं पर खरी उतरने वाली एक अपूर्व सुन्दरी है तू। तुझ जैसे अक्षत यौवना की ही तो तलाश थी मुझे। तू बनेगी मेरी भैरवी...बनेगी न...?"

"नराधम!" माया ने दांत पीसते हुए लात का एक भीषण प्रहार अभयानन्द की जांघ पर किया। प्रहार तेज था। अभयानन्द का संतुलन बिगड़ा और माया की कलाई पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गयी। फलस्वरूप माया ने एक साधारण झटके के साथ अपनी कलाई छुड़ा ली।

"अपने दुस्साहस से आज तूने शंकरगढ़ के लोगों के बीच फैले इस अफवाह को सही साबित कर दिया है कि तू कोई पागल नहीं बल्कि मार्ग से भटका हुआ एक वहशी तांत्रिक है, जो दक्षिण के भयानक जंगल में रहने वाले कापालिकों के साथ पिशाच की साधना करता है।" क्रोध और घबराहट के सम्मिलित प्रभाव से माया बुरी तरह हाँफ रही थी- "तुझे शायद भान भी नहीं है कि आज सरेराह तूने किसकी कलाई पर हाथ डाला है। तू कल का सूर्योदय नहीं देख पाएगा नीच।"

अब तक तीनों सैनिक भी समीप पहुँच चुके थे। अभयानन्द का ध्यान माया पर पाकर एक सैनिक ने भाले की नोक को निर्दयतापूर्वक उसकी पिंडली में चुभो दिया। अभयानन्द दर्द से कराह उठा। सैनिकों ने उसे विचलित होता देख संभलने का मौक़ा नहीं दिया। संयुक्त प्रयासों से उसे धरातल पर गिराने के बाद उन्होंने अपने-अपने भाले की नोक को उसकी छाती पर टिका दिया और माया की ओर देखने लगे, ये जानने के लिए कि अब उसके साथ क्या किया जाए। अभयानन्द के नेत्र अब भी माया पर ठहरे हुए थे। उसके चेहरे पर शिकन का कोई भाव नहीं था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह माया को ये जताना चाहता हो कि उसके सैनिकों की सफलता केवल तब तक के लिए है, जब तक उसके नेत्र उस पर ठहरे हुए हैं।

अभयानन्द पर सैनिकों का नियंत्रण देख माया और उसकी सखियों ने चैन की साँस ली।

"इसका क्या करें राजकुमारी?" एक सैनिक ने पूछा।

"हमें द्विज की कक्षा के लिए विलम्ब हो रहा है। तुम तीनों में से एक अचेत सैनिक को लेकर राजमहल जाओ और शेष दो हमारे साथ चलो।" माया ने एक घृणित दृष्टि अभयानन्द पर डाली और आगे कहा- "इस नराधम को यहीं छोड़ दो। हम इसकी शिकायत पिताश्री से करेंगे।"

सैनिकों ने एक-दूसरे की ओर देखा। प्रत्येक ने एक दूसरे की आँखों में यही सवाल पाया कि भाला हटाने के बाद अभयानन्द पलटवार तो नहीं करेगा? आपस में कुछ क्षणों तक मूक वार्तालाप करने के पश्चात सैनिकों ने धीरे-धीरे भाला हटाया।

अभयानन्द की ओर से कोई हरकत नहीं हुई। वह पूर्व की भांति धरातल पर पड़ा रहा। माया के निर्देशानुसार एक सैनिक अचेत पड़े सैनिक की ओर बढ़ा।

"किंतु राजकुमारी जी यदि इसने हमारे एक सैनिक को अकेले पाकर.....।"

"भाला मुझे दो।" माया ने उस सैनिक की आशंका भाँपकर उसकी बात ख़त्म होने से पहले ही कहा।

सैनिक ने भाला उसकी ओर बढ़ा दिया। इसके बाद माया ने जो कुछ किया उसकी अपेक्षा एक कोमलांगी स्त्री से कभी नहीं की जा सकती थी। उसने भाले को उठने का प्रयत्न कर रहे अभयानन्द की दूसरी पिंडली में चुभो दिया।

"आह!" थोड़ी देर पहले जिसने एक शक्तिशाली दानव जैसा व्यवहार किया था, वही अभयानन्द गहरी पीड़ा से डकार उठा। भाले की नोक उसके खून से सन गयी।

"निर्भय रहो। अब यह अपने पाँव पर खड़ा नहीं हो पायेगा।"

आशंकित सैनिक अब आश्वस्त नजर आने लगे।

JJJ

उसका नाम द्विज था।

अवस्था पच्चीस वर्ष थी। कद मध्यम, रंगत हल्की सांवली थी। ज्ञान की आभा से उसका मुखमंडल तेजस्वी नजर आता था। तीखे नैन-नक्श और सांवले वर्ण के कारण उसके व्यक्तिव से गंभीरता परिलक्षित होती थी। वह शंकरगढ़ के पहाड़ों के मध्य स्थित देवी-मंदिर के पुजारी द्वारा बचपन में गोद लिया गया था और राजकीय अनुदान से चलने वाली पाठशाला में गणित का शिक्षक था। मंदिर ही उसका निवास स्थान था। शिक्षण-कार्य से निवृत्त होने के पश्चात वह शेष दिनचर्या पितातुल्य पुजारी की सेवा-सुश्रुषा में व्यतीत करता था। साथ ही मंदिर में संरक्षित, संस्कृत में लिखे गये गणित के दुर्लभ ग्रंथों के अध्ययन से अपने ज्ञान का भी विस्तार करता था।

उसकी विद्वता की गूँज राजदरबार तक थी और प्रतिष्ठा इस कदर बढ़ी-चढ़ी थी कि स्वयं राजा उदयभान गणित में विशेष रुचि रखने वाली राजकुमारी माया को ज्ञानार्जन हेतु उसके पास देवी-मंदिर में भेजते थे। अध्ययन के पश्चात संध्या आरती में शामिल होने के बाद राजमहल को लौटना, यही माया का नित्य कर्म था।

सवितानारायण अपनी सुनहरी किरणों को समेटकर पहाड़ों के पीछे जा रहे थे।

स्वर्णरश्मियों से पर्वतों के शिखर चमक रहे थे। द्विज ने मंदिर के गर्भगृह से थोड़ी दूर पर बने आहाते में आसन लगाया हुआ था। उसके सम्मुख बैठी माया किसी गणना में व्यस्त थी। अंगरक्षक सैनिक मंदिर के प्रांगण में टहल रहे थे, जबकि दोनों सखियाँ प्रांगण में फुदक रहे खरगोशों के पीछे दौड़ लगा रही थीं। पुजारी, मंदिर के सेवकों के साथ संध्या आरती की तैयारियों में जुटे हुए थे।

"तुम्हारे गणना की विधि गलत है माया।" द्विज ने माया के लिखे हुए
समीकरणों पर दृष्टिपात करते हुए कहा।

द्विज की टिप्पणी पर माया का कलम ठहर गया। उसने द्विज की ओर देखा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे उसे माया की ओर से इतनी गंभीर चूक की आशा नहीं थी।

"मैंने तुम्हें कल ही द्वितीय कोटी के रैखिक अवकल समीकरणों के हल की प्रक्रिया सिखाई थी किंतु तुम्हारी इस गंभीर चूक से अभ्यास की कमी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। क्या तुम्हें ये भी स्मरण नहीं रहा कि इस श्रेणी के समीकरणों को हल करने के लिए हम सर्वप्रथम दिए हुए समीकरण की तुलना मानक रूप से कराते हैं तत्पश्चात द्वितीय और प्रथम कोटी के अवकलजों का गुणांक ज्ञात करते हैं?" द्विज ने नाराज भाव से कहा और माया का पत्रक अपनी ओर खींच लिया।

"ऐसा नहीं है द्विज।" माया ने सफाई दी। उसके और द्विज की आयु में बहुत कम अंतर था इसलिए माया 'आप' संबोधन लगाकर उसे उसके नाम से ही पुकारती थी। उसने आगे कहा- "कल आपके दिए हुए प्रश्नों पर हमने पर्याप्त अभ्यास किया है। बस ध्यान की कमी के कारण यहाँ छोटी सी चूक हो गयी। हम गुणांकों का आंकलन किये बिना ही पूरक फलन का मान ज्ञात करने लगे थे।"

"एकाग्रता अर्जित करो माया। ये अध्याय प्रारम्भ करने से पूर्व ही हमने तुम्हें चेतावनी दी थी कि ये गणित की एक ऐसी शाखा है, जो कालांतर में प्रवर्धित होकर चिकित्सा शास्त्र में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन करेगी। इक्कीसवीं सदी तक ये अवकल समीकरण मानव-शरीर की कई जैविक क्रियाओं को प्रदर्शित करने का पर्याय बन जायेंगे।"

"हम क्षमाप्रार्थी हैं द्विज।" माया ने अपराध बोध से ग्रस्त होकर कहा- "हम पूरी प्रक्रिया को नए सिरे से आरंभ करते हैं।"

माया ने एक नया पत्रक लिया और कलम को दवात में डुबोकर उसी प्रश्न को फिर से हल करने की तैयारी करने लगी।

"क्या तुम परेशान हो माया?" द्विज ने आँखों में संदेह लिए हुए माया को देखा।

"ज..जी...?" द्विज द्वारा आंतरिक भावों को भाँप लिए जाने पर वह हकला उठी।

"हाँ, क्योंकि तुमने कलम का विपरीत सिरा दवात में डुबोया है; वह सिरा नहीं, जो पत्रक पर शब्द उगलता है।"

माया की जिह्वा खुद-ब-खुद दांतों तले दब गयी। उसकी मनोदशा अब पूरी तरह द्विज के सम्मुख उजागर हो चुकी थी। ये सच था कि वर्तमान में उसका जेहन पूरी तरह से अभयानन्द के विचारों में खोया हुआ था। उसके नेत्रों के सामने
उसका भयानक मुखमंडल तैर रहा था और कानों में उसका ये कथन गूँज रहा था-

'भैरवी बनने की सभी योग्यताओं पर खरी उतरने वाली एक अपूर्व सुन्दरी है तू। तुझ जैसी अक्षत यौवना की ही तो तलाश थी मुझे। तू बनेगी मेरी भैरवी... बनेगी न...?'

"क्या समस्या है माया?" द्विज ने पूछा।

"क..कुछ नहीं...।" माया ने वास्तविकता को छुपाने का प्रयत्न किया- "बस थोड़ी अस्वस्थ्यता है। इसलिए हम अपना चित्त एकाग्र नहीं रख पा रहे हैं।"

द्विज ने प्रांगण पर एक दृष्टि डाली। वहाँ पर माया के केवल दो अंगरक्षक थे।

"आज तुम्हारे साथ केवल दो अंगरक्षक क्यों?"

"व...वह...।" माया को सूझा ही नहीं कि क्या उत्तर दे।

"मुझे बताओ माया कि क्या बात है? इससे पूर्व मैंने तुम्हें इतना व्यग्र कभी नहीं देखा कि गणना के दौरान मूर्खतापूर्ण भूल कर दो अथवा दवात में कलम का विपरीत सिरा डुबो दो।"

द्विज की बातचीत का लहजा बदल चुका था। अब उसकी भाषा एक शिक्षक की नहीं बल्कि एक मित्र की थी।

"आज हमें मार्ग में वही अर्द्धविक्षिप्त प्राणी मिला था, जिसके विषय में राज्य के लोग कहते हैं कि वह एक वहशी कापालिक है।"

'कौन..? अभयानन्द?" रोमांच से द्विज के भी रोंगटे खड़े हो गये।

"हाँ।"

"तो क्या उसने तुम्हारा मार्ग रोका था?"

"हाँ, और कलाई भी पकड़ी थी।"

द्विज की आँखों में खून उतर आया। उसके नथूने फूलने-पिचकने लगे। उसे स्वयं नहीं ज्ञात था कि माया के साथ हुई अभद्रता पर उसे क्यों क्रोध आ रहा है।

"क्या...क्या कहा उसने?"

"उसके कहने का मंतव्य था कि वह मुझ जैसी अक्षत-यौवना को अपनी भैरवी बनाकर उन तंत्र-साधानाओं को पूर्ण करेगा, जिनमें साधक के साथ किसी भैरवी का होना अनिवार्य होता है।"

द्विज की साँसों की गति तीव्र हो उठी। एकाग्रता बनाए रखने के लिए वह जिन विचारों को नियंत्रित करने का उपदेश माया को दे रहा था, उन्हीं विचारों पर से उसका स्वयं का लगाम छूट गया। उसे स्मरण ही नहीं रहा कि इस क्षण वह माया के सम्मुख उसके शिक्षक की भूमिका में है।

"उस पशु का इतना दुस्साहस?" द्विज दांत पीस उठा। उसका नया रूप देखकर माया भी सहम गयी।

"आप क्रोधित न हों द्विज। हमने पिताश्री से उसकी शिकायत करने का निर्णय लिया है। जब वह एक राजकुमारी को सरेराह अपमानित कर सकता है तो राज्य की सामान्य लड़कियाँ भी उससे सुरक्षित नहीं होंगी।"

द्विज ने कुछ नहीं कहा। उसने कुछ क्षणों तक खुद को फिर से सामान्य रुप में लाने की चेष्टा की लेकिन अंततः इस कार्य में असफल होकर वह आसन से उठ खडा हुआ।

"आज की कक्षा मैं यहीं पर समाप्त करता हूँ। आरती का प्रसाद ग्रहण करने के बाद राजमहल को लौट जाना।"

माया स्तब्ध रह गयी। आज उसे अपने शिक्षक का नया रुप देखने को मिला था।

JJJ

"एक...दो..तीन..चार........अट्ठारह, उन्नीस....।" बिरजू ने अपनी बकरियों को गिना। संख्या के उन्नीस पर ठहरते ही वह परेशान हो उठा।

"एक बकरी कहाँ गयी?"

उसने बकरियों को कई दफे गिना लेकिन संख्या उन्नीस से आगे न खिसक सकी। हारकर उसने इधर-उधर देखा। घास के उस विशाल मैदान में दूर-दूर तक कोई पशु-पक्षी नहीं नजर आ रहे थे। दिवाकर प्रस्थान कर चुके थे और अँधेरा तेजी से घिरता जा रहा था। बिरजू ने दूर पर्वत पर नजर आ रहे देवी-मंदिर की ओर देखा और असहाय भाव से प्रार्थना की- "हे माँ जगदम्बा! मेरी एक बकरी कहाँ गयी? अब तो अँधेरा भी हो रहा है। मैं कहाँ ढूंढूंगा उसे?"

शेष उन्नीस बकरियाँ, जिनमें मेमने भी थे; घास चरना छोड़कर बिरजू के इर्द-गिर्द खड़ी हो गयी थीं। ऐसा लग रहा था जैसे उन मासूम जीवों को भी अपने एक साथी के बिछड़ने का आभास हो चुका था। बिरजू ने बकरियों पर नजर दौड़ाई। उसे काले चकत्तों वाली एक विशेष बकरी नहीं नजर आयी।

"झुण्ड से बिछड़ने वाली तो लाली है।"

लाली के गायब होने की पुष्टि होते ही बिरजू ने असहाय भाव से एक बार फिर मंदिर की ओर देखा। शायद किसी दैवीय चमत्कार की आस उसके मन में जाग रही थी। दरअसल लाली उसकी उस बेटी का नाम था, जो छः महीने पहले किसी घातक बीमारी के कारण चल बसी थी। लाली का जन्म ठीक उसी दिन हुआ था, इसलिए बिरजू ने उसे अपनी बेटी का नया जन्म मानते हुए उसका नाम लाली रख दिया था। वह उस बकरी पर भी उतना ही प्यार लुटाता था, जितना अपनी बेटी पर लुटाया करता था। लाली को बकरियों की भीड़ में खोने से बचाने के लिए वह उसकी पूंछ में लाल फीता बांधता था। ये वही फीता था, जिससे उसकी बेटी अपने बालों को बांधती थी। बकरियों के झुण्ड में लाल फीता नजर न आता देख वह हताश होने लगा।

"लाली को ढूँढ रहे हो बिरजू?"

अपने पीछे नया स्वर सुनते ही बिरजू चौंक पड़ा, पलटा।

वहाँ जो आदमी खड़ा था, उसे देखकर उसकी रुह कांपती थी। वह रोज सुबह भगवती से प्रार्थना करता था कि दिन भर उस इंसान से उसका सामना न हो। उसे देखते ही बकरियाँ अप्रत्याशित रुप से मिमियाते हुए इधर-उधर भागने लगीं। मानो उसकी मौजूदगी मात्र से भयभीत हो उठी हों।

उस इंसान का नाम अभयानन्द था, जिसकी पिंडलियों से बह रहे खून के कारण उसका पैर पंजों तक लाल हो गया था। उसकी चाल में हल्की सी लड़खड़ाहट और होठों पर पैशाचिक मुस्कान थी। किसी टीले की ओट से अचानक निकलकर वह बिरजू को यूँ घूरने लगा था, मानो उसका खून पीने की नियत रखता हो। बिरजू तो पहले ही उससे खौफ खाता था, उसका ये रुप देखते ही उसके प्राण सूख गये।

"ह..ह..हाँ!" उसने हकलाते हुए उत्तर दिया।

"हमने लाली को उस टीले के पीछे देखा है।" अभयानन्द ने दूर नजर आ रहे एक टीले की ओर संकेत करते हुए कहा।

बिरजू ने उसकी बतायी हुई दिशा में देखा और भाँप गया कि वह झूठ बोल रहा था क्योंकि जिस टीले की ओर उसका संकेत था, उस ओर वह बकरियों को लेकर कभी जाता ही नहीं था। उसने तेजी से घिर रहे अँधेरे का बहाना बनाते हुए कहा- "अँधेरा...अँधेरा घिर रहा है। मैं लाली को बाद में ढूँढ लूँगा।"

कहने के बाद वह तेजी से मुड़ा। बकरियों में भी भगदड़ मची हुई थी लेकिन बिरजू को अब बकरियों से ज्यादा खुद की चिंता सताने लगी थी। वह जल्दी से जल्दी उस मनहूस इंसान से पीछा छुड़ा लेने की गरज से कदम आगे बढ़ा ही रहा था कि अचानक कंधे पर अभयानन्द का पंजा महसूस करके सहम गया। उसने बगैर पलटे हुए ही निगाहें घुमाकर कंधे पर मौजूद पिशाच का पंजा देखा। अभयानन्द के लम्बे नाखूनों पर ताजा खून लगा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने किसी जानवर को अपने नाखूनों से चीर-फाड़ दिया हो।

“हमने कहा कि तुम्हारी लाली उस टीले के पीछे है।” इस बार उसका लहजा भयानक था।

बिरजू ने महसूस किया कि उसके न चाहते हुए भी पिशाच उसे वहाँ जरूर ले जाएगा। टीले के पीछे लाली के होने का उसका दावा तो बस बहाना था। वास्तव में वह उसे उस टीले के पीछे ही ले जाना चाहता था। उसका रहस्यमय उद्देश्य भाँपकर बिरजू किसी छोटे बच्चे की भांति भयभीत हो उठा। मन ही मन भगवती का स्मरण करते हुए उसकी ओर मुड़ा और फिर उसकी रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गयी। अभयानन्द की डरावनी आँखों में खून उतर रहा था।

“अपनी लाली को ढूंढे बिना ही यहाँ से चले जाओगे बिरजू?”

“म..मुझे..मुझे जाने दो..जाने दो मुझे.. ।” बिरजू लगभग रो पड़ा- “मैंने..मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा? मेरी...मेरी बीवी मेरा रास्ता देख रही होगी। म..मैं..मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ। अब मैं बकरियाँ चराने इस ओर नहीं आऊँगा। मैं...मैं समझ गया हूँ कि यहाँ तुम रहते हो।”

अभयानन्द भयानक अंदाज में मुस्कुराता रहा। उसने बिरजू के कंधे से पंजा हटाकर उसकी कलाई थाम ली।

“नहीं..छोड़ दो मुझे...छोड़ो मुझे। मैं तो गरीब आदमी हूँ..। मैं यहाँ केवल बकरियाँ चराने आया था। छोड़ दो मुझे...छोड़ दो मुझे..।”

बिरजू घिघिया उठा। उसकी चीत्कार से आकाश का कलेजा काँप गया। बकरियाँ मालिक की दुर्दशा देखने के लिए अब वहाँ नहीं थीं। वे बहुत दूर जा चुकी थीं। उन्हें घर का रास्ता मालूम था इसलिए वे उसी दिशा में भागी जा रही थीं।

अभयानन्द, बिरजू को घसीटते हुए टीले की ओर ले जाने लगा। बिरजू ने अपनी कलाई छुड़ाने की कोशिश की लेकिन मरियल सा वह आदमी इस काम में सफल न हो सका। जब तक अभयानन्द उसे लेकर टीले के पीछे पहुँचा, तब तक चीखते-चीखते उसका गला बैठ चुका था।

अभयानन्द ने झूठ नहीं कहा था। उस टीले के पीछे लाली थी, लेकिन जीवित नहीं थी। उसे किसी ने चीर-फाड़ दिया था। जमीन पर जगह-जगह उसके गोश्त बिखरे हुए थे। उसकी पूंछ पर बंधा लाल फीता सही-सलामत तो था लेकिन खून से लथपथ हो चुका था।

“ला..ली..!”

अभयानन्द ने बिरजू की कलाई छोड़ दी। वह लाली के जिस्म के टुकड़ों की ओर दौड़ा।

“लाली....!”

लाली हमेशा-हमेशा के लिए खामोश हो चुकी थी। पिशाच ने उसके गोश्त से अपनी भूख मिटा ली थी।

JJJ

पूर्णिमा की रात।

ये शंकरगढ़ का रहस्यमयी जंगल था, जिसका कोना-कोना उजली चाँदनी से सराबोर था। वातावरण में भेड़ियों का समवेत रुदन व्याप्त था। अभयानन्द, बिरजू को कंधे पर लादे हुए तेजी से पगडण्डी पर आगे बढ़ रहा था। बिरजू होश में था लेकिन अभयानन्द ने किसी जंगली लता से उसके हाथ-पैर बांधकर, मुँह में कपड़ा ठूंसकर उसे इस लायक नहीं छोड़ा था कि वह कोई हरकत कर सके या आवाज़ निकाल सके।

चन्द्रमा की रोशनी में अभयानन्द का चेहरा अत्यंत विकृत नजर आ रहा था। वह एक ऐसा पिशाच था, जो ईश्वर की किसी गलती से मनुष्य योनी में जन्म ले बैठा था। उसके विषय में फैली ये धारणा मिथ्या नहीं थी कि भूख से सताए जाने पर वह जन्तुओं का माँस खाता था और तृष्णा मिटाने के लिए उनका खून पीता था।

अभयानन्द बिरजू को कंधे पर लादे हुए दूर नजर आ रही पीली रोशनी की ओर अग्रसर था, जहाँ से विचित्र मंत्रों की ध्वनि आ रही थी। जैसे-जैसे उस पीली रोशनी और उसके बीच का फासला कम होता गया, वैसे-वैसे विचित्र मंत्रों की ध्वनि भी स्पष्ट होती गयी। अंततः अभयानन्द उपर्युक्त स्थान पर पहुँचकर थम गया।

वहाँ का दृश्य भयानक था।

वह पेड़ों और झाड़ियों की झुरमुटों को साफ़ करके बनाया गया लगभग चार हाथ की त्रिज्या का एक वृत्ताकार मैदान था, जिसके केंद्र पर ऊँचा अलाव जल रहा था। इसी अलाव की ज्वाला दूर से नजर आ रही थी। उस वृत्ताकार मैदान की परिधि पर सात ऊँचे कद के काले भेड़िये बैठे हुए थे। लम्बी जीभ बाहर लटकाए हुए उन भेड़ियों की मुद्रा ऐसी थी, जैसे वे किसी अनुष्ठान का हिस्सा हों। अलाव को घेर कर दर्जन भर से भी अधिक कापालिक बैठे हुए थे। प्रत्येक के कमर में काले रंग की कोपीन थी। इस कोपीन के अलावा उनके जिस्म पर कपड़े के नाम पर कुछ नहीं था। वे तेज स्वर में कोई मंत्रोच्चार कर रहे थे, जो दूर तक गूँज रहा था। वे इस कदर झूम रहे थे, जैसे उनकी काया पर किसी और का अधिकार हो।

अलाव की धधकती ज्वाला का पीला प्रकाश एक विशालकाय प्रतिमा पर पड़ रहा था, जो इंसान तथा भेड़िये के मिले-जुले रूप वाले किसी प्राणी की थी। उसके दाहिने हाथ में कटार और बायें हाथ में एक नरमुंड था। संहार की मुद्रा वाले उस नरभेड़िये की प्रतिमा मानो अलाव की रोशनी में सजीव हो उठी थी। उसके कदमों में अत्यंत जर्जर शरीर वाला एक वृद्ध कापालिक निश्चल पड़ा हुआ था। उसकी भेड़िये जैसी आँखें आकाश की छाती पर अठखेलियाँ कर रहे पूनम के चाँद पर ठहरी हुई थीं। उसके जिस्म में लेशमात्र भी हरकत नहीं थी। ऐसा लगता था, जैसे वह प्राण त्याग चुका हो। प्रतिमा के सामने एक बलिवेदी बनी हुई थी, जिस पर ताजा नींबू और एक नया बलिकुठार रखा हुआ था।

अभयानन्द के कदमों की आहट भाँपते ही काला कोपीन धारण किये हुए कापालिकों ने झूमना बंद कर दिया। उन्होंने आँखें खोलीं। वृत्ताकार दायरे की परिधि पर बैठे भेड़िए चन्द्रमा की ओर मुँह उठाकर एक साथ रोने लगे। शायद ये अभयानन्द का स्वागत करने का उनका अपना तरीका था।

अलाव की रोशनी में अभ्यानन्द नामधारी उस पिशाच का चेहरा भयानक हो उठा। उसने बिरजू को अलाव के पास निर्दयतापूर्वक पटक दिया। बिरजू मात्र कसमसा कर रह गया, चीख न सका। बलिवेदी पर दृष्टि पड़ते ही उसकी निगाहों में खौफ नाच उठा। सभी कापालिक अपने स्थान से उठ खड़े हो गए मगर अभयानन्द किसी का अभिवादन किये बगैर नरभेड़िये की प्रतिमा के सम्मुख खड़ा हो गया।

“आपका स्वरूप धारण करने का एकमात्र अधिकारी अभयानन्द आज अपनी साधना का अंतिम चरण पूर्ण करेगा। इस पूर्णिमा की धवल चाँदनी आज एक मानव-रक्त से रक्तिम हो उठेगी। आज महातांत्रिक अघोरा अपना भार हमें सौंप देंगे। चन्द्रमा पर ठहरे इनके नेत्रों के बंद होते ही हमारे लिए असीमित शक्तियों का द्वार खुल जाएगा। जय श्मशानेश्वर।”

अभयानन्द ने अपनी दोनों बाँहें फैलाकर भीषण अट्टहास किया। उसकी विकृत मुखाकृति हर गुजरते क्षण के साथ विकृत होती चली गयी।

“अनुष्ठान की तैयारी करो।” उसने कापालिकों को आदेश दिया।

चार कापालिक आगे बढ़े। उन्होंने भेड़िये की आँखों वाले वृद्ध कापालिक को उठाया और बलिवेदी के निकट धरातल पर लिटा दिया। अभयानन्द ने अपनी हथेली फैलाई। एक कापालिक ने उसका मंतव्य समझकर हथेली पर चमचमाते फल वाला चाकू रख दिया। अभयानन्द ने उस चाकू से अपने अंगूठे पर एक चीरा लगाया और रक्त की पतली धारा से अघोरा के निश्चल पड़े जिस्म के चारों ओर गोल घेरा खींच दिया।

“बिरजू के बंधन खोल दो। उसे महान अघोरा की काया के समीप लिटा दो। उसका स्वरयंत्र मंत्र-बाधित कर दो। काया-संयुग्मन की तैयारी करो।”

आदेशों की श्रृंखला समाप्त करने के बाद अभयानन्द सातों भेड़ियों की ओर मुड़ा।

“मिलेगा।” उसने मानो भेड़ियों को सांत्वना दी- “आज तुम्हें मानव-रक्त मिलेगा। आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे पसंदीदा पेय का प्रबन्ध किया है।”

“न....न....नहीं। जाने दो मुझे....मुझे जाने दो। मैंने तुम लोगों का क्या बिगाड़ा है।”

“उसका स्वरयंत्र मंत्र-बाधित करो मूर्खों।” बिरजू का दहशत भरा स्वर सुनते ही अभयानन्द की आँखें जल उठीं। वह कापालिकों के ऊपर चिल्लाया।

अगले ही क्षण बिरजू का गला अवरुद्ध हो गया। अब वह हलक फाड़कर चीखने का उपक्रम करता नजर आ रहा था लेकिन चीख नहीं पा रहा था। अभयानन्द होठों भयानक मुस्कान लिए हुए उसके निकट बैठ गया।

“धन्यवाद बिरजू। तुम्हारा जीवन यहीं तक था। तुम्हारी नियति में यही लिखा था कि तुम्हारा रक्त श्मशानेश्वर के स्वरुप के प्रतीक इन भेड़ियों की तृष्णा मिटाए और तुम्हारे अंग उनकी क्षुधा की तृप्ति का पर्याय बनें।”

बिरजू ने चीखने का उपक्रम करना बंद दिया और इसी के साथ जीवन का मौत के साथ संघर्ष भी थम गया। ऐसा लगा जैसे एक असहाय ने इसलिए नियति के आगे घुटने टेक दिए क्योंकि उसकी प्रार्थना उसके ईष्ट तक नहीं पहुँच पाई थी।

“काया-संयुग्मन की प्रक्रिया पूर्ण की जाए।” अभयानन्द ने आदेश दिया।

एक कापालिक आगे बढ़ा। उसने बलिवेदी पर रखा बलिकुठार उठाया और अभयानन्द की ओर देखा। उसके नेत्र बंद थे। उसके होठों का कम्पन इंगित कर रहा था कि वह कोई मंत्र बुदबुदा रहा था। ज्यों ही उसके होठों का कम्पन थमा त्यों ही तांत्रिक का बलिकुठार तेजी से नीचे आया और नींबू दो बराबर भागों में बंटकर छिटक गया। एक हिस्सा अघोरा के पास गिरा और दूसरा हिस्सा बिरजू के पास। प्रक्रिया पूर्ण होते ही अभयानन्द ने आँखें खोल दी।

“इसे बलिवेदी पर रखो।” उसने बिरजू की ओर संकेत करते हुए कहा।

दो कापालिकों ने बिरजू को उठाकर बलिवेदी पर रख दिया। उसकी गर्दन बलिवेदी के खांचे में बैठ गयी।

अभयानन्द बलि-कुठार थामे हुए, काल का रूप धारण किये हुए बिरजू की ओर बढ़ा। बिरजू की आँखों से आँसू निकलकर गालों पर लुढ़क आये जबकि अभयानन्द का बलिकुठार वाला हाथ हवा में उठा और तेजी से नीचे आया। पल भर में ही बिरजू का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा। धड़ तेजी से फड़फड़ाया, ठीक उसी क्षण अघोरा का जिस्म भी फड़फड़ाया। ऐसा लगा जैसे बिरजू के साथ-साथ उसका भी सिर धड़ से अलग हो गया हो। जैसे ही बिरजू का धड़ फड़फड़ाकर शांत हुआ, अघोरा का शरीर भी शांत पड़ गया। बिरजू के प्राणोत्सर्ग के साथ ही अघोरा का शरीर भी प्राणविहीन हो चुका था।

जंगल के बीच मौजूद उस वृत्ताकार मैदान में मानो वक्त थम गया। बिरजू के खून से लाल धरती और उसका मुण्डविहीन धड़ देखकर आदमखोर भेड़ियों की लार टपक पड़ी लेकिन आश्चर्यजनक संयम का प्रदर्शन करते हुए वे अपनी जगह से हिले तक नहीं, अभयानन्द की ओर से अगले संकेत की प्रतीक्षा करते रहे। कापालिकों का समूह सिर झुकाकर अघोरा के शव के चारों ओर वृत्ताकार घेरे में खड़ा हो गया, मानो वे उसे दे रहा हो।

अभयानन्द घेरे के अंदर पहुँचा। अघोरा के शव के समीप पंजों के बल बैठा और उसकी खुली पलकों को सम्मानपूर्वक बंद करते हुए कहा- “धन्यवाद महातांत्रिक अघोरा। आपने अपनी काया का मोह त्याग कर हमें महान शक्तियों के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया है। आपकी उदारता के कारण ही हमने आज श्मशानेश्वर का मानवावतार बनने की प्रथम योग्यता अर्जित कर ली। आपके समर्पण से अभयानन्द अभिभूत हुआ। धन्य हुए हम। शीघ्र ही हम तंत्र-साधना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के धारक होंगे।”

अभयानन्द ने शव के पैरों पर मस्तक रखकर उसे अंतिम प्रणाम किया और फिर शव को घेरे हुए कापालिकों की ओर मुड़ा- “महान अघोरा के शव को उचित क्रिया-कर्म के साथ भूमि में गाड़ दो। सुरक्षा का विशेष ध्यान देना। पशुओं तक को भनक न लगने पाए कि महान अघोरा की पार्थिव कया कहाँ दफ्न है।” अभयानन्द भेड़ियों की ओर मुड़ा और कहा- “तुम्हारा भोजन तैयार है।”

अभयानन्द का आदेश मिलते ही भेड़ियों का संयम धराशायी हो गया। वे बिरजू के शव पर टूट पड़े।

JJJ

द्विज उस झोपड़ी के दरवाजे पर पहुँचकर ठहर गया, जिसके अंदर घना अँधकार छाया हुआ था। झोपड़ी मानव-बस्ती के बाहर बनी हुई थी, जहाँ लोगों का आना-जाना बेहद कम या न के बराबर होता था। उसने झोपड़ी का कपाट भीतर की ओर धकेला और अंदर प्रविष्ट हो गया।

“हमारी झोपड़ी में आपका स्वागत है द्विज।” भीतर व्याप्त गहन अँधकार के बीच अभयानन्द का स्वर गूँजा- “आप अँधकार के अभ्यस्त नहीं होंगे। ठहरिये, हम प्रकाश का प्रबंध करते हैं।”

द्विज कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किये बगैर अँधकार में खड़ा रहा। थोड़ी देर तक अँधेरे में आहट आती रही और फिर वहाँ प्रकाश फ़ैल गया। अभयानन्द ने एक दीप जला दिया था।

"हमें पूर्व में ही अंदेशा हो गया कि आने वाले आप ही हैं क्योंकि शंकरगढ़ के साधारण प्राणियों में इतना साहस नहीं है कि वे हमारी कुटिया में हमारी आज्ञा के बिना प्रविष्ट हो सकें। वे तो हमारे सम्मुख आने तक का साहस नहीं करते।"

झोपड़ी का वातावरण नर्क से भी बदतर था। जगह-जगह पशुओं की हड्डियाँ, खून, चमड़े और माँस के लोथड़े बिखरे हुए थे। अभयानन्द के हाथ में एक मोटा चूहा था, जिसकी गरदन उसने काट खाई थी। माँस का लोथड़ा उसकी दांतों में फंसा हुआ था। वातावरण में असहनीय दुर्गंध व्याप्त थी। उसका खून पुता चेहरा देखकर साधारण प्राणी उसे पिशाच समझकर भाग खड़ा होता लेकिन द्विज पर इन चीजों का कोई असर नहीं हुआ। उसके मुखमंडल पर वैसे ही गंभीर और सौम्य भाव थे, जो विद्वानों और वीरों के चेहरे पर विकट से विकट परिस्थितियों में भी नजर आते हैं।

"क्या देख रहे हैं द्विज? यदि आपको हमारे आहार से घृणा न होती तो हम आपको अपने आहार में सहभागी अवश्य बनाते। हम क्षमाप्रार्थी हैं कि आपके आतिथ्य-सत्कार हेतु इस गरीब अभयानन्द की झोपड़ी में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे आप सहर्ष स्वीकार कर सकें।"

अपना कथन समाप्त करने के बाद अभयानन्द दांतों में फंसा चूहे का माँस चबाने लगा। द्विज शांत और निश्चल खड़ा रहा। ऐसा लग रहा था, जैसे वह अभयानन्द की जीवन-शैली देख किसी गहरे चिंतन में डूब गया था। अभयानन्द ने माँस चबाने के बाद दोबारा मुँह खोला- "यदि आप हमारी कुटिया के वातावरण में स्वयं को असहज पा रहे हैं तो अपने आगमन का अपना प्रयोजन अतिशीघ्र कहें और प्रस्थान कर जाएँ।"

"तुम अँधकार में रहने के आदी हो अभयानन्द। अँधकार रुपी अज्ञान के प्रति तुम्हारा मोह देखकर मुझे प्रतीत होने लगा है कि जिस प्रयोजन के साथ मैं तुम्हारे पास आया हूँ, वह पूर्ण नहीं हो पायेगा।" द्विज के व्यक्तित्व की गंभीरता मानो उसके स्वर में घुल गयी।

अभयानन्द के चेहरे पर सख्त भाव उभरे लेकिन उसने द्विज के चेहरे से इतर देखते हुए कहा- "आप विद्वान हैं द्विज। गणित के महारथी हैं आप। आपके सम्मुख हम कुछ भी नहीं हैं किंतु स्मरण रहे कि हमारा और आपका ज्ञानमार्ग पृथक है। आप गणित के प्रकांड विद्वान् हैं तो हम भी तंत्रशास्त्र....।"

"शांत।" द्विज इतने तेज स्वर में चीखा कि अभयानन्द भी सहमकर चुप हो गया- "तंत्रशास्त्र का नाम कलंकित मत करो अभयानन्द। अपने अमानवीय कृत्यों को तंत्रशास्त्र से जोड़कर उस दुर्लभ भारतीय ज्ञान को अपमानित मत करो, जिसे स्वयं भगवान शिव ने माँ पार्वती को दिया था ताकि वे सृष्टि के कल्याणार्थ ब्रह्माण्ड में व्याप्त रहस्यमयी ऊर्जाओं का आह्वान कर सकें। तुम जैसे महत्वाकांक्षी और भोग-विलास के लोभी तांत्रिकों के कुकृत्यों का ही दुष्परिणाम है, जो आज तंत्र के दुरुपयोग को रोकने के लिये प्रत्येक राज्य में उसके अभ्यास को निषिद्ध घोषित किया जा रहा है।"

"आप यहाँ आने का अपना प्रयोजन स्पष्ट कीजिये द्विज।" इस बार अभयानन्द का लहजा क्रोध से परिपूर्ण था। द्विज के ऊँचे स्वर ने उसे भी कुपित
कर दिया था।

"कई प्रयोजन हैं अभयानन्द किंतु उन प्रयोजनों को स्पष्ट करने से पूर्व मेरा तुमसे एक प्रश्न है। तुमने माया का मार्ग रोकने का दुस्साहस क्यों किया?"

"आप कौन होते हैं हमारे इस कृत्य को सत्साहस अथवा दुस्साहस की श्रेणी में रखने वाले? हमने माया का मार्ग रोका। उसकी कोमल कलाइयों को अपने शिकंजे में कसा। उसके कंचन काया का नयनसुख....।"

"अभयानन्द!" द्विज इस बार पूर्व की अपेक्षा दो गुने तेजी से दहाड़ा- "मर्यादा की सीमा का उल्लंघन मत करो।"

"ओह!" अभयानन्द के होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कान थिरक उठी- "तो आज एक गणितज्ञ अभयानन्द के मर्यादा की सीमा निर्धारित करने आया है। हमने माया के सम्मान का हनन किया। हमारे इस कृत्य से आपके किस अधिकार का हनन हुआ, जो आप इतना क्रोधित हो रहे हैं?"

"माया मेरी शिष्या है।" क्रोध की अधिकता के कारण द्विज के होठों से शब्द बड़ी मुश्किल से निकले- "और यदि तुम्हारे जैसे पशु ने मेरी शिष्या के संग कोई अभद्रता की तो मेरा संयम अपनी सीमाएं लांघ जाएगा।"

"हम आपका आदर करते हैं द्विज किंतु यदि आपने संयम की बात उठा ही दी है तो हमारी ये चेतावनी भी कंठस्थ कर लीजिये कि हमारे सामर्थ्य को आपके या किसी अन्य के संयम की सीमा का अब कोई भय नहीं है।"

"भयभीत होना सीख लो अभयानन्द। सृष्टि का इतिहास साक्षी है कि तुम जैसे पशुओं का अंत भी तुम्हारी जीवन-शैली की भाँति ही वीभत्स होता है।"

अभयानन्द बुरी तरह चिढ़ गया। उसने इस बार सुस्पष्ट चेतावनी दी- "हम माया को अपनी भैरवी बनाने का निर्णय ले चुके हैं। सृष्टि में ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो हमें हमारे निर्णय से डिगा सके।"

"एक शत्रु को तो मैं अभी इसी क्षण तुम्हारे मस्तक पर मंडराते हुए देख रहा हूँ अभयानन्द। वह शत्रु कोई और नहीं स्वयं तुम्हारा अहंकार है।"

"यदि आपका प्रयोजन पूर्ण हो चुका हो तो आप यहाँ से प्रस्थान कर जाएँ अन्यथा हमें भय है कि हम आपके प्रति हमारे सम्मान को विस्मृत कर देंगे।"

"मैं कई प्रयोजनों के साथ यहाँ आया हूँ अभयानन्द। अभी तो मेरा प्रथम प्रयोजन ही पूर्ण नहीं हुआ है। तुम माया का विचार त्याग दो। ये कोई निवेदन नहीं अपितु एक चेतावनी है।"

"और हम पूर्व में ही कह चुके हैं कि ऐसी कोई भी चेतावनी हमारे निर्णय को बदल नहीं सकती है।" द्विज खामोश होकर अभयानन्द को एकटक देखता रहा जबकि अभयानन्द व्यंग्यात्मक भाव से मुस्कुराते हुए आगे बोला- "हमें ज्ञात है द्विज कि आप माया के लिए इतने व्याकुल क्यों हैं? आपके हृदय में उसके लिए प्रेम का बीज अंकुरित हो चुका है। आप अपनी विद्वता के बल पर उस अनिंद्य सुन्दरी को अपनी शय्या की शोभा बनाना चाहते हैं।"

"जिह्वा को नियंत्रण में रखो द्विज।"

"अन्यथा क्या कर सकते हैं आप? ये हमारी अंतिम चेतावनी है द्विज कि यदि आपने हमसे शत्रुता मोल ली तो आपकी विद्वता भी आपकी रक्षा नहीं कर पायेगी। हम मनुष्यों की श्रेणी से ऊपर उठ चुके हैं।" अभयानन्द की आँखें बड़ी और डरावनी हो उठीं- "हम उस भयावह प्राणी में परिवर्तित हो चुके हैं, जिसे यमराज का दूत कहा जाता है।"

“हाँ, ज्ञात है मुझे। ये ज्ञात है मुझे कि तुम किस सामर्थ्य के बल पर मुझे चेतावनी दे रहे हो। तुमने श्मशानेश्वर नाम के उस भेड़िया-मानव की उपासना स्वीकार कर ली है, जो स्वयं को मरघट में विचरने वाली अतृप्त आत्माओं का स्वामी कहता है। कितने मूर्ख हो तुम अभयानन्द। तुम्हें ये तक नहीं ज्ञात कि रसातल में विचरने वाली वह दुरात्मा, तुम्हें भी अपनी तरह प्रेतयोनी में भटकता छोड़ देगी, जहाँ तुम अनंतकाल तक मुक्ति के लिए तड़पते रहोगे।”

“हमारे आराध्य का संबोधन सम्मानपूर्वक कीजिये द्विज।”

“मैं पूर्णब्रह्म परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य पारलौकिक सत्ता का सम्मान नहीं करता। जो तुम्हारा आराध्य है, वह मेरे लिए प्रेतयोनी में विचरती एक दुरात्मा मात्र है।”

“आपके सिर पर मंडराते काल को हम स्पष्ट देख रहे हैं द्विज। आपकी मृत्यु निकट है।”

“मृत्यु तो तुम्हारी निकट है अभयानन्द।” द्विज रहस्यमय ढंग से मुस्कुराया- “कुटिया से बाहर निकलो। उस जन-समूह को देखो, जो तुम्हारे पांवों में बेड़ियाँ पड़ते हुए देखने को लालायित है।”

“तात्पर्य क्या है आपका?” अभयानन्द आशंकित हो उठा। सम्पूर्ण वार्तालाप के दौरान वह पहली दफा भयभीत नजर आया।

“यही कि आज संध्याकाल को बिरजू की बकरियाँ बिना अपने स्वामी के घर
लौटी थीं। कहने की आवश्यकता नहीं कि उस दशा में उसकी पत्नी ने क्या किया।”

“क..क्या किया?”

“उसने आपातकालीन न्यायसभा में न्याय की माँग की। ये तुम्हारे लिए एक दुर्योग ही सिद्ध हुआ अभयानन्द कि आज तुमने एक साथ दो-दो अक्षम्य अपराध किये हैं। पहला माया का मान-भंग करने का और दूसरा बिरजू की बलि चढ़ाने का। तुम पर पूर्व में भी लोगों के पालतू पशु चुराने का अभियोग लग चुका है किंतु पूर्व में तुम संदेह-लाभ के कारण बच जाते थे। इस बार तुम्हारी कुण्डली में ऐसा दुर्योग निर्मित हुआ है कि तुम्हें किसी भी किस्म का संदेह-लाभ नहीं मिल सकता। स्वयं राज्य की राजकुमारी ने तुम पर अभियोग लगाया है।” द्विज रुका। उसने अभयानन्द की मानसिक दशा का आंकलन किया तत्पश्चात आगे कहा- “क्या तुम ये जानने को उत्सुक हो अभयानन्द कि कई प्रयोजनों के साथ तुम्हारी कुटिया में आने के पीछे मेरा कौन सा मुख्य प्रयोजन निहित था?”

अभयानन्द चेहरे पर नासमझी का भाव लिए हुए द्विज को देखता रहा।

“मेरा मुख्य प्रयोजन तुम्हें तुम्हारी कुटिया में तब तक के लिए रोके रखना था, जब तक कि साक्ष्यों की तलाश में निकला सैनिकों का दल साक्ष्य लेकर नहीं आ जाता। और अब कुटिया के बाहर हो रहा कोलाहल इंगित कर रहा है कि मेरा प्रयोजन पूर्ण हो चुका है। सैनिकों का दल साक्ष्य लेकर आ चुका है अर्थात उन्हें वन में भेड़ियों द्वारा नोचा-खसोटा गया बिरजू का शव प्राप्त हो चुका है।”

अभयानन्द को काटो तो खून नहीं।

“तुम्हें अर्द्धविक्षिप्त मानकर कारावास में डाल दिया जाएगा। आज के पश्चात तुम कभी भी निरीह पशुओं के रक्त से अपनी तृष्णा नहीं बुझा पाओगे और न ही निर्दोष मनुष्यों के रक्त से पिशाच की बलिवेदी को रक्तरंजित कर पाओगे।”

बाहर कोलाहल बढ़ने लगा। इसी के साथ क्रोध और भय के सम्मिलित प्रभाव से अभयानन्द के बदन की थरथराहट भी बढ़ने लगी।

“बाहर चलो अभयानन्द।” द्विज के होठों पर विषाक्त मुस्कान थिरक उठी- “श्मशानेश्वर की दी हुई शक्तियों का उपयोग करके स्वयं की रक्षा कर सकते हो तो कर लो।”

“द्विज...!” अभयानन्द ने दांत पीसे- “हमारी आपसे कोई शत्रुता नहीं थी किंतु आज आपने हमारे सदृश एक नरपिशाच से अकारण ही शत्रुता मोल ले ली। आपकी मृत्यु बहुत दारुण होगी द्विज। हमें दिखाई पड़ रहा है कि श्मशानेश्वर स्वयं अपनी कटार से आपको मुंडविहीन करेंगे। वे अपने भयानक दांत से आपकी गर्दन का माँस काट खायेंगे।”

अभयानन्द आगे भी कुछ कहता किंतु तब तक कई सैनिक कुटिया के भीतर दाखिल हो आये और उन्होंने अभयानन्द को घेर लिया।

“समर्पण कर दो। अन्यथा हमारे भाले तुम्हारे शरीर को छलनी कर देंगे।” एक सैनिक ने चेतावानी दी।

अभयानन्द ने रहस्यमय अंदाज में हाथ खड़े कर दिए। जनमानस में उसका खौफ इस सीमा तक व्याप्त था कि उसके निर्विरोध समर्पण ने भी सैनिकों को भयभीत कर दिया। उसके हाथ खड़े करने के कुछ समय बाद सैनिक आगे बढ़े। उन्होंने अभयानन्द के गले में लोहे की जंजीर और पैरों में बेड़ियाँ डाल दी। उसने लेशमात्र भी प्रतिकार नहीं किया। मानो उसने इसे नियति समझकर स्वीकार कर लिया था। हाँ, उसके आग उगलते नेत्र द्विज पर अवश्य ठहरे हुए थे।

सैनिक उसे किसी पशु की तरह घसीटते हुए बाहर लाये। बाहर बिरजू का शव सफ़ेद कपड़े से ढका हुआ था, जिसके इर्द-गिर्द उसकी पत्नी समेत शंकरगढ़ के निवासी जमा थे।

अभयानन्द को बाहर आता देख लोगों का कोलाहल और भी तीव्र हो गया। बिरजू की पत्नी तो मूर्छित थी लेकिन उसके आस-पास जमा अन्य लोग क्रोधातिरेक में अभयानन्द की ओर दौड़ पड़े। सैनिकों द्वारा सख्ती से रोक दिए जाने के कारण वे उस तक तो नहीं पहुँच सके तथापि अपने भयानक क्रोध का प्रदर्शन करते हुए उस पर पत्थर बरसाने से चूके नहीं। सैनिकों ने अभयानन्द को घोड़े के पीछे बाँध दिया क्योंकि राजा का आदेश था कि उसे घसीटते हुए कारावास तक लाया जाए।

JJJ

कारागार की दीवार पर गुणन चिह्न के रूप में टंगे दो मशालों की कमजोर रोशनी फैली हुई थी। इसके अतिरिक्त पूर्णिमा के चाँद का प्रकाश भी रोशनदान के जरिए भीतर प्रविष्ट हो रहा था। कारागार का वह खण्ड अन्य खण्डों से सर्वथा पृथक निर्मित था, जो अभयानन्द जैसे दुर्दान्त अपराधियों के लिए ही आरक्षित था। पथरीली भूमि वाली उस कोठरी के एक कोने में मिट्टी का घड़ा रखा हुआ था। दीवार से कई खूंटे उभरे हुए थे, जिनसे बेड़ियों में जकड़े अपराधी को बाँधकर रखा जाता था। उस कोठरी के सामने दूर तक चली गयी लम्बी राहदरी में डरावनी खामोशी व्याप्त थी। मशालों के सीमित संख्या में होने के कारण राहदरी के अधिकांश हिस्से पर अँधेरे का वर्चस्व था।

कुछ समय गुजरने के बाद राहदरी में सैनिकों के भारी कदमों की आहट गूँजी। आहट गूँजने के कुछ क्षणोंपरांत दस सैनिकों का एक समूह अभयानन्द को घसीटते हुए राहदरी में दाखिल हुआ।

अभयानन्द का पूरा शरीर खून से इस कदर लथपथ हो चुका था कि उसके घसीटे जाने से जमीन पर गीले निशान छूट रहे थे। उसका चेहरा यूँ रंगा नजर आ रहा था, जैसे उसे ईंट-पत्थरों से कुचला गया हो। खौफनाक शख्सियत के मालिक अभयानन्द का जिस्म इस अवस्था में और भी भयावह नजर आने लगा था। सैनिक उसे किसी बेजान वस्तु की भांति घसीट रहे थे। उसकी ओर से कोई प्रतिक्रिया न होती देख ये स्पष्ट नहीं हो रहा था कि वह चेतना की अवस्था में है, अचेत है अथवा मर गया। सैनिक उसे घसीटते हुए उस विशेष कोठरी तक ले आये।

"चल। अंततः तू अपनी नियति को प्राप्त हो ही गया पिशाच।" सैनिकों ने उस पर लात बरसाते हुए कहा।

कुछ सैनिकों ने आगे बढ़कर कोठरी का सलाखों वाला द्वार खोला और बाहर से ही अभयानन्द को भीतर धकेल दिया। उसे दीवार से उभरे खूंटों से बांधने के लिए मात्र दो सैनिक अंदर गये। उन्होंने अपने पैरों की ठोकर से पेट के बल पड़े अभयानन्द का जिस्म सीधा किया लेकिन उसके खून से लथपथ चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही उनकी चीख निकल गयी।

"क्या हुआ?" बाहर खड़े सैनिक घबराकर अंदर घुसे।

अभयानन्द की आँखें खुली हुई थीं और चेहरे से बहता खून अत्यधिक मात्रा में उन आँखों में जमा हो चुका था। पलकों में ज़रा भी कम्पन नहीं था। इस क्षण वह विकृत ही नहीं रहस्यमय भी नजर आ रहा था।

"परलोक सिधार गया क्या?" एक सैनिक आशंकित लहजे में कहा।

"निरिक्षण करो।"

टुकड़ी के नायक का संकेत पाकर एक सैनिक अभयानन्द के निकट बैठ गया। उसने उसकी छाती पर कान रखकर धड़कनें सुनने की कोशिश तत्पश्चात उसकी नब्ज देखने लगा।

"जीवित है।" सैनिक ने पुष्टि की- "किंतु शरीर की निश्चलता आश्चर्यचकित कर रही है। ऐसी निश्चलता तो किसी शव में ही पायी जाती है।"

"ये सोचना हमारा काम नहीं है। इसके बंधनों का सिरा खूंटों से बाँध दो। हमारी जिम्मेदारी पूर्ण हो चुकी है। कल प्रातःकाल लगने वाली न्यायसभा में महाराज की उपस्थिति में न्यायाधीश इसका फैसला करेंगे।" टुकड़ी के नायक ने निर्णायक लहजे में कहा।

JJJ

उस वक्त आधी रात का समय था, जब राहदरी में दो सैनिक दाखिल हुए। उनमें से एक के हाथ में बंदियों के भोजन की थाली थी जबकि दूसरे के हाथ खाली थे। वे आपस में बातें करते हुए अभयानन्द की कोठरी के सामने पहुँचकर थमे। खाली हाथ वाला सैनिक आगे बढ़कर कोठरी का द्वार खोलने ही वाला था कि कुछ देखकर ठिठक गया। न केवल ठिठका अपितु यथास्थान पर जड़ होकर रह गया। उसकी आँखें पथरा गयीं और कोठरी की सलाखों के उस पार नजर आ रहे दृश्य पर ठहर गयीं। ऐसा लगा जैसे उसकी जुबान तालू से जा चिपकी हो।

"क्या हुआ?" सैनिक, जो भोजन की थाली लिये हुए था, कोठरी की मध्यम
रोशनी में नजर आ रहे दृश्य को देखने के लिए आगे बढ़ आया।

"हे माँ अम्बे! ये कैसा अनर्थ हो रहा है?"

सैनिक के हाथ से भोजन की थाली छूटकर जमीन पर गिर पड़ी।

JJJ

पुजारी ने चौंककर आँखें खोल दीं।

"कोई अनर्थ हुआ है।" उनके होठों से भयभीत स्वर निकला।

आसमान साफ था। बारिश की संभावना न होने के कारण उन्होंने मंदिर के प्रांगण में ही बिस्तर लगाया हुआ था। द्विज भी बगल की चारपाई पर गहरी नींद में लीन था। पुजारी ने आसमान पर चमक रहे चाँद की ओर देखा और एक बार फिर व्याकुल हो गये- "आज तो पूर्णमासी की रात है।"

यद्यपि हवाओं की गति सामान्य थी लेकिन वर्तमान मनोदशा में पुजारी को हवाओं की वह सामान्य गति भी उग्र और चन्द्रमा भयभीत करने वाला लगा। अपशकुन की अनुभूति होने में जो कसर बाकी रह गयी थी, उसे दक्षिण के जंगल से अचानक गूँजे भेड़ियों के रुदन ने पूर्ण कर दिया।

"भेड़िये रो रहे हैं। हे जगद्जननी! क्या कोई अनिष्ट हुआ है या होने को है?"

पुजारी चारपाई से नीचे उतरे, पाँव में खडाऊं डाली और गर्भगृह की ओर बढ़ चले।

"गर्भगृह का दीप कैसे बुझा?"

गर्भगृह में गहन अँधकार देख वे चौंके, लंबे-लंबे डग भरते हुए सीढ़ियों तक पहुँचे। खडाऊं उतारा और कई सीढ़ियों को एक साथ पार करते हुए ऊपर पहुँचकर गर्भगृह का दरवाजा खोला। अँधेरे में टटोलकर उन्होंने एक खूंटी पर टंगे कपड़े के थैले में से चकमक पत्थर निकाला और दीवार में बने स्थान पर पहले से रखे दीप को जला दिया।

भगवती की मूर्ति के सामने रखा दीप तेल से पूरा भरा हुआ था। उसकी बाती भी तेल में पूरी तरह गीली थी लेकिन फिर भी वह बुझा हुआ था।

"दीप में तेल आकंठ भरा हुआ है। हवा गर्भगृह में प्रवेश नहीं करती है। तो फिर दीप बुझा कैसे?"

चिंतित हो उठे पुजारी ने दीप को फिर से जलाया। बाती को ठीक करके ये सुनिश्चित किया कि दीप दोबारा न बुझने पाए तत्पश्चात बाहर आकर गर्भगृह के कपाट बंद कर दिये।

"हमारी नींद का अचानक खुलना, भेड़ियों का भयानक रुदन और गर्भगृह में रात भर जलने वाले दीपक का आज अकारण ही बुझ जाना; ये शुभ संकेत नहीं हैं। कोई बड़ा संकट राज्य पर मंडरा रहा है।"

"क्या हुआ बाबा? आप यहाँ क्यों?"

अपने पीछे द्विज का स्वर सुनकर पुजारी पलटे। वह सीढ़ियों के नीचे खड़ा था। पुजारी भी नीचे पहुँचे।

"कुछ होने वाला है द्विज। गुजरे हुए क्षणों में कई अशुभ संकेत प्राप्त हुए हैं हमें।"

"कैसे अशुभ संकेत?" द्विज के मस्तक पर भी बल पड़ गए।

पुजारी ने कोई जवाब नहीं दिया और दोनों हाथ पीछे किये हुए व्यग्र भाव से प्रांगण में टहलने लगे।

"कैसे अशुभ संकेत बाबा?" द्विज ने अपना सवाल दोहराया।

"क्या भेड़ियों का रुदन तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा?"

"ये तो उनका नित्य का कर्म है।"

"नहीं द्विज। आज रात का उनका ये रुदन साधारण नहीं लग रहा है। क्या तुम्हें प्रकृति के रूप में कोई परिवर्तन नहीं नजर आ रहा है? क्या वातावरण में घुले अनिष्ट के अशुभ संगीत की अनुभूति तुम्हें नहीं हो रही?"

अब द्विज को भी भान हुआ कि पुजारी का संकेत किस ओर था।

"केवल इतना ही नहीं द्विज, आज तो वह अपशकुन भी हो गया, जो पहले कभी नहीं हुआ था।"

"कैसा अपशकुन?" द्विज का लहजा रोमांचित हुआ।

"भगवती के सम्मुख जलने वाला दीप बुझा हुआ था।"

"इतना....इतना बड़ा अपशकुन?" द्विज के रोंगटे खड़े हो गए।

"हाँ द्विज, घटनाएं न जाने किस अनिष्ट का संकेत दे रही है हमें।"

सहसा द्विज के मस्तिष्क में अभयानन्द का कथन गूँजा:

'हम मनुष्यों की श्रेणी से ऊपर उठ चुके हैं। हम उस भयावह प्राणी में परिवर्तित हो चुके हैं, जिसे यमराज का दूत कहा जाता है।'

और इसी के साथ उसकी आख़िरी चेतावनी भी:

'द्विज! हमारी आपसे कोई शत्रुता नहीं थी किंतु आज आपने हमारे सदृश एक नरपिशाच से अकारण ही शत्रुता मोल ले ली। आपकी मृत्यु बहुत दारुण होगी द्विज। हमें दिखाई पड़ रहा है कि श्मशानेश्वर स्वयं अपनी कटार से आपको मुंडविहीन करेंगे। वे अपने भयानक दांत से आपकी गर्दन का माँस काट खायेंगे।'

"आज राज्य के सैनिकों ने अभयानन्द को बंधक बनाया, इस घटना में मेरी भूमिका भी थी। कहीं...कहीं ऐसा तो नहीं कि अभयानन्द किसी भयानक रक्तपात का सूत्रधार बनने वाला है? उसने मुझे चेतावनी दी थी कि वह अब एक सामान्य मनुष्य से ऊपर उठ चुका है। वह ऐसे प्राणी में परिवर्तित हो चुका है, जिसे यमराज का दूसरा रुप कहा जाता है। आपको तो ज्ञात है बाबा कि वह श्मशानेश्वर की साधना कर रहा था। अनिष्ट के ये संकेत इस संभावना को प्रबल बना रहे हैं कि उसकी साधना सफल हो चुकी है।"

"माँ अम्बे हम पर कृपा करें और तुम्हारी ये संभावना मिथ्या सिद्ध हो जाए क्योंकि यदि अभयानन्द की साधना पूर्ण हो चुकी होगी तो शंकरगढ़ की भूमि पर जो भीषण रक्तपात होगा, उसे कोई नहीं रोक पायेगा, कोई भी नहीं।"

द्विज कुछ नहीं बोल पाया केवल काँपकर रह गया।

JJJ

कारागार-प्रमुख की घोड़ागाड़ी राजमहल के सामने पहुँचकर रुकी। गाड़ीवान के द्वार खोलने की प्रतीक्षा किये बिना ही वे स्वयं द्वार खोलकर बाहर आ गये। दरबानों की ओर बढ़ते हुए उनके चाल की तेजी असाधारण थी। पद की गरिमा को दृष्टिगत रखते हुए दरबानों ने भी बिना कोई प्रश्न किये उनका मार्ग प्रशस्त कर दिया। मंत्रणा कक्ष की ओर जाते हुए उन्होंने राह में मिलने वाले सेवकों के अभिवादन का भी जवाब नहीं दिया।

"महाराज को सूचना दो कि कारागार-प्रमुख एक अत्यंत आवश्यक कार्य से उनसे भेंट करना चाहते हैं।" मंत्रणा कक्ष में पहुँचकर उन्होंने एक सेवक को लक्ष्य को करके कहा।

"रात्रि के इस प्रहर में? ये तो महाराज के शयन....।"

"हमने जो आदेश दिया, उसे सुनो।" कारागार-प्रमुख ने सेवक को डपटते हुए कहा- "ये हमें भी ज्ञात है कि ये न केवल महाराज के अपितु प्रत्येक मनुष्य का शयन का समय है।"

सेवक में आगे कुछ कहने का साहस नहीं हुआ और वह ऊहापोह में डूबकर आदेश का पालन करने चला गया। कारागार-प्रमुख की प्रतीक्षा अधिक लम्बी नहीं हुई। कुछ ही समय बाद महाराज उदयभान सिंह मंत्रणा कक्ष में प्रविष्ट हुए। उनकी आँखों में नींद की खुमारी दिखाई दे रही थी।

"आपसे अभी इसी क्षण कारागार चलने का अनुरोध है महाराज।" कारागार-प्रमुख ने व्यग्र लहजे में कहा।

"कारण?"

"ये आपको वहाँ चलकर ही स्पष्ट हो सकेगा। हमने एक सेवक के जरिये कुलगुरु को भी सूचना भिजवा दी है। वह उन्हें लेकर कारागार पहुँचता ही होगा।"

"तो क्या आप कुलगुरु को भी कारागार बुला रहे हैं?"

"हाँ महाराज।" उदयभान कुछ पूछने को उद्यत हुए ही थे कि कारागार-प्रमुख ने उन्हें बोलने का अवसर नहीं दिया- "हमारे पास समय बिल्कुल भी नहीं है। आपको आपके समस्त प्रश्नों के उत्तर कारागार में ही मिलेंगे।"

JJJ

अभयानन्द की कोठरी का दृश्य रगों में सिहरन भर देने वाला था। उसके अपलक नेत्र रोशनदान से झाँक रहे पूनम के चाँद पर ठहरे हुए थे। उसके जिस्म में ज़रा भी कम्पन नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो कोई लाश चाँद को घूर रही हो। यदि केवल इतना ही होता तो शायद कम भयावह होता। भयावहता की असली वजह कुछ और थी।

"इसकी आँखें भेड़िये की आँखों जैसी कैसे हो गयीं?" महाराज ने विस्मित स्वर में कहा।

कारागार की वह राहदारी सैनिकों और राज्य के उच्चाधिकारियों से भर गयी थी। उनमें से अधिकतर के चेहरे भय के कारण पीले पड़े हुए थे।

'ये तो धीरे-धीरे भेड़िया बन रहा है।'

'हाँ! अभी तो केवल आँखें ही भेड़िये की हुई हैं। धीरे-धीरे सभी अंग भेड़िये के हो जायेंगे।'

'और फिर यह एक भेड़िया-मानव बन जाएगा।'

'हमें तो पहले ही संदेह था कि ये कोई मनुष्य नहीं बल्कि नरपिशाच है।'

'माँ भगवती शंकरगढ़ की रक्षा करें।'

'कुलगुरु को संदेश भेजा गया है। वे आते ही होंगे। अब तो वे ही कोई युक्ति बता सकते हैं।'

राहदरी में उपस्थित लोगों के बीच इसी तरह की चर्चा चल रही थी। अभयानन्द की सलाखों वाली कोठरी अभी तक नहीं खोली गयी थी। महाराज समेत सभी लोगों को कुलगुरु के आगमन की प्रतीक्षा थी, जो अधिक लम्बी नहीं हुई।

"क्या महाराज पधार चुके हैं?" वातावरण में कुलगुरु का गंभीर स्वर गूँजा।

लोगों की परिचर्चा पर विराम लग गया। उन्होंने कुलगुरु आचार्य दिव्यपाणी को आगे आने का रास्ता दिया। महाराज और कारागार-प्रमुख के प्रणाम का अभिवादन करने के पश्चात दिव्यपाणी ने कहा- "रात्रि की इस बेला में हमें यहाँ उपस्थित होने का संदेश भेजने का क्या कारण था कारागार-प्रमुख?"

"कारण था नहीं अपितु है कुलगुरु।" कारागार-प्रमुख ने विनीत स्वर में कहा- "आप स्वयं अपने नेत्रों से देख लीजिये।"

दिव्यपाणी ने सलाखों से कोठरी के भीतर नजर डाली। अभयानन्द की डरावनी मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं आया था। भेड़िये जैसी उसकी भयानक आँखें अभी भी अपलक चाँद को घूर रही थीं।

"कोई अंदर प्रविष्ट हुआ था?"

"नहीं कुलगुरु।" उत्तर महाराज ने दिया- "आपके आगमन तक हमने सुरक्षा की दृष्टि से किसी को भी भीतर प्रविष्ट होने की अनुमति नहीं दी और न ही कोई इस हेतु तत्पर हुआ।"

"हम्म" गहरी हुंकार भरने के बाद दिव्यपाणी बाहर से ही अभयानन्द का निरिक्षण करने लगे।

"सभी जन को बाहर भेज दीजिए। यहाँ आपके और कारागार-प्रमुख के अतिरिक्त केवल कुछ सैनिक ही उपस्थित रहें।"

आदेश का पालन किया गया।

"द्वार खोला जाए।"

इस आदेश का भी पालन हुआ। दिव्यपाणी ने सभी को बाहर रुकने का संकेत किया और अकेले ही अभयानन्द की कोठरी में दाखिल हो गये। महाराज, कारागार-प्रमुख और सैनिकों की निगाहें उनकी गतिविधियों पर ठहर गयीं। उन्होंने कमण्डल से जल निकाला और अभयानन्द के ऊपर छिड़का। वातावरण में 'छन्न' की वैसी ही आवाज़ गूँजी, जैसी जलते अंगारे पर पानी छिड़कने से उत्पन्न होती है। अभयानन्द की मुद्रा में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह निश्चल ही पड़ा रहा। दिव्यपाणी ने उसकी नब्ज टटोली, उसकी छाती पर कान रखकर धड़कनों का स्वर सुना, तत्पश्चात कोठरी से बाहर आ गये।

"समाचार अशुभ है राजन।" उन्होंने महाराज को सम्बोधित करके कहा-"अभयानन्द बेहद द्रुत गति से पिशाच बनने की ओर अग्रसर है। प्रतीत हो रहा है कि इसने थोड़े समय पूर्व ही किसी दुर्लभ अनुष्ठान को पूर्ण किया है। इसकी दशा देखकर हमें एक संदेह हो रहा है। ईश्वर न करें कि वह संदेह सत्य सिध्द हो।"

"कैसा संदेह?" महाराज और कारागार-प्रमुख ने समवेत स्वर में पूछा।

"इस विषय में हम विस्तृत परिचर्चा करेंगे और इसके लिये आपको अभी इस क्षण हमारे आवास पर न्यायाधीश के साथ उपस्थित होना होगा।"

"न्यायाधीश के साथ? किंतु...?"

"ये समय प्रश्न करने या तर्क-वितर्क का नहीं है राजन।" दिव्यपाणी ने महाराज की बात काटकर सख्त स्वर में कहा- "तीर प्रत्यंचा से छूट चुका है। अब हम केवल अपने बचाव का प्रबन्ध कर सकते हैं। मंत्रणा में न्यायाधीश की उपस्थिति इसलिये अनिवार्य है क्योंकि कल के सूर्योदय से पूर्व ही अभयानन्द को उसके पापों का दण्ड मिलना आवश्यक है।"

महाराज मौन रह गए। दिव्यपाणी ने एक नजर अभयानन्द पर डाली और सैनिकों से मुखातिब होकर बोले- "रंग और तूलिका तथा काले कपड़े का प्रबन्ध करो। साथ ही लोहे की एक मजबूत जंजीर का भी, जिसमें इस नराधम को जकड़ा जा सके।"

दो सैनिक आदेश का पालन करने चले गये। जब वे वापस लौटे तो उनके साथ उपर्युक्त चीजें थीं। कुलगुरु ने रंग का पात्र, तूलिका और काला कपड़ा ले लिया।

"उसे सावधानीपूर्वक बांध दो किंतु निष्क्रिय समझने की भूल मत करना। वह आक्रामक हो सकता है।"

दिव्यपाणी की चेतावनी सुन सैनिक भयभीय हो उठे। उन्होंने मन ही मन अपने ईष्ट का स्मरण किया और अभयानन्द को बांधने के ध्येय से जंजीर लिये हुए कोठरी में प्रविष्ट हो गये। उसकी ओर बढ़ने से पहले उन्होंने सुखे अधरों पर जुबान फेरी और दिव्यपाणी की ओर देखा।

"बांधो।"

एक सैनिक साहस जुटाकर आगे बढ़ा और जंजीर का वलय अभयानन्द के गले में डाल दिया। उसकी ओर से कोई प्रतिकार न होता देखकर दो अन्य सैनिकों का भी हौसला बढ़ा और वे पहले सैनिक की मदद को आगे आ गये। थोड़ी ही देर बाद अभयानन्द जंजीरों में इस कदर जकड़ चुका था कि अब वह लेशमात्र भी हरकत नहीं कर सकता था। बांधे जाने के दौरान उसने जरा भी प्रतिकार नहीं किया, केवल निश्चल पड़ा रहा। भेड़िये जैसी आँखों वाला वह पिशाच जंजीरों में जकड़े जाने के बाद और भी भयानक नजर आने लगा था। उसे बांधने के बाद सैनिक ऐसे आश्वस्त नजर आ रहे थे, जैसे उन्होंने किसी बड़े युध्द में विजय प्राप्त कर ली हो।

"बाहर आ जाओ।" दिव्यपाणी ने काले कपड़े को कई तहों में लपटते हुए सैनिकों को आदेश दिया।

सैनिकों जब बाहर आ गए तो दिव्यपाणी रंग के पात्र और कूचे के साथ कोठरी में दोबारा दाखिल हुए। महाराज और कारागार-प्रमुख भी उनके साथ भीतर आने को उद्यत हुए किंतु उन्होंने उन्हें बाहर ही रुकने का संकेत कर दिया।

कई तह में लपेटे जा चुके काले कपड़े को दिव्यपाणी ने अभयानन्द की खुली आँखों पर बांध दिया। उसने कोई विरोध नहीं किया। उसकी डरावनी आँखों के ढक जाने के बाद उसकी भयावहता थोड़ी कम हुई। इसके पश्चात दिव्यपाणी तूलिका और रंग की सहायता से कोठरी की दीवारों पर गीता के श्लोक लिखने लगे। आधे घण्टे में कोठरी की तीनों दीवारें; गीता के श्लोक और पवित्र स्वास्तिक चिह्न से भर गयीं।

दिव्यपाणी के उपर्युक्त क्रियाकलापों के दैरान महाराज, कारागार-प्रमुख और

सैनिकों में से किसी में भी इतना साहस नहीं हुआ कि वह कोई ध्वनि उत्पन्न कर सके। कोठरी से बाहर आने के बाद दिव्यपाणी ने चौखट पर भी स्वास्तिक बना दिया। काम पूरा हो जाने के बाद उन्होंने रंग का पात्र और तूलिका एक सैनिक को सौंपते हुए कहा- “कारागार के इस कक्ष के निकट जितने भी कक्ष हैं, उन्हें अतिशीघ्र बंदियों से रिक्त कर दिया जाए। इस कक्ष में व राहदारी में किसी का भी अनावश्यक आवागमन न हो।”

“जैसी आपकी इच्छा।”

महाराज का स्वर उत्कंठा के बोझ तले दबा हुआ था। उन्हें दिव्यपाणी की भाव-भंगिमाओं और उनके कृत्य में निहित गंभीरता को देखकर आभास हो चुका था कि जो कुछ हो रहा था या होने वाला था, अत्यंत अनिष्टकारी था।

“आपको न्यायाधीश के साथ हमारे आवास पर उपस्थित होना होगा महाराज। हम चन्द्रमा के इस शापित प्रकाश में विनाश के धुंध को शंकरगढ़ में प्रवेश करते हुए देख रहे हैं।”

महाराज को अंतिम परामर्श देने के बाद कुलगुरु वातावरण की निस्तब्धता को अपनी खडाऊं की ‘ख़ट-खट’ से भंग करते हुए प्रस्थान कर गये।

JJJ

रात्रि का तीसरा प्रहर था।

उस कक्ष में दीपक का पीला प्रकाश व्याप्त था, जिसमें महाराज और दिव्यपाणी के साथ-साथ न्यायाधीश भी उपस्थित थे। दिव्यपाणी ने अपने सम्मुख एक पुरातन ग्रंथ खोल रखा था। इस क्षण उनकी दृष्टि ग्रंथ के जिस भोजपत्र पर ठहरी हुई थी, उस पर एक नरभेड़िये का चित्र बना हुआ था और नीचे संस्कृत में कोई लेख लिखा हुआ था।

“अभयानन्द के साथ क्या हुआ है कुलगुरु?” मौन लम्बा होता देख महाराज ने पूछा।

“वह एक भयावह योनी वाले प्राणी में परिणित हो रहा है।” कुलगुरु ने संस्कृत के लेख पर दृष्टि जमाये हुए उत्तर दिया।

“भयावह योनी?”

न्यायाधीश के मस्तक की रेखाओं को नजरअंदाज करके दिव्यपाणी कक्ष में टहलने लगे। उनकी शारीरिक भाषा से परिलक्षित हो रहा था कि संस्कृत के उस लेख ने उन्हें व्यथित कर दिया था। लम्बे अंतराल के बाद उन्होंने ने महाराज को लक्ष्य करके पूछा- “क्या अभयानन्द ब्राह्मण था महाराज?”

“हमें इस विषय में कोई ज्ञान नहीं है कुलगुरु। वह कुछ वर्षों पूर्व शंकरगढ़ में नजर आया था और तब से ही आम जनों ने उसके विषय ये धारणा बना ली थी कि वह पशुओं को जीवित खा जाने वाला कोई वहशी मनुष्य है। उसके प्रति लोगों की धारणा आज भी यही है किंतु आपको उसकी जाति के विषय में अवगत होने की आवश्यकता क्यों पड़ी?”

“क्योंकि वह जिस योनी की ओर अग्रसर है, उसमें कोई ब्राह्मण ही जा सकता है।”

“अर्थात?”

“क्या आपने कारागार में घटी घटनाओं पर चिंतन नहीं किया?”

“अवश्य किया किंतु निष्कर्ष के रूप में हम केवल यही समझ पाए कि अभयानन्द शापित हो रहा है।”

“अर्थात आपने एक महाविनाश की क्षमता बहुत कम आंकी है।”

महाराज तुरंत कुछ न बोल सके। दिव्यपाणी की पहेलीनुमा बातों से वे विचलित होने लगे थे। जबकि दिव्यपाणी ने कुछ क्षणों तक खामोश भूमिका बांधने के बाद कहना आरंभ किया:

“सनातन संस्कृति में वर्णित वर्ण-व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण को चारों वर्णों में श्रेष्ठ कहा गया है। ब्रह्म के सामीप्य का भागी होने के कारण उसे ब्रह्मतत्व का विवेचक माना जाता है। उसे समाज की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र कहा जाता है। उसे राजा के नीतियों की समीक्षा करने का अधिकार भी दिया गया है किंतु उपर्युक्त अधिकार और अलंकरणों के उपलक्ष्य में उसके कंधों पर कर्तव्यों का बोझ भी डाला गया है और उन कर्तव्यों से विमुख होने जाने की दशा में उसके लिए भयावह दंड का विधान भी बनाया गया है। दंड के उन्हीं विधानों में से एक है- वृकराक्षस योनी।”

“वृकराक्षस योनी?” महाराज और न्यायाधीश के होठों से समवेत स्वर में निकला- “हमने तो कभी इस योनी के विषय में नहीं सुना।”

“जो ब्राह्मण समाज को शिक्षित करने के स्थान पर शास्त्रों के प्रतिकूल नीतियाँ बनाकर उसे दिग्भ्रमित करने लगता है, अशिक्षित और निर्धन जनों को धर्म का भय दिखाकर उनका शोषण करने लगता है, राजाओं की चाटुकारिता को धनोपार्जन का पर्याय बना लेता है, माँस-मदिरा के सेवन को अपनी जीवनशैली में समाहित कर लेता है और सदाचार-संयम से विमुख होकर भोग-विलास में लिप्त हो जाता है, वह ब्राह्मण मरणोपरांत वृकराक्षस योनी में जन्म लेता है। वृकराक्षस अर्थात भेड़िया-राक्षस। ये आधा मनुष्य और आधा वृक होते हैं। इन्हें ही नरभेड़िया, भेड़िया-मानव या भड़मानस की संज्ञा दी गयी है। गन्दगी का सेवन करना और पशुओं का रक्त पीना ही इनकी नियति होती है। पूर्णमासी के चन्द्रमा के शीतल प्रकाश के नेत्रों से टकराते ही इनके भीतर छिपा पिशाच बाहर आने को व्यग्र हो उठता है। काया-परिवर्तन की उस अवस्था में ये सौ मृत्युओं से भी भीषण कष्ट भोगते हैं। वह भयानक कष्ट ही इनके पापों का दंड होता है। पूर्णिमा की रात कठोर यातना झेलकर भी ये अगली पूर्णिमा की यातना झेलने के लिए जीवित रहते हैं। ऐसे होते हैं वृकराक्षस।”

“तो क्या इन्हें ही ब्रह्मराक्षस कहते हैं?” न्यायाधीश ने पूछा।

“वृकराक्षस योनी एक दंड योनी है और इसमें दुराचारी ब्राह्मण पुनर्जन्म लेते हैं, इसलिए ब्रह्मराक्षस को वृकराक्षस का पर्याय मान लिया जाता है। अभयानन्द का उस योनी में जाना इस बात का द्योतक है कि वह अवश्य ही कोई ब्राह्मण है।”

“किंतु आपने कहा कि दुराचारी ब्राह्मणों को ये योनी मरणोपरांत प्राप्त होती है। अभयानन्द तो अभी जीवित है, तो फिर उसे ये योनी कैसे प्राप्त हो रही है?”

“कारण भयभीत करने वाला है राजन।” कुलगुरु ने महाराज और न्यायाधीश की ओर देखा। उनकी आँखों में इस बार भय था- “अभयानन्द ने श्मशानेश्वर सिद्धी नामक एक दुर्लभ सिद्धी प्राप्त कर ली है। श्मशानेश्वर एक पारलौकिक शक्ति है, जो मरघट में भटकने वाली अतृप्त आत्माओं का स्वामी है। श्मशानेश्वर को सिद्ध करने वाला साधक अपनी आत्मा को उसे समर्पित कर देता है और प्रत्युत्तर में उसे अपने शरीर में निवास हेतु आमंत्रित करता है। साधक की आत्मा का मूल्य चुकाने के लिए श्मशानेश्वर उसकी काया में प्रविष्ट हो जाता है।”

“किंतु साधक ऐसा करता क्यों है? वह अपनी आत्मा को मरघट में भटकने के लिये छोड़कर श्मशानेश्वर को अपनी काया में क्यों धारण करता है?”

“असीमित शक्ति की लालसा साधक को ऐसा करने को विवश करती है। जो ब्राह्मण दुराचारी होते हैं, उन्हें ये विदित होता है कि मरणोपरांत वे ब्रह्मराक्षस बनेंगे

और प्रत्येक पूर्णिमा को सौ मृत्युओं का कष्ट भोगेंगे। इसलिए इस कष्ट से बचने के लिये वे प्राकृतिक मृत्यु का वरण नहीं करना चाहते हैं। वे अपनी आत्मा को श्मशानेश्वर को समर्पित कर देते हैं ताकि उनकी आत्मा श्मशानेश्वर की दास हो जाने के पश्चात ब्रह्मराक्षस योनी में पुनर्जन्म न ले सके। अर्थात वे श्मशानेश्वर को अपना ईष्ट चुन लेते हैं। मनुष्य के आत्मोत्सर्जन अथवा प्राणोत्सर्जन के पश्चात उसके अवचेतन मस्तिष्क में तीन दिन तक उसकी चेतनाएं और वासनाएं सुप्तावस्था में उपस्थित रहती हैं और यदि इन तीन दिनों में कोई भटकती आत्मा उसकी जड़ काया में प्रवेश कर जाती है तो आत्मा की ऊर्जा से वे वासनाएं और चेतनाएं फिर से जाग जाती हैं। यही अवस्था मृत काया के प्रेतबाधित हो जाने की अवस्था कहलाती है। ऐसी अवस्था न आ सके, इसीलिये शास्त्रोपयुक्त नीती से दाह-संस्कार करके मृत काया को नष्ट कर दिया जाता है। साधक की आत्मा को दास बना लेने के बाद श्मशानेश्वर धीरे-धीरे उसकी काया में प्रतिस्थापित होने लगता है। प्रतिस्थापन की यह प्रक्रिया तीन दिनों में पूर्ण होती है। इस दौरान साधक मरणासन्न अवस्था में निश्चल पड़ा रहता है। तीसरे दिन का अंत होते ही साधक की चेतनाएं और वासनाएं विलुप्त होने से पूर्व ही श्मशानेश्वर की असीम शक्तियाँ प्राप्त करके पुनर्जागृत हो उठती हैं।"

"हे जगद्जननी! इसका तात्पर्य तो ये हुआ कि अभयानन्द की काया पर श्मशानेश्वर के आधिपत्य की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है।" महाराज की वाणी भयभीत हो उठी- "किंतु उसे ये सिद्धी कैसे प्राप्त हुई?"

"श्मशानेश्वर जब किसी साधक की काया को धारण करता है तो वह तब तक उस साधक की काया को नहीं छोड़ता, जब तक कि कोई दूसरा साधक अनुष्ठान के जरिये उसे अपनी आत्मा सौंपकर अपनी काया में प्रविष्ट होने का आमंत्रण न दे दे।"

"अर्थात अभयानन्द से पूर्व श्मशानेश्वर किसी अन्य साधक की काया में निवास कर रहा था?"

"सत्य अनुमान लगाया आपने राजन। अभयानन्द ने उसी साधक के सानिध्य में रहकर यह सिद्धी प्राप्त की होगी।"

"ओह!" न्यायाधीश के होठों से अस्फुट स्वर निकला- "इन बातों से निष्कर्ष ये निकलता है कि इस क्षण अभयानन्द की स्वयं की आत्मा मरघट में विचर रही है और उसकी काया में धीरे-धीरे श्मशानेश्वर का प्रवेश हो रहा है।"

"और प्रवेश की यह प्रक्रिया तीन दिनों में पूर्ण हो जायेगी।"

"किंतु हमारे राज्य में ऐसा था कौन, जिसकी काया में श्मशानेश्वर निवास कर रहा था?"

"स्पष्ट उत्तर तो हमें भी नहीं ज्ञात है राजन किंतु एक बार हमें हमारे शिष्यों से ये समाचार प्राप्त हुआ था कि दक्षिण के जंगल में रहने वाले कापालिकों का सरदार अघोरा, श्मशानेश्वर का धारक था।"

"किंतु हमें तो राज्य में अघोरा के किसी उत्पात की शिकायत नहीं प्राप्त नहीं हुई थी।"

"श्मशानेश्वर की शक्तियों का कोई धारक किस प्रकार प्रयोग करेगा, यह उसकी वासना पर निर्भर करता है। संभव है कि अघोरा की वासनाओं के मार्ग में शंकरगढ़ बाधक न रहा हो, इसलिए हमें उसकी अमानवीय शक्तियों का सामना नहीं करना पड़ा किंतु अभयानन्द के संदर्भ में ऐसा नहीं है। उसकी मुख्य वासना राजकुमारी माया हैं और साथ ही साथ राज्य के सैनिकों ने उसके साथ जो दुर्व्यवहार किया था, वह उसका भी प्रतिशोध लेना चाहेगा। इसीलिए वह श्मशानेश्वर के रूप में शंकरगढ़ पर विनाश बनकर टूटेगा। संभव है कि वह भेड़िया-मानव का रूप चुने क्योंकि जीवित अवस्था में वह एक रक्तपिपासु और हिंसक मनुष्य था।" कहने के बाद कुलगुरु ने न्यायाधीश की ओर देखा- "शायद मुझे कहने की आवश्यकता नहीं है न्यायप्रमुख कि आपको अभयानन्द के लिए क्या दंड-प्रस्ताव प्रारित करना है।"

"श्मशानेश्वर उसकी काया में पूर्णतया प्रतिस्थापित हो जाए, इससे पूर्व ही हमें उसकी काया नष्ट करनी होगी।"

"हमें आपसे इसी बुद्धिमत्ता की आशा थी।" कुलगुरु ने मुस्कुराते हुए कहा।

JJJ

उस रात सम्पूर्ण शंकरगढ़ में ये राजाज्ञा प्रसारित कर दी गयी कि अभयानन्द को प्राचीन पीपल से बांधकर ज़िंदा जलाया जाएगा। मजबूत कलेजे वाले नागरिकों से ये आग्रह किया गया था कि वे बड़ी तादात में उपस्थित होकर इस लोमहर्षक घटना के साक्षी बनें ताकि वे आने वाली पीढ़ी को बता सकें कि किस प्रकार एक वहशी अपराधी अपने कुकृत्यों के कारण दर्दनाक मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

राज्य के इतिहास में अभयानन्द पहला अपराधी था, जिसे दंडस्वरूप जिंदा जलाया जाने वाला था। राज्य में दहशत का वातावरण न बनने पाये इसलिए ये प्रचारित नहीं किया गया था कि उसके शरीर में महापिशाच निवास कर रहा है लेकिन लोगों को ये हिदायत जरूर दी गयी थी कि जब उसे पीपल की ओर ले जाया जा रहा हो तो उस क्षण कमजोर दिल वाले पुरुष, गर्भवती महिलाएं और बच्चे उसके सम्मुख न आयें। उस रात शंकरगढ़ की आबोहवा में दहशत घुल गयी थी।

'अभयानन्द का जीवित दाह-संस्कार किया जाने वाला है।'

जिसने भी सुना, उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसमें इतना भी साहस नहीं रहा कि वह बुराई के सर्वनाश की उस अद्भुत घटना का साक्षी बनने के लिए पीपल के पेड़ तक जा सके। कुल जमा पचास-साठ नागरिक ही ऐसे थे, जो इस लोमहर्षक घटना को आँखों से देखने का साहस जुटा पाए थे। वे कारागार की इमारत के बाहर मशाल लिये हुए खड़े थे। उनकी संख्या की दोगुनी संख्या में वहाँ सैनिक उपस्थित थे। कुलगुरु आचार्य दिव्यपाणी, महाराज उदयभान सिंह और राज्य के गणमान्य लोग भी वहाँ मौजूद थे।

अभयानन्द को बाहर लाया जा चुका था। उसका शरीर अब भी पहले की तरह जड़ अवस्था में था। शारीरिक परिवर्तन बस इतना ही हुआ था कि उसके जबड़े के दोनों किनारों के दांत नुकीले होकर बाहर निकल आये थे, हाथ-पैर के नख बढ़ने लगे थे और शरीर पर भेड़िये के खाल की पतली परत चढ़नी आरंभ हो
गयी थी।

'महाराज ने सर्वथा उचित निर्णय लिया है।'

'जगद्जननी ने हमारी विनती सुन ली।'

'इस पिशाच को जला देना ही राज्य और मानवता के हित में है।'

दिव्यपाणी के आदेश पर अभयानन्द का शरीर एक काले कपड़े में ठीक उसी प्रकार लपेट दिया गया, जिस प्रकार किसी शव को कफ़न में लपेटा जाता है। अभयानन्द ने कोई प्रतिकार नहीं किया। धूपबत्ती का एक मोटा बण्डल जलाकर वातावरण को सुगंधित किया गया तत्पश्चात दिव्यपाणी ने कमण्डल का जल अंजुली में लेकर गीता का श्लोक उच्चारित किया:

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।[1]

दिव्यपाणी ने जैसे ही जल को अभयानन्द पर छिड़का, उसकी ओर से प्रतिक्रिया हुई। वह यूँ फड़फड़ाया मानो उसका दम घुट रहा हो।

“श्मशानेश्वर क्रोधित हो रहा है। इसे धातु की जंजीरों में जकड़ो। शीघ्रता करो।”

पहले से तैयार सैनिक आदेश के पालन में जुट गये।

“अभयानन्द की कोठरी का शुद्धिकरण कर दो।” दिव्यपाणी ने शिष्यों को आदेश दिया- “उसके दूषित औरा को नष्ट करने के लिए ये आवश्यक है।”

उपर्युक्त कार्य हेतु नियुक्त किये गये शिष्य वहाँ से प्रस्थान कर गये।

“इसे प्राचीन पीपल तक घसीटते हुए लाया जाय। इसे जीवित नहीं, मृत समझो। ये उसी क्षण मृत्यु को प्राप्त हो गया था, जिस क्षण इसने अघोरा के शरीर में निवास करने वाले श्मशानेश्वर का आह्वान किया था और उसे अपनी काया में आमंत्रित किया था। इससे पूर्व कि श्मशानेश्वर, इसकी काया में पूर्णतया प्रतिस्थापित हो जाए, हमें इसके शरीर को नष्ट करना होगा। ले चलो इसे।

शिकंजों में जकड़ा अभयानन्द छटपटाया लेकिन सैनिकों ने उस पर कोई दया नहीं दिखाई और उसे घसीटते हुए गंतव्य की ओर ले जाने लगे।

JJJ

द्विज के साँसों की गति तेज थी। वह देवी-मंदिर के आहाते में खड़ा था और दूर नजर आ रहे मशालों की लौ के उस समूह को देख रहा था, जो राज्य के बाहर स्थित पुराने पीपल की ओर बढ़ रहा था। गर्भगृह में दीप प्रज्ज्वलित था। पुजारी बाबा राज्य में हुई मुनादी को सुनकर अभयानन्द के ‘दाह-संस्कार’ में गये हुए थे जबकि वह अस्वस्थ्यता का बहाना करके मंदिर में ही रुक गया था

“वे ले जा रहे हैं। वे अभयानन्द को ले जा रहे हैं।” द्विज व्यग्र भाव से बड़बड़ाया- “ये क्या कर दिया मैंने। ईश्वर मुझे कभी क्षमा नहीं करेगा। अभयानन्द के साथ जो अमानवीय घटना घटित होने वाली है, उसका निमित्त मैं ही हूँ। मैं पाप का भागी हूँ। यशप्राप्ति की लालसा और माया की आसक्ति में मुझे ये स्मरण ही नहीं रहा कि...।”

द्विज ने आगे का कथन जान-बूझकर अधूरा छोड़ दिया। उसके चेहरे पर नजर आती व्यग्रता आँसुओं में परिणित होकर आँखों से बहकर गालों पर लुढ़क आयी। वह कई क्षणों तक आँखें मूंदे हुए आत्ममंथन करता रहा। फिर उसने आँखें खोलीं। भीड़ के कोलाहल का धीमा स्वर मंदिर तक आ रहा था। वह अपने स्थान से उठा और गर्भगृह में प्रविष्ट हो गया। घंटे की ध्वनि उत्पन्न करने के बाद वह हाथ जोड़कर भगवती के सम्मुख नतमस्तक हो गया।

“आप तो अंतर्यामिनी हो माँ। आप तो मेरी व्यग्रता का कारण समझ रही हो। ये ज्ञात होते हुए भी कि अभयानन्द निरीह पशुओं का रक्त पीता था, वह बलिवेदी पर मासूमों इंसानों की बलि चढ़ाता था; मैं उसके लिए व्यथित हूँ और इसका कारण आपके नेत्रों से ओझल नहीं है। उसके दुष्कर्मों का भयावह दंड देखकर मेरे हृदय में करुणा का जो भाव जागृत हो रहा है, उससे आप भी अवगत हो। मेरा मार्गदर्शन करो भगवती। मैं किसका चुनाव करूँ? शंकरगढ़ की प्रजा के हित का या फिर उस अभयानन्द के हित का, जो....।” द्विज ने एक बार फिर अपना कथन अधूरा छोड़ दिया।

वह नतमस्तक होकर सिसकता रहा। दीपक के सुनहरे प्रकाश में भगवती के सुन्दर, तेजोमय और कान्तियुक्त मुखमंडल पर मुस्कान नजर आ रही थी। मानो वे द्विज की दुविधा पर मुस्कुरा रही थीं। विधाता के रचे हुए उस प्रारब्ध पर मुस्कुरा रही थीं, जो न केवल शंकरगढ़ में भीषण रक्तपात का कारण बनने वाला था अपितु द्विज के जीवन में आने वाले एक बड़े परिवर्तन का सूत्रधार भी बनने वाला था।

JJJ

“आज अभयानन्द जिस दशा को प्राप्त होने वाला है, वह बुराई पर अच्छाई के विजय का एक नवीन उदाहरण होगा। एक आततायी के पापों का भीषण दंड होगा। हमें स्मरण है कि ये वही नराधम है, जिसने निर्धन बिरजू के लहू से एक पिशाच के चरण धोए, जिसने राजकुमारी माया का मार्ग रोकने का दुस्साहस किया और जिसका सामना करने से तुम लोग सदैव कतराते रहे। ये मृत्यु को प्राप्त हो चुका है। अब इसका शरीर मरघट के एक भयानक पिशाच को पोषण प्रदान कर रहा है। इसलिए इसके शरीर को नष्ट करना अनिवार्य है। जिस प्रकार तुम मोह के बंधनों से मुक्त होकर अपने किसी प्रिय की निष्प्राण काया का दाह-संस्कार करते हो, उसी प्रकार तुम्हें इस पिशाच का भी दाह-संस्कार करना है। तुममें से प्रत्येक के हाथ में मशाल है। मेरा संकेत प्राप्त होते ही तुम्हें अपने-अपने मशालों को इस नराधम पर उछालकर इसे इसके दुष्कृत्यों का दंड देना है। यही इसकी नियति है। परमात्मा ने इसका अंत इसी प्रकार होना सुनिश्चित किया है।”

दिव्यपाणी प्राचीन पीपल के सम्मुख उपस्थित लगभग पचास की तादात वाले जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। अभयानन्द को पीपल के तने से बाँध दिया गया था। उसके चेहरे से काला कपड़ा हटा दिया गया था ताकि शंकरगढ़ के लोग खौफ का पर्याय बन चुके अभयानन्द के चेहरे पर भी खौफ देख सकें लेकिन स्थिति विपरीत थी।

अभयानन्द का मुखमंडल भयानक हो उठा था। उसके चेहरे समेत सिर पर पशुओं की भांति बाल उगने आरंभ हो गये थे। आँखें पूरी तरह भेड़िये की आँखों में तब्दील हो गयी थीं लेकिन उन आँखों में भय नहीं बल्कि दहकते अंगारों सी लालिमा थी। वह तने से छूटने का प्रयास कर रहा था लेकिन शिकंजों की खनखनाहट के स्वर के साथ उसका हर प्रयास विफल हो जा रहा था।

“हमारे शरीर को नष्ट करना इतना सहज नहीं है मूर्खो!” अभयानन्द चिंघाड़ा- “हमने इसे हमारे आराध्य देव श्मशानेश्वर को भेंट कर दिया है। वे स्वयं इसकी रक्षा करेंगे। वे इसे माध्यम बनाकर अपने विकराल स्वरुप में अवतरित होंगे। शंकरगढ़ उनका भयानक शाप झेलेगा। भीषण रक्तपात से इस राज्य की धरती लाल हो उठेगी। यह राज्य इस सीमा तक जनशून्य हो जाएगा कि आने वाली पीढ़ियाँ इसे श्मशानगढ़ के नाम से स्मरण करेंगी।”

अभयानन्द का रूप और उसकी भीषण गर्जना देख प्रत्येक प्राणी ये अटकलें लगा रहा था कि यदि ‘काल’ मानव रूप में कहीं रहता होगा तो वह अभयानन्द जैसा ही दिखता होगा। प्रचंड ज्वाला के साथ लपलपाती मशालों को पीपल की जड़ में रखने भर की देरी थी कि उसके तने से बंधे अभयानन्द के जिस्म का आग की लपटों से घिर जाना था लेकिन किसी में भी इतना साहस नहीं था कि वह मशाल लेकर सबसे पहले आगे बढ़ता। अभयानन्द का खौफ उनके मानस पटल पर पत्थर की लकीर की भांति अंकित था। दिव्यपाणी ने एक सैनिक के हाथ से मशाल लिया। महाराज समेत अन्य गणमान्य लोगों ने भी उनका अनुसरण किया।

“सच्चिदानन्द परमेश्वर तुम्हें इस दूषित काया से मुक्त करें। तुम्हें बोध करायें कि तुमने उस दुर्लभ मानव-योनी का दुरुपयोग किया है, जिसे धारण करने हेतु देवगण भी तरसते हैं। तुमने अपना सम्पूर्ण जीवन वाममार्गी साधना में व्यतीत किया है। तामसी शक्तियों को साधने की लालसा के कारण तुम्हारे विचार भी तामसिक हो चुके हैं। मानवों के कल्याण के लिए तुम्हारा वध अत्यावश्यक है। ॐ शांति:!”

दिव्यपाणी ने अपना मशाल अभयानन्द पर उछाल दिया। उसके होठों से भयमिश्रित चीत्कार निकली लेकिन किसी को भी उस पर दया नहीं आयी क्योंकि वह दया का पात्र नहीं था। देखते ही देखते अनगिनत मशाल उस पर आकर गिरे और पीपल का तना भयानक आग की चपेट में आ गया।

JJJ

लम्बे समय से सिसक रहे द्विज ने कोई ध्वनि सुनकर चेहरा ऊपर उठाया। सामने कुछ नहीं था, सिवाय सुनहरे प्रकाश में चमकती भगवती की प्रतिमा के।

“क्या ये संकेत है?” द्विज ने मानो प्रतिमा से पूछा- “क्या ये संकेत है कि मैं...। हाँ, नि:संदेह ये मेरी दुविधा के अंत का संकेत है।”

बदहवास सा द्विज गर्भगृह से बाहर आया। उसने आकाश की ओर देखा, जहाँ अचानक ही काले बादल मंडराने लगे थे। हवाएं तेज हो गयी थीं।

“मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया। भगवती ने मेरे विरोधाभास का अंत कर
दिया।”

प्रकृति के रुप में अकस्मात हुए इस परिवर्तन पर द्विज झूम उठा। वह प्रांगण के मुख्य द्वार की ओर दौड़ पड़ा। यही वह क्षण था, जब गर्भगृह का दीपक बुझ गया।

N

10

P

“आगे क्या हुआ कुलगुरु?”

कुलगुरु के खामोश होते ही अरुणोदय, चंद्रोदय और दिग्विजय ने समवेत स्वर में पूछा। जवाब में कुलगुरु ने आगे के भोजपत्रों को उलटा-पलटा और उन पर दर्ज पत्रक-संख्या का अवलोकन किया।

“क्या हुआ?” दिग्विजय ने आशंकित लहजे में पूछा।

“ऐसा कैसे हो सकता है?” कुलगुरु के स्वर में अविश्वास का भाव था- “भोजपत्र गायब कैसे हो सकते हैं?”

“क्या?” तीनों भाईयों के पैरों तले जमीन खिसक गयी- “क्या आगे के भोजपत्र गायब हैं?”

“हाँ, वे सभी भोजपत्र गायब हैं, जिनमें अभयानन्द-प्रकरण की आगे की कथा है। देवी-मंदिर से द्विज के प्रस्थान के बाद क्या हुआ, इससे सम्बंधित कोई भोजपत्र इस ग्रंथ में नहीं है। भोजपत्र गायब किये गये हैं।”

“लेकिन ऐसा कौन कर सकता है?” चंद्रोदय ने व्याकुल लहजे में कहा- “इस ग्रंथालय में हम तीनों भाईयों के अलावा किसी दूसरे को आने की इजाजत नहीं है। इसकी चाबी बड़े भइया हमेशा अपने जनेऊ में धारण किये रहते हैं।”

“फिलहाल भोजपत्रों के गायब होने से यही सिद्ध होता है कि कोई अन्य भी था, जो तुम तीनों से छिपकर इस ग्रंथालय में प्रविष्ट हुआ था। उसने भोजपत्र गायब किया क्योंकि शायद वह नहीं चाहता था कि अभयानन्द की इसके बाद की कहानी के विषय में हम जानें। संभव है कि उसने दिग्विजय के अनजाने में इस ग्रंथालय की नकली चाबी तैयार कर ली हो।”

“लेकिन ऐसा कौन कर सकता है? जहाँ तक मुझे याद है, मैंने चाबी को कभी खुद से अलग नहीं किया।”

“कोई तो जरूर है दिग्विजय, जिसने ये रहस्यमयी कार्य किया है। मरघट से ताबूत का गायब होना और अभयानन्द का लौटना किसी षड़यंत्र के तहत ही संभव हुआ लगता है।”

माहौल गंभीर हो गया। वातावरण में अब केवल कुलगुरु के खड़ाऊँ की ‘खट-खट’ गूँज रही थी, जो हाथ पीछे किये हुए टहलने लगे थे।

“अब हमें ये कैसे मालूम होगा कि आगे क्या हुआ था?” लम्बी खामोशी के बाद अरुणोदय ने मुँह खोला।

इससे पहले कि कुलगुरु कोई जवाब देते, ग्रंथालय के दरवाजे पर दस्तक हुई। चारों की निगाहें दरवाजे पर गयीं। वहाँ खड़े नौकर ने सूचित किया:-

“प्रयागराज के किसी थाने से एक कांस्टेबल आया है ठाकुर साहब।”

JJJ

दरवाजे पर थाप पड़ी लेकिन अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी।

“दरवाजा खोलो यश!” दस्तक देने वाली महिला ने आवाज़ भी लगाई मगर इस बार भी भीतर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी। महिला के हाथ में दोपहर के भोजन की थाली थी।

“तुम ठीक तो.....।” अंततः वह परेशान होकर दरवाजे को झकझोरना चाही मगर उसके आगे के लफ्ज गले में ही घुटकर रह गये। तेज धक्के से दरवाजे के कपाट स्वतः खुल गये। असमंजस में डूबी महिला कमरे में दाखिल हुई लेकिन उसके बाद एक भी कदम आगे न बढ़ा सकी। अंदर के दृश्य पर नजर पड़ते ही उसका समूचा जिस्म थरथरा उठा। दोनों हाथ भोजन की थाली का भार सम्भाल न सके और थाली जमीन पर गिर पड़ी।

महिला पहले तेज स्वर में चीखी और फिर इस कदर जड़ हो गयी, मानो यह उसके जीवन की आखिरी चीख रही हो।

JJJ

दोपहर के दो बज गये थे। साहिल और संस्कृति हीलिंग सेंटर से बाहर आए।

“अभयानन्द के दिये हुए अल्टिमेटम के सोलह घण्टे हम गंवा चुके हैं। अब हमारे पास केवल आठ घण्टे हैं।” साहिल झुंझलाया- “हम अब भी बैकफुट पर ही हैं। ऐसा कोई भी रहस्य हमारे हाथ नहीं लगा, जिसे हम अभयानन्द खिलाफ इस्तेमाल कर सकें।”

“मुझे जो विजन्स नजर आये, उसके आधार पर डॉक्टर त्रिवेदी ने क्या सलाह दी?”

“डॉक्टर ने जो कुछ बताया, उसे केवल एक ही लाइन में समराइज किया जा सकता है।”

“और वह लाइन है क्या?”

“हमारे अनुमान सही निकले। तुम माया की पुनर्जन्म हो। तुमने भी वही स्केचेज बनाए, जो यश ने बनाये थे। एण्ड नाउ आयम श्योर अबाउट दैट; यश, द्विज का पुनर्जन्म है। डॉक्टर त्रिवेदी ने अगर कुछ नया बताया तो केवल यही कि तुम्हारे अंदर आग से लगने वाला डर तुम्हारे पिछले जन्म से आया है क्योंकि पिछले जन्म में तुम्हारी मौत जलकर हुई थी।”

“ये सारे अनुमान तो हम पहले ही लगा चुके हैं। केवल इन चीजों से हमारी कोई प्रॉब्लम सॉल्व नहीं होने वाली।”

“इससे अधिक जानने के लिए तुम्हें कई सेशन अटेंड करने होंगे और इसके लिए हमारे पास वक्त नहीं है। हमारे पास केवल आठ घण्टे हैं। हमें जो कुछ करना है, इन्हीं आठ घंटों में करना है।”

“अब हम कहाँ जाएंगे?”

“प्रयागराज की एक पब्लिक लाइब्रेरी में। मैं वहाँ जाकर पैरानॉर्मल घटनाओं और ऑकल्ट पर आधारित कुछ रेफरेंस बुक की स्टडी करना चाहता हूँ। हो सकता है कि हमें कोई सुराग मिले।”

“यानी कि अब हमारे पास केवल यही एक रास्ता है कि हम किताबों में ब्रह्मराक्षस को मारने की विधि ढूंढ़े।” संस्कृति हताश स्वर में बोली- “जो कि मिलनी मुश्किल है।”

साहिल कुछ नहीं बोला। चेहरे पर परेशानी के भाव लिए हुए वह प्रतापगढ़ से आने वाली किसी बस का इंतजार करने लगा।

“आप कुछ बोलते नहीं?”

“मैं कोशिश कर रहा हूँ और फिलहाल कोशिश ही हमारे हाथ में है। दुआ करो कि कोई रास्ता निकल आए।”

“मेरे साथ जो भी अजीबोगरीब हुआ, उसकी वजह एक ताबूत का बाहर आ जाना है लेकिन यश के साथ ऐसा क्या हुआ रहा होगा, जो उसे रहस्यमय सपने आने शुरु हुए?”

“वही तो पता नहीं चल पा रहा है।”

“आई थिंक एक बार यश को भी रिवर्स मेमोरी थेरेपी दिलवानी चाहिए।”

“नहीं। वह इसके लिए मेंटली फीट नहीं है। वह ऑलरेडी ऑउट ऑफ मेमोरी है। अधिक मेंटल प्रेशर देने पर वह पागल हो सकता है।”

संस्कृति खामोश रह गयी। थोड़ी देर बाद साहिल की तन्द्रा सेलफोन की रिंग से भंग हुई।

“हैलो।” कॉल रिसीव करने के बाद उसने सामान्य स्वर में कहा लेकिन दूसरी ओर से आयी सूचना सुनते ही उसके लहजे में बदहवासी घुल गयी- “लेकिन...लेकिन ऐसा हुआ कैसे?....म....मैं आ रहा हूँ।”

“क्या हुआ?” साहिल के कॉल डिसकनेक्ट करते ही संस्कृति ने रोमांचित लहजे में पूछा।

“यश ने अपने जिस्म पर चाकू से कई गहरे जख्म बना लिए हैं। प्राइमरी ट्रीटमेंट के लिए उसे गाँव के सरकारी अस्पताल में एडमिट कराया गया है। सिचुएशन आउट ऑफ़ कण्ट्रोल होने पर उसे कहीं और भी रेफर किया जा सकता है। हमें गाँव जाना होगा।” सहिल ने घबराए हुए स्वर में कहा।

संस्कृति के रोंगटे खड़े हो गए। रोमांच के कारण उसके होठों से शब्द नहीं फिसल सके।

JJJ

“हमें यहाँ बुलाने की वजह?” दिग्विजय ने सख्त स्वर में पूछा। उनका अंदाज बता रहा था कि थाने में बुलाया जाना उन्हें नागवार गुजरा था।

“आपको एक लाश की शिनाख्त करनी है।” सामने बैठे पुलिस ऑफिसर ने नम्र लहजे में कहा, जिसके नेमबैज पर समर दीक्षित अंकित था।

“लाश की शिनाख्त?” दिग्विजय का लहजा किसी अनिष्ट के भय से कांपा लेकिन समर का अगला वाक्य सुनकर उन्होंने राहत की साँस ली।

“एक आदमी की लाश है, जो हमारे लॉकअप में पड़ी है। उसके बारे में पड़ताल करने पर हमें जो पता चला है, उसी के बाबत कुछ पूछताछ करनी है। प्लीज मेरे साथ आइए।”

समर, दिग्विजय को लेकर लॉकअप में पहुँचा। उसके इशारे पर एक कांस्टेबल ने लाश पर से कपड़ा हटाया। दिग्विजय उस लाश को पहचानते थे।

“इसका नाम भीमा है। स्लम एरिया की एक झोपड़पट्टी में रहता था। वहीं से इसकी लाश बरामद हुई। शुरुआती जांच में हमें पता चला है कि ये आपके यहाँ नौकर था।” समर ने बताया।

“हाँ, तीन महिने पहले ही नौकरी छोड़ी थी इसने।”

“वजह?”

“कोई ख़ास वजह नहीं बताया था।”

“कब से आपके यहाँ था?”

“काफी सालों से।”

कांस्टेबल ने लाश को फिर से ढक दिया। समर, दिग्विजय को लेकर केबिन में आया और मेज की दराज से कुछ चीजें निकालकर उनके सामने फैला दिया। उनमें विदेश यात्रा से सम्बन्धित दस्तावेज और कुछ तस्वीरें थीं।

“ये हमें भीमा की झोपड़ी से बरामद हुए। वह हाल ही में कैंब्रिज से लौटा था। सुनने में ये बात बड़ी फ़िल्मी और यकीन के बूते से बाहर की लगती है कि वह अदना सा नौकर, जो शायद पढ़ा-लिखा भी नहीं था और जिसके पास रहने और खाने के लाले थे; विदेश घूम आया था। क्या आप उसे इतनी तनख्वाह देते थे ठाकुर साहब?”

“क्या एक नौकर को इतनी तनख्वाह दी जाती है?” दिग्विजय ने समर के सवाल का जवाब सवाल की शक्ल में ही दिया।

“क्या वह पढ़ा-लिखा था, जो एक फॉरेन टूर को एडजस्ट कर सका? क्या उसके पास ऐसे संसाधन थे, जो यूरोपियन देश की यात्रा की कागजी कारवाईयों को अकेले पूरा कर सका? उसके पास इतने पैसे, इतने सोर्सेज आये कहाँ से?”

“क्या ये पता लगाना मेरा काम है?” दिग्विजय के बर्ताव में अब भी नागवारी थी।

“जी नहीं।” समर ने धैर्य धारण किये हुए कहा- “मगर इस बाबत अगर आपके पास कोई सूचना होगी तो वह हमारे लिए मददगार साबित हो सकती है।”

“भीमा भी बाकी नौकरों जैसा ही था इसलिए ये जानकर हैरानी तो हमें भी हो रही है कि वह इतनी आसानी से विदेश कैसे घूम आया।”

“हैरानी तब नहीं होगी आपको, जब आप इस पूरे मामले को पुलिस की निगाहों से देखेंगे।”

“क्या मतलब?”

“मतलब ये कि वह इंसान नौकर था ही नहीं। वह एक ऐसी शख्सियत था, जिसे कोई मकसद साधने के लिए राजमहल में नौकर के रूप में बैठाया गया था।”

‘अभयानन्द का लौटना किसी षड्यंत्र के तहत ही संभव हुआ लगता है।’

दिग्विजय के जेहन में कुलगुरु का उपर्युक्त कथन कौंधा।

“आपकी बेटी भी तो कैंब्रिज में ही थी।” समर ने आगे कहा- “वह भी हाल में ही इण्डिया लौटी है। क्या इस बात की संभावना नहीं बनती कि भीमा के कैंब्रिज जाने का कनेक्शन आपकी बेटी से जुड़ा हो?”

“इसका क्या कारण हो सकता है?”

“कई कारण हो सकते हैं। हो सकता है कि आपका कोई राइवल....।”

“नहीं।” समर की बात पूरी होने से पहले ही दिग्विजय ने लापरवाह अंदाज में कहा- “कैंब्रिज में संस्कृति के साथ कुछ नहीं हुआ था।”

“यानी कि वहाँ भीमा और उसका आमना-सामना नहीं हुआ था।”

"जी नहीं और ऐसा होना मुमकिन भी नहीं है क्योंकि भीमा न तो संस्कृति को पहचानता था और न ही संस्कृति उसे। वह दस सालों से कैंब्रिज में ही थी। स्कूल और डिग्री की पढ़ाई उसने वहीं से पूरी की थी।"

"संस्कृति इस वक्त कहाँ है?"

"शंकरगढ़ में ही।"

थोड़ी सी असहजता के बाद दिग्विजय ने झूठ बोल दिया। उनके झूठ बोलने के पीछे छिपे दो कारणों में से पहला कारण ये था कि उन्हें संस्कृति को ढूढ़ने के मामले में पुलिस की कार्यप्रणाली से कहीं ज्यादा भरोसा अपने आदमियों पर था और दूसरा ये कि वे बेटी के अचानक घर से चले जाने की घटना को अखबारों की सुर्खियां नहीं बनने देना चाहते थे।

"हो सकता है हमें संस्कृति से भी मिलना पड़े। बाई द वे, अब आप इन तस्वीरों को देखिए। ये भी भीमा के ठिकाने से ही बरामद हुए हैं।"

तस्वीरों की संख्या तीन थी। एक तस्वीर किसी नवयुवक की थी, दूसरी तस्वीर एक अधेड़ उम्र की महिला की थी और तीसरी तस्वीर जमीन पर खून से लिखी इबारत की थी। उपर्युक्त चीजों ने दिग्विजय की नजर में साहिल की बातों को पूरी तरह सही ठहरा दिया।

"खून से लिखी गयी ये इबारत भीमा की लाश के पास उसी के खून की स्याही से लिखी हुई पाई गयी थी। इस युवक की तस्वीर भी हमें उसके कैंब्रिज यात्रा के दस्तावेजों में मिली। क्या आप इस युवक को जानते हैं?"

दिग्विजय ने इनकार में सिर हिलाया।

"क्या आप किसी ऐसे इंसान को जानते हैं, जिसकी कलाई पर स्वास्तिक चिह्न हो और जिसके मरने की बात इस खूनी इबारत में की गयी है?"

"शायद वैभव की कलाई पर रहा हो क्योंकि फिलहाल तो वही है, जिसकी मौत रहस्यमयी परिस्थितियों में हुई है।"

"हम आलरेडी पता कर चुके हैं। उसकी कलाई पर कोई स्वास्तिक चिह्न था।" दिग्विजय ने कुछ नहीं कहा तो समर ने आगे कहा- "हमने भीमा के ठिकाने से तंत्र-मंत्र की कुछ किताबें भी मिली हैं।"

"तंत्र-मंत्र की किताबें?" दिग्विजय के कान खड़े हो गये।

"जी हाँ। वह तांत्रिक गतिविधियों में लिप्त था। हमें उसकी झोपड़ी में मौजूद तंत्र की एक किताब के बीच इस औरत की तस्वीर मिली।"

दिग्विजय ने उक्त तस्वीर पर नजर डाली।

"इसका नाम अरुणा है।" समर ने कहा- "स्थानीय लोगों के बयान के मुताबिक भीमा इससे मिलता-जुलता था। ये खुद भी उससे मिलने बस्ती में आया करती थी। क्या आप इसे जानते हैं?"

"नहीं।"

"इस महिला को लोग भयानक तांत्रिक बताते हैं। इसके खिलाफ बच्चों को चुराने के अनगिनत केस दर्ज हैं। लोगों का कहना है कि ये तांत्रिक अनुष्ठानों में नवजात शिशुओं की बलि चढ़ाती है। हालाँकि अभी तक ये पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ी है।"

दिग्विजय की आँखों के आगे तारे नाच रहे थे। *'तांत्रिक महिला', 'नरबली',*
'भीमा का उस महिला से जान-पहचान होना', 'इतिहास के पुलिन्दे से भोजपत्रों को गायब होना'; ये सभी घटनाएं उन्हें एक क्रम का रुप लेती हुई नजर आने लगीं।

'इसका मतलब कि कुलगुरु का कहना सही है। अभयानन्द की वापसी एक षड़यंत्र के तहत हुई है।'

"क्या मैं इस महिला की तस्वीर को अपने साथ ले जा सकता हूँ।" प्रत्यक्ष में उन्होंने कहा।

"ऑफकोर्स।"

"मैं अपने सोर्सेज के जरिए भी इसकी तलाश करवाऊँगा।"

"पिछले दिनों में जो कुछ भी हुआ है, वह साधारण नहीं है ठाकुर साहब। आपकी बेटी द्वारा ठुकाराए जाने की अगली रात को ही मिनिस्टर के बेटे की दर्दनाक हत्या हुई। दिल दहला देने वाले इस हत्याकाण्ड में 'माया' जैसा एक रहस्यमयी नाम उभरकर सामने आया। आप मेरा मतलब तो समझ रहे हैं न?"

"आप निश्चिंत रहिए ऑफिसर। हम कानून की हर संभव मदद करेंगे।"

"थैंक्स फॉर अ नाइस मीटिंग।" समर ने औपचारिक मुस्कान के साथ कहा।

JJJ

"यश की हालत अब कैसी है पापा?" लॉबी में द्रुतगति से दाखिल हुए साहिल के पाँव सीधे उस आदमी के पास जाकर ठिठके, जो वार्डबॉय से बातें कर रहा था। जवाब देने के बजाय आदमी ने पहले साहिल को घूरा फिर उसके साथ खड़ी संस्कृति को।

"यश की हालत अब कैसी है?" साहिल ने हाँफते हुए अपना सवाल दोहराया।

"स्थिति अब काबू में है। भाग्य अच्छा था, जो खून अधिक बहने से पहले ही तुम्हारी माँ कमरे में पहुँच गयी।"

"थैंक गॉड।" साहिल का मन किसी अज्ञात के प्रति श्रद्धा से भर उठा। संस्कृति ने भी राहत की साँस ली।

"अभी ईश्वर को धन्यवाद देने का वक्त नहीं आया है।" पिता का सख्त स्वर सुन साहिल अचकचाया जबकि पिता ने उसकी भाव-भंगिमाओं का बारीक अध्ययन करते हुए तल्खी के साथ कहा- "क्या तुम हमसे कुछ छिपा रहे हो?"

"न..नहीं। ब...बि..बिल्कुल भी नहीं।" साहिल हकलाया।

"क्या यश को वास्तव में केवल वही बीमारी है, जो तुमने हमें बतायी? यानी कि क्लाइमेटिक चेंजेज की वजह से होने वाली मामूली सर्दी-खांसी?"

साहिल इस कदर असहज हो गया कि इस दफे कुछ नहीं बोल पाया।

"तुम्हारी हकलाहट बता रही है कि तुमने हमें यश के साथ हुए किसी गंभीर वाकये से अनजान रखा है।"

“आप...आपको ऐसा क्यों लगा कि मैं कुछ छिपा रहा हूँ।”

“क्योंकि यश ने खुद के साथ जो सुलुक किया है, डॉक्टर ने उसकी वजह सीवियर डिप्रेशन बतायी है। तुम दोनों भाई तो एक साथ ही रहते थे। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि उसके साथ ऐसी कौन सी घटना घटी कि वह अवसाद जैसी गंभीर मानसिक बीमारी का शिकार हुआ?”

“हो सकता है कि उसकी एकेडमिक लाइफ में कुछ हुआ रहा हो, जिसे उसने मुझसे नहीं... ।”

“पहले मेरी पूरी बात सुनो साहिल।” पिता ने क्रोध-मिश्रित स्वर में साहिल की बात काटते हुए कहा- “यश ने अपना बदन काटा, इसकी वजह को डॉक्टर ने डिप्रेशन का नाम दिया लेकिन उसने अपने बेडरुम में जो हरकत की है, उसकी वजह डिप्रेशन नहीं हो सकती।”

साहिल की धड़कनें तेज हो गयीं। यही हाल संस्कृति का भी हुआ।

‘तो क्या यश ने घर पर ऐसी कोई हरकत की है, जिससे लोगों को पता चल गया कि वह अपनी याद्दाश्त खोकर पूर्वजन्म और वर्तमान जन्म के बीच के गैप में उलझ गया है?’

“ये सही है पापा कि मैंने....।” प्रत्यक्ष में साहिल ने समर्पण कर दिया- “यश के केस को स्मूदली हैण्डल करने के लिए आपको उसकी असली बीमारी नहीं बतायी लेकिन आप यकीन कीजिए, मैं उसे कुछ नहीं होने दूँगा। सबकुछ ठीक कर दूँगा।”

“तुम्हारी बेवकूफाना हरकत से स्थिति बहुत गंभीर हो गयी है साहिल।” पिता ने चिंतातुर स्वर में कहा- “यश ने अपने कमरे में जो कुछ किया है, उसे देखकर तुम्हें भी आभास हो जाएगा कि उसकी बीमारी किस हद तक बढ़ चुकी है।”

“ऐसा क्या कर दिया है उसने?”

“तुम खुद जाकर देख लो।” पिता ने मुँह फेरते हुए कहा।

JJJ

घर की महिलाएं साहिल को एक अनजान लड़की के साथ देखकर चौंकी मगर साहिल ने उनके चौंकने की परवाह न करते हुए सीधे यश के कमरे का रुख कर लिया। संस्कृति उसकी परछाईं थी।

“क्या तुम हॉस्पिटल से आ रहे हो?” किसी ने पूछा।

“हाँ। यश अब ठीक है। उसके जख्मों की ड्रेसिंग कर दी गयी है। दर्द के एहसास से बरी रखने के लिए उसे बेहोशी का इंजेक्शन दिया गया है।” साहिल ने यश के कमरे की ओर भागते हुए जवाब दिया। संस्कृति की कलाई उसके हाथ में थी इसलिए उसके साथ संस्कृति को भी दौड़ना पड़ रहा था। घर के लोगों ने भी उसका अनुसरण किया। यश का बेडरुम दूसरी मंजिल पर था। जब घर के बाकी लोग ऊपर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि वे दोनों कमरे की चौखट पर खड़े होकर अंदर का दृश्य देख रहे थे।

“ओह...माय गॉड....।” संस्कृति ने घबराकर आँखें बंद कर ली- “ये सब आखिर हो क्या रहा है?”

कमरे का दृश्य देखने के बाद साहिल मानो ज्ञानशून्य हो गया। वह काँपते बदन और विस्फारित नेत्रों से सामने की दीवार पर खून से लिखे हुए वाक्यों को पढ़ रहा था:

‘मैंने पाप किया है।’

समूचा दीवार इसी एक वाक्य से भरा हुआ था। यदि केवल इतना ही होता तो शायद कम भयावह होता। उन दोनों के खौफजदा होने की असली वजह कमरे के फर्श पर खून से बनायी गयी एक आकृति थी, जो किसी शीशविहीन धड़ की थी। खून सूख जाने के कारण उस पर मक्खियाँ भिनभिनाने लगी थीं। पूरे कमरे में खून के छींटे फैले हुए थे और वस्तुएं बिखरी हुई थीं, जिनमें एक रक्तरंजित चाकू भी था।

“उसे रंग की तलाश थी।” वर्तमान हालात के साथ सामंजस्य बैठाने के बाद साहिल ने दहशत भरे स्वर में कहा- “रंग न मिलने पर उसने अपने बदन के खून को रंग के रुप में इस्तेमाल किया। उस पर कोई जुनून हावी हुआ और उसी जुनून के तहत उसे स्केच बनाने की तलब महसूस हुई।”

वह कम्प्यूटर टेबल पर मौजूद प्रिन्टर तक पहुँचा। प्रिन्टर का पेपर पीस चेक किया। वहाँ पेपर न पाकर वह छोटी बहन से मुखातिब हुआ- “क्या तुमने यहाँ से कुपियर पेपर निकाला था सुमन?”

“हाँ।” सुमन नाम से सम्बोधित लड़की ने जवाब दिया- “मुझे प्रोजेक्ट वर्क के लिए कुछ प्रिन्टआउट्स चाहिए थे इसलिए मैंने वे पेपर्स खर्च कर डाले।”

“यानी कि सिस्टम का यूज करने के लिए तुम सुबह यहाँ आयी थी।”

“हाँ।”

“यश क्या कर रहा था उस वक्त?”

“भइया सोये हुए थे। मैंने उन्हें डिस्टर्ब नहीं किया था और प्रिन्ट्स निकालने के बाद सिस्टम ऑफ करके चुपचाप चली गयी थी।”

“तुमने कुछ देखा था कमरे में?”

“हाँ।”

“क्या?” साहिल का लहजा व्यग्र हुआ।

“स्टडी टेबल पर पेपरवेट के नीचे एक प्रिटिंग पेपर दबा हुआ था। मैंने उत्सुकतावश उस पेपर को देखा और डर गयी।”

“ऐसा क्या था उसमें?”

“एक स्केच था, जिसमें एक वेयरवुल्फ एक आदमी के कंधे में पीछे से दांत गड़ा रहा था।”

“तुमने ये बात किसी को बतायी क्यों नहीं?”

“मुझे लगा आपने वह स्केच तब बनाया होगा, जब छोटे भइया को छोड़ने आए थे और बाद में उसे अपने साथ ले जाना भूल गये होंगे। आप गॉथिक कॉमिक्स के लिए ऐसे स्केचेज पहले भी बना चुके हैं इसलिए मुझे ये बात अजीब नहीं लगी और मैंने किसी को नहीं बतायी।”

साहिल ने स्टडी टेबल की ओर देखा। वहाँ पेपरवेट के नीचे कोई कागज न पाकर उसने पूछा- “स्केच कहाँ है?”

सुमन बुकशेल्फ की ओर बढ़ी और अभीष्ट स्केच को एक किताब के बीच से निकालकर साहिल की ओर बढ़ा दी।

“मैंने इसे महफूज रखने के लिए एक किताब के पन्नों के बीच रख दिया था।”

साहिल स्केच को देखने लगा। इस बीच संस्कृति ने पूरे कमरे में निगाहें दौड़ायी। उसे महसूस हुआ कि वह हॉलीवुड की किसी हॉरर फिल्म के सेट पर है।

“जब आप कमरे में आयी थीं तो यश किस अवस्था में था?” साहिल माँ से मुखातिब हुआ।

“वह फर्श पर लहुलूहान पड़ा था। उसकी पलकें कुछ खुली और कुछ बंद थीं। वह आधी बेहोशी की हालत में था। उसके होठों से केवल यही निकल रहा था कि मैं पापी हूँ।”

“किस पाप की बात कर रहा था वह?” संस्कृति ने साहिल को लक्ष्य करके पूछा।

“पता नहीं।” साहिल ने व्यग्र भाव से होंठ चबाते हुए कहा- “शायद ये राज़ भी तुम दोनों के पिछले जन्म में ही छिपा हुआ है।”

संस्कृति ने वालक्लॉक की ओर देखा। वहाँ पाँच बजा देखकर उसका दिल बैठने लगा।

“डेडलाइन पास आ चुकी है।”

साहिल की बेचैनी बढ़ने लगी।

“स्केच बनाने का ये तलब भी उसी तलब जैसा रहा होगा, जिसके तहत वह पहले भी चार स्केचेज बना चुका था। वह तलब साधारण नहीं था तभी तो उसने अपनी जान की परवाह न करते हुए स्याही की कमी को पूरा करने के लिए अपने बदन को काटकर पानी की तरह खून बहाया।”

संस्कृति समेत हर कोई उस घड़ी की कल्पना करके सिहर उठा, जब यश अपने ही हाथों से अपने जिस्म पर चाकू चला रहा था।

“शुक्र है, उस उन्माद में उसने किसी नाजुक जगह पर चाकू नहीं फेरा।” माँ ने व्यथित लहजे में कहा- “लेकिन...लेकिन ये सब हुआ कैसे? उसे ये बीमारी लगी कैसे?”

“बहुत लम्बी कहानी है मम्मी।” साहिल इधर-उधर फुदकते हुए बोला- “अभी बताने का वक्त नहीं है हमारे पास।”

“यानी कि...यानी कि तुम्हारे पापा का अनुमान सही निकला। तुमने यश को लेकर कोई बड़ी बात हमसे छुपायी है।”

साहिल बगैर कोई जवाब दिए तेजी से कुछ सोचने लगा।

“क्या ये ऊपरी चक्कर है? हमें किसी तांत्रिक के पास जाना चाहिए?”

“नहीं।” साहिल ने सख्त स्वर में प्रतिरोध किया- “यश का केस लोगों को मूर्ख बनाने वाले नकली तांत्रिकों के बस का नहीं है।”

संस्कृति ने एक बार फिर वालक्लॉक की ओर देखा। मिनट की सुई पाँच मिनट आगे खिसक चुकी थी।

“वी नीड टू प्लान समथिंग।” वह हद से ज्यादा घबराए हुए स्वर में बोली।

“मेरे पास एक प्लान है लेकिन मैं श्योर नहीं हूँ कि वह काम करेगा।” कुछ देर तक की खामोशी के बाद साहिल ने कहा।

JJJ

“हमारा नौकर भीमा, जो गला रेतकर कत्ल कर दिया गया, वास्तव में नौकर नहीं था। वह अरुणा नाम की इस तांत्रिक औरत की ओर से राजमहल में जासूसी के काम में लगाया गया था।” दिग्विजय ने अरुणा की तस्वीर कुलगुरु की ओर बढ़ाते हुए कहा।

कुलगुरु ने तस्वीर थामा। उसे गौर से देखा।

“क्या आप इसे जानते हैं?”

कुलगुरु तुरंत जवाब देने के बजाय उस तस्वीर को निरखते रहे। उनकी निगाहें अरुणा के कानों से लटक रहे कुण्डल पर थीं।

“ये महिला सामान्य तांत्रिक नहीं है। ये कापालिकों के गौण नामक समुदाय की वंशज है क्योंकि गौण वंश की कापालिकायें ही कानों में ऐसे कुण्डल धारण करती हैं।”

“भीमा ऐसी कापालिका के सम्पर्क में क्यों था?”

“गोपनीय ग्रंथालय से शंकरगढ़ के इतिहास के भोजपत्र गायब हैं, ये जानते हुए भी तुम ये प्रश्न पूछ रहे हो?”

“अर्थात आप इसके प्रति आश्वस्त हो चुके हैं कि हमारे अनजाने में ग्रंथालय की नकली चाबी तैयार करवाकर भोजपत्र भीमा ने ही गायब किये?”

“यही सच है। ऐसे ही कार्यों के लिए तो वह राजमहल में नौकर बनकर आया था। अभयानन्द के लौटने के पीछे हमें जिस षड़यंत्र का आभास हुआ था, वह षड़यंत्र इसी अरुणा का रचा हुआ है।”

“भीमा की लाश के पास खून से लिखी एक इबारत पायी गयी थी, जिसमें इस बात की चेतावनी दी गयी थी कि कलाई पर स्वास्तिक निशान वाला कोई शख्स मरेगा। आप तो जानते ही हैं कुलगुरु कि संस्कृति दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक के साथ जन्मी है। वह आधी रात से ही गायब भी है। कहीं ऐसा तो नहीं कि....।” दिग्विजय ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

“नहीं ठाकुर। लिखे हुए संदेश के व्याकरण पर ध्यान दो। ‘मरेगा’ शब्द का प्रयोग किया गया है अर्थात जिस स्वास्तिक निशान वाले मनुष्य को चेतावनी दी गयी है वह पुरुष है, कोई स्त्री नहीं।”

इससे पूर्व की दिग्विजय कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करते, ड्राइंग हॉल के दरवाजे पर आहट हुई। आहट के कारण पर दृष्टि पड़ते ही वे चौंक पड़े। दरवाजे पर साहिल और संस्कृति थे।

“तुम...तुम आ गयी?” दिग्विजय पहले सुखद आश्चर्य से अभिभूत हुए तत्पश्चात साहिल को जलती निगाहों से घूरते हुए बोले- “तुम कहाँ ले गये थे इसे?”

“ये वक्त गुस्सा करने का नहीं है पापा।” संस्कृति आगे बढ़ी। उसने और साहिल ने रास्ते में ही तय कर लिया था कि प्लान में साथ देने के लिए दिग्विजय को कन्विंस करने का काम संस्कृति करेगी। उसने आगे कहा- “हमारा गाँव विनाश की दहलीज पर खड़ा है। वह आ गया है और अगर उसे रोका नहीं किया गया तो शंकरगढ़ में खून की बारीश होगी।”

“य...ये क्या...।”

“उसे बोलने दो।” दिग्विजय कुछ बोलने को उद्यत हुए ही थे कि कुलगुरु ने उनकी बात काट दी। संस्कृति की आवाज़ सुनकर राजमहल के सभी सदस्य और नौकर-चाकर ड्राइंग हॉल में इकट्ठे होने लगे थे।

“मैं सच कह रही हूँ पापा।” संस्कृति ने बेसब्र लहजे में कहा- “वह मेरे लिए वापस आया है। मैं ही माया थी। ताबूत में से उसने मुझे मेरे पिछले जन्म के नाम से पुकारा था लेकिन हमें घबराने की जरूरत नहीं है। साहिल के पास एक प्लान है।”

दिग्विजय ने कुलगुरु की ओर देखा जबकि कुलगुरु, साहिल की ओर बढ़े और अरुणा की तस्वीर उसे दिखाते हुए पूछे- “तुम इस महिला को पहचानते हो?”

“ये...ये तो वही औरत है, जिससे मैं और यश झुग्गियों की बस्ती में मिले थे।” साहिल की आँखें हैरत से फ़ैल गयीं- “इसी ने तो हमें लाश का पता बताया था।”

साहिल पर यकीन करने हेतु दिग्विजय के लिए यही पर्याप्त था कि उसने अरुणा को पहचान लिया था।

“योजना क्या है तुम्हारी?” कुलगुरु ने पूछा।

“प्लीज आप लोग मेरे साथ बाहर आइए।”

कुलगुरु और दिग्विजय, यश तथा संस्कृति के साथ बाहर आए। बाहर मौजूद गाड़ी में घायल यश बेहोशी की अवस्था में था। उसके साथ डॉक्टर पुष्कर त्रिवेदी भी थे। यश के अलावा केवल डॉक्टर त्रिवेदी ही थे, जो साहिल के साथ आये थे। उसने गाड़ी का डोर खोला और बेहोश यश की ओर संकेत करते हुए कहा- “ये मेरा भाई यश है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था।”

दिग्विजय, यश को पहचान गये क्योंकि पुलिस स्टेशन में उन्होंने उसी की तस्वीर देखी थी, जिसके बारे में समर ने बताया था कि वह भीमा की झोपड़ी में रखी तंत्र की किताबों के बीच मिला था।

N

11

P

"इतना दुस्साहस?" अभयानन्द की भीषण गर्जना से अरुणा हमेशा की तरह इस बार भी भयभीत हुई- "इतना दुस्साहस कि वे हमारे साम्राज्य की परिधि में प्रविष्ट होकर हमारे ही विरुध्द षड़यंत्र रच रहे हैं?"

"आप निश्चिंत रहें प्रभु।" अरुणा ने अभयानन्द का संकेत भाँपकर उसे शांत करने के ध्येय से कहा- "वे द्विज को लेकर शंकरगढ़ में आए अवश्य हैं किंतु जात-स्मरण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं कर पाएंगे। वे द्विज के वर्तमान जन्म को पूर्वजन्म की स्मृतियों का स्मरण नहीं करा पाएंगे।"

"ज्ञात करो कि उनकी योजना क्या है?"

अभयानन्द का आदेश सुनकर अरुणा के चेहरे पर कातर भाव छा गये।

"क्षमा कीजिये प्रभु।" उसने यूँ करबध्द होकर कहा, मानो कोई अक्षम्य अपराध कर बैठी हो- "मेरी तंत्र दृष्टि राजमहल के क्षेत्र में दाखिल नहीं हो पा रही है। मैं ये ज्ञात करने में अक्षम हूँ कि द्विज के भाई की क्या योजना है।"

अभयानन्द ने अरुणा के अनुमान के विपरीत प्रतिक्रिया दी। वह कुपित होने के बजाय विचारमग्न होकर दूर जलती हुई चिता को देखने लगा।

"तुम्हारी तंत्रदृष्टि राजमहल की दीवारों को भेद नहीं पा रही है...।" अभयानन्द ने अर्थपूर्ण लहजे में कहा- "तो इसका अर्थ ये है कि उनके कुलगुरु ने राजमहल को सुरक्षा घेरे में ले लिया है।" अरुणा ने मूक सहमति दी जबकि उसने होठों पर कुटिल मुस्कान लिए हुए आगे कहा- "राजमहल वासियों की कोई युक्ति सफल नहीं हो सकती है अरुणा। हम किसी भी मूल्य पर द्विज को उसके पूर्वजन्म का स्मरण नहीं होने देंगे। जात-स्मरण की प्रक्रिया को कभी पूर्ण नहीं होने देंगे हम।"

"किंतु प्रभु....।" अरुणा ने भयातुर स्वर में कहा- "यदि उनकी युक्ति सफल हो गयी...।"

"नहीं सफल हो सकती।" अभयानन्द की आँखों में रहस्य की आभा तैर गयी- "तुम गौण कापालिकों का वंश भी हमारे एक रहस्य से आज तक अनभिज्ञ रहा है। वह रहस्य ही आज द्विज के जात-स्मरण की प्रक्रिया में बाधक बनेगा।"

"रहस्य?" अरुणा चौंकी- "कैसा रहस्य प्रभु?"

उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि अभयानन्द का कोई रहस्य ऐसा भी होगा, जो उसकी सोच से परे होगा।

अभयानन्द ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सधी हुई चाल चलते हुए
श्मशानेश्वर की प्रतिमा के सम्मुख पहुँचा और दोनों भुजाएं फैलाकर आँखें बंद कर लीं तत्पश्चात उसके गले से भेड़िये की गुर्राहट निकली, जिस्म थरथराया।

अरुणा हैरान थी। इस वक्त राजमहल के जिन दीवारों को कोई तंत्र-युक्ति भी भेद पाने में अक्षम थी, उन दीवारों को अभयानन्द कैसे भेदने वाला था, ये उसकी समझ से परे था।

"तुम पापी हो द्विज। तुमने पाप किया है।"

अभयानन्द के गले से कांपता हुआ स्वर निकला और इसी के साथ अरुणा की आँखें संकुचित हो गयीं।

JJJ

"मैं पापी हूँ। मैंने पाप किया है।"

बड़बड़ाते हुए द्विज ने दीप जलाकर अभयानन्द की झोपड़ी में उजाला किया। बाहर मूसलाधार बारीश उफान पर थी। उसने कम्बल में लिपटा अभयानन्द का जिस्म बिस्तर पर लिटा दिया, जो लगभग पूरा जल चुका था। उसके जिस्म से गला हुआ माँस तरल के रूप में बह रहा था। द्विज उस हृदयविदारक दृश्य पर इस कदर विचलित नजर आ रहा था मानो अभयानन्द उसके लिए प्राणों से भी ज्यादा प्रिय रहा हो। बुरी तरह भीगे हुए द्विज ने कंधे से लटका कपड़े का थैला उतारा और उसमें से जलारोधि आवरण में लिपटी औषधियां बाहर निकालीं तत्पश्चात उन्हें पीसकर लेप तैयार करने में जुट गया।

अभयानन्द के हलक से हल्की-हल्की कराह निकल रही थी। उसकी आँखें बाहर उबल पड़ी थीं। होंठ जलकर, वीभत्स होकर नीचे की ओर लटकने लगे थे। जीभ बाहर निकल गयी थी। उसकी कराहट जीवन के अंतिम क्षणों की कराहट थी। उसके बचने का एक भी लक्षण इंगित नहीं हो रहा था तथापि द्विज न जाने किस अज्ञात आस के तहत उसे पीपल के तने से उतार लाया था और फिलहाल उसे राहत पहुँचने के ध्येय से शीतल औषधियों का लेप तैयार करने में जुटा हुआ था, ये ज्ञात होते हुए भी कि उसकी दूषित काया में एक पिशाच सो रहा था।

संयोगवश शुरु हुई भीषण बारिश को द्विज ने इस संकेत के रूप में ग्रहण किया था कि प्रकृति देवी स्वयं अभयानन्द के प्राणों की रक्षा करने को उद्यत थीं। उसी संकेत के वशीभूत होकर जब वह देवी-मंदिर से दौड़ा था तो उसके कदम सीधे पीपल के पास पहुँचकर रुके थे। उसने लेप लगाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। अभयानन्द के कराहने का स्वर तीव्र हुआ और रुई के फाहे के बदन से स्पर्श करते ही वह दर्द से तड़प उठा।

"मुझे क्षमा कर दो भइया।" होठों से 'भइया' शब्द प्रस्फुटित होते ही द्विज की
आँखों से आँसू छलक उठे- "मैं पापी हूँ। आपकी इस दयनीय दशा का उत्तरदायी मैं ही हूँ। मैंने महाराज के सम्मुख ये सोचकर आपके विरुद्ध न्याय की याचना की थी कि जब आप कारावास में चले जायेंगे तो इसी बहाने तामसी साधनाओं से दूर हो जायेंगे किंतु मुझे लेशमात्र भी भनक नहीं था कि महाराज आपको इतना भीषण मृत्युदंड दे देंगे।"

अभयानन्द का जिस्म फड़फड़ाया। वह द्विज की बातों का जवाब देने का यत्न
करता नजर आ रहा था किंतु स्थिति प्रतिकूल होने के कारण अपने यत्न में सफल नहीं हो पा रहा था।

"भीषण त्रासदी वाली उस रात जब आप मुझे अलाव के पास बैठाकर किसी अनजान स्त्री की चीख का उद्गम स्थल तलाशने गये थे तो क्या मैंने सोचा था कि आप फिर दोबारा नहीं लौटेंगे? नहीं भइया! मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि उस रात के बाद आप मेरे बड़े भाई के रूप में नहीं बल्कि एक भयानक कापालिक के रूप में लौटेंगे। आपकी आँखों में मेरे लिए प्रेम नहीं, प्रतिद्वंद्विता का भाव होगा। तामसिक साधनाओं की बुरी शक्तियाँ आपको नैतिक मार्ग से डिगा चुकी होंगी और आप जीवित अवस्था में ही एक पिशाच जैसा जीवन-यापन करने वाले बन चुके होंगे।"

अभयानन्द का जिस्म फड़फड़ाया। संभवत: द्विज के रहस्योद्घाटन ने उसे अचम्भित किया था।

“ये सत्य है भइया। मैं आपका वही द्विज हूँ, जिसे आपने शीत से बचाने के लिए अपना कम्बल उतारकर दे दिया था। आप मुझे नहीं पहचान पाए लेकिन मैं आपको तभी पहचान गया था, जब आप पहली बार शंकरगढ़ आए थे और मेरी दृष्टि आपके गले से लटके तांबे के छल्ले पर पड़ी थी, जिसे माँ ने हम-दोनों को बुरी बलाओं से बचाने के लिए हमारे गले में डाला था।”

द्विज ठहरा। उसने अपने गले से लटक रहे काले धागे को देखा, जिसमें तांबे का एक छल्ला पिरोया हुआ था। हूबहू वैसा ही छल्ला अभयानन्द के गले में भी था।

“मुझे नहीं ज्ञात कि उस शापित वन में क्या था, जिसने मेरे भइया को बड़ी निर्ममता से एक भयावह पिशाच में परिणित कर दिया। मुझे नहीं ज्ञात कि उस वन में आपके साथ क्या हुआ था? कौन मिला था आपसे, जिसकी बला आपके ऊपर आ गयी और माँ का दिया हुआ छल्ला भी उससे आपकी रक्षा नहीं कर पाया।”

द्विज सिसकने लगा। यदि अभयानन्द बोल पाने में सक्षम होता तो निःसंदेह उसका प्रश्न यही होता:

‘यदि तुम मुझे पहचान गये थे तो तुमने मुझे इस बात का बोध क्यों नहीं कराया कि तुम मेरे बिछड़े हुए भाई हो?’

“मैं करा सकता था।” द्विज ने मानो भाई के अंतर्मन के प्रश्न को महसूस कर लिया- “मैं आपको बोध करा सकता था कि मैं ही आपका भाई हूँ किंतु नहीं करा सका क्योंकि आप एक वाममार्गी साधक बन चुके थे। मैं एक वाममार्गी साधक का भाई हूँ, ये सत्य मेरे भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा देता। लोगों को मेरे रक्त में दोष नजर आने लगता। मैं स्वार्थी बन गया था भइया। मैं आपके बिना जी सकता था क्योंकि बीस सालों में मैं इसका अभ्यस्त हो चुका था किंतु समाज द्वारा उपेक्षित होकर जीने का साहस मुझमें नहीं था। इसलिए मैंने देवी-मंदिर के पुजारी के अतिरिक्त किसी को भी अपने जीवन के इस सत्य से अवगत नहीं कराया कि आप मेरे अग्रज हैं। मैं आपका अपराधी हूँ। माँ और पिता का अपराधी हूँ। मैंने ईश्वर के मार्ग से भटके हुए भाई को सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न नहीं किया। मैं माँ को क्या मुँह दिखाऊँगा?”

द्विज की आँखों में तैरता पानी गालों पर लुढ़कने लगा। वह आगे कुछ कहने वाला था कि सहसा उसे सिर पर लाठी का प्रहार महसूस हुआ। प्रहार इतना भीषण था कि चेतना पर से उसका नियंत्रण हट गया और वह अँधकार के गर्त में डूबता चला गया।

JJJ

यश ने आँखें खोल दीं। उसे अभी-अभी महसूस हुआ था कि किसी ने उसके सिर पर लाठी से प्रहार किया था। उसके जिस्म पर गुजरे हुए ज़माने के ऐसे कपड़े थे, जिन्हें उसने किताबों में सत्रहवीं शताब्दी के ब्राह्मणों के जिस्म पर देखा था।

‘अब एक नया सपना?’

तरद्दुद में फंसकर उसने कमरे का मुआयना किया। कमरा भी सत्रहवीं शताब्दी का कोई अध्ययन-कक्ष लग रहा था। उसके सामने एक लड़की बैठी हुई थी, जिसके जिस्म पर भी उसी दौर के कपड़े थे और सामने भोजपत्रों का पुलिंदा रखा हुआ था। यश के जागने तक वह भोजपत्रों पर लकड़ी के कलम से कुछ लिख रही थी लेकिन अब उसे कौतुहल भरी निगाहों से घूरने लगी थी।

“म....मैं कहाँ हूँ...?” यश ने उस लड़की को लक्ष्य करके हकलाते हुए पूछा।

“ये कैसा प्रश्न है द्विज? क्या आप अपनी शिष्या माया को भूल गये?” लड़की के चेहरे पर आश्चर्य के भाव आए।

“माया...?” यश को अपने जेहन पर कोई दबाव महसूस हुआ। उसे ये नाम कहीं सुना हुआ लगा लेकिन वह इस मुद्दे पर अधिक सोच पाता, इससे पहले ही वह बुरी तरह चौंक पड़ा, जब उसे महसूस हुआ कि उसके सिर पर एक भी बाल नहीं है। जिस्म पर हुए अनगिनत जख्मों की परवाह न करते हुए वह एक झटके से उठा और दौड़कर आइने के सामने पहुँचा।

“य...ये क्या हो रहा है मेरे साथ..? मुझ पर कैसा प्रयोग किया जा रहा है?”

वह बौखलाकर खुद को माया कहने वाली लड़की की ओर मुड़ा। उसका सिर सफाचट हो चुका था और बालों के तौर पर केवल मोटी शिखा भर रह गयी थी, जो गर्दन तक लटक रही थी। इस दरम्यान लड़की उसकी हरकतों का पैनी दृष्टि से मुआयना कर रही थी।

“तुम कुछ बोलती क्यों नहीं? मुझ पर क्या प्रयोग किया जा रहा है? मेरे भइया कहाँ हैं?” जब माया ने इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया तो यश उस पर झपटा, उसकी गर्दन को शिकंजे में जकड़ा और दबाव बढ़ाते हुए गुर्राया- “कौन हो तुम?”

माया खौफजदा स्वर में चीखी। उसकी चीख बाहर जाने भर की देर थी कि कमरे का दरवाजा तेजी से खुला और साहिल, दिग्विजय समेत कई लोग भीतर दाखिल हो आये। साहिल पर दृष्टि पड़ते ही यश, माया को छोड़कर उसकी ओर लपका।

“ये सब क्या हो रहा है भइया?”

“संस्कृति, तुम ठीक तो हो?” दिग्विजय ने संस्कृति को लक्ष्य करके पूछा। वह खांसने लगी थी। उसकी आँखों में पानी भर आया था। दिग्विजय के सवाल का जवाब देने के बजाय उसने साहिल का रुख करके कहा- “आपका प्लान फेल हो चुका है। यश को कुछ नहीं याद आया।”

परिणाम घोषित होते ही सभी पर मानो बज्रपात हुआ। दिग्विजय ने घड़ी की ओर देखा।

“अब क्या होगा? दस बजने में तो अब आधा घण्टा ही बचा है।”

“कैसा प्लान भइया?” यश ने भौचक्क लहजे में कहा- “ये लोग....ये लोग किस प्लान की बात कर रहे हैं?”

साहिल एक बार फिर खामोश रहा। उसका दिमाग तेजी से कुछ सोच रहा था।

उसका दिल बैठा जा रहा था और हौसले क्षण-प्रतिक्षण क्षीण पड़ते जा रहे थे। अंततः वह भी साधारण इंसान था और किसी पैशाचिक शक्ति से प्रत्यक्ष मुकाबले की कल्पना से वह भी सहमा जा रहा था।

“होश में आने से पहले तुमने कोई विजन देखा था?” डॉक्टर त्रिवेदी ने यश से पूछा।

“हाँ। वह विजन मैं पहले भी देख चुका हूँ।”

“क्या था उस विजन में?”

“कोई आदमी था, जो बुरी तरह जले हुए एक दूसरे आदमी के जख्मों पर मरहम लगा रहा था।”

"तुमने चेहरा देखा उसका?"

"नहीं। मेरी ओर उसकी पीठ थी।"

"तुमने ऐसा विजन पहले कब देखा था?"

"याद नहीं।"

"तुमने अपने जिस्म पर जख्म क्यों बनाए थे? तुमने दीवार पर ये क्यों लिखा कि मैं पापी हूँ? तुमने बेडरूम के फर्श पर अपने ही खून से बिना धड़ वाले आदमी का स्केच क्यों बनाया? आखिर उस वक्त चल क्या रहा था तुम्हारे दिमाग में?"

"मुझे नहीं मालूम।" यश ने थके हुए लहजे में कहा- "दिमाग के हर कोने से बस यही विचार आ रहा था कि मैं पापी हूँ। विजन में नजर आने वाला आदमी भी जले हुए आदमी से यही कह रहा था।"

"हमारा प्लान सचमुच फेल हो गया साहिल।" यश की बातें सुनने के बाद त्रिवेदी ने साहिल के लक्ष्य करके अफसोस भरे लहजे में कहा- "यश को मेमोरी रिगेन में जरा भी बढ़त नहीं मिली। हमें लगा था कि हम सेवेंटीन्थ सेंचुरी का एटमॉस्फियर क्रियेट करके और संस्कृति को यश के सामने माया के रूप में पेश करके, उसे उसके पिछले जन्म की याद दिलाने में सफल हो जाएंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हमारी मेहनत बेकार गयी और इसी के साथ किमती समय भी।"

माहौल बोझिल हो उठा। साहिल को गहरी सोच में डूबा देख, उसे डिस्टर्ब करने की हिम्मत किसी में नहीं हुई। यश झुंझलाया हुआ था। इसकी एक वजह ये भी थी कि बिना बालों के उसे अपना चेहरा अजीबोगरीब नजर आ रहा था।

"ये नहीं हो सकता।" साहिल ने हथेली पर मुक्का मारते हुए कहा- "हमारा प्लान कैसे फेल हो सकता है?"

साहिल का व्यग्र लहजा बता रहा था कि वह अब भी परिस्थितियों के आगे घुटने टेकने को तैयार नहीं था जबकि यश के चेहरे पर उलझन गहराती जा रही थी। डॉक्टर त्रिवेदी भाँप गये कि मौजूदा हालात उसकी मानसिक दशा के प्रतिकूल हैं इसलिए उन्होंने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा- "हमें बाहर चलना चाहिए। यश को आराम की जरूरत है।"

सभी ने निर्देश का पालन किया। यश को नींद का इंजेक्शन देने के बाद डॉक्टर त्रिवेदी भी बाहर आ गये।

"अब आप ही कोई उपाय बता सकते हैं कुलगुरु।" दिग्विजय, कुलगुरु से मुखातिब हुए।

"ब्रह्मपिशाच को शांत करने वाले अनुष्ठान अत्यन्त दुर्लभ हैं और उनका वर्णन वर्तमान युग के ग्रंथों में मिलना असंभव है। हमारे पास आशा की एक किरण थी किंतु वह भी बुझ गयी। हमने सोचा था कि शंकरगढ़ के इतिहास में मौजूद प्रकरण से हमें वह अनुष्ठान ज्ञात हो जाएगा, जिसके जरिए उस काल में अभयानन्द पर नियंत्रण पाया गया था लेकिन अरुणा के हाथों की कठपुतली बने भीमा ने भोजपत्रों को गायब करके हमारी सोच को निरर्थक सिद्ध कर दिया। साहिल ने संस्कृति को जात-स्मरण की प्रक्रिया से गुजारकर उस प्रकरण को जानना चाहा लेकिन इसमें भी विफलता ही हाथ लगी और अब यश के संदर्भ में भी हम असफल रहे।"

"कोई तो उपाय होगा कुलगुरु।" सुजाता का स्वर रुआंसा हो उठा- "क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अभयानन्द से अपने गुनाहों की माफी माँग ले?"

"जो गुनाह राजमहल वालों ने कभी किये ही नहीं, उसकी माफी कैसे माँग लेंगी आप? ये तो बुराई के सामने पराजित हो जाने की स्थिति होगी।"

"अगर हमारी ये पराजय संस्कृति की जान बचा सकती है तो हम तैयार हैं। हम पराजित होने को भी तैयार हैं।"

"किंतु इस बात को लेकर किस हद तक निश्चिंत हुआ जा सकता है भाभी कि अभयानन्द हमें उन गुनाहों के लिए माफ कर देगा, जो हमारे पूर्वजों ने कभी किये ही नहीं?" अरुणोदय ने कहा।

"न ही इस बात की गारण्टी है कि अभयानन्द हमें माफ कर देगा।" लम्बे समय से खामोश संस्कृति ने मुँह खोला- "और न ही इस बात की गारण्टी है कि मुझे हासिल कर लेने के बाद वह शंकरगढ़ पर कहर नहीं बरपाएगा। अब रास्ता केवल एक ही है।"

अपने निर्णायक लहजे के कारण संस्कृति, साहिल और कुलगुरु समेत सभी की निगाहों का केन्द्रबिन्दु बन गयी। उसके चेहरे के भाव बयां कर रहे थे कि लम्बी खामोशी के दौरान वह किसी निर्णय पर पहुँचने में कामायाब हो गयी थी।

"किस रास्ते की बात कर रही हो तुम?" साहिल ने आशंकित लहजे में पूछा।

"मैं उसके पास जाने को तैयार हूँ।"

"पागल हो गयी हो?" साहिल ने तीव्र स्वर में विरोध किया- "तुम्हें क्या लगता है, तुम्हारे सरेण्डर कर देने से वह मेरे भाई को छोड़ देगा? शंकरगढ़ के लोगों को बख्श देगा?"

"मैं नहीं जानती कि वह ऐसा करेगा या नहीं लेकिन उसे रोकने के लिए नहीं तो कम से कम उसे टालने के लिए मुझे ये कदम उठाना ही पड़ेगा। हो सकता है तब तक कोई रास्ता निकल जाए।"

"और अगर रास्ता नहीं मिला तो?"

"तो भी हमारे हाथ में अब कुछ नहीं है। हमारी हालत बिन माँझी के उस किश्ती जैसी है, जिसका भविष्य दरिया की लहरों पर टिका होता है।"

साहिल कसमसाकर रह गया। चाहकर भी कुछ न बोल सका। उसने खुद को इतना विवश पहले कभी नहीं पाया था। संस्कृति की निगाह उस पर ठहरी हुई थी। शायद उसे अभी भी ये विश्वास था कि वह अपने दृढ़ आत्मविश्वास, प्रबल इच्छाशक्ति और बौध्दिक कौशल से कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। साहिल उस कमरे की ओर मुड़ा, जिसमें यश था।

"कहाँ जा रहे हो....।"

डॉक्टर त्रिवेदी ने उसे रोकना चाहा लेकिन वह रुका नहीं और कमरे में पहुँचकर दरवाजा बंद कर लिया। लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए वह यश को घूरने लगा।

"तुम्हें याद करना होगा।" सहसा उस पर भावनाओं का तीव्र आवेग हावी हुआ और वह यश झकझोरते हुए बोला- "तुम्हें तुम्हारा पिछला जन्म याद करना ही होगा।"

दवा के प्रभाव से गहरी नींद में जा चुके यश पर कोई असर नहीं हुआ। भावनाओं का आवेग थमने के बाद जब साहिल यथार्थ में लौटा तो यश को जगाने का प्रयास छोड़कर इधर-उधर निगाहें दौड़ाने लगा।

“कोई तो रास्ता जरूर होगा। उम्मीद की कोई किरण अभी भी कहीं बाकी होगी।”

सहसा हवा के तेज झोंके से खिड़की के दरवाजे खड़खड़ाये और इसी के साथ कमरे में मोजूद भोजपत्र भी फड़फड़ा उठे।

JJJ

“विजय श्री हमारी ओर अग्रसर है अरुणा।” अभयानन्द ने सर्द लहजे में कहा। वह मानव-स्वरुप में था और उस दिशा में देख रहा था, जिस दिशा से कुछ साये मरघट की ओर बढ़ रहे थे। वातावरण में शुक्ल पक्ष की चाँदनी फैली हुई थी और श्मशानेश्वर की मूर्ति रोज से कहीं अधिक डरावनी लग रही थी।

चूल्हे पर हाँडी चढ़ाने की कोशिश छोड़कर अरुणा उठी और मरघट की ओर अग्रसर सायों पर दृष्टिपात करते हुए हिंसक स्वर में बोली- “आपकी प्रतीक्षा का अंत हुआ प्रभु और इसी के साथ हम गौणों की सैकड़ों साल पुरानी साधना भी पूरी हुई। आपके और माया के मिलन में अब कोई बाधा नहीं रही क्योंकि वह स्वयं आपकी चरणों में आ रही है। उसने अपने ईश्वर की उपेक्षा कर दी है इसलिए उसके स्वास्तिक की दैवीय शक्तियाँ निष्क्रिय हो चुकी होंगी।”

अभयानन्द कुटिलतापूर्वक मुस्कुराया और मंदिर के आहाते के एक छोर से चलकर दूसरे छोर पर पहुँचा। दुधिया चाँदनी में हरकत करती उसकी परछाईं स्वयं अरुणा को भी डरावनी लगी। अभयानन्द के चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे पूर्वजन्म की तृष्णा के तृप्त होने का अवसर निकट पाकर वह अपनी खुशी जाहिर न कर पा रहा हो। उसकी डरावनी और हमेशा शून्य को अपलक घूरती रहने वाली बड़ी-बड़ी रक्तिम आँखों में पैशाचिक चमक थी। सामान्य मानव का स्वरुप भी उसकी रक्तपिपासु प्रवृत्ति को छिपा नहीं पा रहा था।

“यदि स्वयं हमारे भाई द्विज ने हमारे साथ छल नहीं किया होता तो माया को देखकर भड़की हमारी कामाग्नि तीन सौ वर्ष पूर्व उसी जन्म में तृप्त हो गयी होती, जिस जन्म में हमने महातांत्रिक अघोरा की काया में निवास करने वाले श्मशानेश्वर को हमारी काया में आमंत्रित करके शंकरगढ़ की धरती को रक्तरंजित किया था। द्विज के छल ने ही हमें लम्बी प्रतीक्षा हेतु विवश किया। अघोरनाथ ने स्वास्तिक और गीता के श्लोकों को प्रहरी बनाकर हमारी आत्मा को राजमहल के भूमिगत कक्ष में भटकने को विवश किया। अंतहीन रक्ततृष्णा से तीन सौ सालों तक तड़पे हैं हम। कामाग्नि में तीन सौ सालों तक झुलसे हैं हम। इतनी सहजता से हमारा प्रतिशोध नहीं पूर्ण होगा अरुणा।” प्रतिशोध साधने के अभयानन्द के भीषण संकल्प से प्रकृति भी सहम गयी। उसकी आँखों में क्रोध, घृणा और वहशत लहू के रुप में उतर आया- “माया स्वयं को हमें सौंपकर हमसे शंकरगढ़ की रक्षा का वचन लेने की कामना के साथ हमारे शरण में आ रही है किंतु उसे भान नहीं है कि उसके समर्पण करते ही हमारे रक्तरंजित अभियान का आरंभ होगा।” अभयानन्द क्षण भर के लिए ठहरा तत्पश्चात जबड़े भींचकर शून्य को घूरते हुए बोला- “द्विज! पूर्व जन्म में भी हम आपके काल कलवित होने का निमित्त बने थे और इस जन्म में भी हम ही आपको काल का ग्रास बनने हेतु बाध्य करेंगे। हम हमारी धधकती क्रोधाग्नि को आपके रक्त से शांत करेंगे।”

अभयानन्द अपने कुत्सित इरादों की घोषणा करता रहा और इस बीच प्रारब्ध से अनभिज्ञ वे साये मरघट तक पहुँच गये। आगंतुकों में चार लोग थे। संस्कृति, दिग्विजय, कुलगुरु और डॉक्टर त्रिवेदी। डॉक्टर के यहाँ आने में कुलगुरु की संस्तुति नहीं थी लेकिन त्रिवेदी के आग्रह को वे टाल नहीं सके थे। दरअसल डॉक्टर की दिलचस्पी उस मखलूक को देखने में थी, जिसके वजूद को आम जनमानस मिथक या अंधविश्वास कहकर खारिज कर देता है। हालाँकि त्रिवेदी के परामनोविज्ञान की सीमा वहीं से शुरु होती थी, जहाँ विज्ञान की सीमा समाप्त होती थी लेकिन फिर भी ये उनके व्यावसायिक जीवन में पहला अवसर था, जब वे किसी कथित पिशाच से रु-ब-रु होने वाले थे।

अभयानन्द की डरावनी भाव-भंगिमाएं देख हर किसी के रोंगटे खड़े हो गए।

“यही है वह शापित ब्राह्मण, जिसने ईश्वर को ठुकराकर श्मशानेश्वर को अपनी काया सौंपी।” कुलगुरु ने अभयानन्द पर घृणास्पद दृष्टि डालते हुए घोषणा की।

अभयानन्द ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। वह खामोशी अख्तियार किये हुए आहाते में टहल रहा था और उसकी भयानक आँखें संस्कृति पर ठहरी हुई थीं। मानो आगंतुकों को पहले बोलने हेतु आमंत्रित कर रहा हो। डॉक्टर त्रिवेदी की आँखों में विस्मय और अविश्वास था। उन्हें अब भी ये यकीन नहीं था कि सामने खड़ा आठ फीट ऊँचा और सामान्य नजर आने वाला वह इंसान वास्तव में एक नरभेड़िया है।

“मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है।” संस्कृति आगे बढ़ी और अभयानन्द पर निगाहें स्थिर किये हुए निर्भीक स्वर में बोली- “लेकिन ब्रह्मराक्षस योनी स्वीकार करने से पहले मेरी भी कुछ शर्तें हैं।”

“तुम पराजित हो चुकी हो माया और पराजित मनुष्य शर्त रखने की दशा में नहीं होते हैं। तुम्हारी विकलता बता रही है कि तुमने हमारे दिये हुए समय को हमारे विरुध्द छल करने की असफल कोशिश में गंवा दी है।” अभयानन्द के होठों पर विषाक्त मुस्कान थिरक उठी- “पराजित होकर भी इतना अभिमान कि साक्षात काल के सम्मुख खड़ी होकर उसे प्रतिबंध में बांधने की चेष्टा कर रही हो?”

संस्कृति बगैर कुछ कहे पिशाच के चेहरे पर नजर आते अहंकार को देखने लगीं। उसकी भाव-भंगिमाओं से ये इंगित नहीं हो रहा था कि वह विचलित थी। अभयानन्द का भयानक स्वरुप उसके लिए भय का पर्याय नहीं बनने पाया था।

“यदि तुमने हमें प्रसन्न कर दिया माया तो हम तुम्हारी विनती को पूर्ण करेंगे किंतु भूल कर भी अपनी विनती को प्रतिबंध की संज्ञा मत देना।”

दिग्विजय का खून खौल उठा और अभयानन्द से मुकाबला न कर पाने की विवशता क्रोध का रुप लेकर उनके चेहरे से झलकने लगी जबकि संस्कृति आगे बढ़ी।

“अभयानन्द के अंकपाश में तुम्हारा स्वागत है सुन्दरी।” अभयानन्द ने दोनों बाँहें फैलाकर अट्ठहास किया- “किंतु ठहरो, तुम्हारी कलाई के स्वास्तिक का प्रबंध करना है हमें।”

संस्कृति ठहर गयी। उसका स्वास्तिक उसी प्रकार चमक उठा था, जिस प्रकार तब चमका था, जब उसने साहिल की जान बचाई थी। अभयानन्द का भयानक कहकहा मरघट में गूँजा और इसी के साथ परिवेश में व्याप्त भय और भी गहरा हो गया। वातावरण में भेड़ियों का समवेत स्वर इस कदर गूँजा, मानो आज की रात उनके लिए जश्न की रात हो। बादलों का एक स्याह कतरा श्वेत चन्द्रमा पर मंडराया

और अभयानन्द आकाश की ओर मुँह उठाकर भेड़िये के स्वर में चिंघाड़ उठा।

‘वुउऊऊ....!’

करीब पाँच मिनट तक उसका भयानक स्वर परिवेश को गुंजाता रहा और फिर वहाँ मौजूद लोगों ने अपने जीवन की सबसे हैरतअंगेज घटना देखी।

अभयानन्द ने अपने मुँह से काले धुएं का गुब्बार इस कदर उगला मानो ईंट के भट्टे की चिमनी ने काला धुआं उगला हो। धुंए का गुब्बार परिवेश में चक्कर काटता रहा और लोगों के देखते ही देखते एक नरभेड़िये की आकृति में तब्दील हो गया। अरुणा ने उस आकृति के सम्मुख श्रद्धा से सिर झुका लिया।

डॉक्टर त्रिवेदी को महसूस हुआ मानो वे कोई भयानक स्वप्न देख रहे हों।

JJJ

उस दरगाह के आंगन में महताबी रोशनी बिखरी हुई थी, जो घने जंगल के बीच मौजूद था। मज़ार पर चढ़ी चादर के फड़फड़ाने की आवाज़ हवाओं की सरसराहट के साथ मिलकर परिवेश को रहस्यमय बना रही थी। दूर कहीं से भेड़ियों के चीखने की आवाजें आ रही थीं। मज़ार से थोड़े ही फासले पर एक बूढ़ा फ़कीर काबा की दिशा में उन्मुख होकर सजदे की मुद्रा में था।

‘ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह!’[2]

उसने हथेलियों को आँखों से लगाया और ठुड्डी को दोनों कन्धों से स्पर्श कराने के बाद उठने ही वाला था कि दरगाह की चारदीवारी में लगे कमजोर दरवाजे पर दस्तक पड़ी। फ़कीर जोरों से खांसा, निकट ही पड़ी लाठी को टटोलकर उठाया तत्पश्चात कांपते हुए जिस्म का आधे से अधिक बोझ लाठी पर और कुछ कमजोर पैरों डालते हुए दरवाजे की ओर बढ़ा। उसके दरवाजे तक पहुँचने में देर लगने पर दस्तक की कई बार पुनरावृत्ति हुई। आने वाला शायद जल्दी में था।

“अल्लाह की हुक्म के बगैर एक पत्ता तक नहीं हिल सकता। फिर भी न जाने क्यों आदमजात को इतनी घबराहट रहती है।” दरवाजे पर लगातार पड़ती थाप से भन्नाकर फ़कीर बड़बड़ाया। चाल में तेजी लाकर वह दरवाजे तक पहुँचा और सांकल गिराकर वापस मुड़ते हुए बोला- “खुल गया। आ जाओ।”

दरवाजा खुलते ही आगंतुक तेजी से चारदीवारी में दाखिल हुआ।

“मुझे…मुझे आपके मदद की जरूरत है बाबा।” वह इस प्रकार हाँफ रहा था, मानो लम्बी दौड़ लगाकर आया हो- “अगर आपने मदद नहीं की तो इंसानों का भगवान पर से भरोसा उठ जाएगा।”

फ़कीर ने आगंतुक की ओर देखने तक की जहमत नहीं उठायी और लाठी टेकते हुए टीन की छत वाली एक छोटी सी कोठरी की ओर बढ़ गया। आगंतुक व्याकुल होकर उसके पीछे भागा।

“दो जिंदगियाँ एक पिशाच के चंगुल में फँसी हुई हैं। आपको हमारी मदद करनी होगी।”

“पिशाच के खात्मे में अभी वक्त है। ठहर जा और साँस ले ले।” फ़कीर ने सुराही से पानी का भरा गिलास निकाला और साहिल की ओर बढ़ा दिया। उसकी ओर देखे बगैर भी फ़कीर भांप गया था कि उसे पानी की जरूरत थी। साहिल ने उसके हाथ से गिलास झपटा और एक ही साँस में खाली कर दिया।

N

12

P

"नीच! पापी!"

पुजारी ने पाँव का भीषण प्रहार द्विज की छाती पर किया और वह तख़्त से सीधा जमीन पर आ गिरा। तेज पीड़ा के बावजूद भी उसके होठों से आह तक नहीं निकली। उसका चेहरा आँसुओं से गीला था, सिर पर पट्टी बंधी हुई थी और चेहरे पर पश्चाताप के भाव थे। पुजारी से दृष्टि मिलाने तक का साहस नहीं था उसमें। वह जमीन से उठने की कोशिश न करते हुए पुजारी के दूसरे प्रहार की प्रतीक्षा करता रहा मगर पुजारी ने उस पर दूसरा प्रहार नहीं किया। केवल एक प्रहार को ही पर्याप्त समझकर उन्होंने गीता का अधोलोखित श्लोक कहा-

"त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।[3]

श्लोक सुनने के बाद भी द्विज ने दृष्टि ऊपर नहीं उठायी।

"एक ब्राह्मण होकर भी तू गीता के इस श्लोक को कैसे भूल गया?" पुजारी ने इस कदर दांत पीसकर कहा मानो वाक्यों के जरिये अपनी सम्पूर्ण क्रोधाग्नि को द्विज के ऊपर उड़ेल देना चाहते हों- "तू ये कैसे भूल गया कि मोह ही मनुष्य की अधोगति का मुख्य कारण होता है। तुझे ये क्यों नहीं स्मरण रहा कि तेरे भाई की काया में प्रेतात्माओं का देवता प्रविष्ट हो रहा था? तुझे ये क्यों नहीं स्मरण रहा कि यदि अभयानन्द की काया को समाप्त नहीं किया गया तो श्मशानेश्वर नाम का वह अशरीरी पिशाच उसकी काया में कैद घृणित वासानाओं की शक्ति पाकर नरभेड़िये के रूप में अवतरित हो उठेगा? तुझे ये क्यों नहीं स्मरण रहा कि तेरा भातृ मोह सम्पूर्ण शंकरगढ़ के लिए घातक हो जाएगा? तू तो गणित जैसे व्यवहारिक विज्ञान का प्रकांड ज्ञाता था द्विज। कहाँ लुप्त हो गयी थी तेरी व्यवहारिकता, जो तूने अभयानन्द को बचाने की चेष्टा में समूचे राज्य के प्रारब्ध को दांव पर लगा दिया? बड़े भाई के प्रति जिस मोह को तूने चौबीस वर्षों से जड़ करके रखा हुआ था, वह मोह अचानक चैतन्य कैसे हो उठा?"

"क्षमा कर दीजिये गुरुदेव।" द्विज पुजारी के चरणों में सिर रखकर रो पड़ा- "मैं धर्मसंकट में था। बाल्यावस्था में जो अग्रज मेरी लेशमात्र पीड़ा पर भी द्रवित हो उठता था, उसी अग्रज का जीवित दाह-संस्कार देख सकने का साहस नहीं था मुझमें। इसीलिए मैंने शंकरगढ़ और अभयानन्द के जीवन में से अभयानन्द के जीवन को प्राथमिकता देनी चाही थी।"

"तू धर्मसंकट में नहीं था द्विज। तू तो मोह जनित स्वार्थ के वशीभूत था।"

"आप मेरी दशा को चाहे जो संज्ञा दें गुरुदेव किंतु सत्य यही है कि मैं विवश था।"

"विवश तो तू था ही। तू मोह की विवशता में जकड़ा हुआ था किंतु तेरी उस विवशता की आड़ में तेरा अपराध नहीं छिप सकता। तूने तो ऐसा अपराध किया है कि उस अपराध का दुष्प्रभाव समूचे राज्य पर पड़ेगा।"

"मुझे क्षमा कर दो गुरुदेव। क्षमा कर दो मुझे।"

"तेरा अपराध अक्षम्य है द्विज। तू स्वयं से ये प्रश्न पूछ कि यदि तेरी वर्षों पुरानी निष्ठा को देख मैं तुझे क्षमा कर भी दूँ, तो क्या तेरे अपराध का दुष्प्रभाव शंकरगढ़ पर नहीं पड़ेगा? क्या शंकरगढ़ की निरीह प्रजा को पिशाच के क्रोध का भाजन नहीं बनना पड़ेगा?" पुजारी के चेहरे पर विवशता भरी झुंझलाहट काबिज हो गयी- "तूने क्या कर दिया द्विज? भातृ मोह में पड़कर तूने शंकरगढ़ को विनाश के किस गर्त में धकेल दिया? काश...काश उसी क्षण मैंने गला दबाकर तेरा वध कर दिया होता, जिस क्षण तू एक धुल-धूसरित बालक के रूप में अपने भाई को ढूँढते हुए शंकरगढ़ आया था और मैंने तुझे त्रासदी का मारा हुआ अनाथ समझकर देवी-मंदिर में आश्रय दिया था।"

कुछ सीमा तक पुजारी के वाक्-बाणों से तो कुछ सीमा तक अपने कृत्य की विभीषिका की कल्पना से द्विज आहत होता रहा।

"चला जा नराधम। मेरे दृष्टि-विस्तार से ओझल हो जा। आज से तू मेरे लिए परित्यक्त है।" घृणा के आवेश में आकर पुजारी ने द्विज के चेहरे पर थूक दिया।

"मैं ऐसा नहीं होने दूँगा गुरुदेव!" थूक को पोंछते हुए द्विज ने बिलखकर कहा- "मैं अपने अपराध की काली छाया शंकरगढ़ पर नहीं पड़ने दूँगा।"

"तू कुछ नहीं कर सकता द्विज। तू अब चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता।"

"नहीं गुरुदेव! आपने मेरे नेत्र खोल दिए। मैं अब स्वयं जाकर भइया का दाह-संस्कार करूँगा।"

पुजारी एक दीर्घ नि:श्वास भरकर खामोश रह गये।

"मैं जा रहा हूँ गुरुदेव। मैं भइया की झोपड़ी में जा रहा हूँ।" द्विज उठने को उद्यत हुआ किंतु पुजारी की वाणी ने उसे जड़ कर दिया।

"कोई लाभ नहीं है। अभयानन्द के अर्द्धमृत शरीर को कापालिक उठा ले गये। तुम्हें अब वहाँ कुछ नहीं प्राप्त होगा।"

द्विज के हाथ-पाँव थरथरा उठे। भावी रक्तपात और महाविनाश की असली अनुभूति तो उसे अब हुई।

"कापालिक..कापालिक कैसे पहुँचे भइया तक?"

"मुझे नहीं ज्ञात।" पुजारी का लहजा अब थोड़ा नर्म पड़ गया था। क्रोधाग्नि के मंथर पड़ जाने के बाद उन्हें द्विज द्वारा उठाये गये कदम के पीछे छिपी स्वाभाविक भावुकता का आभास होने लगा था- "पीपल के तने में आग लगाने के बाद भीषण बारिश के आसार देखते हुए महाराज समेत सभी लोग लौट आये थे। वापसी के उपरान्त तुम्हें यहाँ न पाकर मुझे आभास हो गया था कि अभयानन्द रक्त-संबंध के कारण पनपी भावुकता तुम पर हावी हो चुकी है और तुम उसे बचाने के असंभव कृत्य को संभव बनाने हेतु निकल पड़े हो। मैं एक क्षण का भी विलम्ब किये बिना अभयानन्द की झोपड़ी की ओर दौड़ पड़ा था किंतु विधाता ने नियति में जिस घटना को लिख रखा था, वह घटना घट चुकी थी। मुझे विलम्ब हो चुका था। अभयानन्द की झोपड़ी में तुम अचेतावस्था में पड़े थे। तुम्हारे सिर से होता रक्तस्राव इंगित कर रहा था कि तुम्हारे सिर पर प्रहार करके तुम्हें अचेत किया गया था। झोपड़ी में तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था।"

द्विज की आँखों के सामने वह दृश्य घूम गया, जब अभयानन्द के बदन पर औषधि का लेप लगाते समय उसके सिर पर प्रहार हुआ था। वह सहज ही इस नतीजे पर पहुँच गया कि हमला करने वाले अभयानन्द के तंत्र-समुदाय के कापालिक ही थे, जो उसे तलाशते हुए आये थे।

"म..मैं ये क्या कर बैठा? क्या कर बैठा मैं?" पश्चाताप के आँसुओं से द्विज के गाल भीगने लगे- "नियति के कालचक्र ने छला है मुझे। न तो मैं बड़े भाई के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सका और न ही समाज के प्रति अपने दायित्वों का। मैं तो दोनों ही परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण हो गया गुरुदेव। माँ मुझे इसलिये पापी कहेगी क्योंकि मैंने समाज के भय से अपने

भाई को अपनाकर उसे समय रहते सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न नहीं किया और शंकरगढ़ की प्रजा मुझे इसलिए पापी कहेगी क्योंकि उसी भाई के प्रति मेरा मोह एक पिशाच के अवतरण का निमित्त बनेगा। ये विधाता का कैसा गणित था गुरुदेव, जो मुझ जैसा सांसारिक गणित का प्रकांड ज्ञाता भी नहीं समझा सका?”

“तुम राज्य से चले जाओ। मैं महाराज से कह दूँगा कि तुमने अपराध बोध से ग्रस्त होकर आत्महत्या कर ली।” पुजारी भी द्विज की मनोव्यथा पर द्रवित हो गए।

“नहीं गुरुदेव!” द्विज ने चेहरा ऊपर उठाया- “जो पाप मैंने किया है, उसके प्रायश्चित के लिए मेरे आँसू पर्याप्त नहीं है। यदि श्मशानेश्वर, भइया के शरीर को माध्यम बनाकर अवतरित हुआ तो मैं उसका सर्वनाश करके अपने पाप का
प्रायश्चित करूँगा।”

“ये असंभव...।”

“मैं इसे संभव बनाऊंगा गुरुदेव!” पुजारी का कथन पूर्ण होने से पूर्व ही द्विज का लहजा दृढ़ हो उठा- “मैं इसे संभव बनाऊंगा।”

वह भूमि से उठा। सहसा उसके मुखमंडल पर किसी अलौकिक आत्मविश्वास का प्रखर तेज विद्यमान हो उठा था।

“मैं वापस आऊँगा गुरुदेव। मैं अपनी भूल को सुधारने वापस आऊँगा।”

द्विज के प्रस्थान के पश्चात भावी अनिष्ट की कल्पना में खोये पुजारी गर्भगृह की ओर मुड़े। गर्भगृह में सन्नाटा फैला हुआ था। हालाँकि प्रात:कालीन वंदना हो चुकी थी किंतु देवी के निवास की भव्यता मानो कहीं लुप्त हो गयी थी। प्रतीत हो रहा था कि मंदिर के परिवेश का हर एक कोना श्मशानेश्वर के अवतरण का मातम मना रहा था।

“माँ भगवती तुम्हें तुम्हारे उद्देश्य में पूर्ण करें द्विज। तुम पापी नहीं हो। नियति के कालचक्र ने सचमुच छला है तुम्हें।”

पुजारी ने अपने नेत्र बंद कर लिए।

JJJ

रात खामोश थी। वातावरण में केवल अभयानन्द की कराह व्याप्त थी। उसके अधजले शरीर को कई भेड़िए गोल दायरे में घेरकर बैठे हुए थे। नीचे की ओर झुके हुए उनके थुथुन उनके शोकग्रस्त होने का संकेत दे रहे थे। यह गोल दायरा श्मशानेश्वर की पाषाण-प्रतिमा के ठीक सामने बना हुआ था। एक कापालिक अभयानन्द को औषधि लगा रहा था। दायरे से थोड़ी ही दूर पर वह स्थान था, जहाँ अघोरा को दफनाया गया था। कब्र के उभार पर दीप जल रहे थे। वातावरण में इन दीपों की रोशनी के अतिरिक्त अन्य कोई रोशनी नहीं थी। तारे भी कापालिकों के इस महाशोक पर चमकने का साहस नहीं कर पा रहे थे। अँधेरे में डूबी श्मशानेश्वर की स्याह मूर्ति और भी भयावह हो रही थी। कमर में काली कोपीन लपेटे हुए कई कापालिक इधर-उधर टहल रहे थे। समय के गुजरने की धीमी गति पर सभी क्रोधित थे। वह मातमी वातावरण सामान्य मनुष्यों के लिए मरघट से भी अधिक भयावह था। औषधि लगा चुकने के बाद कापालिक उठा और भेडियों के दायरे को लांघकर समीप ही टहल रहे एक अन्य कापालिक के पास पहुँचा।

“गुरुदेव की काया में महाप्रभु का आगमन एक दिन पहले ही आरंभ हो चुका है।” उसने कहा- “प्रभु को उनकी काया में पूर्णतया आविष्ट होने के लिए तीन दिन निर्धारित हैं। आज की मध्यरात्रि के गुजर जाने के पश्चात दूसरा दिन भी पूरा हो जाएगा। कल मध्यरात्रि तक काया-प्रवेश की प्रक्रिया पूर्ण हो जायेगी। गुरुदेव के शरीर को नष्ट करने के प्रयास में उसे तीन चौथाई तक जला दिया गया है, इसलिए गुरुदेव कल मध्यरात्रि तक दाह की पीड़ा भोगते ही रहेंगे। हम औषधि इत्यादि से केवल उनकी पीड़ा को कम कर सकते हैं। उन्हें पीड़ा से स्थायी मुक्ति तो तभी मिलेगी जब प्रभु, गुरुदेव की काया में पूर्णतया प्रविष्ट होकर अवतरित हो उठेंगे और गुरुदेव की आत्मा अपनी काया छोड़कर प्रभु श्मशानेश्वर के साम्राज्य में विलीन हो जाएगी।”

उपर्युक्त सूचना पाकर कापालिक के जबड़े भींच गये। उसने दर्द से तड़प रहे अभयानन्द को देखा और खूंखार लहजे में बोला- “गुरुदेव के अतिशय कष्ट का मूल्य चुकाना होगा शंकरगढ़ को। उनके कष्ट का निमित्त बनकर उदयभान ने साक्षात काल को अपने राज्य में आमंत्रित किया है। अकल्पनीय रक्तपात को देखकर उनके नेत्र भी रक्त-वर्षा करने लगेंगे। हम गौण वंश के कापालिक हैं, हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। प्रभु श्मशानेश्वर का अवतरण होगा, निश्चित ही होगा।”

“राज्य के सैनिक गुरुदेव के शरीर को ढूँढने के लिए जंगल के कोने-कोने में बिखरे हुए हैं किंतु हमें इसका भय नहीं है क्योंकि हमने इस स्थान को भ्रम के आवरण में ढक रखा है। यदि कोई सैनिक इस ओर आया तो दृष्टि-भ्रम में उलझकर उसे कुछ नहीं नजर आ सकेगा।”

“अत्युत्तम।” कापालिक, जो अभयानन्द के बाद मठ का प्रमुख था, प्रशंसात्मक लहजे में बोला- “अब तुम विश्राम करो। गुरुदेव की सेवा में दूसरे सदस्य को लगा दो।”

निर्देश देने के बाद मठ-प्रमुख ने आकाश की ओर देखकर अनुमान लगाया कि रात्रि का तीसरा प्रहर आरंभ होने ही वाला था।

JJJ

कालचक्र पहले ही रचा जा चुका था। द्विज के मोह ने जिस महाविनाश की पृष्ठभूमि तैयार की थी, उसे ईश्वर ने नियति का रूप दे दिया था। ऐसे में भला कौन था, जो उस महाविनाश को असंभाव्य बना पाता? समय अपने स्वाभाविक गति से व्यतीत हुआ और देखते ही देखते श्मशानेश्वर की काया-ग्रहण प्रक्रिया का तीसरा दिन भी पूरा हो गया। और फिर, पहली तीन रातों तक श्मशानेश्वर का कहर मूक चौपायों पर टूटा। इसके बाद चौथी रात अपनी स्याह कालिमा से शंकरगढ़ के प्रारब्ध पर कालिख पोतने आयी।

JJJ

मरघट के उस हिस्से में अग्न्याधान को प्राप्त हो चुकी एक चिता के लपटों की रोशनी व्याप्त थी। दाह के पश्चात की क्रिया संपन्न कराने के लिए लगभग बीस लोगों का हुजूम चिता के इर्द-गिर्द उपस्थित था। वहाँ का मातमी वातावरण आज कुछ इसलिए भी भयावह हो रहा था क्योंकि दक्षिण में फैले घने जंगल से भेड़ियों के चीखने की आवाजें लगातार आ रही थीं। वायु के तीव्र वेग के कारण चिता की लपटें विचित्र ध्वनि उत्पन्न करते हुए इधर-उधर लहरा रही थीं। शव को मुखाग्नि देने वाला चारों ओर फैले निविड़ अँधकार को देख रहा था। उसका मस्तिष्क जीवन और मृत्यु के दर्शन पर चिंतन करने में व्यस्त था इसलिए उसका ध्यान उस चर्चा की ओर नहीं था, जो शव-यात्रा में साथ आये लोगों के बीच चल रही थी।

“राज्य में अफवाह फैली हुई है कि पिछले तीन दिनों से चोरी किये गये जिन चौपायों की लाशें यहाँ मरघट में बरामद हो रही हैं, उन्हें मारने वाला कोई जंगली पशु नहीं है।”

“तो फिर कौन है?”

“शायद कोई ऐसा पशु, जिसमें शेर या चीते से भी अधिक दरिन्दगी भरी हुई है।”

लोगों की कल्पना में उस भयानक पशु का अक्स उभरने लगा।

“सुनने में ये भी आ रहा है कि जहाँ पर अभयानन्द को जलाया गया था, अगली सुबह वहाँ से उसकी राख भी नहीं मिली थी।”

"जब वह कापालिक पूरी तरह जला ही नहीं था तो राख कहाँ से मिलेगी।"

"लेकिन वह पूरी तरह जला क्यों नहीं?"

"क्या उस रात की तेज मूसलाधार बारीश को भूल गये तुम लोग? जिसके उफान को देखकर ऐसा लगा रहा था, जैसे पिशाच भी ये नहीं चाहता था कि उसका भक्त जलकर मरे।"

"अगर उस बारीश में अभयानन्द बच भी गया होगा तो फिर उसे पीपल से उतारा किसने होगा? और फिर वह गया कहाँ होगा?"

"वह जंगल में रहने वाले दुष्ट कापालिकों के मठ का स्वामी था। क्या कापालिक उसे बचाने के लिए नहीं आये होंगे?"

"लेकिन मैंने उसे अपनी आँखों से देखा था। उसे पूरी तरह आग के हवाले कर दिया गया था। कापालिकों को उसे बचाने का क्या लाभ मिला होगा? उसकी मौत तो निश्चित थी।"

उपर्युक्त तर्क देने वाला कई निगाहों का केंद्रबिंदु बन गया।

"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अभयानन्द, 'श्मशानेश्वर सिद्धी' नामक अनुष्ठान पूर्ण कर चुका था? उस अनुष्ठान को पूर्ण करने वाले मनुष्य के शरीर में श्मशानेश्वर निवास करने लगता है। यदि उस मनुष्य के शरीर को तीन दिनों के अंदर नष्ट नहीं किया जाता है तो श्मशानेश्वर उस शरीर को धारण करके जीवित हो उठता है।"

"हे देवी माँ!" कमजोर दिल वालों ने मुँह पर हाथ रख लिया- "शुभ-शुभ बोलो। ईश्वर न करें ऐसा हो।"

"अगर ऐसा हो गया...।" किसी अन्य ने अजीब शक्ल बनाते हुए कहा- "तो अनर्थ हो जाएगा। खून की नदियाँ बह जाएंगी। पूरा शंकरगढ़ वीरान हो जाएगा। पिशाच को किसी भी उपाय से रोका नहीं जा सकेगा। ईश्वरीय शक्तियाँ भी उसके आगे कमजोर पड़ जायेंगी। श्मशानेश्वर के बारे में पुराने ग्रंथों में लिखा है कि वह यमराज का दूसरा रूप है। वह भड़मानस के रूप में आता है। उसके हाथ-पैर के लम्बे और नुकीले नाखूनों से लहू टपकता है। आँखें धधकते लावे की भांति सूर्ख होती हैं। वह दाहिने हाथ में कटार लेकर शिकार पर निकलता है। बाएं हाथ की मुट्ठी में शिकार के बाल जकड़ता है और कटार से उनकी गर्दन धड़ से अलग कर देता है।"

ठीक उसी क्षण, जंगल से एक भयानक गर्जना उठी और लोगों ने सहमकर उस दिशा में देखा।

"इतनी रात गये जंगल में कौन गरज रहा है? ये तो किसी शेर या चीते की गर्जना नहीं है।"

लोगों के पसीने छूट गये। उन्होंने जलती चिता की ओर देखा। शव के पूरा जलने में अभी समय था।

"कुछ होने वाला है।"

कई लोगों की आशंकित निगाहें आकाश की ओर उठ गयीं। काले घने बादल रहस्यमयी दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। निर्जन मरघट में झूमते वृक्षों की स्याह आकृतियाँ भयावह लगने लगी थीं। चिता की लपटें भी अब पहले से उग्र हो उठी थीं। विगत तीन दिनों से मरघट में पाये जा रहे पशुओं के शव को लेकर फैली अफवाहें सच का रूप लेती नजर आने लगीं।

"हमें वापस लौटना होगा।" किसी ने प्रस्ताव रखा- "कोई हमारा काल बनकर मरघट की ओर आ रहा है। ये सब उसी के आने संकेत हैं।"

"ऐसे कैसे जा सकते हैं?" उस शख्स ने, जिसने शव को मुखाग्नि दी थी, उपर्युक्त प्रस्ताव रखने वाले को घूरा- "अभी अंतिम संस्कार.....।"

कथन पूर्ण होने से पूर्व ही उसी दुर्दांत गर्जना ने एक बार फिर मरघट को कंपा दिया। इस बार गर्जना निकट से आयी थी। लौटने की राय देने वाले को हावी होने का अवसर मिल गया।

"मर चुके इंसान के लिए जान गंवाना मूर्खता भरी भावुकता मात्र है। महापंडित से विमर्श करके अधूरे अंतिम संस्कार को पूर्ण करने का कोई विकल्प ढूंढा जा सकता है लेकिन अगर हम यहाँ मौजूद रहे तो जो रहस्यमयी मौत हमारी ओर बढ़ रही है, उससे बचने का हमारे पास कोई विकल्प नहीं होगा।"

मृतक के संबंधियों को भी ये कथन तार्किक लगा। पल-प्रतिपल भयावह होता जा रहा मरघट का वातावरण, चिता पर रखे अधजले शव के प्रति लोगों की संवेदनाओं पर भारी पड़ने लगा।

"हम वापस लौट रहे हैं।" एक व्यक्ति ने घोषणा के स्वर में कहा।

"सजीवन अभी लौटा नहीं।"

प्रकरण से इतर वाक्य के मुखरित होते ही लोगों को झटका लगा।

"सजीवन कहाँ गया है?" दल के नेतृत्वकर्ता की भूमिका में आ चुके आदमी ने पूछा।

"हमने उसे दक्षिण की ओर अँधेरे में जाते देखा था। हमें लगा प्राकृतिक कर्म से निवृत्त होने के लिए जा रहा होगा, इसलिए टोकना उचित नहीं समझा।"

सभी की भयाक्रांत दृष्टि दक्षिण की ओर उठ गयी। दूर तक काजल से भी काला अँधेरा व्याप्त था। ये रुह तक को कंपा देने वाली भीषण गर्जनाओं का ही खौफ था, जो प्रत्येक के मन में यह विश्वास पनपने लगा था कि सजीवन अब उस अँधेरे से कभी बाहर नहीं आयेगा। जंगल से आती वृक्षों की मद्धिम सरसराहट से बोध होता था कि खौफनाक अँधेरा सजीव होकर साँसें ले रहा है।

"वापस चलो। सजीवन....सजीवन अब कभी नहीं लौटेगा।"

'जब मनुष्य के प्राणों पर संकट आता है तो वह सभी नैतिक मूल्यों को विस्मृत कर देता है।'

मरघट में उपर्युक्त कथन चरितार्थ हो गया। वे वापस मुड़ने को उद्यत हुए ही थे कि:

"आ....ह!"

अँधेरे के गर्भ से एक क्षीण आह निकली।

लोग ठिठककर रुक गये। दम साधे हुए अँधेरे को ही घूर रहे थे कि अचानक उनकी धड़कनें थम गयीं। खून से लथपथ सजीवन अँधेरे में से लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। साथियों पर दृष्टि पड़ते ही उसका वह हौसला जवाब दे गया, जिसके दम पर उसने किसी अज्ञात मुसीबत से बचकर यहाँ तक का फासला तय किया था। जमीन पर गिरने के बाद उसने हाथ आगे बढाकर मदद की गुहार लगाई। उसका गला आवाज़ निकालने में अक्षम हो चुका था। लोग उसकी ओर लपके।

जहाँ-जहाँ सजीवन के कपड़े फट गये थे, वहाँ-वहाँ से झाँक रहे जिस्म के
हिस्से रक्तरंजित थे। उसके दोनों गालों और हाथ पर भेड़िये के पंजों के निशान थे। उसकी एक पिंडली खून से लथपथ थी, ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ से माँस का एक बड़ा हिस्सा काट खाया गया हो।

'क्या हुआ तुम्हें?'

'कहाँ थे तुम?'

'किसने तुम पर हमला किया?'

उपर्युक्त अनगिनत सवालों के जवाब में सजीवन केवल निगाहों के जरिये अपने जख्मों की ओर इशारा करता रहा। उस पर निश्चेतना हावी हो रही थी, गला सूख रहा था और पलकें बंद होती जा रही थीं। बोलने के प्रयास में उसका मुँह खुल अवश्य रहा था किंतु जुबान कोई हरकत नहीं कर पा रही थी। चाहकर भी कुछ न बोल पाने की तड़प उसके चेहरे पर साफ नजर आ रही थी।

"इस पर जरूर पिशाच ने ही हमला किया है।"

पहले से ही खौफजदा लोग सहज ही उपर्युक्त निष्कर्ष पर पहुँच गये। रही सही कसर बेहद समीप से आयी तीसरी गर्जना ने पूरी कर दी।

"वह आस-पास ही है।"

लोगों ने चलने में असमर्थ हो चुके सजीवन की ओर देखा। उसने दोनों हाथ जोड़ लिए। याचना और पीड़ा के भाव से युक्त उसका चेहरा दयनीय हो उठा था। वह बार-बार अँधेरे की ओर देख रहा था।

"ये अब चल नहीं सकता।"

"अब क्या होगा? इसे कैसे चलेंगे हम?"

समूह का नेतृत्व करने वाले ने एक नजर अँधेरे पर डाली। एक-एक करके सभी लोगों के चेहरे का मुआयाना किया और फिर एक झटके में अपना फैसला सुना दिया- "अगर हम यहाँ से सही-सलामत निकलना चाहते हैं तो हमें सजीवन को यहीं छोड़ना होगा।"

"ये क्या..ये क्या कह रहे हो तुम?"

"पागल मत बनो। पिशाच के मुँह इसका खून लग चुका है। वह इसे किसी भी दशा में जिंदा नहीं छोड़ेगा। अगर हम इसे साथ लेकर भागेंगे तो इसके साथ हम भी उसका शिकार बनेंगे।"

उसने झुंझलाते हुए कहा। उसका बदन पसीने से भीगा हुआ था। साँसें तेज हो
गयी थीं। हालाँकि वह भी बुरी तरह बदहवास था लेकिन अन्यों की अपेक्षा इतना
संयत जरूर था कि कोई निर्णय ले सकने में सक्षम था। बाकियों की दशा ऐसी थी जैसे कलेजे के साथ-साथ उनका जेहन भी हलक में अटक गया था। सजीवन थोड़ी देर पहले जिन साथियों के साथ मौजूद था, उन्हीं की अब स्वार्थपरक बातें सुनकर उसका कलेजा असहनीय कष्ट से फट पड़ा। हृदय की उस टीस के आगे जिस्म की पीड़ा भी हार गयी।

"पिशाच के भोजन को हाथ मत लगाओ तो पिशाच तुम्हें भी हाथ नहीं लगाएगा। कम से कम इस मरघट से तो हम सही-सलामत निकल ही जायेंगे।"

इस आख़िरी निर्णय का सभी ने भारी मन से स्वागत किया। सजीवन ने मदद को आगे बढ़ाये हुए अपने हाथ को पीछे खींच लिया। उसने आँखें बंद करके आख़िरी बार ईष्ट को याद किया और स्वयं को प्रारब्ध के बंधन में ढीला छोड़ दिया।

"चलो यहाँ से। जल्दी चलो। पिशाच यहीं आस-पास ही है।"

और फिर, सजीवन ने क्षण-प्रतिक्षण दूर होती गयी कदमों की पदचाप को सुना।

'यही सांसारिक रिश्तों का घिनौना रुप है।'

इससे पहले कि वह आगे कुछ सोच पाता महापिशाच की रुह थर्रा देने वाली गर्जना को उसने बेहद निकट सुना। इसके पश्चात उसने केवल इतना ही महसूस किया कि कोई उसके दोनों पैरों को पकड़कर घसीटते हुए दूर ले जा रहा है, तत्पश्चात सब-कुछ अँधेरे में डूब गया।

एक साथी के प्राणों के मूल्य पर अपने प्राण बचाकर भाग रहे स्वार्थी इंसानों ने पर्याप्त दूरी पर पहुँचकर पीछे देखा। सब-कुछ अँधेरे में गर्त हो चुका था। चिता के लपटों की रोशनी में उन्हें नजर आया कि जहाँ पर थोड़ी देर पहले सहारे की भीख माँग रहा सजीवन पड़ा हुआ था, वहाँ अब कुछ नहीं था। उनके भय का कुछ अंश जिज्ञासा में परिणित हुआ और वे थम गये कि तभी अँधेरे को चीरकर एक दरिंदा बाहर आया।

वह दो पैरों पर खड़ा अतिशय ऊँचाई वाला एक नरभेड़िया था। उसके दाहिने हाथ में मौजूद कटार से खून टपक रहा था। बायें हाथ की मुट्ठी में उसने सजीवन के कटे हुए सिर के बालों को जकड़ रखा था। उसके जबड़ों से सजीवन के शरीर के किसी हिस्से का माँस लटका हुआ था।

"भ..भ...भ....ग....ग....गो!"

इस बार जब उनके पाँव मुड़े तो फिर उन्होंने दोबारा पलटने की जुर्रत नहीं की। श्मशानेश्वर ने प्रचंड स्वर में दहाड़कर अपने पहले मानव-शिकार का जश्न मनाया।

JJJ

वह रात का न जाने कौन सा प्रहर था, जब माया ने चौंककर आँखें खोल दी। कुछ क्षणों तक वह जड़ रही। ये ज्ञात होते हुए भी कि उसकी नींद खुल चुकी है, वह अपने हाथ-पाँव न हिला सकी। कुछ क्षणों बाद जब हालात सामान्य हुए तो
वह उठकर बैठी।

"इतना भयानक दु:स्वप्न!"

बड़बड़ाते हुए वह सीने पर हाथ रख कर साँसों को संयत करने लगी। एक अजनबी खौफ उस पर लगातार हावी होता जा रहा था। शयन-कक्ष में अँधकार था। केवल चन्द्रमा की क्षीण रोशनी ही थी, जो वहाँ बिखरी हुई थी। वह पलंग से उतरी। करतल ध्वनि उत्पन्न करके दासी को कक्ष में आने का संकेत देकर बरामदे की ओर बढ़ गयी। काले बादलों से घिरा चाँद बीमार नजर आ रहा था। बरामदे से लटके रेशमी परदे हवा से अठखेलियाँ करते हुए फड़फड़ा रहे थे।

माया का दु:स्वप्न साधारण नहीं था। उसने अभयानन्द को देखा था, जो उसके देखते ही देखते भयानक नरभेड़िये में तब्दील हो गया था। उसने भागना चाहा था, मगर उस भेड़िया-मानव ने दौड़कर उसकी कलाई पकड़ ली थी। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार उसने देवी-मंदिर जाने की राह में पहले भी पकड़ी थी। स्वप्न के उन क्षणों में निहित खौफ को याद करके वह काँप गयी। उसने कलाई को देखा। उसे अब भी वहाँ भेड़िये की नाखूनों के चुभन का एहसास हो रहा था।

कक्ष में दासी के प्रवेश की आहट पाकर उसने उसकी ओर मुड़े बगैर ही आदेश दिया- “कक्ष में उजाला कर दो।”

आदेश पाकर दासी कक्ष में जगह-जगह मौजूद स्वर्ण दीपाधारों पर रखे दीपों को जलाने में व्यस्त हो गयी।

JJJ

“अनिष्ट, घोर अनिष्ट।” कुलगुरु दक्षिण की ओर चले गये खून से सने भेड़िये के पंजों के निशान पर नजर डालते हुए भयभीत स्वर में बोले- “अंतत: जो संदेह हमने व्यक्त किया था, वही सत्य सिद्ध हुआ।”

मरघट में महाराज, सेनापति और कुलगुरु के साथ-साथ सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी भी उपस्थित थी। सजीवन के क्षत-विक्षत शव पर कपड़ा डाल दिया गया था। उसकी हृदयविदारक अकाल मृत्यु ने श्मशानेश्वर के जागरण के अफवाहों पर पूर्ण विराम लागते हुए उन्हें सच का रुप दे दिया था।

“उन नागरिकों के दावे सही थे कुलगुरु, जिनके चोरी हुए चौपायों के शव पहले ही यहाँ मरघट में प्राप्त हो चुके थे। उनका ये संदेह मिथ्या नहीं था कि अभयानन्द ब्रह्मपिशाच के रुप में लौट आया है।”

“हमें उसी क्षण अनहोनी का आभास हो गया था, जब अभयानन्द के दाह-कर्म की अगली सुबह हमें पीपल के पास दाह का कोई अवशेष नहीं प्राप्त हुआ था।” कुलगुरु ने कहा- “इस संभावना की ओर हमारा ध्यान गया था कि कहीं अभयानन्द के शरीर को कापालिक न उठा ले गये हों किंतु हमने ये सोचकर इस पर मनन नहीं किया था कि यदि कापालिक, अभयानन्द को पीपल से उतारकर ले गये भी होंगे तो असाधारण रुप से जल चुका उसका शरीर श्मशानेश्वर के काया-ग्रहण के लिए अपनी उपयुक्तता गँवा चुका होगा। इसी कारण विगत तीन दिनों से राज्य में हो रहे पशुओं की चोरी को हमने अभयानन्द की वापसी से जोड़कर नहीं देखा किंतु अब सजीवन की मृत्यु इस भयानक रहस्य को अनावृत कर चुकी है कि श्मशानेश्वर अवतरित हो चुका है।”

“किंतु ऐसा कैसे संभव है कुलगुरु?” महाराज ने विचलित स्वर में कहा- “असाधारण रुप से जल जाने के उपरान्त भी कोई कैसे जीवित रह सकता है? जिस क्षण हम लौटे थे, उस क्षण पीपल भीषण आग की चपेट में था।”

“अप्रतिम जिजीविषा के कारण अभयानन्द का सहजता से प्राणोत्सर्ग नहीं हुआ। संभव है कि अग्नि की प्रचंडता उसकी वासना की प्रचंडता के आगे ठहर न पायी हो। हमें ये भी स्मरण होना चाहिए राजन कि जिस क्षण हमने वापसी की थी, उस क्षण तीव्र बारीश के संकेत प्राप्त हो रहे थे।”

महाराज कुलगुरु का आशय समझ गये। उन्हें उस क्षण पर अफसोस होने लगा, जब उन्होंने अभयानन्द की दाह-क्रिया समाप्त होने से पूर्व ही लौटने का आदेश दे दिया था।

“अब क्या होगा कुलगुरु?”

सेनापति के यक्ष-प्रश्न ने कुलगुरु को विचलित किया। उन्होंने एक गहरी साँस लेकर दक्षिण में फैले घने जंगल को देखा। जंगल भयानक प्रतीत हो रहा था। उसकी भयावहता इसलिए भी अधिक थी क्योंकि अब उसमें एक नरभेड़िया निवास कर रहा था।

“वह अपनी शक्तियाँ समेट रहा है। जैसे-जैसे उसकी रक्ततृष्णा बढ़ेगी, उसके नर-संहार का तरीका भी परिवर्तित होगा। अभी तक उसने चौपाये पशुओं और रात को मरघट में उपस्थित एक मनुष्य की ही हत्या की है। कोई आश्चर्य नहीं कि वह अपनी तृष्णा मिटाने के लिए राज्य में आना आरंभ कर दे। लोगों के बाहर निकलने की प्रतीक्षा न करके उनके घरों में प्रवेश करके उनकी हत्या करने लगे। यदि वह मानवों का सामूहिक वध भी करे तो इसे उस पिशाच की भयावहता के अनुसार कम ही कहा जाएगा।”

“हे भगवती!” भयावह प्रारब्ध की कल्पना से वहाँ उपस्थित लोगों के रोंगटे
खड़े हो गये- “तो क्या जिस रक्तपात को टालने के लिए हमने अभयानन्द को राज्य के इतिहास का सबसे भयानक दंड दिया, वही रक्तपात अब भी होगा?”

“नि:संदेह ऐसा ही होगा। रक्तपात को टालने का अब कोई भी मार्ग शेष नहीं है, सिवाय सजग रहने के। राज्य के प्रत्येक नागरिक को मृत्यु से अपनी रक्षा स्वयं करनी होगी। सैन्य सुरक्षा बढ़ानी होगी। नागरिकों की सुरक्षा के लिए कुछ नए मापदंड बनाने होंगे। उन्हें हिदायत देनी होगी कि वे समूह में रहने का प्रयत्न करें। रात को अकेले भ्रमण न करें और न ही किसी अपरिचित दस्तक पर घर के द्वार खोलें।”

“किंतु इस प्रकार भय के तले कितने दिनों तक जीवन यापन किया जा सकता है?”

“जितने दिनों तक विधाता ने हमारे भाग्य में लिखा होगा। जब तक हम अभयानन्द के शमन का कोई विकल्प नहीं तलाश लेते, तब तक कुछ इसी तरह की जीवन-शैली अपनानी होगी।” कहने के बाद कुलगुरु, महाराज की ओर मुड़े- “सैनिकों की एक टुकड़ी को अभयानन्द की तलाश में वन में भेज दीजिये सेनापति जी।”

“किंतु उससे क्या होगा?”

“दिन के समय तामसिक शक्तियाँ क्षीण रहती हैं। हालाँकि इसकी संभावना कम ही है किंतु अगर अभयानन्द नजर आया तो उसे बंधक बनाना सहज होगा।”

वहाँ उपस्थित सैनिक आतंकित नजर आने लगे।

“क्या किसी पैशाचिक प्राणी को बंधक बनाना इतना सरल होगा कुलगुरु?” सेनापति ने आशंकित लहजे में पूछा।

“सरल तो अब कुछ भी नहीं रहा सेनापति।” कुलगुरु ने ठंडी आह भरकर पराजित स्वर में कहा। उनके भाव इंगित कर रहे थे कि किसी निर्णय के परिणाम को लेकर वे स्वयं भी आश्वस्त नहीं थे।

JJJ

"देवी-मंदिर हेतु प्रस्थान का समय हो चुका है।" माया ने कक्ष में आयी हुई उस दासी को फटकारते हुए कहा, जो अपराधी भाव से गर्दन नीचे झुकाये हुए थी- "क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि द्विज को एक क्षण का भी विलम्ब स्वीकार्य नहीं?"

"क्षमा करें राजकुमारी।" दासी ने गर्दन झुकाए हुए ही उत्तर दिया- "महाराज का आदेश है कि आप राजमहल से बाहर न निकलें।"

"ओह।" माया ने एक गहरी साँस ली- "अब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे कक्ष के बाहर अचानक सैनिकों की संख्या क्यों बढ़ाई गयी? किंतु मुझ पर लगे इस प्रतिबंध का कारण?"

"क्या आपको कारण नहीं ज्ञात राजकुमारी?" दासी ने माया की ओर देखा, फिर स्वत: ही उत्तर दिया- "वह दुष्ट कापालिक, जिसने आपके साथ दुर्व्यवहार किया था, लौट आया है।"

माया को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। बीती रात का स्वप्न याद करते ही
वह सहम गयी।

"किंतु....।" उसके होठों से अस्फुट सा स्वर निकला- "किंतु ऐसा हुआ कैसे? उसे तो जीवित जला दिया गया था न?"

"तेज बारिश आ जाने के कारण लोग उसे आग के हवाले करके लौट आये थे। कुलगुरु ने संभावना व्यक्त की है कि लोगों के लौट आने के बाद वहाँ कापालिक आये होंगे और उसे लेकर चले गये होंगे। कुलगुरु ने पूर्व में ही चेतावनी दे रखी थी कि यदि अभयानन्द का शरीर तीन दिनों के अंदर समाप्त नहीं किया गया तो उसमें श्मशानेश्वर पूर्णतया प्रवेश कर जाएगा।"

"तो इसका तात्पर्य ये है कि वे कापालिक अभयानन्द के शरीर को अपने साथ इसलिए ले गये क्योंकि वे चाहते थे कि श्मशानेश्वर उस शरीर में प्रविष्ट हो।" माया के चेहरे पर दहशत की छाया मंडराई- "और..और उनकी ये चाहत पूरी भी हो गयी है।"

"और ऐसा होने के पश्चात सबसे बड़ी असुरक्षा आप पर ही मंडरा रही है राजकुमारी। वह आपको अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए ही लौटा है।"

"हे देवी माँ!" माया ने शुष्क हो चुके गले को तर किया- "अब क्या होगा?"

"कुलगुरु ने भी अभी कोई उपाय नहीं बताया है, सिवाय कुछ सुरक्षा निर्देशों के। उन्हीं निर्देशों में से एक निर्देश ये भी है कि आपको राजमहल से बाहर न निकलने दिया जाए। सम्पूर्ण राज्य में आतंक की लहर है। लोग दिन के उजाले में भी एक कदम तक चलने में डर रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि पूरा शंकरगढ़ ही वीरान हो गया है।"

माया के चेहरे की उलझनें क्षण-प्रतिक्षण गहराती चली गयीं।

"द्विज कहाँ हैं?" लम्बी खामोशी के बाद उसने पूछा।

"स्पष्ट तो नहीं ज्ञात राजकुमारी किंतु राज्य में खबर है कि वे देवी-मंदिर छोड़कर चले गये हैं।"

"क्या?" ये माया के लिए चौंकने का दूसरा अवसर था- "किंतु क्यों? वे देवी-मंदिर छोड़कर क्यों चले गये?"

"इसका कारण तो मंदिर के पुजारी ही बता सकते हैं राजकुमारी।"

माया के चेहरे पर दहशत और उलझन का मिला-जुला प्रभाव और भी गहरा
हो गया।

JJJ

द्विज की हालत बदरंग हो चुकी थी।

दाढ़ी के बाल सामान्य से अधिक लम्बे हो गये थे। उसके पैरों की दशा, मुखमंडल की मलीनता, अस्त-व्यस्त और गंदे कपड़े दर्शा रहे थे कि वह लम्बी पदयात्रा करके उस दुर्गम पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा था, जहाँ दूर तक गगनचुम्बी पर्वतों और उनकी तलहटी में बसे जंगलों के सिवाय और कुछ नहीं नजर आ रहा था। उसने कंधे से एक झोला लटका रखा था। उसकी दशा ऐसी थी, जैसे कोई भिक्षुक भिक्षाटन हेतु निकला हो। वह एक पहाड़ की चोटी पर खड़ा होकर तलहटी में फैले जंगल को देख रहा था। दिन प्रहर भर चढ़ चुका था। दिवाकर की रश्मियों का ताप अब असहनीय होने लगा था। उसने गर्दन घुमाकर चारों दिशाओं का अवलोकन किया। वह प्रदेश जनशून्य था। दूर-दूर तक केवल पहाड़ और जंगल थे।

किसी विशेष चिह्न की तलाश में थिरकती द्विज की निगाहें एक दिशा में ठहर गयीं। दूर तलहटी में एक नदी बह रही थी। सूर्य के प्रकाश में चमकती नदी की अथाह जलराशि स्पष्ट नजर आ रही थी। नदी के आस-पास किसी जीर्ण-शीर्ण मंदिर के होने का संकेत भी मिल रहा था किंतु घने जंगल के कारण मंदिर की आकृति साफ़ नजर नहीं आ रही थी। द्विज के चेहरे पर एकाएक चमक उभरी। उसने झोले में से एक नक्शा निकाला और तलहटी में नजर आ रही नदी के आस-पास के क्षेत्रों को नक़्शे से मिलाने लगा।

"संभवत: यही वो स्थान है। यही वो स्थान है।"

हर्षातिरेक से उसका बदन थरथराया और मुखमंडल पर व्याप्त मलीनता का स्थान उत्साह ने ले लिया। उसने नक़्शे को झोले में रखा और जल्दी-जल्दी पहाड़ के ढलान पर उतरने लगा। हालाँकि अभीष्ट नदी पहाड़ की चोटी से नजदीक जान पड़ी थी लेकिन द्विज को उस तक पहुँचने में दो घंटे लग गये। नदी के तट तक पहुँचते-पहुँचते उसका उत्साह ठंडा पड़ चुका था, जिस्म पसीने से तर हो गया था और गला सूखने लगा था लेकिन गंतव्य मिल जाने की ख़ुशी ने दो घंटे की दुर्गम पदयात्रा की थकान को क्षीण कर दिया था।

उसने झोले को कंधे से उतारकर चट्टान पर रखा और नदी की गहरी जलधारा में खड़ा होकर उसकी शीतलता से तृप्त होने लगा। प्यास बुझाने और हाथ-मुँह धोने के बाद उसने नदी के दूसरे किनारे की ओर देखा।

नदी उस पार निर्जन और भयानक श्मशान भूमि थी, जिसकी काली पड़ चुकी
जमीन और वहाँ मौजूद अनुष्ठानों के अनगिनत चिह्न इंगित कर रहे थे कि उस श्मशान-भूमि की उपयुक्तता तंत्र-साधना के लिए थी। वातावरण शांत था। वहाँ पक्षियों का कलरव भी नहीं था। उस निस्तब्धता के बीच जल प्रवाह की कल-कल ध्वनि परिवेश में सुरीली संगीत बनकर गूँज रही थी। श्मशान की भांति ही निर्जन दिखाई पड़ रहा वह जीर्ण-शीर्ण मंदिर मरघट के ठीक बीच में था, जिसके झलक को द्विज ने पहाड़ की चोटी से ही देख लिया था।

द्विज ने अपनी धोती घुटनों के ऊपर चढ़ाई और नदी में जगह-जगह उभरे हुए चट्टानों का सहारा लेते हुए नदी पार करके दूसरे किनारे पर पहुँचा। नक़्शे के आधार पर वह पहले ही ये तय कर चुका था कि यही उसका गंतव्य है, इसलिए बिना किसी हिचकिचाहट या डर के वह मंदिर की ओर बढ़ गया।

मंदिर के गर्भगृह में एक भयावह प्रतिमा स्थापित थी, जो तंत्र की किसी अधिष्ठात्रि देवी की प्रतीत होती थी। प्रतिमा में कमल के फूल पर मैथुनरत कामदेव और रती पर देवी दोनों पाँव रखकर खड़ी थीं। उनके बायें हाथ में कटार थी और दायें हाथ में स्वयं उनका ही कटा हुआ शीश था। उनके कंधे पर यज्ञोपवीत और गले में नरमुंडों की माला थी। देवी के कटे

हुए कबंध से रक्त की तीन धारायें छूट रही थीं, जिनमें से दो उनके दायें-बायें निर्वस्त्र खड़ी दो योगिनियों के मुख में प्रवेश कर रही थीं और तीसरी धारा स्वयं देवी के कटे हुए शीश के मुख में प्रवेश कर रही थी। प्रतिमा की भयावहता इस कदर चरम पर थी कि उसे देखने के बाद साधारण प्राणी उस दुर्गम प्रदेश के बियावान श्मशान में रुकने का साहस नहीं कर सकता था।

“शरणागत की रक्षा करो देवी छिन्नमस्ता, रक्षा करो।” द्विज प्रतिमा के सम्मुख साष्टांग लेट गया- “आप तंत्र की दश महाविद्याओं में पंचम स्थान पर अवस्थित हो। जगत में तमोगुण का आधिक्य होने पर आपका आविर्भाव होता है। आप तामसिक हो। तम को स्वयं में समाविष्ट करके जगत का उद्धार करने वाली हो। इसीलिए मैं आपकी शरण में आया हूँ। तामसिक साधनाएं पाकर अवतरित हो उठे श्मशानेश्वर की शक्तियों को अब केवल आपकी तामसिक शक्तियाँ ही परास्त कर सकती हैं।”

द्विज भाव-भिभोर होकर तब-तक गिड़गिड़ाता रहता, जब-तक मंदिर के बाहर से उसे ये कर्कश स्वर नहीं सुनाई पड़ा:

“कौन है रे! देवी के सम्मुख जाने का दुस्साहस कैसे हुआ तेरा?”

रोमांच से द्विज के रोंगटे खड़े हो गये। उसके होठों से शब्दों का प्रवाह थम गया।

‘अघोरनाथ आ गये।’

उसने घबराकर आँखें बंद कर लीं और मन ही मन छिन्नमस्ता के स्वरुप का ध्यान किया।

प्रचण्ड चण्डिकां वक्ष्ये सर्वकाम फलप्रदाम्।

यस्याः स्मरण मात्रेण सदाशिवो भवेन्नरः।।[4]

द्विज अपने स्थान से बगैर हिले मस्तक को धरातल से टिकाए हुए ध्यान-श्लोक गुनगुनाता रहा। कर्कश आवाज़ दोबारा नहीं गूँजी बल्कि केवल लाठी टेकने का स्वर सुनाई दिया। द्विज ने अनुमान लगाया कि आगंतुक लाठी टेकते हुए उसी की ओर आ रहा था। उसकी साँसें तेज हुईं। उसने जल्दी-जल्दी श्लोक का उच्चारण पूर्ण किया और साँस रोककर अगली प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने लगा। लाठी की आख़िरी ‘ठक’ उसके पैरों के पास आकर थम गयी। उसने पलकें भींच ली और देवी के रौद्र रूप का ध्यान करने लगा।

“उठ।” आगंतुक ने सख्त स्वर में आदेश दिया।

द्विज पूर्ववत् पड़ा रहा।

“उठ।” इस बार आगंतुक लहजा क्रोध से भरा हुआ था।

“नहीं।” द्विज ने निर्भीक स्वर में उत्तर दिया- “यदि मैं देवी के चरणों में से उठा तो इस गोपनीय तंत्र-पीठ पर आने के अपराध में आप अपना शूल मेरी छाती में उतार देंगे। आप देवी के चरणों में पड़े भक्त की हत्या नहीं कर सकते इसलिए मैं यहाँ से नहीं उठूंगा। मैं मृत्यु का वरण नहीं करना चाहता।”

“तू कोई कपटी प्राणी ज्ञात होता है। कौन है? और यहाँ क्यों आया है?”

“मुसीबत का मारा हूँ प्रभु। आपका कृपा-फल प्राप्त करने आया हूँ।”

कई क्षणों तक अघोरनाथ की वाणी नहीं सुनाई पड़ने पर द्विज आगे कुछ बोलने ही वाला था कि उससे पहले अघोरनाथ की आवाज़ आई- “इस महागोपनीय तंत्र-पीठ का पता किसने दिया तुझे?”

“जिस तामसिक बाधा से मैं और मेरा राज्य पीड़ित है, उसके निवारण के लिए मैं दर-दर भटकता हुआ काशी स्थित नागा साधुओं के सबसे प्राचीन अखाड़े ‘आह्वान अखाड़ा’ पहुँचा था। मेरी बाधा की तामसिक प्रवृत्ति से आहत होकर अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी स्वरुपानंद ने मुझे यहाँ का पता बताया। स्वयं उन्होंने अपने हाथों से मुझे यहाँ आने के मार्ग का नक्शा बनाकर भी दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मेरी तामसिक बाधा को वही साधक हर सकता है, जिसने तंत्र की पंचम महाविद्या की अधिष्ठात्रि देवी माँ छिन्नमस्ता को सिद्ध किया हुआ हो।”

द्विज को एक बार फिर अघोरनाथ की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं सुनायी दी।

“स्वामी स्वरुपानन्द ने मुझे ये भी बताया था कि अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करने के लोभ में इस गोपनीय तंत्र-पीठ पर आने वाले कपटी मनुष्यों को देखते ही आप उनका वध कर देते हैं और अमावस्या की मध्य-रात्रि को उनके शव पर शव-साधना करते हैं। आपके इस कोप से बचने के लिए उन्होंने ही मुझे ये युक्ति बतायी थी कि यदि मैं माता के सम्मुख दंडवत हो जाऊँगा तो उस दशा में आप मुझ पर प्रहार नहीं करेंगे।”

“किस तामसिक बाधा की बात कर रहा है तू?”

“सर्वप्रथम मुझे अभयदान दीजिये प्रभु। अन्यथा मैं देवी के चरणों में मस्तक पटक-पटककर प्राण त्याग दूँगा।”

“उठ जा।”

“नहीं, बिना वचन लिए मैं नहीं उठूंगा।”

“एक साधक पर संदेह प्रकट करता है मूर्ख!” अघोरनाथ इस बार तेज स्वर में चीखे।

“आप तो काल की गति के ज्ञाता हैं प्रभु। क्या आपको मेरी विवशता नहीं दिखाई दे रही है? इस तंत्र-पीठ पर आकर मैं जो हठ कर रहा हूँ, उसके दंडस्वरुप क्या ये संभव नहीं है कि यदि मैं बिना अभयदान लिए उठा तो आप मेरा वध कर देंगे?”

“कुशल तर्कशास्त्री प्रतीत होता है तू।” अघोरनाथ का स्वर आश्चर्यजनक ढंग से नर्म पड़ गया- “निर्भय हो जा। हम तेरा वध नहीं करेंगे। यदि तेरे कर्म सात्विक हुए तो महामाया की प्रेरणा से अवश्य तेरी सहायता करेंगे।”

द्विज की मुराद पूरी हो गयी। उसने श्रद्धाभाव से अभिभूत होकर छिन्नमस्ता का आभार प्रकट किया और अहिस्तापूर्वक अपने स्थान से उठा, अघोरनाथ की ओर पलटा।

द्विज को लगा कि अकस्मात ही शिव से उसका साक्षात्कार हो गया है। वह अपने जीवन में पहली बार किसी सिद्ध पुरुष से रु-ब-रु हो रहा था। अघोरनाथ के सुडौल जिस्म पर किसी शव की ताजी राख का लेप था। कमर में एक मृगचर्म के अतिरिक्त बदन पर रेशम का एक धागा तक नहीं था। माथे पर त्रिपुंड और गले तथा कलाइयों में दुर्लभ रुद्राक्ष की मालाएं थीं। आखें उदीयमान सूर्य की भांति रक्तवर्ण थीं, जिनसे असहनीय चमक प्रस्फुटित हो रही थी। उनके दाहिने हाथ में उनके कद के आकार का त्रिशूल था। सिर पर एक वयस्क मनुष्य की भुजाओं की आधी ऊँचाई वाला घना जूड़ा था, जिसमें जकड़ी लटें भुजंग के समान नजर आ रही थीं। द्विज उनके पैरों से लिपट गया।

"आपको वचनबद्ध करने के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ प्रभु किंतु आपका कोपभाजन बनने से बचने का यही एक मार्ग था।"

"व्यथा क्या है तेरी?"

"श्मशानेश्वर को काया प्राप्त हो गयी है।"

द्विज ने बताने में लेशमात्र भी विलंब नहीं किया क्योंकि स्वरुपानन्द ने उसे सख्त हिदायत दी थी कि यदि अघोरनाथ समस्या के विषय में पूछें तो उन्हें बिना कोई भूमिका बांधे बता दे। स्वरुपानन्द के अनुसार, कोई सिद्ध पुरुष सामने वाले के किसी छिपे हुए अवगुण को देखकर कब उसकी सहायता से इनकार कर दे, कुछ कहा नहीं जा सकता। अघोरनाथ ने चौंककर अपने कदमों में पड़े द्विज को देखा।

"ये सत्य है प्रभु। श्मशान भूमि में विचरने वाले एक महापिशाच की आत्मा काया ग्रहण करके अवतरित हो उठी है।"

अघोरनाथ के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे। द्विज को उनके चेहरे पर भय की छाया भी नजर आ रही थी।

"रक्षा कीजिये प्रभु।"

अघोरनाथ ने द्विज की पकड़ से अपने पैरों को छुड़ाया और मंदिर से बाहर आ गये। द्विज भी उनके पीछे-पीछे बाहर आया।

"कैसे हुआ ऐसा?" लम्बी खामोशी के बाद जब अघोरनाथ को महसूस हो गया कि द्विज का कहना सही है तो उन्होंने मुँह खोला- "श्मशानेश्वर तो मरघट की सर्वोच्च पैशाचिक शक्ति है, एक वृक-मानव है। ब्रह्मराक्षस योनी का कष्ट भोगने से बचने के लिए दुराचारी ब्राह्मण उसकी साधना करके उसे अपनी काया में आमंत्रित करते हैं। अपनी आत्मा का उसके साथ सौदा करते हैं। उसके साम्राज्य में शरण पाने के मूल्य पर उसे अपना शरीर सौंपते हैं। तेरे राज्य में किसने उसकी भयानक साधना की? किस मूर्ख ने उसे अपना शरीर सौंपा?"

द्विज ने सविस्तार बता दिया।

"पाप तो तूने किया ही है द्विज। एक ऐसा पाप किया है तूने, जिसका प्रतिफल आज पूरा शंकरगढ़ भुगत रहा है। यदि तूने अभयानन्द के शरीर का दाह-संस्कार कर दिया होता तो श्मशानेश्वर अवतरित ही न हो पाता। किसी स्थान पर श्मशानेश्वर के अवतरण का तात्पर्य होता है, उस स्थान का विनाश। उस स्थान को देवता छोड़कर चले जाते हैं और फिर वहाँ पर किये जाने वाले किसी भी धार्मिक अनुष्ठान का कोई फल नहीं प्राप्त होता। कोई भी तांत्रिक उस पिशाच से मनुष्यों को मुक्ति नहीं दिला पाता।"

"किंतु आप तो तांत्रिकों से भी ऊपर एक सिद्ध पुरुष हैं। आपने मानवों के कल्याणार्थ ही तंत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित किया है। क्या आप भी मुझे मेरे पाप के प्रायश्चित का मार्ग नहीं सुझा सकते?"

"तूने जो पाप किया है, वह तमोगुण के प्रभाव में आकर नहीं किया है। उस पाप के पीछे तेरा कोई स्वार्थ न होकर केवल भातृ-प्रेम ही था। इसलिए तेरे कर्म तुझे प्रायश्चित का एक अवसर अवश्य देंगे।"

"अर्थात...।" सुखद आश्चर्य से द्विज का लहजा कंपकपाया- "अर्थात उस पिशाच से मुक्ति पाने का अभी भी कोई विकल्प शेष है प्रभु?"

"मार्ग तो अवश्य ही है किंतु विकट है। प्राणों का घोर संकट है तथापि कार्य के सिध्द होने की संभावना तुच्छ है।"

"आप मार्ग बताएं प्रभु। मैं नगण्य संभावना वाले मार्ग पर भी चलने को तत्पर हूँ। मैं अपनी संकल्प और इच्छाशक्ति से कार्य-सिध्दी की उस नगण्य संभावना से भी सफलता को खींच लाऊँगा।"

"तेरे विचार अत्युत्तम हैं।" अघोरनाथ की आँखों में द्विज के लिए प्रशंसात्मक भाव उभरे- "तंत्र की शक्तियाँ संकल्प और इच्छाशक्ति से ही संचालित होती हैं। जितना दृढ़ संकल्प होता है, उतनी ही प्रभावशाली तंत्र की शक्तियाँ होती हैं।"

"आप राह बताएं प्रभु। मैं अपना संकल्प क्षीण नहीं पड़ने दूँगा।"

अघोरनाथ ने कुछ नहीं कहा। विचारमग्न मुद्रा में चहलकदमी करते हुए वे नदी के तट तक आये।

"राह बताने से पूर्व हमें अनुमति लेनी होगी।" उन्होंने नदी की विपुल जलराशि पर इस कदर दृष्टिपात करते हुए कहा, जैसे जल की धारा में कुछ तलाश रहे हों।

"कैसी अनुमति प्रभु? आपको भला किससे अनुमति लेनी होगी?"

"तंत्र के प्रयोग के नियमों के अंतर्गत एक नियम ये भी है कि किसी साधारण मनुष्य को अपनी सिद्धि का भौतिक लाभ प्रदान करने के लिए साधक को उस सिद्धी की अधिष्ठात्रि देवी से अनुमति लेनी होती है। ऐसा श्रीमद्भागवत गीता में कहे गये कर्म-सिद्धांत की निरंतरता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। सम्बंधित मनुष्य के कर्म सात्विक होने तथा उसे तंत्र का लाभ प्रदान करने पर उसके कर्मों के हिसाब में कोई व्यतिक्रम उत्पन्न न होने की दशा में ही अधिष्ठात्रि देवी उसके हित के लिए तंत्र के प्रयोग की अनुमति देती हैं। एक सच्चा तांत्रिक वही होता है, जो तंत्र के नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करता है।"

द्विज का कलेजा हलक में आ फंसा।

"यदि देवी ने आपको अनुमति नहीं दी तो?"

"तेरा प्रकरण सुनने के पश्चात इसकी संभावना बहुत कम है कि देवी तंत्र-क्रिया की अनुमति नहीं देंगी। श्मशानेश्वर तेरी ही भूल के कारण अस्तित्व में आया है, इसलिए देवी तुझे भूल सुधारने का अवसर अवश्य देंगी।"

"आप देवी से अनुमति कब माँगेंगे?"

"आज रात्रि अमावस्या है। देवी को जागृत करने के लिए उपयुक्त अवसर है। हम शव-साधना के माध्यम से आज ही देवी का आह्वान करेंगे।"

द्विज ने राहत की साँस ली किंतु इससे पूर्व कि वह कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, जल की लहरों पर ठहरी अघोरनाथ का निगाहें चमक उठीं। वे द्विज की ओर पलटे और नदी के दूसरे किनारे की ओर संकेत करते हुए बोले- "उस पाट पर एक युवक का शव आ लगा है। उसे खींचकर हमारे पास ला। आज रात्रि की शव-साधना में हम उसे ही प्रयुक्त करेंगे।"

द्विज ने नदी के दूसरे तट पर दृष्टिपात किया। उसे कहीं कोई शव नहीं दिखा। उसने चेहरे पर आश्चर्य लिए हुए अघोरनाथ की ओर देखा।

"शव को इस पार ला।" उन्होंने अपना आदेश दोहराया।

द्विज ने अघोरनाथ के कोप से डरकर कोई प्रश्न नहीं किया और नदी की जलधारा में उतर गया। वह एक बार फिर चट्टानों का सहारा लेकर उस पार पहुँचा। उसके हैरत की सीमा न रही। तट पर सचमुच एक युवक की लाश आ लगी थी, जो चट्टान की आड़ में होने के कारण किनारे से नजर नहीं आयी थी।

युवक की अवस्था बीस-बाईस वर्ष से अधिक नहीं थी। लाश को देखकर ये बताना कठिन था कि उसकी मृत्यु की वजह क्या थी। द्विज ने अनुमान लगाया कि उसने आत्महत्या के ध्येय से गहरे पानी में छलांग लगाया होगा। लंबे वक्त तक पानी में रहने के कारण लाश घिनौनी हो गयी थी। द्विज ऐसी चीजों का अभ्यस्त नहीं था। उसने किसी तरह अपनी उबकाई रोकी और लाश के बाल पकड़कर उसे
खींचते हुए किनारे तक ले आया।

“सर्पदंश से मृत्यु हुई है इसकी।” अघोरनाथ ने शव का अवलोकन करते हुए कहा- “परंपरा के अनुसार इसके शव का दाहकर्म न करके नदी में प्रवाहित कर दिया गया। साधु-संतों, अत्यल्प वयस के बालकों अथवा सर्पदंश के शिकार हुए व्यक्तियों के शव को जलाने की बजाय नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। ऐसे शवों को ही हम अपनी साधना में प्रयुक्त करते हैं। अब तू अपने स्थान को लौट जा।”

“किंतु प्रभु....!”

“मन में बगैर कोई संशय रखे लौट जा।” अघोरनाथ ने द्विज की बात काटकर कहा- “तेरे शंकरगढ़ पहुँचने से पूर्व ही हम वहाँ पहुँच चुके होंगे। हम तुझे वहीं पर बतायेंगे कि महापिशाच का शमन किस प्रकार किया जाएगा।”

“क्या ये संभव नहीं है प्रभु कि मैं आपको साथ लेकर अपने राज्य को प्रस्थान करूं?”

“नहीं।” अघोरनाथ ने तीखे स्वर में मना किया- “उसके लिए तुझे आज रात्रि इस श्मशान भूमि में ठहरना होगा। ये तंत्र पीठ है और यहाँ अमावस्या की रात होने वाली मायावी तंत्र-क्रियाओं को देख तुझ जैसे सामान्य मनुष्य भय से पागल हो जाते हैं।”

N

13

P

"द्विज आपसे मिलने के इच्छुक हैं महाराज।"

द्वारपाल का उपर्युक्त संदेश सुनते ही मंत्रणा-कक्ष में चल रहे महत्वपूर्ण विमर्श पर विराम लग गया।

"द्विज?" महाराज के माथे पर बल पड़े- "अर्थात..अर्थात वे लौट आये?"

"जी हाँ, महाराज।"

उदयभान ने एक नजर उपस्थित सभासदों पर डाली। प्रत्येक के चेहरे पर मंत्रणा से अधिक द्विज के आगमन में दिलचस्पी देखकर उन्होंने आदेश दिया- "भेज दो उन्हें।"

द्वारपाल के जाने के थोड़ी देर बाद द्विज ने मंत्रणा-कक्ष में प्रवेश किया।

उसे देखकर महाराज समेत सभी सभासद चौंके। सामने जो मनुष्य खड़ा था, यदि द्वारपाल ने पहले ही उसका परिचय द्विज के रूप में नहीं दिया होता तो उसे कोई नहीं पहचान पाता। उसके दाढ़ी के बाल बढ़ने के साथ-साथ सफाचट सिर पर भी बाल उग आये थे। उसके कपड़े धूल से सन गये थे। नंगे और धूलधूसरित पैरों से खून बहकर सूख गया था।

"आप कहाँ गये थे द्विज? आपकी दशा इंगित कर रही है कि आप लगभग महीने भर की पदयात्रा से लौटे हैं।"

"आपका अनुमान सत्य है महाराज। मेरी लम्बी यात्रा का उद्देश्य उस भूल के प्रायश्चित का मार्ग तलाशना था, जिसके कारण आज शंकरगढ़ की धरती लहूलुहान हो रही है।"

"स्पष्ट कहिये द्विज।"

द्विज ने विनम्र भाव से सभासदों की ओर देखा और एक कुशल याचक की भांति शालीनतापूर्वक बोला- "आप से एकांत का अनुरोध करना चाहता हूँ महाराज। आपके समस्त प्रश्नों के उत्तर मात्र आपके और कुलगुरु की उपस्थिति में ही देना चाहता हूँ।"

द्विज का अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। जब मंत्रणा-कक्ष में केवल महाराज और कुलगुरु रह गये तो द्विज ने मुँह खोला- "मैं इस राज्य का अपराधी हूँ महाराज। पूरे प्रकरण को सुनने के बाद मेरे प्रति आपके मन में व्याप्त सम्मान रसातल को चला जाएगा और उसका स्थान घृणा ले लेगी।"

"आप कहना क्या चाहते हैं द्विज? कैसा अपराध किया है आपने?" महाराज ने आशंकित लहजे में पूछा।

द्विज ने गहरी साँस ली और फिर उसी गाथा को यहाँ भी दोहरा दिया, जिसे उसने अघोरनाथ के सम्मुख कहा था।

द्विज के अपराध से अवगत होने के पश्चात महाराज और कुलगुरु ने अवश्य ही उसे घृणित स्वर में फटकारा होता, यदि उन्होंने उसके मुखमंडल पर घोर पश्चाताप का भाव नहीं देखा होता।

"हमें तो स्वप्न में भी ये भान नहीं था कि अभयानन्द नाम के उस दुष्ट कापालिक के साथ आपका रक्त-संबंध था।" महाराज ने रोष से परिपूर्ण लहजे में कहा- "हम आज तक इसी विश्वास से बंधे रहे कि अभयानन्द को ले जाने वाले कापालिक थे किंतु आज ज्ञात हुआ कि हमारा वह विश्वास मात्र एक मिथ्या भ्रम था। ये कैसा भातृप्रेम था द्विज, जो आपने अभयानन्द के शरीर में प्रवेश कर चुके पिशाच की भयावहता से अवगत होते हुए भी उसके शरीर को नष्ट होने से बचाने का प्रयत्न किया और सम्पूर्ण राज्य को एक पिशाच के सम्मुख भोज के रूप में प्रस्तुत कर दिया? क्या आपको सूचना है कि राज्य में हर रात एक महापिशाच मृत्यु बांटने आता है? उसके दूषित अस्तित्व के कारण राज्य के निर्धन किसानों की फसलें तक नष्ट हो चुकी हैं?"

द्विज ने अपराधी भाव से गरदन झुका लिया।

"वाद-विवाद से कोई लाभ नहीं है राजन।" कुलगुरु ने हस्तक्षेप किया- "द्विज ने थोड़े समय पूर्व ही कहा कि वे अपने भूल के प्रायश्चित का मार्ग तलाश करने गए थे।"

"हाँ महाराज।" द्विज ने उत्साहित होकर चेहरा ऊपर उठाया।

"जिस महापिशाच का प्रादुर्भाव होने पर देवता भी अपने निवास से पलायन कर जाएँ, जिस महापिशाच को वश में करने का उपाय दुर्लभ ग्रंथों में भी अंकित न हो, उस महापिशाच का अंत करने का मार्ग आखिरकार आपको कैसे प्राप्त हुआ?"

"मैं कामरुप के एक दुर्गम प्रांत में स्थित माँ छिन्नमस्ता के तंत्र-पीठ पर गया था।"

"क्या?" कुलगुरु बुरी तरह चौंके- "आप...आप तंत्र-पीठ पर गये थे?"

"हाँ कुलगुरु।"

"किंतु तंत्र-पीठ तो अत्यंत गोपनीय होते हैं। वहाँ पहुँचने का मार्ग किसने बताया आपको?"

"पुजारी बाबा द्वारा लताड़े जाने पर जब मेरा मोह-भंग हुआ तो मुझे बोध हुआ कि मैं न केवल राज्य के विनाश की पटकथा लिख बैठा हूँ अपितु अपने बड़े भाई को भी अनंत-काल तक के लिए श्मशानेश्वर के नरक रुपी साम्राज्य में भटकने हेतु विवश कर चुका हूँ। अपनी भूल के प्रायश्चित का मार्ग तलाशने के लिए मैं देशाटन को निकल पड़ा। अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए मैं सनातन-संस्कृति की राजधानी काशी जा पहुँचा। किसी सिद्ध तांत्रिक की तलाश मुझे नागा-साधुओं के अखाड़े की ओर खींच ले गयी। आह्वान अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी स्वरुपानन्द ने भी श्मशानेश्वर के संदर्भ में असमर्थता जतायी किंतु उन्होंने मुझे कामरुप के एक दुर्गम और पर्वतीय प्रांत में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसे भयावह श्मशान तक जाने का नक्शा बनाकर दिया, जो वास्तव में एक गोपनीय तंत्र-पीठ है और जहाँ एक सिद्ध योगी अघोरनाथ निवास करते हैं।"

"अघोरनाथ?" कुलगुरु के नेत्र आश्चर्य से फैल गये- "तो क्या आपको अघोरनाथ के दुर्लभ दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ?"

"क्या आप उन्हें जानते हैं?" द्विज के कुछ बोलने से पूर्व ही महाराज ने कुलगुरु को लक्ष्य करके पूछा।

"वे छिन्नमस्ता के महासाधक हैं। द्विज जिस तंत्र-पीठ का वर्णन कर रहे हैं, वही उनका निवास स्थान है। वह स्थान इतना गोपनीय, रहस्यमयी और भयावह है कि यदि स्वामी स्वरुपानन्द ने द्विज को उस स्थान का नक्शा नहीं दिया होता तो द्विज वहाँ कभी नहीं पहुँच पाते और यदि किसी तरह पहुँच भी जाते तो जीवित वापस नहीं लौट पाते। तंत्र-समुदाय के साधक अघोरनाथ को शिव का रुप मानकर उन्हें अपने आदर्श की संज्ञा देते हैं। ये अवश्य ही द्विज के पूर्वजन्म के पुण्य कर्मों अथवा सात्विक विचारों का प्रतिफल है, जो ये उस तंत्र-पीठ से जीवित लौट आये। पापी मनुष्य अथवा तंत्र के दुरुपयोग की कामना रखने वाले किसी साधक के सामने पड़ते ही अघोरनाथ उग्र होकर कालभैरव का रुप धारण करके उसका वध कर देते हैं।"

द्विज के सत्साहस से अवगत होते ही महाराज के चेहरे पर छाये रोष के बादल छंटने लगे।

“हम आपके साहस की प्रशंसा करते हैं द्विज।”

“नहीं महाराज, मैं जिस विकट संकट का निमित्त बना हूँ, उसका अंत करने के लिए मात्र इतना ही साहस पर्याप्त नहीं है। मेरे साहस की असली परीक्षा तो अब होनी है।”

“अघोरनाथ ने श्मशानेश्वर के प्रकोप को शांत करने का क्या उपाय बताया द्विज?” कुलगुरु ने पूछा।

“उन्होंने कोई मार्ग बताये बिना ही मुझे लौट जाने का आदेश दिया था। उन्होंने कहा था कि वे स्वयं शंकरगढ़ आयेंगे और उसी समय महापिशाच की शांति का उपाय बताएंगे। उन्होंने ये दावा भी किया था कि वे मुझसे पूर्व ही यहाँ उपस्थित हो जायेंगे।”

“ओह। तो क्या वे यहाँ आ चुके हैं?”

“हाँ कुलगुरु! मैं स्वयं भी अचम्भित रह गया, जब देवी-मंदिर पहुँचने पर मैंने पाया कि अघोरनाथ मुझसे पहले ही वहाँ पधार चुके हैं और पुजारी बाबा को अपना परिचय देकर उन्हें सम्पूर्ण प्रकरण से अवगत भी करा चुके हैं।”

“इस क्षण कहाँ हैं वे?” महाराज और कुलगुरु ने समवेत स्वर में पूछा। दोनों के लहजे में रोमांच का पुट था।

“उन्होंने अभयानन्द का निवास देखने की इच्छा प्रकट की थी सो इस क्षण वे अभयानन्द की कुटी में ही होंगे। मैं आप लोगों को उनके आगमन की सूचना देने के लिए ही आया था।”

महाराज ने करतल ध्वनि उत्पन्न करके एक दास को सभागार में बुलाया और आदेश दिया- “हमारी सवारी तैयार की जाये।”

JJJ

अघोरनाथ उस शय्या का ध्यानपूर्वक निरिक्षण कर रहे थे, जिस पर द्विज ने अभयानन्द को लिटाया था। उसके अधजले शरीर से बहा हुआ तरल शय्या पर सूख चुका था और उस पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। अघोरनाथ उस सूखे हुए तरल के दायरे में आने वाले स्थान का निरिक्षण करके अभयानन्द की कद-काठी का आंकलन कर रहे थे। उनके मुखमंडल पर उतने ही शांत भाव थे, जितने शांत भाव एक ध्यान-मग्न योगी के मुखमंडल पर होते हैं। द्विज, कुलगुरु और महाराज के आगमन की आहट महसूस करके भी उन्होंने उनकी दिशा में गर्दन नहीं घुमायी।

“पिशाच शक्तिशाली है।” अघोरनाथ ने सूखे हुए तरल का अवलोकन करते हुए कहा- “प्रतिशोध की भावना ने उसे भयानक बना दिया है। अभयानन्द के अवचेतन मस्तिष्क में संचित वासनाएं श्मशानेश्वर के सूक्ष्म शरीर की शक्ति प्राप्त करके प्रचण्ड रुप से भड़क उठी हैं। उन वासनाओं की पूर्ति के लिए श्मशानेश्वर क्रूरता की बड़ी से बड़ी सीमाएं भी लांघ जाएगा।”

“किंतु प्रभु, पन्द्रह दिन से राज्य में जो नरसंहार हो रहा है, उसे रोकने का कोई तो मार्ग होगा। संसार में पिशाच के साथ-साथ ईश्वर का भी तो अस्तित्व है।”

महाराज का विनम्र स्वर कानों से टकराते ही अघोरनाथ उनकी ओर मुड़े। कई क्षणों तक उनके मुखमण्डल को निरखने के पश्चात उन्होंने मुँह खोला- “है, उपाय है। यदि उपाय न होता तो हम सहस्र कोस की यात्रा करके यहाँ आते ही क्यों?”

सुखद रोमांच से अभिभूत होकर तीनों ने राहत की साँस ली।

“किंतु...!” अघोरनाथ ने द्विज पर निगाह डाली- “हम द्विज को तंत्र-पीठ पर ही इस कटु सत्य से अवगत करा चुके हैं कि उपाय प्राणघातक है। सफलता की प्रायिकता शून्य नहीं है तो शून्य से बहुत अधिक भी नहीं है।”

“मैं भी आपको सम्पूर्ण स्थिति से अवगत करा चुका हूँ प्रभु।” द्विज ने अधीर लहजे में कहा- “आप केवल उपाय बताएं। मैंने जो भूल की है, वह भूल विनाश का बादल बनकर शंकरगढ़ पर कहर बरसा रहा है। जिस राज्य ने मुझे एक अनाथ के रूप में अपने दामन में आश्रय दिया, उस राज्य पर मेरे कारण आए संकट को टालने में यदि मेरे प्राण भी चले जाएं तो भी मैं अब तक काल के गाल में समा चुके नागरिकों की हत्या के पाप से मुक्त नहीं हो पाऊँगा।”

अघोरनाथ ने गहरी साँस ली और शय्या पर बनी अभयानन्द की अनुकृति पर दृष्टिपात करने के बाद कहना आरंभ किया:

“जो मनुष्य श्मशानेश्वर को अपनी काया में आमंत्रित करता है, वह मनुष्य सर्वप्रथम उस काया से श्मशानेश्वर का निष्कासन कराता है, जिसमें उसका वर्तमान निवास होता है। यह क्रिया काया-संयुग्मन के माध्यम से पूर्ण की जाती है, जिसके लिए एक वयस्क नरबली की आवश्यकता होती है। नरबली हेतु चयनित मनुष्य की काया को श्मशानेश्वर के पूर्ववर्ती धारक की काया के साथ संयुग्मित कराया जाता है। दो शरीरों के संयुग्मन का अर्थ होता है कि वे दोनों शरीर भौतिक रुप से पृथक होते हुए भी एक दूसरे से जुड़ जाते हैं। सरल अर्थों में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि वे दो शरीर एक प्राण हो जाते हैं। इसके पश्चात चयनित मनुष्य की बलि चढ़ा दी जाती है। उस मनुष्य की मृत्यु होते ही श्मशानेश्वर के धारक की भी मृत्यु हो जाती है और उसी क्षण श्मशानेश्वर अपने पूर्ववर्ती धारक का शरीर छोड़कर नये धारक के शरीर की ओर आकर्षित हो जाता है और तीन दिवसों की प्रक्रिया के पश्चात वह नये धारक के शरीर में पूर्णतया आविष्ट हो जाता है।”

“किंतु इस प्रक्रिया में काया-संयुग्मन अथवा नरबली की क्या आवश्यकता है? क्या श्मशानेश्वर स्वयं अपनी शक्तियों के बल पर पूर्ववर्ती धारक से नवीन धारक में स्थानांतरित नहीं हो सकता?” कुलगुरु ने पूछा।

“नहीं। श्मशानेश्वर अपने वर्तमान धारक की काया से तब तक निष्कासित नहीं होता जब तक कि उस काया को नष्ट न कर दिया जाए।”

“विघ्न के लिए क्षमा चाहता हूँ प्रभु।” कुलगुरु ने हस्तक्षेप किया- “किंतु पूर्ववर्ती धारक के शरीर को नष्ट करना क्यों आवश्यक होता है?”

“श्मशानेश्वर एक दूषित आत्मा है। जब वह पिछले धारक के शरीर में लम्बी अवधि तक निवास कर लेता है तो आत्मा की स्वाभाविक प्रवृत्ति के फलस्वरूप उसे उस शरीर से मोह हो जाता है। नये धारक के शरीर में प्रविष्ट कराने से पूर्व श्मशानेश्वर के उस मोह को भंग करना आवश्यक होता है और ऐसा पुराने धारक के शरीर को नष्ट करके ही किया जा सकता है।”

“पूर्ववर्ती धारक के शरीर को नष्ट करने की यह क्रिया काया-संयुग्मन के माध्यम से क्यों पूर्ण की जाती है? पूर्ववर्ती धारक के शरीर को प्रत्यक्ष क्यों नहीं नष्ट कर दिया जाता?”

“यदि तुम्हें तुम्हारी या तुम्हारे किसी प्रिय की काया नष्ट करनी आवश्यक हो जाए तो क्या ये कार्य तुम्हारे लिए सहज होगा?” द्विज के प्रश्न पर अघोरनाथ ने उसे इस कदर घूरा, मानो उसका प्रश्न मूर्खतापूर्ण हो। वह झेंप गया। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। थोड़ा बहुत जो संशय था, उसे अघोरनाथ के अगले स्पष्टीकरण ने दूर कर दिया– “जो मनुष्य नरबली हेतु उद्दिष्ट होता है, उसे काया-संयुग्मन के द्वारा माध्यम बनाया जाता है ताकि श्मशानेश्वर के वर्तमान धारक को होने वाला मृत्यु का भीषण कष्ट, उसके साथ युग्मित शरीर में स्थानांतरित हो जाए।”

“तो इसका तात्पर्य ये हुआ कि बिरजू ही वह व्यक्ति था, जिसे श्मशानेश्वर के पूर्व धारक अघोरा के साथ युग्मित करके उसकी बलि चढ़ायी थी ताकि अघोरा को मौत के कष्ट की अनुभूति न होने पाए।”

“हाँ दिव्यपाणी।” अघोरनाथ, कुलगुरु की ओर मुखातिब हुए। उनकी आँखों में दिव्यपाणी के लिए प्रशंसा के भाव थे- “तुमने कुलगुरु होने के कर्तव्य का कुशलतापूर्वक पालन किया था और राजा को अभयानन्द का शरीर नष्ट करने का सर्वथा उचित परामर्श दिया था। ये विधि का विधान ही था, जो तुम्हारा परामर्श अपेक्षित परिणाम देने में विफल रहा।”

“अब उस विफलता के परिणाम से कैसे बचा जा सकता है प्रभु?”

अघोरनाथ के चेहरे पर एक बार फिर गंभीर भाव व्याप्त हो गये। थोड़ी देर के मनन के बाद उन्होंने कहा- “उपाय यही है कि जो तब नहीं किया गया, उसे अब किया जाए।”

“अर्थात?” महाराज, कुलगुरु और द्विज का समवेत स्वर।

“अर्थात अभयानन्द के शरीर को नष्ट कर दिया जाए।”

“किंतु....किंतु ये तो असंभव है।” द्विज की लहजा थरथराया- “वह तो मृत्यु का देवता बन चुका है। आप जो करने का परामर्श दे रहे हैं, उसे कोई उपाय नहीं माना जा सकता है। ये तो ठीक वैसा ही है, जैसे एक अजेय पिशाच का सामना करके उसे पराजित करने के लिए कहा जा रहा हो। हर रात दक्षिण के जंगल के जंगल से आने वाली भेड़िया-मानव की गर्जना सुन जिस राज्य में मातम की लहर दौड़ जाती हो, वह राज्य उस भेड़िया-मानव का प्रत्यक्ष सामना कैसे कर सकेगा?”

“धैर्यहीन मत बनो द्विज।” द्विज की विकलता देख कर अघोरनाथ मुस्कुराए- “यदि तुम्हें पिशाच का प्रत्यक्ष सामना करने का परामर्श देना ही एकमात्र विकल्प होता तो हम स्वयं यहाँ क्यों आते?”

“तो क्या पिशाच के शरीर को नष्ट....।”

“हाँ।” अघोरनाथ, द्विज का कथन पूर्ण होने से पूर्व ही बोले- “एक सहज युक्ति है हमारे पास।” अघोरनाथ ने शय्या पर दृष्टिपात करते हुए आगे कहा- “जिस काया-संयुग्मन के माध्यम से श्मशानेश्वर ने नवीन काया अर्जित की है, वही काया-संयुग्मन उसके उस नवीन काया के नाश का कारण बनेगा। हम शत-प्रतिशत अभयानन्द के समरूप आटे के एक पुतले का निर्माण करेंगे, जो पूर्णतया उसी की कद-काठी का होगा। काया-संयुग्मन प्रक्रिया के तहत उस पुतले का सम्बन्ध अभयानन्द से स्थापित करने के पश्चात हम उस पुतले का दाह-संस्कार कर देंगे। पुतले के दाह की प्रक्रिया पूर्ण होते ही अभयानन्द की पैशाचिक काया भी भस्म हो जाएगी।”

उपाय सुनने के पश्चात भी तीनों में से कोई कुछ नहीं बोल सका। तीनों में से किसी को भी ये विश्वास नहीं हो सका कि जिस कार्य को अघोरनाथ ने लगभग असंभव बताया था, वह कार्य इतनी सरलतापूर्वक किया जा सकता है। अघोरनाथ उन तीनों की दुविधा भाँप गये।

“ये प्रक्रिया उतनी सहज नहीं है, जितनी तुम लोग अनुमान लगा रहे हो। अभयानन्द को ज्यों ही ये ज्ञात होगा कि उसकी काया को उसके समरूप आटे के पुतले के साथ संयुग्मित किया जा रहा है, त्यों ही उसका क्रोध भड़क उठेगा। तुम लोग ये अनुमान लगा सकते हो कि उसके क्रोध का सामना करते हुए उसके पुतले का दाह-संस्कार करना कितना कठिन कार्य होने वाला है।”

झोपड़ी में निस्तब्धता छा गयी।

“श्माशानेश्वर के क्रोध का सामना करने की रणनीति तुम लोगों को स्वयं बनानी होगी।”

अघोरनाथ का कथन सुन द्विज की तन्द्रा भंग हुई। उसने कहा- “क्या आप उस पिशाच का सामना करने के लिए हमें कोई सुरक्षा नहीं प्रदान कर सकते?”

“हम तुम्हें एक सुरक्षा चिह्न अवश्य प्रदान कर सकते हैं।” अघोरनाथ ने अपने गले से लटके धातु के स्वास्तिक चिह्न को निकाला और उसे द्विज को सौंपते हुए कहा- “यद्यपि ये पवित्र स्वास्तिक चिह्न इस अभियान में तुम्हारी रक्षा करेगा किंतु इसे अभी सिध्द नहीं किया गया है इसलिए इसमें अभी अलौकिक शक्तियाँ नहीं हैं।”

“वे अलौकिक शक्तियाँ कैसे जागृत होंगी प्रभु?”

“उसके लिए तुम्हें देवी छिन्नमस्ता की एक दिवसीय साधना करनी होगी। *ह्रीं हूँ ऐं ऊं वज्रवैरोचनीये फट् स्वाहा।* देवी के इस चतुर्दशाक्षर मंत्र का दस लाख बार जाप करने के उपरांत तुम्हें स्वास्तिक को हवन की अग्नि में रक्ततप्त करके अपनी कलाई से स्पर्श कराना होगा। चूँकि स्वास्तिक रक्ततप्त होने के कारण अत्यंत उष्ण होगा, इस कारण वह तुम्हारी कलाई से स्पर्श करते ही जले के निशान के रूप में अपनी छाप छोड़ देगा। इस प्रकार तुम्हारी दाहिनी कलाई पर अंकित हुआ स्वास्तिक ही तुम्हारा सुरक्षा-चिह्न होगा, जिसे धारण करने के पश्चात श्मशानेश्वर तुम्हें स्पर्श तक नहीं कर पायेगा। उसके सम्मुख आते ही तुम्हारा यह सुरक्षा चिह्न आश्चर्यजनक ढंग से प्रदीप्त हो उठेगा।”

द्विज ने स्वास्तिक को श्रद्धापूर्वक माथे से लगाया।

“पिशाच का भयावह रुप देखकर तुम्हारा आत्मविश्वास डगमगाने लगे तो तुम आत्मज्ञान का मार्ग पकड़ लेना। गीता के सांख्ययोग का कोई भी श्लोक इसमें तुम्हारी सहायता कर सकता है क्योंकि इस सम्पूर्ण अध्याय में वासुदेव श्रीकृष्ण ने अर्जुन के मोह का हनन करने के लिए आत्मा के अविनाशी प्रकृति का ही वर्णन किया है। अभयानन्द के पुतले के दाह-संस्कार की क्रिया मैं अवश्य संपन्न कराऊंगा किंतु उसे एक निश्चित समय तक रोकने का दायित्व तुम्हें ही स्वीकारना होगा।”

“मैं सहर्ष प्रस्तुत हूँ। मैं अपने प्राणों का मूल्य चुकाकर भी पिशाच का मार्ग रोक कर रखूंगा।”

अघोरनाथ, महाराज की ओर मुड़े।

“तुम राज्य के सैनिकों को आदेश दे दो कि वे दक्षिण के जंगल में कूच कर जाएँ और समस्त नराधम कापालिकों का निर्ममता से वध कर दें ताकि वे भविष्य में फिर कभी तंत्र जैसे विलक्षण एवं अद्भुत ज्ञान को कलंकित न कर सकें।” महाराज के नेत्र भय से विस्फारित हुए ही थे कि अघोरनाथ पुन: बोल पड़े- “निर्भय रहो। जब तक हम इस राज्य में हैं, महापिशाच दिन के प्रकाश में किसी पर हमला करने का दुस्साहस नहीं कर सकता।”

“जो आज्ञा प्रभु।”

“अभयानन्द के पुतले के निर्माण कार्य आरंभ कर दिया जाए। द्विज की साधना पूर्ण होते ही हम अपने अभियान का आरंभ करेंगे।”

अंतिम आदेश देने के बाद अघोरनाथ झोपड़ी से बाहर निकल गए।

JJJ

“द्विज, आप यहाँ?”

माया, द्विज को अपने कक्ष में पाकर बुरी तरह चौंकी।

“हाँ।” द्विज ने भावहीन स्वर में उत्तर दिया। उसने कंधे से एक झोला लटका रखा था। कामरुप से लौटने के बाद वह पहली दफा माया से रु-ब-रु हो रहा था।

“आप कहाँ चले गए थे?” माया, द्विज से आलिंगनबद्ध होने को आतुर हुई किंतु अगले क्षण भूल का एहसास होते ही उसके कदम उससे पर्याप्त फासले पर ठहर गए।

“अपने उस भूल को सुधारने का मार्ग तलाशने गया था, जिसके कारण आज राज्य में एक रक्तपिपासु पिशाच का आतंक व्याप्त है।”

“अपना मंतव्य और स्पष्ट करें द्विज। भेड़िया-मानव के रूप में अभयानन्द की वापसी आपकी किस भूल का दुष्परिणाम है।”

द्विज ने माया की ओर से दृष्टि फेर ली जबकि माया गहन उत्कंठा के कारण रोमांचित हो उठी।

“आपने मौन क्यों धारण कर लिया?”

“क्या तुम बिना किसी टिप्पणी के मेरी पूरी बात सुन सकोगी माया?”

माया की मूक सहमति पाकर द्विज ने पूरा किस्सा सुना दिया।

“अभयानन्द मेरे वही अग्रज थे, जिनके साथ मैंने त्रासदी वाली उस रात शंकरगढ़ की यात्रा की थी, जिस रात ऋण न चुकाए जा पाने की दशा में जागीरदार ने कई किसानों के घरों को आग की लपटों की भेंट चढ़ा दिया था। मेरा परिवार भी उनमें से एक था। कुछ भी शेष नहीं बचा था मेरे पास, सिवाय अतिशय प्रेम करने वाले एक अग्रज के किंतु ईश्वर ने उस अग्रज को भी उसी रात मुझसे अलग कर दिया था।”

किसी पाषाण-प्रतिमा की भांति निश्चल खड़ी माया पूरा प्रकरण सुनने के बाद इस दुविधा से जूझने लगी कि द्विज की करुण गाथा पर संवेदना प्रकट करे या फिर उसके भातृप्रेम पर रोष। अंततः संवेदना रोष पर हावी हो गयी।

“नियति ने आपके साथ आश्चर्यजनक खेल....।” माया ने सहानुभूति भरे लहजे में कुछ कहना चाहा किंतु द्विज ने उसे अवसर नहीं दिया।

“नहीं माया। इस क्षण मुझे तुम्हारी संवेदनाओं की नहीं अपितु किसी अन्य भाव की आवश्यकता है।” अंतिम वाक्य बोलते समय द्विज का लहजा लड़खड़ाया था, असहज हुआ था।

माया चेहरे पर नासमझ भाव लिए हुए उसे देखने लगी, जबकि उसने कंधे से लटके झोले में से एक पत्रक निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया। पत्रक को मोड़कर मौली धागे से बांधा गया था। इस क्षण माया को द्विज के चेहरे पर वही असहजता नजर आ रही थी, जिसे उसने थोड़ी देर पहले उसके लहजे में महसूस की थी। माया ने कांपते हाथों से पत्रक थामा, मौली धागे को खोला और अगले
ही क्षण उसकी दृष्टि के सम्मुख द्विज के व्यक्तित्व का सर्वथा नवीन पहलू था।

द्विज एक विद्वान शिक्षक होने के साथ-साथ प्रवीण चित्रकार भी था, ये रहस्योद्घाटन माया के लिए सुखद था किंतु इससे भी सुखद थी वह अनुभूति, जो द्विज के बनाए हुए चित्र को देखकर उसे हुई थी। चित्र में स्वयं वह थी, जो दाहिने गाल पर हाथ रखे हुए सरोवर में अपना प्रतिबिम्ब निहार रही थी। द्विज ने अश्लीलता के दायरे में कदम रखे बिना ही उसके शरीर के वक्रों को इस कदर रेखांकित किया था कि उसके कपोलों पर लज्जा की सुर्खी दौड़ गयी।

द्विज की साँसें तीव्र हो उठीं। इस क्षण वह उतने ही व्यग्र भाव से माया की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा था, जितने व्यग्र भाव से माया ये जानने की प्रतीक्षा किया करती थी कि उसके हल किये हुए प्रश्न सही हैं या नहीं।

माया, द्विज से निगाहें न मिला सकी। उसने चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

“तुमने दृष्टि क्यों फेर ली माया?”

“जिस भाव से आपने ये चित्र बनाया है, वे भाव किसी भी स्त्री को असहज कर सकते हैं।”

“मुझ जैसे अनुभवहीन चित्रकार का कृतित्व सार्थक हो गया।” द्विज ने गहरी साँस लेकर कहा- “क्योंकि जिस भाव के वशीभूत होकर मैंने रंगों को पत्रक पर बिखेरा, उस भाव का बोध तुम्हें सहज ही हो गया।”

माया के होंठ थरथराये किंतु ये थरथराहट शब्दों का रूप न ले सकी। उसने द्विज की ओर मुड़ने की कोशिश की किंतु इस कोशिश में भी सफल न हो सकी।

“मेरे पास अधिक समय नहीं है माया। मैं तुमसे कोई प्रत्युत्तर माँगने नहीं आया हूँ और न ही ये जानने का अभिलाषी हूँ कि तुम्हारे ह्रदय में मेरे प्रति क्या भाव हैं। मैं केवल तुम्हें अपनी प्रथम और अंतिम कृति भेंट करने के साथ-साथ एक विशेष प्रयोजन से अवगत कराने आया था।”

माया अब भी खामोश रही। द्विज गहरी साँस लेकर वर्तमान विचारों से निजात पाकर उस विषय पर आ गया, जो शंकरगढ़ के हित के लिए उसके प्रेम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।

“महान तंत्र साधक अघोरनाथ ने अभयानन्द के अंत के लिए एक युक्ति बतायी है किंतु वह युक्ति इतनी सहज नहीं है कि कोई साधारण मनुष्य उसे सफल बना सके।”

“तो अब क्या होगा?” राज्य की सुरक्षा का मुद्दा आते ही माया द्विज की ओर मुड़ गयी। जबकि उसके प्रश्न के उत्तर में द्विज का चेहरा दृढ़ हो गया।

JJJ

रात की स्याह चादर ने दक्षिण के जंगल को खुद में समेट लिया था।
अभयानन्द एक पेड़ की ओट से बाहर निकला। उसकी चाल मंथर थी। चेहरे पर भय था। ये शंकरगढ़ में अघोरनाथ की मौजूदगी का असर था, जो उसे अपने ही गढ़ में भयभीत और सतर्क होकर चलना पड़ रहा था। कुछ फासले तय करने के बाद वह चारों ओर निगाहें घुमाकर यह सुनिश्चित कर लेता था कि उस पर किसी की दृष्टि तो नहीं। अंततः वह एक टीले के पास पहुँचकर ठिठका। टीले की ऊँचाई एक वयस्क मनुष्य के घुटने तक थी।

अभयानन्द की भयानक मुखाकृति और भी भयानक हो उठी। क्रोधातिरेक से उसके जबड़े भींच गए। आँखें भेड़िये की आँखों में तब्दील हो गयीं और वह टीले के पास घुटनों के बल बैठ गया।

"अक्षम्य अपराध।" उसने टीले पर हथेली फिराई और फिर खून से लाल हो उठी हथेली पर दृष्टिपात करते हुए एक-एक हर्फ़ को चबाते हुए बोला- "ये..ये अक्षम्य अपराध है। आपने हमारे भक्तों के शव का टीला खड़ा करवाया है द्विज। आपने अपनी भयावह मृत्यु को और भी भयावह बना डाला। अघोरनाथ भी आपकी रक्षा नहीं कर सकते। इस राज्य का विनाश अवश्यम्भावी है।"

कापालिकों के शव के टीले पर ठहरी अभयानन्द की आँखों से आँसू बह चले। ऐसा लगा मानो उसकी भयावहता, क्रोधाग्नि की आंच से पिघलकर आँसुओं के रुप में बह निकली थी।

"हमारा प्रतिशोध भयानक होगा। अत्यंत भयानक...।"

अकस्मात् ही वह थम गया। आगे कुछ बोलने से पहले वह रात की खामोशी के बीच उभरी आहट का जायजा लेने लगा। ये सुनिश्चित होते ही कि उसे कोई भ्रम नहीं हुआ था, आहट वास्तव में उभरी थी; वह बिजली की तेजी से पीछे पलटा। हालाँकि पीछे गहन अँधकार के अलावा कुछ नहीं था किंतु उसे आहट का कारण ज्ञात हो चुका था। उसके होठों पर वही पैशाचिक मुस्कान नृत्य कर उठी, जो अब तक उसके व्यक्तित्व की परिचायक बन चुकी थी।

"अभयानन्द के साम्राज्य में आपका स्वागत है द्विज। हमारा आतिथ्य सत्कार स्वीकार करने के लिए वृक्ष की ओट से बाहर निकलिए।"

'आतिथ्य-सत्कार' शब्द का प्रयोग करते समय अभयानन्द का चेहरा खौफनाक हो उठा था। थोड़े ही फासले पर मौजूद एक वृक्ष की ओट से द्विज बाहर आया।

"दुस्साहस।" अभयानन्द की भेड़िये जैसी डरावनी आँखें चमक उठीं-

"असीम दुस्साहस किया आपने। क्या हमारे भय ने आपका विवेक हर लिया?"

"भइया!" द्विज ने अस्फुट स्वर में पुकारा।

'भइया' संबोधन सुनते ही अभयानन्द के भावों में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। सर्वप्रथम उसने गगनभेदी अट्टहास किया और फिर अट्टहास के थमते ही उसने गंभीर मुद्रा अख्तियार कर ली।

"ओह! तो अग्रज के अंतिम दर्शन की लालसा आपको यहाँ खींच लाई। हम आपकी लालसा को अभी पूर्ण कर देते हैं।"

अभयानन्द ने आकाश की ओर मुँह करके भीषण गर्जना की और इसी के साथ द्विज ने अपने जीवन की सर्वाधिक आश्चर्यजनक घटना देखी। अभयानन्द के मुँह से काले धुएं का एक गुब्बार निकला और भेड़िया-मानव की आकृति में तब्दील होकर हवा में चक्कर काटने लगा। द्विज की दृष्टि जब धुएं के गुब्बार से हटकर अभयानन्द के स्थूल शरीर पर पड़ी तो एक और आश्चर्य को अपनी राह देखते हुए पाया।

क्षण भर पहले ही उसने ही अभयानन्द के जिस शरीर को चलायमान देखा था, वही शरीर अब निर्जीव अवस्था में भूमि पर पड़ा हुआ था। बिल्कुल उसी दशा में, जिस दशा में उसने उसे पीपल के तने से उतारा था। अंतर केवल इतना था कि वह शरीर अब कराह नहीं रहा था। वातावरण में शव की दुर्गंध तजी से फ़ैलने लगी थी।

"भइया!"

अभयानन्द के घिनौने शव को द्विज ने अंक में भींच लिया किंतु उसकी करुण संवेदनाओं का शव पर कोई असर नहीं हुआ। काला धुआं परिवेश में चक्कर काटता रहा। द्विज शव को अंक में भींचकर काफी देर तक आँसू बहाता रहता, अगर उसने अचानक शव में हुए परिवर्तन को देख न लिया होता।

लाश अब फिर से सामान्य हो चुकी थी। उसकी आँखें फिर से खुल गयी थीं। द्विज की बाहों में अब अभयानन्द की वीभत्स लाश न होकर स्वयं जीता-जागता अभयानन्द था। पूर्णतया स्वस्थ्य शरीर वाला अभयानन्द। वायुमण्डल में भी अब धुंए का काला गुब्बार नहीं था क्योंकि श्मशानेश्वर पुनः अभयानन्द की काया में प्रविष्ट हो चुका था। द्विज उसे छोड़कर दूर हट गया जबकि अभयानन्द चेहरे पर हिंसक भाव लिए हुए उठा।

"देखा आपने द्विज? हम पिशाचों के स्वामी होकर भी आप जैसे तुच्छ मनुष्य की भावनाओं का कितना सम्मान करते हैं। हमने आपको आपके अग्रज के अंतिम दर्शन करा दिए।"

सच को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख लेने के बाद द्विज के पास कहने को कुछ नहीं बचा था।

"अभयानन्द तो उसी क्षण मृत्यु को प्राप्त हो गया था द्विज, जिस क्षण उसने हमारी साधना पूर्ण करके हमें अपनी काया में आमंत्रित किया था। वह तो उसी क्षण मृत्यु को प्राप्त हो गया था, जिस क्षण उसने हमारे साथ अपनी आत्मा का सौदा करके, ब्रह्मपिशाच योनी में जाने से बचने हेतु हमारे तामसिक साम्राज्य का नागरिकता स्वीकार कर ली थी। क्या आपको ये लगता है कि जिस अभयानन्द से आपने उसकी झोपड़ी में वार्तालाप किया था, जिसे आपने अपने वाक् जाल में भरमाकर सैनिकों को सौंप दिया था अथवा जिसे पीपल से बांधकर जीवित जला दिया गया था, वह अभयानन्द आपका अग्रज था?"

द्विज निरुत्तर था।

"नहीं द्विज।" ब्रह्मपिशाच ने स्वतः ही उत्तर दिया- "वो अभयानन्द नहीं था, वो हम थे। वो हम थे, जिसने तुमसे वार्तालाप किया था। वो हम थे, जिसे कारागार में डाला गया था। वो हम थे, जिसे पीपल के तने से बांधकर जलाया गया था। भातृ-प्रेम के आवेग में आकर आपने अपने अग्रज की रक्षा का नहीं अपितु हमारे अर्थात श्मशानेश्वर के अवतरण का मार्ग प्रशस्त किया था। हम अभयानन्द जैसे साधकों की काया और उनकी वासनाओं को माध्यम बनाकर हमारी भोग-विलास की कामना को तृप्त करते हैं। अन्यथा हम तो मरघट में वास करने वाली अशरीरी आत्मा भर ही हैं।"

अभयानन्द सधी हुई चाल से द्विज की ओर बढ़ने लगा और उसी अनुपात में द्विज भी पीछे खिसकने लगा।

"उस रात जब मुझे अकेला छोड़कर भइया जंगल में गये थे तो उनके साथ क्या हुआ था?"

"उस रात आपने और अभयानन्द ने जिस स्त्री की चीख सुनी थी, उस स्त्री की बलि देकर हमारे पूर्ववर्ती धारक अघोरा ने हमें अपनी काया में आमंत्रित किया था। ये प्रारब्ध का रचा हुआ खेल ही था कि अभयानन्द औरत की चीख का उद्गम तलाशते हुए अघोरा के मठ में पहुँच गया था। कापालिक-समुदाय अनुष्ठान पूर्ण होने का हर्ष मना रहा था, इसलिए कापालिकों ने अभयानन्द को बालक समझकर उसे बिना कोई क्षति पहुँचाए भगा देना चाहा था किंतु अचानक ही कापालिकों जैसी अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करके अपने शत्रुओं का नाश करने का दृढ़ संकल्प ले चुका अभयानन्द भयभीत होकर भागने के बजाय निर्भयता से वहाँ डटा रहा था। उसके भीतर शत्रुओं से प्रतिशोध साधने की कामना इतनी प्रबल थी कि उसने आपका भी

मोह त्यागकर अघोरा के सम्मुख कापालिक-दीक्षा लेने का प्रस्ताव रख दिया था। अघोरा को अवश्य ही उस बालक में कुछ विशेष नजर आया था, जो उसने उसे कापालिक-दीक्षा देनी स्वीकार कर ली थी। इसके पश्चात अभयानन्द ने अनेकों तामसिक सिध्दियां प्राप्त करके अपने शत्रुओं को प्रताड़ित किया था।"

"ओह।" द्विज ठिठक गया- "माँ हमेशा सही कहती थी कि मन में प्रतिशोध की भावना पालने वालों का हश्र बहुत बुरा होता है। प्रतिशोध साधने की अदम्य चाह ने ही भइया को नरपिशाच बना दिया। उन्होंने स्वयं अपने ही हाथों से अपनी मुक्ति के समस्त मार्ग अवरुध्द कर दिये।"

द्विज की व्यथा पर अभयानन्द (श्मशानेश्वर) ने कहकहा लगाया।

"अब आपके लिए उस चेतावनी को याद करने का समय आ चुका है द्विज, जो हमने आपको तब दी थी, जब राज्य के सैनिक हमें बंधक बना रहे थे।"

अभयानन्द के विकृत स्वरूप ने द्विज को खौफजदा कर दिया। उसकी रगों में भय की सर्द लहर सरगोशी कर उठी। उसे अनायास ही अभयानन्द की चेतावनी याद हो आयी।

'हमारी आपसे कोई शत्रुता नहीं थी किंतु आज आपने हमारे सदृश एक नरपिशाच से अकारण ही शत्रुता मोल ले ली। आपकी मृत्यु बहुत दारुण होगी द्विज। हमें दिखाई पड़ रहा है कि श्मशानेश्वर स्वयं अपनी कटार से आपको मुंडविहीन करेंगे। वे अपने भयानक दांत से आपकी गर्दन का माँस काट खायेंगे।'

द्विज को और अधिक भयभीत करने के ध्येय से अभयानन्द ने कापालिकों के खून से सनी अपनी हथेली उसकी ओर फैलाई। न केवल हथेली बल्कि उसके नुकीले नाखून भी रक्तरंजित थे।

"हमारे भक्तों के रक्त से रंजित ये हथेली हम आपके रक्त से धोकर स्वच्छ करेंगे द्विज।।"

इससे पूर्व कि द्विज का साहस अभयानन्द के खौफ से पराजित हो जाता, अघोरनाथ की हिदायत याद करके उसने आँखें बंद कीं और सांख्ययोग के श्लोक का स्मरण किया।

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥[5]

"कोई लाभ नहीं है। द्विज न तो आप श्रीकृष्ण हैं, न तो हम अर्जुन हैं और न ही ये कुरुक्षेत्र की रणभूमि है। गीता का कोई भी श्लोक आज आपके प्राणों की रक्षा नहीं कर पायेगा।"

अभयानन्द पर कोई असर नहीं हुआ। वह अपने पैशाचिक कहकहों से वातावरण को गुंजाता हुआ द्विज की ओर बढ़ा और जब द्विज ने आँखें खोली तो उसे इतना निकट पाया कि उसका भेड़िया जैसा भयानक जबड़ा स्पष्ट देख सकता था। उसने अपनी हथेली का खून द्विज के चेहरे पर पोतते हुए रहस्यमयी लहजे में कहा- "हम आपको मृत्यु नाम की रहस्यमयी यात्रा हेतु आमंत्रित करते हैं।"

अगले ही क्षण वातावरण में भेड़िये की गर्जना गूँजी और अभयानन्द ने अपने दांत द्विज के धड़ के उस हिस्से में धंसा दिये, जहाँ गरदन और कंधे का जोड़ होता है।

JJJ

'ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि संधुक्षणं करोमि स्वाहा।'

अघोरनाथ द्वारा मुखाग्नि मंत्र का उच्चारण पूर्ण होते ही कुश पुंज की लौ लपलपायी, हवाओं का वेग तीव्र हुआ किंतु इससे पूर्व कि लौ बुझ जाती, दिव्यपाणी ने कुश की अग्नि को अभयानन्द के आटे के प्रतीकात्मक पुतले के मुख पर रख दिया। उचित स्थान पाते ही ज्वाला ने अपना विस्तार किया और कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण चिता को अपने आगोश में ले लिया। सब-कुछ शांतिपूर्वक संपन्न हो जाने के कारण जहाँ दिव्यपाणी और महाराज के चेहरे राहत के भाव थे, वहीं अघोरनाथ व्यग्रता के शिकार नजर आ रहे थे।

"हमने कल्पना भी नहीं की थी.....।"

"नहीं।" अघोरनाथ ने सतर्क निगाहों से इस कदर परिवेश का निरिक्षण किया मानो वातावरण में अभयानन्द के आगमन के संकेत छिपे हों- "ये शांति उस शांति जैसी प्रतीत हो रही है, जो ज्वार के आने से पहले सागर की छाती पर व्याप्त होती है।"

"किंतु आपकी इस अनुभूति का कारण?" महाराज और कुलगुरु की निगाहें आपस में मिलीं।

"क्योंकि श्मशानेश्वर जैसी पैशाचिक शक्ति इतनी सहजता से समर्पण नहीं कर सकती। अवश्य ही कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ है। हमने जिस क्षण पुतले को श्मशानेश्वर के साथ युग्मित किया था, उसी क्षण श्मशानेश्वर को बोध हो गया रहा होगा कि काया-संयुग्मन के माध्यम से उससे उसका शरीर छीना जा रहा है। इसके पश्चात भी उसने स्वयं के अस्तित्व की रक्षा के लिए हमसे संघर्ष क्यों नहीं किया?"

अघोरनाथ के तर्क ने उन्हें निरुत्तर कर दिया। इससे पूर्व कि उनमें से किसी की ओर से कोई प्रतिक्रिया होती, जंगल से आयी गर्जना ने उनका ध्यान खींच लिया।

"ये..ये तो उसी की गर्जना है।"

"कोई सुरक्षा घेरे से बाहर नहीं निकलेगा।" अघोरनाथ ने चिता पर दृष्टिपात करते हुए चेतावनी दी। चिता की अग्नि उग्र हो चुकी थी और पुतले का कोई भी भाग ऐसा नहीं था, जो ज्वाला की चपेट में न रहा हो।

कुछ क्षण खामोशी में गुजर गए और फिर अचानक जंगल की दिशा में आकाश प्रकाशित होता नजर आया और इसी के साथ ऐसे आर्तनाद गूँजे, जैसे कोई जलता हुआ प्राणी चीख रहा हो। थोड़ी देर तक वह सिलसिला चला तत्पश्चात चिता की किसी लकड़ी के चटकने के स्वर के साथ ही वे आर्तनाद थम गए। धीरे-धीरे दक्षिण के आकाश पर फैली रोशनी भी क्षीण पड़ती चली गयी।

महाराज और कुलगुरु ने अघोरनाथ की ओर देखा। अघोरनाथ का शरीर ढीला पड़ चुका था। उक्त घटना से पूर्व उनके चेहरे पर छाई अस्थिरता अब छंट चुकी थी और अब उसका स्थान उलझनों ने ले लिया था।

"ये हमें क्या दिखाई दिया प्रभु?"

"हम विजयी हो गए दिव्यपाणी। दक्षिण में दिखाई पड़ी ज्वाला और वहाँ से गूँजने वाले आर्तनाद श्मशानेश्वर के थे।" अघोरनाथ ने भावहीन स्वर में उत्तर दिया।

"अर्थात..अर्थात ये हमारे लिए हर्ष के क्षण हैं प्रभु।"

"किसी भी उल्लास में डूबने से पूर्व हमें ये ज्ञात करना होगा कि विजयश्री ने किस मूल्य पर हमारा वरण किया है।" अघोरनाथ ने कुछ देर तक मनन करने के बाद कहा- "श्मशानेश्वर ने इतनी सहजता से पराजय कैसे स्वीकार कर ली?"

अघोरनाथ की पहेलीनुमा बातें न तो महाराज के समझ के दायरे में थीं और न ही कुलगुरु के। उनके चेहरे पर व्याप्त घोर अविश्वास के भावों ने दोनों को असमंजस में डाला हुआ था। अंततः अघोरनाथ, महाराज से मुखातिब हुए- "माया कहाँ है?"

JJJ

माया की दाहिनी कलाई अघोरनाथ के हाथ में थी। वे कलाई पर अंकित स्वास्तिक को निरख रहे थे। जलन की पीड़ा से निजात पाने के लिए माया ने उस पर किसी औषधि का लेप लगाया हुआ था।

"ये चिह्न तुम तक कैसे पहुँचा माया?"

अघोरनाथ द्वारा सख्त लहजे में पूछे गये सवाल से असहज होकर माया ने महाराज की ओर देखा।

"क्या ये चिह्न आपको द्विज ने दिया है?" महाराज ने पूछा।

माया ने 'हाँ' में गर्दन हिलायी।

"ओह।" अभयानन्द ने माया की कलाई छोड़ दी। उनके चेहरे पर नजर आये लक्षणों ने इंगित किया कि उनके सम्मुख स्थिति स्पष्ट हो चुकी थी- "क्या इस पवित्र स्वास्तिक की शक्तियाँ जागृत करने का अनुष्ठान उसने तुम्हारे साथ ही पूर्ण किया था?"

"नहीं।" किसी अनिष्ट की आशंका से घबरा रही माया ने कहा- "अनुष्ठान के अंतिम चरण में उन्होंने मुझे अनुष्ठान-स्थल पर बुलाया था, जहाँ उन्होंने मुझे ये चिह्न दिया।"

"उसके अंतिम वक्तव्य क्या थे?"

"अंतिम वक्तव्य?" माया का हृदय कांप गया- "अंतिम वक्तव्य से आपका क्या तात्पर्य है सिध्द पुरुष?"

"उसके अंतिम वक्तव्य क्या थे?" अघोरनाथ ने कड़े स्वर में अपना सवाल दोहराया।

"वे विचलित दिखाई पड़ रहे थे। वे अपनी भावुकता छिपाने का असफल प्रयत्न कर रहे थे।"

"उसके अंतिम वक्तव्य क्या थे?" अघोरनाथ इस बार क्रोधित स्वर में दहाड़ उठे।

माया पहले सहमी तत्पश्चात उसने कहा:

'मैं श्मशानेश्वर से युध्द करने जा रहा हूँ माया, जिसमें मेरे पराजय की संभावना अधिक है। मेरे वापस आने अथवा न आने, दोनों ही परिस्थितियों में तुम्हें धैर्य धारण करना होगा क्योंकि मेरे पराजित होने की अवस्था में भी वह पिशाच पवित्र स्वास्तिक चिह्न की अलौकिक शक्तियों के कारण तुम्हें स्पर्श तक नहीं कर पाएगा।'

"यही कहा था द्विज ने।"

"तो द्विज की ये योजना थी, श्मशानेश्वर को रोकने की। वह उससे युध्द करने नहीं गया था, अपितु उसे उसी वाक् जाल में फांसने गया था, जिसमें उसे पूर्व में भी फांस चुका था किंतु वह भयभीत था। अपनी युक्ति की सफलता के प्रति आशंकित था। वह जानता था कि सुरक्षा-चिह्न के कारण पिशाच उसे भले ही स्पर्श नहीं कर पाएगा किंतु पुतले की दाह की प्रक्रिया में व्यवधान डालकर, अनुष्ठान को भंग करके अपनी रक्षा अवश्य करेगा। इसीलिए उसने सुरक्षा चिह्न का प्रयोग स्वयं न करके, उसे माया को सौंप दिया ताकि उपर्युक्त दशा में कम से कम माया को पिशाच अपनी वासना-पूर्ति का पर्याय न बना सके। द्विज एक कुशल गणितज्ञ होने के साथ-साथ माया का सच्चा प्रेमी भी था और इस तथ्य को उसने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी सिध्द किया। अपना प्राण गंवाकर भी उसने अपनी भूल का प्रायश्चित किया।"

"प्राण गंवाकर?" माया बुरी तरह चौंकी- "तो क्या....तो क्या द्विज को उस पिशाच ने मार डाला?"

अघोरनाथ ने खामोश रहकर माया के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में दिया।

JJJ

दृश्य हृदयविदारक था।

द्विज का सिर धड़ से अलग होकर दूर गिरा हुआ था। उसके कंधे से माँस का एक बड़ा हिस्सा गायब था, जो इस बात का स्पष्ट संकेत था कि कटार के जरिये गरदन को धड़ से अलग करने से पूर्व पिशाच ने वहाँ अपने दांत धंसाये थे। उसके धड़ पर नजर आ रहे अनगिनत जख्म भी ये सिद्ध कर रहे थे कि पिशाच के साथ उसका संघर्ष बेहद दर्दनाक हुआ था। धरती उसके खून से लाल थी। समीप ही राख का ढेर पड़ा हुआ था।

कुपित अघोरनाथ ने त्रिशूल को कुछ ऐसे अंदाज में भूमि में धंसाया, जैसे वह भूमि न होकर अभयानन्द की छाती हो। महाराज, कुलगुरु और वहाँ उपस्थित सैनिक भी अत्यंत आहत थे। एक विद्वान पुरुष की ऐसी वीभत्स मृत्यु की किसी ने कल्पना नहीं की थी। अघोरनाथ ने द्विज की दाहिनी कलाई का निरिक्षण करके ये सुनिश्चित किया कि वहाँ कोई सुरक्षा चिह्न नहीं था।

"ये हमारी पराजय है।" अघोरनाथ का लहजा क्रोध में कंपकपाया- "तंत्र-समुदाय की पराजय है। देवी छिन्नमस्ता की पराजय है।"

इस बोझिल वातावरण में कोई भी किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त कर सका। थोड़ी देर के बाद महाराज ने मुँह खोला- "अब अभयानन्द के राख का क्या होगा प्रभु?"

उत्तर देने से पूर्व अघोरनाथ राख के ढेर के पास पहुँचे। उन्होंने राख को मुट्ठी में लिया और आँखें बंद करके थोड़ी देर तक चिंतन किया, तत्पश्चात कहा- "इस राख में अभी भी चेतना है अर्थात श्मशानेश्वर इस राख के कणों में अभी भी व्याप्त है। उसके साँसों की ध्वनि मुझे सुनाई पड़ रही है।"

"किंतु ये कैसे संभव है?"

"हमने काया-संयुग्मन का आश्रय लेकर अभयानन्द के जिस शरीर को नष्ट किया, उसमें श्मशानेश्वर आविष्ट हो चुका था इसलिए इस राख में भी उसकी चेतना व्याप्त है। जब किसी अतृप्त आत्मा की चेतना किसी भौतिक पदार्थ से जुड़ी रहती है, तो वह भौतिक पदार्थ अनिष्ट का द्योतक बन जाता है। वह अपने प्रभावों की परिधि में आने वाले समस्त जीवों के लिए

दुर्भाग्य लेकर आता है। उदहारण के तौर पर यदि इस राख को नदी में प्रवाहित कर दिया जायेगा तो उस नदी के जल से सिंचित भूमि सदैव के लिए बंजर हो जायेगी। यदि इस राख को खुले में छोड़ दिया जायेगा तो इससे वायु दूषित होकर राज्य में असाध्य रोगों के फ़ैलने का पर्याय बन जायेगी।"

"किंतु ऐसा हुआ कैसे? अभयानन्द का शरीर तो नष्ट हो गया था फिर उसके राख में श्मशानेश्वर की चेतना क्यों जीवित है?"

उतर देने से पूर्व अघोरनाथ ने राख को ध्यान से देखा।

"कारण आश्चर्यचकित करने वाला है। जिस प्रकार द्विज ने अंतिम क्षणों तक इस राज्य के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया, उसी प्रकार पिशाच ने भी अंतिम क्षणों तक अपनी कुटिलता का परिचय दिया। अब मुझे बोध हो रहा है कि उसने इतनी सहजता से अभयानन्द के पुतले का अंतिम संस्कार क्यों होने दिया? द्विज के वाक् जाल में एक बार फंस चुका होने के उपरान्त भी दूसरी बार सरलतापूर्वक क्यों फंस गया? पुतले के दाह-संस्कार में उसने कोई विघ्न खड़ा करने की कोशिश क्यों नहीं की?"

अघोरनाथ के रहस्यमयी कथन किसी की समझ में नहीं आये।

"अब क्या होगा प्रभु? इस राख का निस्तारण किस प्रकार किया जाएगा?"

"इस राख का निस्तारण नहीं किया जा सकता, क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो पिशाच पुन: जीवित हो उठेगा। वह पुन: जीवित न हो सके अथवा उसके मरणोपरांत होने वाले दुष्प्रभाव राज्य पर न पड़ने पाए, इसके लिए इस राख का निस्तारण नहीं अपितु इसके शापित प्रभावों का दमन करना होगा।"

"किंतु कैसे?"

अघोरनाथ ने मुट्ठी में लिये हुए राख पर दृष्टिपात करते हुए कहा- "इस राख को
गीता के श्लोकों और स्वास्तिक चिह्नों की सुरक्षा में, किसी ऐसे भूमिगत कक्ष में छिपाना होगा, जिसमें आवागमन का कोई भी विकल्प उपलब्ध न हो। और न ही भविष्य में उपलब्ध हो सके। पवित्र श्लोकों और चिह्नों के कारण इस राख के दूषित प्रभाव कक्ष से बाहर नहीं आने पायेंगे। किंतु तुम लोगों को ये सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में राजमहल की किसी भी पीढ़ी को उस भूमिगत कक्ष के अस्तित्व का भान न होने पाए।"

"ऐसा ही होगा प्रभु।"

अघोरनाथ ने एक बार फिर राख की ओर देखा और कुछ देर तक मनन करने के पश्चात कहा- "माया को हमारे सम्मुख उपस्थित किया जाये। हमें उससे एक महत्वपूर्ण वार्ता करनी है।"

N

14

P

"इंसान को अल्लाह ताला ने अशरफ-उल-मखलुकात[6] बनाया है मगर जब वह गुनाहपरस्त होकर अल्लाह की मुखालफत पर उतर आता है तो जानवर के दर्जे से भी नीचे गिर जाता है। हम मुसलामानों की अर्ज़मंद किताब में दर्ज ये इबारत अभयानन्द पर मुकम्मल तौर पर लागू होती है। इंतकाम की नापाक आतिश में वह इस कदर फना हो गया था कि एक बदरुल रूह की खुशामद में घुटने टेक बैठा।"

फ़कीर खामोश हो गया जबकि साहिल की निगाहें अब भी कटोरे में भरे हुए उस पानी पर ठहरी हुई थीं, जिसमें उसने अभी-अभी अभयानन्द की खौफनाक दास्तान को चलचित्र की भांति देखा था। पानी में अब कुछ नहीं नजर आ रहा था, सिवाय छोटे-छोटे आयाम वाली तरंगों के। जब उसे यकीन हो गया कि कटोरे के पानी में अब कुछ नहीं नजर आयेगा तो उसने फ़कीर की ओर देखा- "आगे क्या हुआ था बाबा? ये चमत्कारिक पानी आगे कुछ क्यों नहीं दिखा रहा है?"

"पीर सुलेमान का फूँका हुआ ये पानी गुजरे वक्त की केवल वही तस्वीरें दिखाता है, जिन्हें दिखाने के लिए अल्लाह का हुक्म होता है। जो तस्वीरें तुझे इस पानी में नजर नहीं आयीं, उनके मुआमले में तू ये ऐतबार कर ले कि अल्लाह तुझे उन्हें देखते की इजाजत नहीं बख्शता।"

"लेकिन क्यों?" साहिल ने व्यग्र लहजे में पूछा- "मुझे मेरे सबसे अहम् सवाल का जवाब अभी भी नहीं मिला है। मुझे अभी भी ये नहीं मालूम हुआ है कि इस सदी में उस भयानक पिशाच का अंत कैसे होगा? अघोरनाथ ने माया से मुलाक़ात की इच्छा क्यों जाहिर की थी? मैं इस बात की तस्दीक पहले ही कर चुका हूँ कि पिछले जन्म में संस्कृति की मौत जलकर हुई थी लेकिन इस कटोरे के पानी में मैंने जो घटनाएं देखीं, उनमें संस्कृति के जलने की घटना नहीं शामिल थी।"

"मैं तुझे पिशाच के खात्मे की राह दिखा सकता हूँ क्योंकि केवल यही मेरे अख्तियार में हैं। तेरे बाकी सवालों के जवाब देना मेरे अख्तियार में नहीं हैं। उनके जवाब तुझे वक्त देगा।"

"वह रास्ता क्या है?" साहिल ने अधीर लहजे में कहा।

"याद कर कि पिशाच ने जब अपने आका को बिरजू की कुर्बानी दी थी तो अघोरा के जिस्म के लिए क्या कहा था?"

साहिल ने दिमाग पर जोर डाला। थोड़ी देर पहले देखे हुए दृश्यों को याद करने की कोशिश करने लगा।

'महान अघोरा के शव को उचित क्रिया-कर्म के साथ भूमि में गाड़ दो। सुरक्षा का विशेष ध्यान देना। पशुओं तक को भनक न लगने पाए कि महान अघोरा की पार्थिव कया कहाँ दफ्न है।'

"उसने...उसने अघोरा की लाश को किसी सेफ जगह पर दफनाने का आदेश दिया था।"

फ़कीर के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान थिरक उठी। उन्होंने आकाश की ओर देखा, जहाँ पूर्णिमा का उज्ज्वल चाँद पूरे आकार के साथ मुस्कुरा रहा था।

"क्या तुझे इस बात का इल्म है कि अभयानन्द ने अपने गुलामों को अघोरा की लाश को महफूज दफनाने का हुक्म क्यों दिया था? क्या तुझे इस बात का इल्म है कि फना होते वक्त भी पिशाच ने ऐसी कौन सी साजिश की थी, जो अभयानन्द की ख़ाक को नष्ट कर देने की हालत में अघोरनाथ ने उसके ज़िंदा हो उठने की चेतावनी दी थी?

साहिल के साँसें थम गयीं। आकंठ उत्कंठा से उसके मुँह से बोल न फूट सके।

"क्योंकि पिशाच के खात्मे का असली राज़ अघोरा की लाश के साथ दफ्न है।"

"अघोरा की लाश?" साहिल चौंका- "तो क्या...तो क्या अघोरा की लाश अभी तक महफूज है?"

"खून के प्यासे भेड़िये उसकी हिफाज़त कर रहे हैं।" फ़कीर की आँखें इस कदर डरावनी हो उठीं कि साहिल को गफलत हो गयी कि वे उसे भयभीत कर रहे हैं या पिशाच के खात्मे की राह दिखा रहे हैं- "परिंदा भी उसकी कब्र पर पर नहीं मार सकता।"

"मैं समझ नहीं पा रहा कि आप कहना क्या चाहते हैं। पिशाच ने अपने आख़िरी समय में जो साजिश की थी, पहले मुझे उसके बारे में बताइये।"

"जिस वक्त द्विज, अघोरनाथ को लेकर रियासत में आया था, उस वक्त पिशाच की रुह अभयानन्द के जिस्म में मुकम्मल तौर पर दाखिल हो चुकी थी। जब पिशाच को ये मालूमात हासिल हुई कि उसके कहर को रोकने के लिए जलाली ताकतों के मालिक अघोरनाथ आये हुए हैं तो वह खौफजदा हो उठा क्योंकि ये हकीकत थी कि वह अघोरनाथ के सामने बेहद कमजोर था। तू उसकी कमजोरी की तस्दीक इस वाकये से कर सकता है कि अघोरनाथ की मौजूदगी में ही राजा के सैनिकों ने जंगल में जाकर कापालिकों का क़त्ल किया था और वह उनके सामने आने का हौसला तक न कर सका था। काया-संयुग्मन को जरिया बनाकर अभयानन्द के जिस्म को खाक में तब्दील किये जाने के बाद भी पिशाच उस ख़ाक में ज़िंदा था। जानता है क्यों?"

साहिल कुछ नहीं बोला।

"क्योंकि यही पिशाच की साजिश थी। उसने अपने नुमाइंदों को अघोरा के जिस्म की हिफ़ाज़त का आदेश दिया था ताकि अभयानन्द की ख़ाक के मिट जाने के बाद वह अघोरा के जिस्म में दाखिल होकर फिर से ज़िंदा हो उठे।"

"ओह।" साहिल के होंठ सोचने के अंदाज में सिकुड़कर गोल हो गए- "लेकिन राख के मिट जाने के बाद ही क्यों? उससे पहले भी तो वह अघोरा के शरीर में दाखिल हो सकता था?"

"नहीं। यदि श्मशानेश्वर नाम के उस पिशाच के पुराने धारक का जिस्म हिफाज़त से रखा हुआ हो तो वह केवल दो हालात में ही उस जिस्म में दोबारा दाखिल हो सकता है। पहला ये कि उसका मौजूदा जिस्म मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो जाए और किसी भी जिस्म का मुकम्मल वजूद तभी ख़त्म माना जाता है, जब उस जिस्म की ख़ाक तक मौजूद न रहे। दूसरा ये कि मौजूदा जिस्म उस वक्त मारा जाए, जब श्मशानेश्वर उसमें मौजूद न हो।"

"ओह माय गॉड।" साहिल का कलेजा काँप गया- "इसका मतलब ये हुआ कि अगर अघोरनाथ, अभयानन्द के राख को नष्ट करवा देते तो श्मशानेश्वर, अपने पूर्ववर्ती धारक अघोरा के जिस्म को माध्यम बनाकर फिर से लौट आता। यही वजह थी, जो उन्होंने ये कहा था कि उस राख का निस्तारण नहीं किया जा सकता क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो पिशाच पुन: जीवित हो उठेगा।"

"यही तो उस पिशाच की साजिश थी कि मात्र अभयानन्द के जिस्म को ख़त्म हुआ दिखाकर लोगों को इस फितने में डाल दे कि उसका खात्मा हो चुका है और फिर शंकरगढ़ से अघोरनाथ के जाते ही अपने इंतकाम के खूनी दावानल के साथ एक बार फिर अघोरा के रूप में लौट आये।"

"और...और इसीलिए उसने काया-संयुग्मन की प्रक्रिया में कोई विघ्न न डालते हुए अभयानन्द के शरीर को आसानी से खाक में तब्दील हो जाने दिया। वह अघोरनाथ से भयभीत था, इसलिए अभयानन्द के शरीर की कीमत पर उन्हें अपने रास्ते से हटाना चाहता था।" साहिल ने सिर थाम लिया- "उफ़! कितनी भयानक साजिश थी उसकी। अगर अघोरनाथ जैसे महान साधक ने उसके चाल को भाँप नहीं लिया होता तो द्विज का बलिदान व्यर्थ चला जाता।"

"हैरान होने की बजाय अब इस सदी में उस पिशाच का खात्मा कैसे होगा, ये सुन।" फ़क़ीर ने कहा- "तुझे अघोरा के जिस्म को ख़ाक में तब्दील करना होगा।
उस जिस्म को आदमखोर भेड़ियों के चंगुल से निकालकर जलाना होगा तुझे।"

"उससे क्या होगा बाबा?" साहिल के चेहरे पर नासमझी के भाव उभरे- "श्मशानेश्वर तो स्वयं शरीर धारण कर चुका है। उसके पूर्ववर्ती धारक अघोरा के शरीर को ख़त्म करने से क्या फ़ायदा होगा?"

फ़क़ीर एक बार फिर रहस्यमयी अंदाज में मुस्कुराया। उसने काबा की दिशा में मुँह करके श्रद्धा से परिपूर्ण लहजे में कहा- "पाक परवर दिगार के खेल निराले हैं। इस पूरी कायनात को चलाने वाले अल्लाह ने ही उस पिशाच का भी नसीब लिखा है। और उस लिखे हुए में ये दर्ज है कि माया यानी इस सदी की संस्कृति ही उस पिशाच के खात्मे की अहम् वजह बनेगी।"

"मैं समझा नहीं बाबा।"

"अभयानन्द के जिस राख को अघोरनाथ ने राजमहल के तहखाने में गीता के पाक कलामों और स्वास्तिक के निगहबानी में रखवाया था, उसी राख से अरुणा ने अपने शैतानी इल्म का इस्तेमाल करके अभयानन्द का जिस्म बनाया है। राख में पहले से ही श्मशानेश्वर की चेतना थी, इसलिए जिस्म का रूप लेते ही वह राख पिशाच के रूप में ज़िंदा हो उठा है, जो संस्कृत के हुस्न-ओ-शबाब का तमन्नाई है। लेकिन..!" फ़क़ीर मुस्कुराया- "लेकिन संस्कृति की कलाई पर जन्मजात मौजूद स्वास्तिक उस पिशाच को उसे छूने भी नहीं देगा। स्वास्तिक नाम के उस आफत से निजात पाने के लिए जानता है, वह पिशाच क्या करेगा?"

साहिल फिर चुप रह गया। फ़क़ीर के कौतुहल पैदा करने के इस ढंग से अब उसे झुंझलाहट होने लगी थी।

"वह अभयानन्द के जिस्म से काले धुएं के रूप में निकल जाएगा और फिर अभयानन्द केवल एक आम इंसान रह जाएगा, जिसे स्वास्तिक से कोई खौफ नहीं रहेगा। फिर वह संस्कृति के साथ जिस्मानी ताल्लुकात बनाएगा, जिसके लिए वह उसे पहले ही मजबूर कर चुका है। चूँकि इस काम में संस्कृति की मर्जी शामिल होगी, इसलिए ये घटना इस बात की तस्दीक होगी कि वह अभयानन्द जैसे अप्राकृतिक ढंग से जिस्म हासिल किये हुए इंसान को कुबूल कर चुकी है और इस हालत में उसका जलाली स्वास्तिक अपनी मुकम्मल तासीर गँवा चुका होगा। इसके बाद पिशाच फिर से अभयानन्द के जिस्म में दाखिल होकर माया को हासिल करने के अपने मकसद में कामयाब हो जाएगा।"

"तो ये चाल है उसकी?" साहिल का चेहरे पर अभयानन्द के लिए बेशुमार घृणा के भाव उभर आये।

"हाँ, लेकिन उसकी साजिश नाकाम होगी। जिस पल पिशाच की रूह अभयानन्द के जिस्म से बाहर निकलेगी और वह संस्कृति के साथ हमबिस्तर होने को आगे बढ़ेगा, उसी पल..ठीक उसी पल संस्कृति उसी अंदाज में अभयानन्द के जिस्म पर स्वास्तिक का निशान दर्ज कर देगी, जिस प्रकार द्विज ने पिछले जन्म में उसकी कलाई पर दर्ज की थी। इसके बाद पिशाच की रूह चाहकर भी अभयानन्द के जिस्म में फिर से दाखिल नहीं हो पायेगी। पिशाच की रूह का साथ छूट जाने के बाद शैतानी इल्म और राख से ज़िंदा हुआ अभयानन्द कुछ ही घंटों में अपनी मौत आप ही मर जाएगा।"

साहिल के पैरों तले जमीन खिसक गयी। उसे अपना दिमाग हिलता हुआ महसूस हुआ।

"लेकिन बाबा...संस्कृति को ये सब बताएगा कौन? वह तो अभयानन्द के पास जा चुकी है। न जाने मरघट में इस वक्त क्या हो रहा होगा?"

"तू केवल अपने हिस्से का काम पूरा कर बाकी अल्लाह पर छोड़ दे।"

"तो क्या मेरे हिस्से का काम केवल यही है कि मैं अघोरा की लाश को ढूँढकर जला दूं?"

"तुझे लाश ढूँढने की जरूरत नहीं है। मैं खुद तुझे उसका पता दूँगा। तुझे केवल उन आदमखोर भेड़ियों से अपनी हिफाज़त करनी होगी, जो अघोरा के लाश की हिफाज़त करते हैं।"

"मेरे मन में एक सवाल है बाबा।"

"जल्दी पूछ।"

"जब श्मशानेश्वर अभयानन्द के जिस्म से निकल जाएगा और संस्कृति उस जिस्म पर स्वास्तिक का निशान अंकित करके उसमें उसके पुन: प्रवेश पर रोक लगा देगी तो क्या श्मशानेश्वर की आत्मा अपने पूर्ववर्ती धारक अघोरा के लाश की ओर नहीं आकर्षित होगी?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैंने अभी थोड़ी देर पहले ही कहा था कि यदि पिशाच के पुराने धारक का जिस्म हिफाज़त से रखा हुआ हो तो पिशाच केवल दो हालात में ही उस जिस्म में दोबारा दाखिल हो सकता है। पहला ये कि उसका मौजूदा जिस्म मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो जाए और दूसरा ये कि मौजूदा जिस्म उस वक्त मारा जाए जब पिशाच उसमें मौजूद न हो।"

"ओ गॉड।" साहिल के पसीने छूट गए- "इसका मतलब ये हुआ कि श्मशानेश्वर की रूह के जिस्म से निकलने के बाद अगर किसी प्रकार अभयानन्द मारा गया तो फिर...तो फिर श्मशानेश्वर अघोरा की लाश में दाखिल होने आयेगा?"

"यूँ तो अभयानन्द को मरना ही है लेकिन अगर ये काम कोई दूसरा न करे और उसे अपनी मौत खुद मरने के लिए छोड़ दिया जाए तो यह काम कुछ घंटों में होगा और इतना वक्त अघोरा की लाश को जलाने के लिए वाजिब होगा। लेकिन अल्लाह न करे, अगर ऐसा हो गया कि अघोरा की लाश को जलाने से पहले ही किसी तरह अभयानन्द मारा गया तो क़यामत

आ जायेगी। पिशाच की रुह अघोरा की लाश में दाखिल होने के लिए दौड़ पड़ेगी। अगर तू उसकी लाश को जला नहीं पाया और पिशाच उसमें दाखिल हो गया तो उसका इंतकाम बहुत ही खौफनाक होगा। फिर वह किसी को नहीं छोड़ेगा, किसी को भी नहीं। तेरे जाने के बाद मैं अल्लाह ताला से ये दुआ करता रहूँगा कि ऐसा न होने पाए।"

उन भयानक क्षणों की कल्पना करके साहिल के जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी।

"अघोरा की कब्र का ठिकाना बताइये।"

"शंकरगढ़ के ही जंगल में है। प्रयागराज को जाने वाले रास्ते से उतरकर जंगल के भीतर एक किलोमीटर जाने पर एक जगह ऐसा आयेगा, जहाँ महताब की रोशनी दरख्तों के पत्तों को पार करके धरती तक नहीं पहुँच पा रही होगी। स्याह अँधेरे में सब-कुछ जर्फ़ हो चुका होगा। कब्र की पहचान यही होगी कि उसे घेर कर सात भेड़िये बैठे होंगे। और उस पर एक चिराग जल रहा होगा। वे आम भेड़िये नहीं हैं। वे आदमखोर और शैतानी तासीर वाले हैं। अगर उनके मुँह तुम्हारा लहु लग गया तो जो जहर तुम्हारी रगों में दाखिल होगा, उससे तुम्हें दुनिया का कोई भी डॉक्टर निजात नहीं दिला पायेगा और तुम्हें तड़पते हुए मौत की आगोश में सो जाओगे।"

"ऐसा नहीं होगा।" साहिल जाने को उद्यत हुआ ही था कि फ़कीर ने उसे रोका।

"ठहर जा।"

साहिल ठिठका। फ़कीर टीन शेड वाली कोठरी में गया। जब वह दोबारा बाहर आया तो उसके हाथ में एक ताबीज और छोटी सी शीशी थी। उसने दोनों चीजें साहिल की ओर बढ़ाते हुए कहा- "ये ताबीज गले में डाल ले। इसमें हजरत मोहम्मद के कदमों के नीचे से उठायी हुई मिट्टी भरी हुई है। जब तक इस ताबीज का ताल्लुक तुझसे रहेगा, तब तक शैतानी भेड़िये तुझ पर हमला नहीं कर पायेंगे।"

साहिल ने ताबीज थाम लिया।

"इस शीशी में आब-ए-जमजम भरी हुई है। हिन्दुओं में जो दर्जा गंगाजल का है, मुसलमानो में वही दर्जा 'आब-ए-जमजम' का है। जब तू जमजम के इस पाक पानी को अघोरा की लाश पर छिड़केगा तो लाश खुद-ब-खुद जल उठेगी।"[7]

"शुक्रिया मोहतरम बुजुर्ग।"

"परवर दिगार तुझे कामयाबी अता फरमाए।"

JJJ

सभी की साँसें थम गयी थीं। भेड़िया-मानव की आकृति अख्तियार करने वाला काला-धुआं भीषण गर्जना करते हुए वायुमण्डल में चक्कर काट रहा था।

"अभिनन्दन। हमारे अंकपाश में तुम्हारा अभिनन्दन है माया।" अभयानन्द ने दोनों बाँहें फैलाते हुए कहा।

संस्कृति ने कदम बढ़ाया, इस बात से अनभिज्ञ कि अरुणा की संदेहास्पद निगाहें उसी पर ठहरी हुई थीं। इससे पहले कि वह अभयानन्द के इतने निकट पहुँच जाती कि अभयानन्द उसे स्पर्श कर पाता, वह चीखकर उन दोनों के बीच आ खड़ी हुई।

"माया का मार्ग क्यों अवरुद्ध कर रही हो अरुणा?" अभयानन्द गुर्राया।

"क्षमाप्रार्थी हूँ प्रभु किंतु मुझे इस घटना में षड्यंत्र का आभास हो रहा है। आपकी प्रेयसी आपके साथ छल कर रही है।"

"माया हमसे कोई छल कर पाने की दशा में नहीं है अरुणा।" अभयानन्द झुंझलाया- "तुम व्यर्थ ही हमारी व्यग्रता बढ़ा रही हो। हम तीन सदियों तक जिस तृष्णा में तड़पे हैं, उस तृष्णा को हमें तृप्त करने दो।"

अरुणा ने अभयानन्द की बातों पर ध्यान नहीं दिया और संस्कृति से मुखातिब हुई- "अपने वस्त्रों में क्या छुपाया है तुमने?"

संस्कृति के चेहरे पर खतरनाक भाव उभरे, जिन्होंने अरुणा के इस संदेह को और भी पुष्ट कर दिया कि उसके जेहन में कोई खतरनाक योजना चल रही थी। उसके तेवर देख अभयानन्द को भी संदेह हुआ। उसने परिवेश में काले धुएं के रूप में मंडरा रहे अपने ईष्ट की ओर देखा। अरुणा की पुरानी निष्ठा के आगे उसकी तृष्णा भी पराजित हो गयी और इस बार उसने अरुणा के कृत्य में हस्तक्षेप नहीं किया।

"अपने वस्त्रों में क्या छुपाया है तुमने?" अरुणा का लहजा भयानक हो उठा।

संस्कृति भाँप गयी कि वह अरुणा और अभयानन्द, दोनों के संदेह की परिधि में आ चुकी है और परिस्थितियां 'करो या मरो' का रूप अख्तियार कर चुकी हैं।

"अपने पिछले जन्म के आशिक के लिए एक विशेष तोहफा है मेरे पास।" उसने अर्थपूर्ण लहजे में कहा।

इससे पहले कि अरुणा कुछ समझ पाती, वह संस्कृति का तेज धक्का खाकर जमीन पर गिर चुकी थी। संस्कृति के अंग-प्रत्यंग में मानो बिजली भर गयी। वह अभयानन्द की ओर दौड़ी। दोनों के बीच फासले पहले ही कम हो चुके थे, इसलिए अभयानन्द को संस्कृति का मंतव्य समझने का क्षणिक अवसर भी नहीं प्राप्त हो सका।

अज्ञश्चाद्यधानश्च संशयात्मा विनश्यति।

नायं लोकोस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।।[8]

संस्कृति का उसकी ओर दौड़ने के पीछे क्या ध्येय था, ये अभयानन्द भी तब तक नहीं समझ पाया, जब तक कि अपनी नग्न छाती पर जलन की एक तेज पीड़ा नहीं महसूस कर ली।

"आह...।" वातावरण में अभयानन्द की कराह और किसी भेड़िये की दुर्दांत गर्जना एक साथ गूँजी। उसने अपनी छाती पर दृष्टिपात किया, जहाँ जले के निशान के रूप में स्वास्तिक की छाप पड़ चुकी थी।

"अब पिशाच तुम्हारे जिस्म में कभी प्रवेश नहीं कर पायेगा।"

"नहीं।" अभयानन्द ने आँखों में अविश्वास लिए हुए पहले अरुणा की ओर देखा और फिर काले धुएं की ओर। धुएं के मंडराने का अंदाज ऐसा था, मानो अकस्मात घटी उस घटना से वह भी बेचैन हो उठा हो। धरातल पर पड़ी अरुणा भी उठने का प्रयत्न छोड़कर उस अविश्वनीय दृश्य को देखने लगी थी।

"यही है तेरे गुनाहों की सीमा।" संस्कृति ने घृणा के आवेग में आकर अभयानन्द के ऊपर थूक दिया- "तेरे आराध्य पिशाच ने भी ईश्वर से भयभीत होकर तेरा साथ छोड़ दिया।"

"तुम मूर्खों को तुम्हारे इस दुष्कृत्य का दंड मिलेगा।"

यथार्थ पर यकीन होते ही अभयानन्द बुरी तरह चीखकर श्मशानेश्वर के मंदिर की ओर दौड़ा। मंदिर के खम्भों से पागलों की तरह सिर टकराते हुए वह मूर्ति की ओर भागा।

"वह...वह क्या करने जा रहा है?" दिग्विजय ने बदहवास लहजे में कुलगुरु से पूछा। कुलगुरु के चेहरे पर दहशत थी। अभयानन्द की हरकत का आशय वे भी नहीं समझ पा रहे थे। वहीं दूसरी ओर अरुणा के होठों पर भयानक मुस्कान सज रही थी।

"विनाश, विनाश और सिर्फ विनाश होगा अब।"

अभयानन्द ने मूर्ति की कटार उठायी और अगले ही पल सभी को अपने सवालों के जवाब मिल गए। अपने जीवन-काल में अनगिनत लोगों की गरदन को पैशाचिक अनुष्ठानों की भेंट चढ़ा चुके अभयानन्द ने स्वयं अपनी ही गर्दन धड़ से अलग कर दी।

संस्कृति मानो सम्मोहन की अवस्था से बाहर आई।

"साहिल की जान खतरे में है।" वह चीखी।

ठीक उसी क्षण, काले धुएं का गुब्बार वायु में विलीन हो गया।

JJJ

वे संख्या में सात थे और सातों की सूर्ख आँखें अँधेरे में चमक रही थीं। उनके जबड़े सामान्य भेड़ियों के जबड़ों से अलग थे। बाहर लटकी हुई सातों की जीभ इस सीमा तक लाल थी कि प्रतीत होता था, वे हर क्षण रक्तपान के आदी थे। उनकी दृष्टि सामने खड़े उस नौजवान पर स्थिर थी, जिसके एक हाथ में केरोसिन से भरा छोटा सा गेलन और दूसरे हाथ में एक फावड़ा था।

साहिल को याद नहीं था कि उसने खुद को पिछली बार इतना घबराया हुआ कब महसूस किया था। उसके धड़कनों की गति सामान्य से कई गुना तीव्र थी। उसका मन न चाहते हुए भी भयावह दृश्यों की कल्पना करके भयभीत हुआ जा रहा था।

अघोरा के कब्र को घेरकर बैठे हुए सात आदमखोर भेड़ियों के आग्नेय नेत्रों का केन्द्र बिन्दु बने साहिल के खौफजदा होने का एक कारण ये भी था कि मौसम का रुख बिना किसी पूर्व संकेत के तेजी से बदलने लगा था। क्षण भर पहले ही आसमान पर तैर रहे उजले बादलों के कतरे न जाने कहाँ गुम हो गये थे और अब उनका स्थान स्याह बादलों ने ले लिया था, जिनकी उद्दण्डता इस कदर बढ़ी हुई थी कि वे चन्द्रमा पर पूर्णतया आच्छादित होकर शुक्ल-पक्ष की उस रात को काजल से भी अधिक काला बना दिये थे। फिजा में पत्तियों की सरसराहट मृत्यु-संगीत बनकर घुली हुई थी।

"पिशाच के साथ इस आखिरी जंग में जीत मेरी ही होगी।"

डगमगा रहे आत्मविश्वास को साहिल ने संकल्प के स्तम्भ से संभाला और भगवती का ध्यान करते हुए ये सुनिश्चित किया कि गले में फ़क़ीर का दिया हुआ ताबीज और पतलून की जेब में 'आब-ए-जमजम' की शीशी सुरक्षित थी।

उसने केरोसिन का गेलन जमीन पर रखा और फावड़े को दोनों हाथों से पकड़कर हमले की मुद्रा अख्तियार कर ली। शत्रु की ये मुद्रा देख भेड़ियों के कान खड़े हो गये।

"सामने से हट जाओ।" साहिल ने जबड़े भींचते हुए इस कदर कहा, मानो वे भेड़िए इंसानी भाषा समझने की कुव्वत रखते हों- "तुम लोग जिस कब्र की हिफाज़त कर रहे हो, आज उसका आखिरी दिन है।"

साहिल फावड़े पर पकड़ सख्त रखते हुए आगे बढ़ा। उसका कृत्य देख उकडू बैठे भेड़िए चारों पैरों पर खड़े हो गये। प्रत्युत्तर देने से पूर्व उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। शत्रु के दुस्साहस का जवाब देने की रणनीति बनाई, तत्पश्चात प्रथम प्रहार हेतु उपयुक्त चुने गये भेड़िए ने साहिल पर छलांग लगा दी।

उसके हाथ में फावड़ा था, साथ ही साथ उसे ताबीज के तासीर पर पूरा भरोसा था; यही वजह रही कि उस आदमखोर भेड़िये का हमला उसे विचलित न कर सका। उसने फावड़े का मजबूत प्रहार भेड़िए पर किया। फावड़े का आवेग तेज था। भेड़िया 'कीं' की आवाज़ निकालता हुआ उछलकर दूर जा गिरा।

साथी भेड़ियों की निगाहें उस पर जम गयीं, जबकि वह भेड़िया कभी साहिल की ओर तो कभी अपने साथियों की ओर देखने लगा। साहिल समझ नहीं पाया कि वह अपने साथियों को सम्मिलित प्रहार के लिए उकसा रहा था या फिर उन्हें प्रहार न करने की सलाह दे रहा था लेकिन उसकी ये दुविधा अगले ही क्षण दूर हो गयी, जब उसने उन सातों को इस कदर एकजुट होते देखा, जैसे क्रिकेट के मैदान में क्षेत्ररक्षण की रणनीति बनाने के लिए खिलाड़ी एकजुट होते हैं।

'इस बार एक साथ आएंगे ये हरामजादे।'

साहिल के जेहन में उपजी उपर्युक्त संभावना अगले ही क्षण सही साबित हो गयी। इस बार उसकी ओर लहराए शत्रुओं की संख्या सात थी। प्रत्युत्तर में उसने फावड़े को उसी अंदाज में हवा में नचाया, जिस अंदाज में उसने गाँव के मेले में करतब दिखाने वाले कलाकार को लाठी भांजते हुए देखा था। हालाँकि साहिल की ये हरकत उसके बचाव के लिए पर्याप्त नहीं थी क्योंकि दुश्मनों की संख्या अधिक थी और फावड़े का प्रहार एक या फिर अधिक से अधिक दो भेड़ियों को ही उससे दूर रख सकता था, फिर भी परिणाम चौंकाने वाला रहा।

जो भेड़िए फावड़े की हद में आए, वे उसका प्रहार झेलकर दूर जा गिरे किंतु उनके साथ ही वे भेड़िए भी धूल चाटने को विवश हो गये, जो फावड़े के प्रहार से बच गये थे। उन्होंने साहिल को स्पर्श तक नहीं किया था, बावजूद इसके वे इस कदर विपरीत दिशा में जा गिरे थे, जैसे साहिल के इर्द-गिर्द मौजूद किसी अदृश्य सुरक्षा घेरे ने उन्हें परावर्तित कर दिया हो।

"ताबीज की तासीर का नमूना।" भेड़ियों की दशा देख साहिल मुस्कुराया और एक नजर केरोसिन के गेलन पर डाली।

भेड़िए अब साहिल से निश्चित दूरी पर खड़े होकर केवल गुर्रा रहे थे। उन्हें अपने दुश्मन की शक्ति का अनुमान हो चुका था।

साहिल के पास वक्त नहीं था। भेड़ियों को रास्ते से हटाकर उसे कब्र की खुदाई करके अघोरा की लाश भी निकालनी थी। इसलिए उसने गेलन उठाया, उसका ढक्कन खोला और आगे बढ़ा।

भेड़ियों के चेहरे पर खौफ मंडराया। वे पीछे खिसकने लगे लेकिन एक निश्चित दूरी तक खिसकने के बाद वे ठहर गये क्योंकि इससे पीछे जाने पर वे अघोरा के कब्र से भी पीछे चले जाते। साहिल उनकी स्वामिभक्ति पर मुस्कुराया। वे अब भी ढाल बनकर कब्र के आगे खड़े थे।

"पिशाच की स्वामिभक्ति के कारण आज तुम लोग एक दर्दनाक मौत मरने वाले हो।"

साहिल के चेहरे पर खौफनाक भाव उभरे। उसने गेलन में भरे केरोसिन से एक-एक भेड़ियों को नहला दिया। इस दौरान उन्होंने गुर्राकर, भयानक जबड़े दिखाकर उसे डराने की कोशिश की लेकिन ताबीज के करामात से रु-ब-रु हो चुके साहिल को अब उन जैसों की पूरी फौज भी नहीं डरा सकती थी। उसने लाइटर जला ली।

"तुम्हारी नर्क की यात्रा मंगलमय हो दरिंदों।"

भेड़िये केवल इतना ही समझ पाए कि उनका दुश्मन उन पर किसी नए तरीके से हमला करने वाला है। वह नया तरीका उन्हें तब समझ में आया, जब साहिल का फेंका हुआ लाइटर उनमें से किसी एक के जिस्म पर आकर गिरा और फिर उस एक के जिस्म पर लगी आग बेहद तेजी से सभी के जिस्मों पर फैलती चली गयी। भयानक लपटों की रोशनी से न केवल वातावरण का अँधकार ख़त्म हुआ बल्कि उन दरिंदों के करुण क्रंदन से निस्तब्धता भी अपना अस्तित्व खो बैठी। वे अपने जलते हुए जिस्म के साथ बेतहाशा इधर-उधर भागने लगे।

साहिल के पास इस पहली फतह पर जश्न मनाने का वक्त नहीं था। वह कब्र तक पहुँचा। उस पर रखा चिराग बुझ चुका था। चिराग को पैर की ठोकर से दूर उछालने के बाद उसने कब्र पर पहला फावड़ा चलाया ही था कि उत्तर दिशा में गूँजी भेड़िये की दुर्दांत गर्जना ने उसकी रुह तक को कंपा दिया।

कब्र पर दूसरा प्रहार करने से पहले उसके हाथ काँपे। न चाहते हुए भी उसने चीख की दिशा में देखा। उस दिशा में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था, सिवाय इसके कि आसामान तेजी से काला होता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे काली धुंध तेजी से आसामान पर फैलती हुई उसकी तरफ बढ़ रही थी।

"य...ये क्या बला है?"

छठी इन्द्रीय की ओर से किसी अनिष्ट की चेतावनी पाकर साहिल ने कब्र पर

फावड़े के प्रहार की गति को बढ़ा दिया। उस वक्त मुश्किल से पाँच मिनट भी नहीं गुजरे थे जब साहिल की यह आशंका यथार्थ में तब्दील हो गयी कि सचमुच कोई अनिष्ट हुआ था।

आग की लपटों की रोशनी के बावजूद वातावरण में घोर अँधकार व्याप्त हो गया। आकाश पर फैली स्याही ये इंगित कर रही थी कि थोड़ी देर पहले उत्तर से बढ़ती चली आ रही काली धुंध अब वहाँ तक पहुँच चुकी थी।

साहिल ने चेहरा ऊपर उठाया। धुंध का एक कतरा भेड़िया-मानव की आकृति अख्तियार करके कब्र के आस-पास मंडरा रहा था।

"तो....तो क्या अभयानन्द ने अपना शरीर नष्ट कर दिया?"

साहिल के हौसले जवाब देने लगे। उसने निगाहें घुमाकर भेड़ियों की ओर देखा। उनके जिस्मों की आग बुझ चुकी थी और अब एक बार फिर वे साहिल के खून के प्यासे नजर आ रहे थे। जले हुए शरीर के कारण उनका रुप कई गुना भयानक हो उठा था। साहिल ने पतलून की जेब टटोली। एक और दुर्भाग्य उसका इंतजार कर रहा था। शीशी जेब में नहीं थी।

"शीशी कहाँ गयी?"

बौखलाया साहिल पीछे पलटा। थोड़ी ही दूर पर आब-ए-जमजम की शीशी टूटी हुई पड़ी थी। पानी की एक बूँद तक उसमें नजर नहीं आ रही थी।

"मैं हार गया।"

उसके हाथ से फावड़ा छूट गया। किसी हारे हुए जुआरी की मानिंद उसने कब्र पर घुटने टेक दिए। उसकी हताशा पर भेड़ियों ने समवेत स्वर में चीखकर अपने हर्ष की अभिव्यक्ति की। श्मशानेश्वर की ओर से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में कई क्षण गुजर जाने के बाद भी जब कुछ नहीं हुआ तो साहिल ने ऊपर देखा। वातावरण में लगातार चक्कर काट रहा काला धुआं कब्र के निकट आने से कतरा रहा था।

"ये अघोरा के जिस्म में दाखिल क्यों नहीं हो रहा है?"

साहिल के माथे पर बल पड़ गए। क्षण भर के चिंतन-मनन के बाद जब उसे वजह समझ में आयी तो उसके होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कान थिरक उठी। उसके मन में ताबीज के प्रति अगाध श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसने ताबीज को होठों से लगाया और एक बार फिर फावड़े के साथ उठ खड़ा हुआ। ताबीज के एक और चमत्कार ने उसके आत्मविश्वास को नया जीवन दे दिया था। साहिल कब्र पर खड़ा था और इस अवस्था में साहिल के साथ-साथ कब्र भी ताबीज के सुरक्षा घेरे में था।

"भगवान भी यही चाहता है कि पिशाच के ताबूत में आख़िरी कील मैं ही ठोकूं।"

इस बार जब साहिल ने ताबूत पर फावड़ा चलाया तो उसके हाथ तभी रुके,

जब फावड़ा ताबूत से टकराया। उसने धुएं के रुप में मंडरा रहे श्मशानेश्वर की ओर देखा और एक झटके में ताबूत का ढक्कन खोल दिया। एक नरकंकाल उसकी आँखों के सामने था। साहिल ने गले से ताबीज निकाला और काले धुएं को लक्ष्य को अभिमान भरे लहजे में कहा- "पिछले जन्म में द्विज का भाई उसकी मौत का कारण बना था, इस जन्म में उसका भाई ही उसकी जिन्दगी का कारण बनेगा। अभयानन्द के शरीर में दाखिल होकर, द्विज को मौत के घाट उतारकर, एक ही कोख से जन्में दो भाईयों के ख़ूबसूरत रिश्ते को नफ़रत की आग में फना करके तूने इस रिश्ते पर कलंक का जो टिका लगाया था, उसे मैं आज अपने बलिदान से धो दूँगा। एक बार फिर ये सिद्ध होगा कि हर पैशाचिक शक्ति ईश्वरीय शक्ति के आगे कमजोर है।"

साहिल ने क्रोधित नजर आ रहे भेड़ियों की ओर घृणापूर्वक देखते हुए गीता के इस महान श्लोक का उच्चारण किया:

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥[9]

श्मशानेश्वर बुरी तरह चिंघाड़ा लेकिन साहिल उसकी परवाह न करते हुए ताबीज को अघोरा की लाश के गले में डाल दिया और पिशाच को प्रत्यक्ष चुनौती दी- "अब ये लाश ईश्वर के सुरक्षा घेरे में है। यदि स्वयं को ईश्वर के समकक्ष मानता है तो इसमें दाखिल होने का दुस्साहस करके दिखा।"

श्मशानेश्वर ने एक बार फिर चिंघाड़ कर अपनी विवशता और क्रोध का इजहार किया जबकि साहिल ने केरोसिन के गेलन पर दृष्टिपात किया। उसके अनुमान के मुताबिक़ गेलन में थोड़ा केरोसिन अब भी बाकी था। बुरी तरह जले हुए भेड़िये अपनी घृणित काया के साथ उस गेलन को इस कदर घेर कर खड़े थे, मानो साहिल के मंतव्य का बोध उन्हें हो। साहिल

आगे बढ़ा और जैसे ही ताबीज के सुरक्षा दायरे से बाहर आया, भेड़िये उस पर टूट पड़े। उसने उनकी जो क्षमता आंकी थी, वे उससे भी अधिक फुर्तीले निकले और कुछ ही क्षणों में सब-कुछ अँधेरे में डूबता चला गया।

N

उपसंहार

P

साहिल की आँखों के आगे व्याप्त अँधेरा धीरे-धीरे छंटा।

पलकों की दरारों से सबसे पहले उसे संस्कृति का चेहरा नजर आया और फिर धीरे-धीरे पूरी आँख खुलने पर उसने पाया कि राजमहल का प्रत्येक सदस्य उस कमरे में मौजूद था। माहौल ऐसा था, जैसे हर कोई उसी की तीमारदारी में व्यस्त रहा हो। सभी की आँखों में उसके लिए कृतज्ञता के भाव थे।

संस्कृति उसके सिरहाने बैठी हुई थी। उसे होश में आया देख सबसे ज्यादा प्रफुल्लित वही नजर आ रही थी। कुछ बोलने से पहले साहिल ने अपने जिस्म का मुआयना किया। कहीं पर किसी भी प्रकार का मामूली या गैर-मामूली चोट नहीं था।

“अघोरा की लाश का क्या हुआ? भेड़ियों के चंगुल से मैं ज़िंदा कैसे बच गया?”

“गुज़री हुई रात की कालिमा पूरे दहशत को अपने साथ समेटकर ले गयी। तुम्हारे अपूर्व साहस ने उस भावी विनाश को टाल दिया, जिसकी कल्पना मात्र से ही हमारे रोंगटे खड़े हो रहे हैं।” कुलगुरु ने मुस्कुराते हुए कहा।

“य..यश कहाँ है?” साहिल ने अपनी प्रशंसा नजरअंदाज करते हुए पूछा। वह प्रशंसा सुनकर असहज हो जाने वालों में से था।

“दूसरे कमरे में है। उसके जख्म अब आश्चर्यजनक ढंग से भरने लगे हैं।”

“क्या अघोरा की लाश जला दी गयी?” उसने अपना सवाल दोहराया।

“हाँ। जब हम वहाँ पहुँचे तो श्मशानेश्वर को उस लाश से पर्याप्त दूरी पर धुएं के रूप में मंडराते हुए पाया था। तुम्हारी बुद्धिमत्ता ने उसे विवश कर दिया था। लाश के गले से लटकी ताबीज के कारण वह लाश में प्रवेश नहीं कर पा रहा था।”

“म...मैं कहाँ था?”

“तुम कब्र से थोड़ी दूर पर हमें बेहोश मिले थे।”

“बेहोश मिला था?” साहिल के माथे पर बल पड़ गए- “लेकिन..लेकिन मुझ पर तो भेड़ियों ने उस वक्त हमला कर दिया था, जिस वक्त मैं केरोसिन की गेलन उठाने के लिए आगे बढ़ा था। मुझे लगा था कि बुरी तरह जल जाने के कारण भेड़िये कमजोर हो गए होंगे और मैं आसानी से गेलन पर कब्जा करके अघोरा की लाश को जला सकता हूँ लेकिन ये मेरी भूल थी। लाश के गले में पड़े ताबीज के सुरक्षा दायरे से बाहर आते ही भेड़िये हैरतअंगेज फूर्ती का प्रदर्शन करते हुए मुझ पर टूट पड़े थे। फिर मैं अपनी डर से चेतना गँवा बैठा था।”

“लेकिन हमें तो वहाँ एक भी भेड़िया नहीं नजर आया और तुम्हारे जिस्म पर
एक खरोंच तक नहीं थी।” दिग्विजय ने कहा।

“ऐसा कैसे हो सकता है?” साहिल हैरान हुआ- “किसने बचाया मुझे?”

“शायद उसी ने।” कुलगुरु ने कहा- “जिसने तुम्हें इतनी शक्ति दी कि तुमने पिशाच के रचे हुए सबसे बड़े चक्रव्यूह को भेदकर उसमें फंसे यश और संस्कृति के जीवन को बचा लिया।”

साहिल ने ये सोचकर अपनी उत्कंठा को शांत किया कि उसकी जान जरूर फ़क़ीर ने ही बचाई होगी। वह पूरे घटनाक्रम के दौरान ऐसे-ऐसे चमत्कार देख चुका था कि अब चमत्कारों पर यकीन करने लग गया था।

“लेकिन आप लोग अघोरा की समाधी तक पहुँचे कैसे? संस्कृति तो अभयानन्द के आगे घुटने टेकने गयी थी। फिर....फिर वहाँ ऐसा क्या हुआ था कि पिशाच को अभयानन्द का जिस्म छोड़कर अघोरा की लाश की ओर दौड़ना पड़ा?”

साहिल का सवाल सुनकर संस्कृति और कुलगुरु के होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कान थिरक उठी।

“आप दोनों की मुस्कान बता रही है कि फ़क़ीर की बातें सुनने के बाद मैंने जो अनुमान लगाया था, वह अनुमान सही है।”

“क्या अनुमान लगाया तुमने?” कुलगुरु ने पूछा।

“यही कि....।” साहिल ने संस्कृति के चेहरे पर दृष्टिपात करते हुए कहा- “संस्कृति को उसके पिछले जन्म की घटनाएं याद आ चुकी हैं।”

कुलगुरु, दिग्विजय, डॉ. त्रिवेदी के अलावा हर कोई चौंका।

“आपका अनुमान सही है साहिल। आपने यश के रिवर्स मेमोरी को रिकवर करने के लिए जो प्लान बनाया था, वह यश के केस में भले ही नाकामयाब हो गया था, लेकिन मेरी केस में पूरी तरह कामयाब रहा था। मेरे जेहन में पिछले जन्म की धुंधली यादों का अक्स तभी से उभरने लगा था, जब मेरी नजर यश पर पड़ी थी। हम दोनों की कलाई पर अंकित स्वास्तिक के निशान की भी इस महत्वपूर्ण घटना में अहम् भूमिका है।”

“मेरा प्लान तुम्हारे लिए सफल रहा तो फिर यश के लिए असफल कैसे हो गया?”

“इसका कारण ये है कि...।” उत्तर कुलगुरु ने दिया- “यश, पिछले जन्म में अभयानन्द का भाई था। उसके साथ पूर्वजन्म का रक्त-संबंध होने के कारण अभयानन्द आसानी से उसके मस्तिष्क को नियंत्रित कर रहा था। जब उसे ज्ञात हुआ कि हम किसी गुप्त योजना के अंतर्गत यश को जात-स्मरण कराने की कोशिश कर रहे हैं तो उसने अपनी मानसिक शक्तियों से यश के मस्तिष्क में पूर्वजन्म की उस घटना की याद को जगा दिया था, जिसके कारण वह खुद को पापी समझता था। इसीलिये जात-स्मरण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकी थी। यश की कल्पना में भी उसके पिछले जन्म के दृश्य ही उभरते थे, जिनके परिणामस्वरुप कई रेखाचित्र वजूद में आये थे, जिनसे तुम वाकिफ भी हो। तुम्हारा भाई यश पूर्वजन्म में एक गणितज्ञ होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार भी था। संस्कृति भी पूर्वजन्म में चित्रकला में दक्ष थी।”

“तो यश के भीतर ये अपराधबोध कि वह अपने भाई को सद्मार्ग पर लाने की बजाय उसे भयावह मौत की भेंट चढ़ाने का अपराधी है, जगाने वाला अभयानन्द ही था। इसीलिये यश ने स्वयं अपने शरीर पर घाव बनाकर खून बहाया था और पूरे कमरे को ‘मैं पापी हूँ’ इस वाक्य से भर दिया था।”

“सही समझा तुमने।”

"उस सवाल का जवाब क्या है, जो इस पूरे हादसे की शुरुआत से ही मेरा सिरदर्द बना हुआ है। और जिसकी तलाश में मुझे प्रयागराज से शंकरगढ़ तक का सफ़र तय करना पड़ा।"

"स्पष्ट कहो साहिल।" कुलगुरु, साहिल का संकेत नहीं समझ सके।

"यश के साथ कैंब्रिज में ऐसा क्या हुआ था, जो उसकी इस जन्म की यादें उसका साथ छोड़ कर चली गयीं?"

"इसका जवाब जानने से पहले तुम्हें ये जानना चाहिए कि जिसने तुम्हारे भाई पर दो-दो हमले किये वह कौन था?" कुलगुरु ने कहा- "दरअसल वह राजमहल का नौकर था। अधिक स्पष्ट रुप से कहा जाए तो वह एक कापालिक तंत्र-साधक था, जो गौण वंश के कापालिकों की आख़िरी संतति अरुणा का शिष्य था। तंत्र-ज्योतिष से गणना करके अरुणा ने ये पता लगा लिया था कि माया का जन्म राजमहल की इसी पीढ़ी में हुआ है। पहचान के तौर पर उसे ये भी मालूम था कि जिस लड़की की शक्ल हू-ब-हू माया जैसी होगी, वही माया की पुनर्जन्म होगी। माया के पुनर्जन्म को तलाशने के लिए ही उसने भीमा को राजमहल में एक नौकर के रूप में बैठा रखा था। हालाँकि भीमा के राजमहल में नियुक्त होने से बहुत पहले ही संस्कृति अपने मामा के यहाँ कैंब्रिज जा चुकी थी, इसके बावजूद भी भीमा ने अपने उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। और इस काम में उसकी मदद की राजमहल के एक एल्बम में रखी तस्वीरों ने। उन तस्वीरों में से एक तस्वीर संस्कृति की भी थी, जिसमें उसकी कलाई साफ़ नजर आ रही थी। उसकी कलाई पर स्वास्तिक देखने के बाद भीमा को पता चल गया कि संस्कृति ही वह लड़की है, जो माया की शक्ल वाली है और इस वक्त कैंब्रिज में है। अब अरुणा का अगला लक्ष्य द्विज के पुनर्जन्म को तलाशना था। ये काम ज्यादा कठिन नहीं था क्योंकि अरुणा जानती थी कि जब कभी दो युगल अपने पिछले जन्म के अधूरे मिलन को पूरा करने के लिए पुनर्जन्म लेते हैं तो प्रारब्ध का रुख कुछ इस तरह जरूर बदलता है कि वे एक-दूसरे के सम्मुख आने पर विवश हो जाते हैं। पुनर्जन्म से जुड़े इस सिद्धांत के कारण अरुणा को ये विश्वास था कि हो न हो द्विज का पुनर्जन्म भी कैंब्रिज में ही मौजूद होगा। और इसी विश्वास के तहत उसने भीमा की मंहगी कैंब्रिज यात्रा का खर्च वहन किया था। और उसे ये हिदायत दी थी कि यदि दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक चिह्न वाला कोई लड़का संस्कृति की ओर आकर्षित होता नजर आये तो उसे मौत के घाट उतार दे। उसने द्विज के पुनर्जन्म का पहचान चिह्न दाहिनी कलाई पर स्वास्तिक इसलिए बताया था क्योंकि उसे अपने पूर्वजों से ज्ञात हुआ था कि अघोरनाथ ने द्विज को स्वास्तिक सुरक्षा-चिह्न दिया था। हालाँकि उसे ये नहीं मालूम था कि द्विज ने उस सुरक्षा-चिह्न का प्रयोग स्वयं न करके माया को करने दिया था।"

"क्या ये अटपटा नहीं लग रहा कि एक महिला तांत्रिक ने अपने अशिक्षित और गंवार शिष्य के महँगे टूर का खर्च वहन किया और उसका वह शिष्य अनपढ़ होने के बावजूद विदेशी जमीन पर खुद को एडजस्ट भी कर ले गया? न सिर्फ एडजस्ट कर ले गया बल्कि रिवाल्वर हासिल करके यश पर हमला भी कर सका।" साहिल ने उलझे हुए स्वर में कहा।

"ये तुम्हें इसलिए अटपटा लग रहा है साहिल...।" इस बार जवाब दिग्विजय ने दिया- "क्योंकि तुम समझते हो कि भीमा अनपढ़ था और अरुणा कोई सामान्य तांत्रिक थी जबकि वास्तविकता ये है कि भीमा पढ़ा-लिखा था। उसका झुग्गियों में रहना और राजमहल में नौकर बनकर आना; महज स्टेज शो था। यही संभावना उस पुलिस ऑफिसर ने भी व्यक्त की थी, जिसने मुझे भीमा की लाश की शिनाख्त करने के लिए बुलाया था। कई प्रतिष्ठित और रसूख वाली शख्सियतें अरुणा का क्लाइंट थीं। यूँ कह सकते हो कि अपने हुनर के कारण वह कई ऐसे लोगों के सम्पर्क में थी, जो गाहे-बगाहे बड़े कामों में उसकी मदद करने का सामर्थ्य भी रखते थे और नियत भी। भीमा की विदेश यात्रा के बदोबस्त से लेकर विदेशी धरती पर उसे हथियार मुहैया कराने तक का सारा काम अरुणा के ऐसे ही किसी क्लाइंट की मेहबानी से संभव हुआ हो सकता है।"

"यश पर कैंब्रिज में हमला हुआ था। ये घटना साबित करती है कि भीमा ने द्विज के पुनर्जन्म के रुप में उसे ढूँढ निकाला था। तो क्या कैंब्रिज में यश, तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ था?" साहिल ने संस्कृति को लक्ष्य करके कहा- "जब मैंने इस संदर्भ में यश की फोटो दिखाकर तुमसे पूछताछ की थी तो तुमने कहा था कि तुम यश को नहीं जानती और न ही उससे कैंब्रिज में कभी मिली थी। तो फिर भीमा ने यश को कैंब्रिज में कैसे ढूँढा? इसके अलावा एक सवाल ये भी पैदा होता है कि जब पिछले जन्म में द्विज ने स्वास्तिक सुरक्षा-चिह्न का प्रयोग स्वयं न करके उसे माया को सौंप दिया था तो फिर उसके इस जन्म में यश की दाहिनी कलाई पर वह कैसे आया?"

"अरुणा की संभावना गलत नहीं थी।" कुलगुरु ने कहा- "ये प्रारब्ध का रचा हुआ चक्र ही था कि जिस गोष्ठी में यश ने भाग लिया था, उस गोष्ठी में संस्कृति को अपना वक्तव्य रखने का अवसर मिला था। यश के जीवन में सपनों के जरिये जो व्यतिक्रम आये थे, वे संस्कृति के शोध व्याखान को सुनने के पश्चात आये थे। व्याख्यान के दौरान उसे देखने के बाद यश के अवचेतन मस्तिष्क में संरक्षित पूर्वजन्म की स्मृतियाँ जागृत होने लगी थीं। वही स्मृतियाँ उसे सपने में नजर आती थीं। संस्कृति भले ही यश से अनजान थी लेकिन यश को आभास हो चुका था कि उससे उसका कोई अप्रत्यक्ष और रहस्यमयी संबंध है। उसी संबंध की तलाश में उसने कई बार संस्कृति का पीछा किया था। और अपने इसी प्रयास में वह भीमा की निगाहों में आ गया था। इस जन्म और पिछले जन्म की स्मृतियों से एक साथ जूझने और लगातार तीन प्रत्यागमन सत्र से गुजरने के कारण उसकी वर्तमान चेतना विलुप्त होने लगी थी और स्वदेश लौटते-लौटते पूरी तरह विलुप्त हो गयी थी।"

"ओह।" साहिल ने दीर्घ नि:श्वास छोड़ा। उसे डॉ. त्रिवेदी की वह चेतावनी याद आ गयी, जिसके अनुसार अगर मानसिक रूप से व्यथित व्यक्ति को किसी लम्बे अथवा लगातार कई प्रत्यागमन सत्रों से गुजारा जाता है तो ये उसकी स्थायी चेतना के लिए खतरनाक होने लगता है और उसकी याद्दाश्त जाने की प्रायिकता बढ़ जाती है। प्रत्यक्ष में उसने कहा- "और यश की कलाई पर स्वास्तिक होने का कारण?"

"द्विज के मरणोपरांत खुद अघोरनाथ ने ही द्विज के शव पर उसी के द्वारा सिद्ध किये हुए स्वास्तिक का चिह्न अंकित किया था।" जवाब संस्कृति ने दिया।

"फ़कीर बाबा ने भले ही मुझे द्विज और माया की कहानी पीर सुलेमान के फूंके हुए चमत्कारी पानी में दिखा दिया लेकिन मेरे कुछ सवालों के जवाब मुझे अभी भी नहीं मिले हैं। अघोरनाथ ने माया से मुलाक़ात की इच्छा क्यों जाहिर की थी? माया की जलकर मौत कैसे हुई थी?"

"आपके दूसरे सवाल का जवाब साधारण है। माया ने द्विज के बलिदान के

संताप को झेल न पाने के कारण आत्मदाह कर लिया था। अघोरनाथ ने माया से मिलने की इच्छा इसलिए जाहिर की थी क्योंकि वे उसे भविष्य बताना चाहते थे। उसी मुलाक़ात के दौरान अघोरनाथ ने माया को बताया था कि इक्कीसवीं सदी में श्मशानेश्वर एक बार फिर शरीर धारण करेगा।"

"ओ..। तो इसका मतलब ये हुआ कि यश के कमरे में जिस भोजपत्र पर फ़कीर के मज़ार का पता लिखा था, उसे तुमने लिखा था? पिछले जन्म की यादों के साथ ही तुम्हें ये भी याद आ गया था कि इस जन्म में श्मशानेश्वर का अंत कैसे होगा?"

"हाँ। जिस समय यश को होश आया था, उस समय मैं भोजपत्र पर फ़कीर बाबा के मज़ार का ही पता लिख रही थी। मुझे मेरा पिछला जन्म याद आ गया है, ये बात मैंने सिर्फ कुलगुरु, पापा और डॉ. त्रिवेदी को ही बतायी ताकि अभयानन्द तक जाने से पहले उस स्वास्तिक को आग में तपाकर अपने साथ रख सकूँ, जो तीन सौ साल पहले सिद्ध किया हुआ था

और अघोरनाथ की हिदायत के मुताबिक़ माया ने उसे तहखाने में ही छिपा दिया था। ऐसा करना क्यों आवश्यक था, ये आप लोग जान चुके हैं। पिछला जन्म याद आने के साथ ही मुझे ये भी याद आ गया था कि सिद्ध किया हुआ स्वास्तिक आज भी तहखाने में सुरक्षित रखा है।"

"तुम्हारी याद्दाश्त आ चुकी है, ये सच तुमने मुझसे क्यों छुपाया?"

"इसके दो कारण थे। पहला कारण ये कि प्लान की जानकारी अधिक लोगों को हो जाने से उसके फेल हो जाने के चांसेज बढ़ जाते हैं। और दूसरा कारण ये कि आपको पूरी बातें समझाने से ज्यादा जरूरी आपको फ़कीर के मज़ार तक भेजना था। जहाँ आपको सबसे अहम् बात खुद-ब-खुद मालूम हो जानी थी।"

साहिल, संस्कृति के तर्क से आश्वस्त हुआ। इस छोटे से विमर्श में खामोशी छा गयी। इस खामोशी के दौरान लोगों की भंगिमाएं ऐसी थीं, जैसे वे अपने बचे संशय को दूर करने के लिए कोई सवाल तलाश रहे हों। अंततः साहिल ने खामोशी तोड़ी- "अरुणा कहाँ गयी?"

"पुलिस कस्टडी में।" जवाब दिग्विजय ने दिया- "उसके खिलाफ जितने आरोप और सबूत हैं, उनके अनुसार अब उसकी जमानत असंभव है। हमने तुम्हारे सवालों के सिलसिलेवार जवाब दिए; ऐसा इसीलिए संभव हो सका क्योंकि अरुणा ने सब-कुछ उगल दिया।"

"क्या संस्कृति को उसका पिछला जन्म हमेशा याद रहेगा डॉक्टर?" साहिल, डॉ. त्रिवेदी से मुखातिब हुआ।

"नहीं। हर गुजरते वक्त के साथ वे स्मृतियाँ धुंधली पड़ती जायेंगी। ठीक उसी तरह जैसे हम अपने सपने भूलते जाते हैं। एक समय ऐसा भी आयेगा, जब संस्कृति को ये सभी घटनाएं, जो इस वक्त पिछले जन्म की घटनाएं लग रही हैं, सपना लगने लगेंगी।"

"और यश?" साहिल ने चिंतित स्वर में पूछा- "उसकी याद्दाश्त कैसे वापस आयेगी?"

"यू डोंट नीड टू वरी। जिस चमत्कारी ढंग से उसके जख्म भर रहे हैं, उसे देखकर यही लगता है कि वह जल्द ही अपनी मेमोरी रिगेन कर लेगा।"

डॉ. त्रिवेदी के आश्वासन पर साहिल की व्यग्रता कम हुई। वह संस्कृति की ओर मुखातिब हुआ- "अब इस पूरे प्रकरण के आखिरी सवाल का जवाब दे दो संस्कृति।"

"मैं जानती हूँ कि आप क्या पूछना चाहते हैं।" संस्कृति मुस्कुराई- "लेकिन मुझे हैरानी है कि आप अपने उस सवाल का जवाब अभी तक क्यों नहीं समझ पाए?"

"तो क्या उस सवाल का जवाब वही है, जो मैं अनुमान लगा रहा हूँ?"

"क्या अनुमान लगा रहे हैं आप?" संस्कृति अर्थपूर्ण अंदाज में मुस्कुराई।

"यही कि फ़कीर बाबा, अघोरनाथ का पुनर्जन्म हैं।"

"हैं नहीं थे। आपको आदमखोर भेड़ियों से बचाने के बाद उन्होंने मज़ार पर जाकर फ़कीर का शरीर त्याग दिया।"

"ओह!" साहिल के होठों से अस्फुट स्वर निकला- "क्या ये अजीब नहीं है कि जो धर्म पुनर्जन्म को नहीं मानता, अघोरनाथ ने उसी धर्म का शरीर धारण किया?"

"जो आत्मज्ञानी होते हैं...।" कुलगुरु ने दार्शनिक लहजे में कहा- "वे जाति और धर्म के बंधनों से परे होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि अविनाशी आत्मा जाति या धर्म से नहीं बंधी होती।"

THE END

---

[1] जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होती है।

[2] अल्लाह के सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

[3] काम, क्रोध व लोभ; यह तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले हैं अर्थात् अधोगति में ले जाने वाले हैं, इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए।

[4] चण्डिका देवी का प्रचण्ड स्वरूप सभी कार्यों को सिद्ध करने वाला फलदायी होता है। जिनके स्मरण मात्र से नर शिव सदृश हो जाता है।

[5] जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते कि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।

[6] सभी जीवों में श्रेष्ठ

[7] मक्का में स्थित 'जमजम' नाम के कुएं के पानी को 'आब-ए-जमजम' कहा जाता है। इस्लाम में इस कुएं और इसके पानी को पवित्र माना गया है।

[8] विवेकहीन, श्रद्धारहित और संशययुक्त मनुष्य भ्रष्ट हो जाता है। उस के लिए न यह लोक सुखप्रद है और न परलोक ही।

[9] साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।